Volume-VII
Year
2026

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

अपराजिता

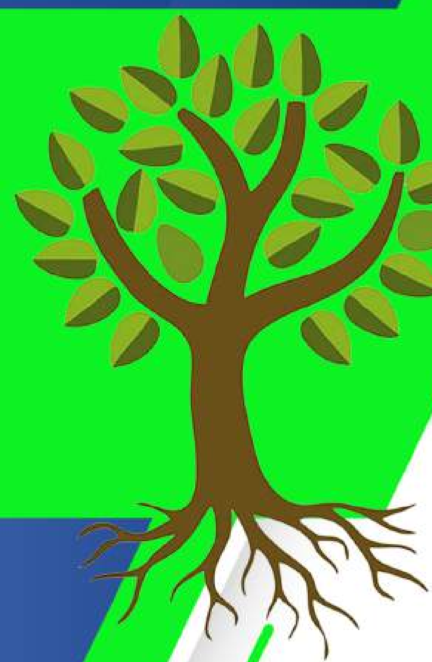

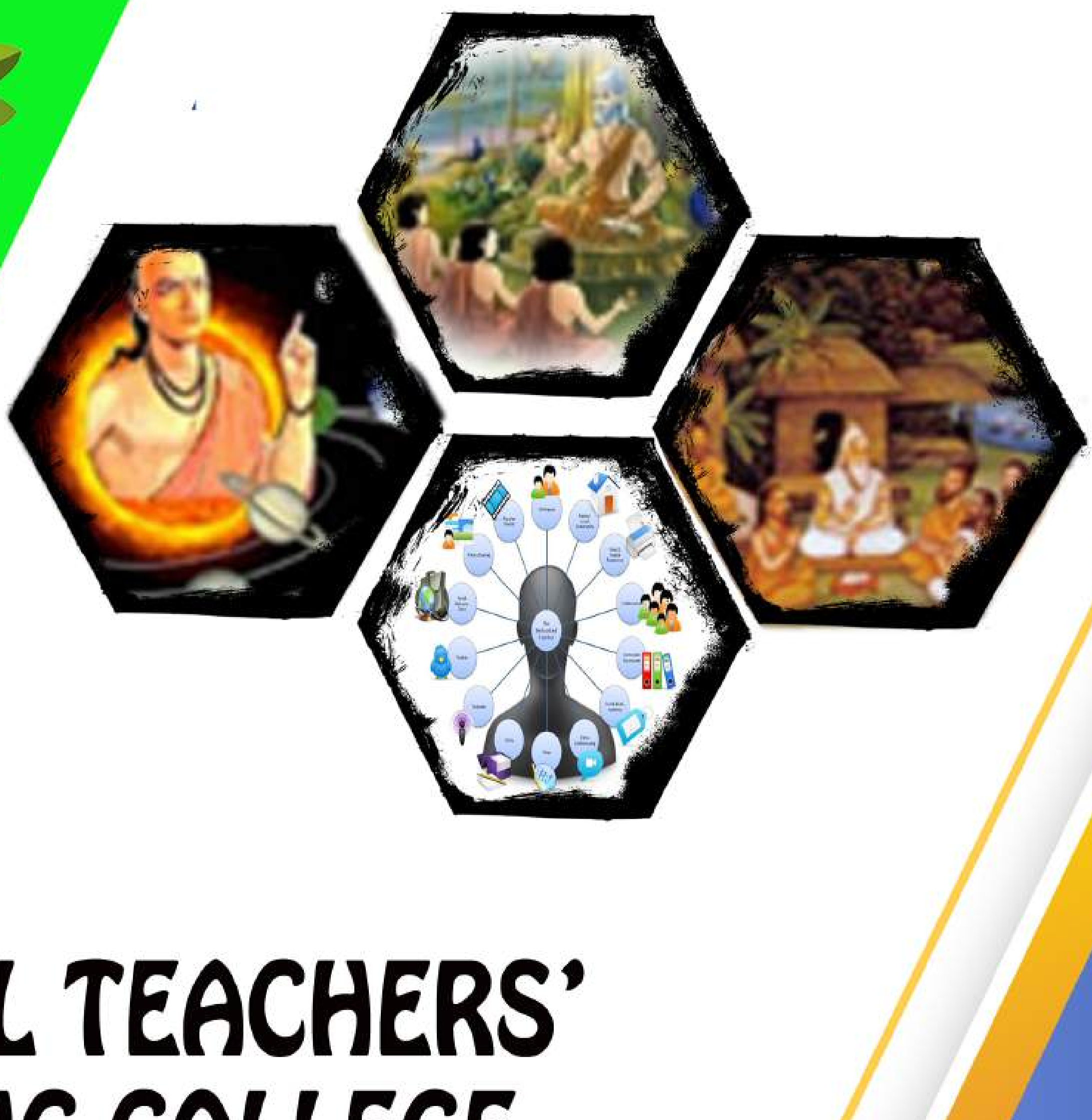

ST. PAUL TEACHERS' TRAINING COLLEGE BIRSINGHPUR

(An Autonomous Higher Educational Institute)
NAAC Accredited with 'B++' Grade
Recognized by NCTE, Bhubaneswar
Recognized by University Grants Commission, New Delhi u/s 2(f) & 12 (B)
(Affiliated with LNMU Darbhanga & Bihar School Examination Board Patna)

Editor
Dr. Roli Dwivedi

848302,
28/07/2025 02:07 PM GMT +05:30
GPS Map Camera
ST. PAUL TEACHERS' TRAINING COLLEGE BIRSINGHPUR
(An Autonomous Higher Educational Institute)
NATIONAL SEMINAR
ON
March 13 & 14,
Online & Offline
World
Nature Conservation-Day
पर्यावरण के लिए एक पहल
World Population Day
(NAAC Accredited with Grade B")
लैंगिक मुद्दे पर सामूहिक चर्चा
(20.12.2024)
स्थान - प्रोजेक्ट बालिका उच्च विद्यालय कल्याणपुर

स्वर्गीय परमेश्वर प्रसाद नारायण सिंह की जन्मोत्सव पर हार्दिक श्रद्धांजलि

बिरसिंहपुर के समाजसेवी, दूरदर्शी शिक्षाविद एवं शिक्षा-ज्योति के प्रखर प्रणेता

स्वर्गीय परमेश्वर प्रसाद नारायण सिंह जी की जन्मोत्सव पर उन्हें कोटि-कोटि नमन। 🙏🏻

समाज में शिक्षा के प्रकाश को फैलाने के उद्देश्य से विद्यालय की स्थापना कर अनेक बच्चों के भविष्य को संवारने का कार्य किया। साथ ही विभिन्न गाँवों एवं जिलों में गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा उपलब्ध कराने हेतु प्रशिक्षण कॉलेजों की स्थापना कर सामाजिक उत्थान की मजबूत नींव रखी। उनका जीवन शिक्षा, सेवा और समाज-निर्माण के लिए समर्पित रहा, जो आज भी हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है।

इस पावन अवसर पर हम उनके आदर्शों को आत्मसात करने, शिक्षा के माध्यम से समाज को सशक्त बनाने और उनके दिखाए मार्ग पर चलने का संकल्प लें।

ईश्वर दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे और उनके विचार सदैव हमें मार्गदर्शन देते रहें।

जयंती पर शत्-शत् नमन एवं भावपूर्ण बधाई।

स्वर्गीय परमेश्वर प्रसाद नारायण सिंह को समर्पित काव्यांजलि

बिरसिंहपुर की धरती से उठी,
सेवा की वह उजली पहचान,
शिक्षा-ज्योति के दीप जलाकर,
बदला कितनों का अरमान।
विद्यालय की नींव रखी जब,
अज्ञान तिमिर हरसाया,
गाँव-गाँव, जिला-जिला पहुँची,
विद्या की निर्मल छाया।
कॉलेज बनें सपनों की सीढ़ी,
युवाओं को दी उड़ान,
गुणवत्ता, संस्कार, समर्पण-
यही था उनका विधान।
आज नहीं हैं साथ हमारे,
पर विचार अमर महान,
स्वर्गीय परमेश्वर प्रसाद नारायण सिंह,
शिक्षा के सच्चे भगवान।
जयंती पर शत्-शत् नमन है,
भावों का यह अर्पण मान,
आप रहें स्मृतियों में सदा,
प्रेरणा बन, पथ-प्रदर्शक समान।

🌼 🙏

चंदन कुमार
सहायक प्राध्यापक
डी. एल. एड.

St. Paul Teachers Training College Birsinghpur

Preface

The Eternal Flame of Knowledge

The seventh edition of **Aparajita** *is presented here with its distinct character and intellectual depth. Adorned with* **ISBN: 978-81-97376-45-0***, this issue marks a significant milestone in the illustrious developmental journey of* **St. Paul Teachers' Training College, Samastipur***. This edition reaches our readers at a historic moment when the institution is setting new benchmarks in the field of education, empowered by its* **Autonomous** *status.*

The core themes of this issue are **Holistic Education** *and* **Technological Adaptation.** *While it delves into the relevance of the ancient* **Gurukul system***, it simultaneously highlights modern frontiers such as* **Artificial Intelligence (AI)** *and* **Digital Storytelling***. The review of* **Jordan Peterson's** *principles, encompassing various dimensions of personality development, encourages readers toward self-reflection. Furthermore, articles focusing on the evolving role of* **Women Empowerment** *and the* **social responsibility of schools** *make this edition socially profound and relevant.*

This magazine is not merely a collection of papers; it is a reflection of our college's academic environment, our burgeoning research culture, and the aspirations of future educators. We are firmly convinced that this edition of Aparajita will serve as an enduring source of inspiration for academicians, researchers, and teacher-trainees alike.

Secretary Message

Dear Readers and Stakeholders,

It is a moment of profound gratification to present the 7th edition of our institutional magazine, Aparajita . This publication stands as a testimony to the creative intellectualism and research-oriented mindset fostered at St. Paul Teachers' Training College. As we celebrate our the prestigious transition into an Autonomous institution, Aparajita symbolizes the newfound academic freedom and responsibility we now carry.

Autonomy for us is not just a status; it is a commitment to redesigning the pedagogical landscape of teacher education. In this edition, marked with ISBN: 978-81-97376-45-0, we have endeavored to bridge the gap between traditional wisdom and future technologies. The role of a teacher is evolving in this era of Artificial Intelligence and global connectivity, and our magazine reflects how our trainees are preparing for this transformation.

I extend my heartfelt appreciation to the editorial team for their meticulous efforts in ensuring scholarly standards. I also congratulate the contributorsn whose insights reflect the high academic caliber of our college. May this magazine continue to inspire curiosity and critical thinking among its readers.

Avinash Kumar

Secretary

प्राचार्या संदेश

शिक्षा जगत के सुधि पाठकों और भावी राष्ट्र-निर्माताओं,

'अपराजिता' का सातवाँ अंक संस्थान की शैक्षणिक प्रतिबद्धता का परिचायक है। एक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के रूप में हमारा लक्ष्य सदैव से 'समग्र व्यक्तित्व' का निर्माण रहा है। आज जब हमारा महाविद्यालय NAAC B++ की गरिमा से मंडित है और Autonomous कॉलेज के रूप में अपनी नई भूमिका का निर्वहन कर रहा है, तब हमारी जिम्मेदारियाँ और भी बढ़ गई हैं।

यह अंक विशेष रूप से शिक्षा में आ रहे आमूलचूल परिवर्तनों को समर्पित है। 'अपराजिता' के माध्यम से हमने अपने प्रशिक्षुओं को एक ऐसा मंच प्रदान किया है जहाँ वे अपनी वैचारिक मौलिकता को शोध की कसौटी पर परख सकें। इसमें संकलित लेख, जैसे जॉर्डन पीटरसन की मनोवैज्ञानिक दृष्टि, फीडबैक के वास्तविक स्वरुप या गुरुकुल पद्धति का आधुनिक संदर्भ, यह आलेख दर्शाते हैं कि हम वैश्विक सोच और भारतीय मूल्यों के बीच संतुलन बनाने में सक्षम हैं। स्वायत्तता हमें नवाचार (Innovation) की स्वतंत्रता देती है, और यह पत्रिका उसी नवाचार का एक प्रमाण है। मैं इस सारस्वत अनुष्ठान के लिए संपादक मंडल विशेषतः डॉ अमित पाण्डेय के प्रयासों की सराहना करते हुए समस्त प्राध्यापकों को हार्दिक बधाई देती हूँ।

डॉ. रोली द्विवेदी
प्राचार्या,
संत पॉल टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज

संपादक मंडल के तरफ से

वैचारिक क्षितिज का विस्तार: 'अपराजिता' का सातवाँ सोपान'

प्रिय पाठकों,

किसी भी शिक्षण संस्थान की बौद्धिक जीवंतता उसकी पत्रिकाओं के पन्नों में धड़कती है। 'अपराजिता' का यह सातवाँ अंक केवल एक औपचारिक प्रकाशन नहीं है, बल्कि यह हमारे संस्थान के शैक्षणिक उत्कर्ष और शोधपरक विमर्श का दस्तावेज़ है।

संपादक मंडल के लिए यह कार्य चुनौतीपूर्ण और उत्साहजनक दोनों रहा। हमने इस अंक में ISBN: 978-81-97376-45-0 के मानकों को ध्यान में रखते हुए आलेखों की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया है। इस अंक में सम्मिलित शोध-पत्र और लेख न केवल राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के व्यावहारिक पक्षों को उजागर करते हैं, बल्कि व्यक्तित्व विकास, सामाजिक सरोकार और आधुनिक तकनीक (AI) के शिक्षा में प्रभाव जैसे सामयिक विषयों पर भी प्रकाश डालते हैं। हमारा उद्देश्य प्रशिक्षुओं के भीतर छिपे उस अन्वेषक को बाहर लाना है, जो भविष्य में केवल सूचनाओं का प्रसारक नहीं, बल्कि ज्ञान का सृजक बनेगा। हम उन सभी मनीषी लेखकों और मार्गदर्शकों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं, जिनके सहयोग से यह अंक मूर्त रूप ले सका।

संपादक मंडल

अपराजिता

संत पॉल टीचर्स ट्रेंनिंग कॉलेज बिरसिंहपुर समस्तीपुर बिहार

अपराजिता

Cordinatore
Mr. Surendra Prasad Chaudhary
Asst. Professor

Co-ordinatore
Mr. Chandan Kumar
Asst. Professor
(News Editor)

Mrs. Arpana Kumari
Asst. Professor

Dr. Amit Kumar Pandey
Asst. Professor

Mr. Nitish Kumar Singh
Asst. Professor

Technical Support

Mr. Suraj Kumar
B.Ed. (2025-27)

Mr. Abhishesk Kumar
B.Ed. (2025-27)

Mr. Ajay kumar
Alumni

क्रम संख्या	लेख का शीर्षक	लेख प्रस्तुतकर्ता	पृष्ठ
1	पुस्तक समीक्षा: बिग फाइव पर्सनालिटी ट्रेट्स (जॉर्डन पीटरसन)	डॉ. रोली द्विवेदी, (प्राचार्या)	01
2	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उच्च शिक्षा के विशेष संदर्भ	श्री मनोज कुमार	09
3	Investigating the Role of Interactive Storytelling in Teaching Complex Scientific Concepts	Dr. Md. Nezamuddin	12
4	युवा वर्ग की वर्तमान चुनौतियाँ एवं भूमिका	श्री सुरेन्द्र प्रसाद चौधरी	17
5	A Study on Fostering Entrepreneurial Mindsets in Students Through Innovative Curriculum Design	Syed Md Tahseen Alam Quadri	20
6	शिक्षा के क्षेत्र में हिंदी शिक्षण: चुनौतियाँ, संभावनाएँ और भविष्य का मार्ग	डॉ. पवन कुमार	25
7	Concept Maps as a Teaching and Learning Strategy: The Humanities	Mr. Shyam Kishore Singh	27
8	From Guide to Guru? The Dangers of Students Seeing AI as All-Knowing	Mrs. Arpana Kumari (Coordinator - IQAC)	30
9	मधुबनी लोककला भित्ति चित्र से ग्लोबल तक का सफर	Mr. Narendra Kumar	38
10	रोजगारोन्मुखी शिक्षा और हमारी अपेक्षा	डॉ. प्रतिभा राय	39
11	नई शिक्षा नीति 2020 में गुरुकुल शिक्षण पद्धति के तत्वों का समावेश	डॉ. अमित कुमार पाण्डेय (सह- समन्वयक आइ.क्यू.ए.सी)	41
12	Study of Gelfand algebra and its impact on Banach algebra	Dr. Nimesh Kumar	45
13	भारतीय शिक्षा का ज्ञान दर्शन: एक विवेचना	श्री नंदेश कुमार ठाकुर (पूर्व विभागाध्यक्ष, डी.एल.एड.)	49
14	Review of Global Education System: Rank Wise First 10 Countries.	Dr. Prabir Bera (H.O.D., D.El.Ed.)	52
15	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: प्रारंभिक बाल्यावस्था एवं देखभाल (ECCE)	श्री राम कृष्ण भारती	58
16	AI आधारित शिक्षण और छात्र की सीखने की प्रक्रिया: एक मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक विश्लेषण	श्री मिथिलेश कुमार	60
17	शब्द बदलते हैं, संवेदना नहीं: भाषा उत्सव में भारतीयता का उत्सव	श्री चंदन कुमार	63
18	शिक्षा : क्या क्यों और कैसे - एक विचार	श्री उदय कुमार	67
19	The Role of Technology in Modern Education	Mr. Nitish Kumar Singh	69
20	What are Somatic Mutations	Mr. Neel Kamal Niraj	72
21	आधुनिकता के दौर में नारी: प्रकृति से प्रगति तक की यात्रा	श्रीमति अपर्णा कुमारी	75
22	सोशल मीडिया का छात्रों पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव	श्रीमति किरण कुमारी	77
23	शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षा का पाठ्यक्रम तथा शिक्षण विधि के विशेष सन्दर्भ में डॉ0 ज़ाकिर हुसैन के शैक्षिक विचारों का एक अवलोकन	श्री मृत्युंजय सिंह	81
24	शिक्षण संस्थानों में पुस्तकाल की उपयोगिता	श्री रौशन कुमार गूंजन	86
25	छात्र पुस्तकालय: महत्व और आधुनिक स्वरूप	श्रीमति नीतू कुमारी	87
26	नूरजहाँ-मुगलकाल की दैदिप्यमान महिला	डॉ॰ वीरेश कुमार ठाकुर **Guest writer**	90
27	Beyond Feedback: Using Feed-Forward to Skyrocket Student Progress	Smt. Minu Pandey **Guest writer**	93
28	ज्ञान–समाज, डिजिटल परिवर्तन और अकादमिक उत्कृष्टता की दिशा में एक समग्र विश्लेषण	निशा कुमारी **Guest writer**	97
29	Need of Sex Education in Schools of Bihar	Ajeet Kumar	99
30	The Invisible Architect: How AI Will Redesign Our World	Mr. Suraj Kumar	103
31	Is Artificial Intelligence (AI) Good or Bad?	Abhishek Kumar	105
32	ज्ञान क्या है?	इन्द्रदेव कुमार	109
33	Mastering the Craft: Strategies for Effective Teaching and Classroom Applications	Ravi Kumar	110

34	आधुनिक युग में शिक्षा की क्रांति: स्वरूप, प्रभाव और चुनौतियाँ	बाबुल कुमार	112
35	युवाओं में बढ़ती प्रतिस्पर्धा: सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव	केशव कुमार	116
36	Classroom Management: A happy classroom Inculcated with Moral Ethics	Ajay Kumar	118
37	"शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में कंप्यूटर विज्ञान की बढ़ती भूमिका"	आशिष रंजन	121
38	Role of Education in Creating a Difference Between a Human and an Animal	Ujjwal Raj	122
39	Exam: Not a Fear, A New Opportunity to Learn	Govind Kumar Singh	127
40	A Comparative Study of Student Performance in Traditional and online learning environments	Amit Kumar	129
41	आप भी शिक्षक बन सकते हैं।	केशव राज	132
42	डिजिटल युग में कक्षा की भूमिका	नवनीत कुमार	133
43	Time Management in Student Life	Sanjay Patel	134
44	College Life: Where Ordinary Students Discover Their Extraordinary Selves /I Entered for a Degree, I Found Myself	Rahul Shekhar	136
45	हमारे दैनिक जीवन में किताब का महत्व	ख़ुशी कुमारी	139
46	शिक्षा एक अधिकार	रवि राज	140
47	Empowering Multilingual Learners Through Culturally Responsive Teaching	Sanjeev Kumar	142
48	शोध शिक्षा और डिजिटल शिक्षा	सन्नी कुमार	144
49	ज्ञान एक मार्गदर्शक	अमृता कुमारी	145
50	आत्मसम्मान	वीणा कुमारी	146
51	वर्ग-कक्ष में शिक्षक की उपयोगिता	मुसर्रत प्रविन	148
52	समाज में लड़कियों की शिक्षा	रूपा कुमारी	151
53	शिक्षा का महत्व	विशाल कुमार	153
54	बी.एड. प्रशिक्षण: एक शिक्षक नहीं, राष्ट्र-निर्माता बनने की यात्रा	Roshan Kumar Gope	154
55	Depression in Youngsters: A Hidden Barrier to Career Growth	Raj Nandani	156

पुस्तक समीक्षा: बिग फाइव पर्सनालिटी ट्रेट्स- जॉर्डन पीटरसन

डॉ. रोली द्विवेदी
प्राचार्या

आप अपनी पर्सनालिटी को नहीं समझते, तो आप अपने ही जीवन को अंधेरे में जी रहे हैं।

पर्सनालिटी :आदत नहीं, जीवन की दिशा

जॉर्डन पीटरसन जब पर्सनालिटी की बात करते हैं, तो वे उसे किसी मनोवैज्ञानिक शब्दावली में बंद नहीं करते। उनके लिए पर्सनालिटी कोई टेस्ट-रिपोर्ट नहीं है, न ही यह केवल यह बताने का तरीका है कि आप मिलनसार हैं या अंतर्मुखी। पीटरसन पर्सनालिटी को जीवन जीने का ढांचा मानते हैं—वह ढांचा जिसके भीतर आप दुनिया को देखते हैं, अर्थ निकालते हैं और निर्णय लेते हैं। उनके अनुसार, हम यह मानकर बहुत बड़ी गलती करते हैं कि हम "स्वतंत्र रूप से" निर्णय लेते हैं। वास्तव में, हमारे अधिकतर निर्णय पहले से बने हुए मानसिक झुकावों के भीतर होते हैं। यही झुकाव पर्सनालिटी ट्रेट कहलाते हैं। आप किस बात से डरते हैं, किस बात से आकर्षित होते हैं, किससे टकराते हैं और किससे बचते हैं—इन सबके पीछे कोई न कोई स्थायी संरचना काम कर रही होती है। पीटरसन यहीं से एक गहरी बात कहते हैं—अगर आप अपनी पर्सनालिटी को नहीं समझते, तो आप अपने ही जीवन को अंधेरे में जी रहे हैं। पर्सनालिटी क्यों नैतिक प्रश्न बन जाती है? अक्सर पर्सनालिटी को वैल्यू-न्यूट्रल मान लिया जाता है, जैसे यह बस "जैसी है, वैसी है" वाली चीज़ हो। पीटरसन इस सोच से असहमत हैं। उनके अनुसार पर्सनालिटी केवल यह नहीं तय करती कि आप कैसे हैं, बल्कि यह भी तय करती है कि आप दुनिया में कितना कष्ट बढ़ाते हैं या घटाते हैं। मान लीजिए कोई व्यक्ति अत्यधिक डरपोक है, लेकिन वह यह मानने को तैयार नहीं कि डर उसके निर्णयों को चला रहा है। वह हर असफलता का दोष दुनिया पर डालता है। धीरे-धीरे उसका डर शिकायत, फिर कटुता और अंततः क्रोध में बदल जाता है। पीटरसन के अनुसार, यहाँ समस्या सिर्फ़ डर नहीं है—समस्या है अज्ञान। व्यक्ति अपने ही स्वभाव को नहीं पहचान रहा। इसीलिए पीटरसन पर्सनालिटी को नैतिक ज़िम्मेदारी से जोड़ते हैं। उनका तर्क है कि अगर आप जानते हैं कि आपकी कोई प्रवृत्ति आपको और दूसरों को नुकसान पहुँचा रही है, और फिर भी आप उसे समझने या नियंत्रित करने का प्रयास नहीं करते तो यह केवल मनोवैज्ञानिक कमजोरी नहीं रह जाती, यह नैतिक चूक बन जाती है।

बिग फाइव का ढांचा क्यों?

जॉर्डन पीटरसन पर्सनालिटी पर बोलते समय किसी निजी दर्शन पर नहीं टिकते। वे जिस ढांचे का उपयोग करते हैं, वह दशकों के वैज्ञानिक शोध से निकला हुआ है—बिग फाइव पर्सनालिटी मॉडल। यह मॉडल मानव पर्सनालिटी को पाँच मूलभूत आयामों में समझता है।

पीटरसन इसे इसलिए पसंद करते हैं क्योंकि यह संस्कृति से ऊपर उठकर काम करता है, अलग-अलग देशों और समयों में समान परिणाम देता है और व्यवहार की भविष्यवाणी करने में सक्षम है। पीटरसन बार-बार यह स्पष्ट करते हैं कि ये ट्रेट्स अच्छे या बुरे नहीं होते। वे तथ्य होते हैं, जैसे ऊँचाई, वजन या आँखों का रंग। समस्या ट्रेट में नहीं होती, समस्या उन्हें न समझने में होती है। पर्सनालिटी ट्रेट भाग्य नहीं हैं, लेकिन सीमा ज़रूर हैं।

पीटरसन का एक महत्वपूर्ण ज़ोर इस बात पर है कि पर्सनालिटी ट्रेट को "बहाना" नहीं बनाया जाना चाहिए। कोई व्यक्ति यह नहीं कह सकता, "मैं ऐसा ही हूँ, इसलिए बदल नहीं सकता।" पीटरसन इसे खुद को धोखा मानते हैं। उनके अनुसार ट्रेट यह तय करते हैं कि आपको कौन-सा रास्ता कठिन लगेगा, कौन-सा काम आपको जल्दी थका देगा और किस दिशा में आपको ज़्यादा अनुशासन चाहिए। लेकिन ट्रेट यह तय नहीं करते कि आप कोशिश भी न करें।

पीटरसन यहाँ एक गहरी तुलना करते हैं। जैसे कोई व्यक्ति शारीरिक रूप से कमजोर हो सकता है, लेकिन फिर भी वह अपनी क्षमता के अनुसार मजबूत बनने का प्रयास कर सकता है, वैसे ही पर्सनालिटी ट्रेट के साथ भी है। जिम्मेदारी यहीं से शुरू होती है। पर्सनालिटी और मीनिंग का संबंध। पीटरसन के लेक्चर्स में पर्सनालिटी हमेशा "मीनिंग" से जुड़ी हुई होती है। उनके अनुसार जीवन का अर्थ किसी बाहरी वस्तु से नहीं आता, वह आपके आचरण से पैदा होता है। और आचरण पर्सनालिटी के भीतर से निकलता है। अगर कोई व्यक्ति अपनी प्रकृति के विपरीत जीवन जीने की कोशिश करता है, तो वह टूट जाता है। उदाहरण के लिए, अत्यधिक अंतर्मुखी व्यक्ति अगर लगातार खुद को ऐसे माहौल में डालता है जहाँ उसे हर समय प्रदर्शन करना पड़े, तो वह धीरे-

धीरे थकान और अवसाद की ओर जाएगा। इसी तरह, अत्यधिक मिलनसार व्यक्ति अगर पूरी तरह अलग-थलग जीवन जीने की कोशिश करे, तो वह बेचैनी और निरर्थकता से भर जाएगा। पीटरसन का निष्कर्ष है कि मीनिंगफुल लाइफ वह है जो आपकी पर्सनालिटी के साथ ईमानदार हो।

ऑर्डर और केओस : पर्सनालिटी की पृष्ठभूमि।

पीटरसन पर्सनालिटी को समझाते समय बार-बार दो शब्दों का उपयोग करते हैं—ऑर्डर और केओस। उनके अनुसार हर व्यक्ति इन दोनों के बीच किसी न किसी संतुलन पर खड़ा होता है। ऑर्डर है नियम, संरचना, परंपरा, सुरक्षा और केओस का मतलब है अनिश्चितता, संभावना, जोखिम, परिवर्तन। पर्सनालिटी ट्रेट यह तय करते हैं कि आप किस ओर ज़्यादा झुकते हैं। कुछ लोग ऑर्डर में सुरक्षित महसूस करते हैं, कुछ लोग केओस में जीवंत हो जाते हैं। समस्या तब शुरू होती है जब व्यक्ति केवल एक ही पक्ष में अटक जाता है। पीटरसन के अनुसार, मानसिक बीमारियों का बड़ा हिस्सा इसी असंतुलन से पैदा होता है। अत्यधिक ऑर्डर व्यक्ति को कठोर बना देता है, और अत्यधिक केओस व्यक्ति को अस्थिर।

रिस्पांसिबिलिटी का प्रवेश।

यहीं पर पीटरसन का प्रसिद्ध विचार उभरता है—रिस्पॉन्सिबिलिटी। उनके अनुसार पर्सनालिटी को समझने का अंतिम उद्देश्य आत्म-ज्ञान नहीं, बल्कि जिम्मेदारी उठाने की क्षमता है। जब आप जानते हैं कि आप किस चीज़ में कमजोर हैं, तब आप अपने जीवन की संरचना उसी हिसाब से बना सकते हैं। जब आप जानते हैं कि किस स्थिति में आप गलत निर्णय लेते हैं, तब आप उन परिस्थितियों से बच सकते हैं या खुद को तैयार कर सकते हैं। पीटरसन कहते हैं कि जीवन की अराजकता को पूरी तरह हटाया नहीं जा सकता, लेकिन उसे सहने योग्य बनाया जा सकता है। और यही काम जिम्मेदारी करती है। पीटरसन का बेसिक फ्रेम है कि पर्सनालिटी कोई लेबल नहीं, जीवन का ढांचा है, ट्रेट तथ्य हैं, बहाने नहीं, पर्सनालिटी को न समझना आत्म-विनाश का रास्ता है, और पर्सनालिटी को समझना नैतिक जिम्मेदारी की शुरुआत है।

ओपननेस टू एक्सपीरियंस—अज्ञात की ओर बढ़ने का साहस।

जॉर्डन पीटरसन के लेक्चर्स में ओपननेस टू एक्सपीरियंस केवल एक पर्सनालिटी ट्रेट नहीं है। यह उस दरवाज़े की तरह है जो व्यक्ति को ज्ञात दुनिया से निकालकर अज्ञात संभावनाओं की ओर ले जाता है। पीटरसन इसे सीधे उस क्षेत्र से जोड़ते हैं जिसे वे केओस कहते हैं—वह स्थान जहाँ खतरा भी है और संभावना भी। पीटरसन के अनुसार, मानव इतिहास की हर बड़ी खोज, हर नया विचार और हर सांस्कृतिक परिवर्तन इसी ट्रेट से जन्मा है। लेकिन वे यह भी साफ़ करते हैं कि केओस कोई रोमांटिक जगह नहीं है। वह सुंदर दिख सकता है, पर वह निर्दयी भी हो सकता है।

ओपननेस वास्तव में है क्या। ओपननेस टू एक्सपीरियंस का अर्थ केवल यह नहीं कि आपको नई चीज़ें पसंद हैं। इसका अर्थ है, आप अमूर्त विचारों को समझने में सक्षम हैं, आप कल्पना कर सकते हैं, आप पुराने ढाँचों को चुनौती दे सकते हैं और आप अनिश्चितता के साथ कुछ समय तक रह सकते हैं। पीटरसन बताते हैं कि जो व्यक्ति इस ट्रेट में ऊँचा होता है, वह प्रश्न पूछने से नहीं डरता। वह यह मानकर नहीं चलता कि जो पहले से मौजूद है, वही अंतिम सत्य है। यही कारण है कि लेखक, कलाकार, वैज्ञानिक और दार्शनिक प्रायः उच्च ओपननेस वाले होते हैं। लेकिन यहीं पीटरसन सावधान करते हैं, जो व्यक्ति अज्ञात से खेलता है, उसे उसकी कीमत भी चुकानी पड़ती है।

केओस: रचनात्मक भी, विनाशकारी भी।

पीटरसन केओस को किसी शैतानी शक्ति की तरह नहीं देखते। उनके अनुसार केओस वह स्थान है जहाँ व्यवस्था टूटती है, लेकिन उसी टूटन से कुछ नया जन्म लेता है। ओपननेस वाला व्यक्ति इसी क्षेत्र में सहज महसूस करता है। पर समस्या तब पैदा होती है जब व्यक्ति केओस को बिना ऑर्डर के अपनाता है। पीटरसन इसे ऐसे समझाते हैं, कल्पना बिना अनुशासन के पागलपन बन जाती है। अत्यधिक ओपननेस व्यक्ति को अस्थिर, बिखरा हुआ और वास्तविक जीवन की ज़िम्मेदारियों से कटा हुआ बना सकती है। पीटरसन कई बार बताते हैं कि कुछ लोग केवल विचारों में जीते हैं। उनके पास योजनाएँ होती हैं, सपने होते हैं, लेकिन कोई संरचना नहीं होती। ऐसे लोग अंततः निराशा, अव्यवस्था और आत्म-संदेह में फँस जाते हैं ऑर्डर के बिना ओपननेस का खतरा। पीटरसन कहते हैं कि केओस में उतरना वीरता का काम है, लेकिन केओस में रह जाना मूर्खता है। ओपननेस को ऑर्डर से बाँधना अनिवार्य है। ऑर्डर का अर्थ है, समय पर सोना, ज़िम्मेदारी निभाना, सीमाएँ स्वीकार करना और जीवन को किसी ढाँचे में जीना। जो व्यक्ति ओपननेस में ऊँचा है लेकिन

कॉन्शिएंशसनेस में कम, वह अक्सर अपने ही विचारों का शिकार बन जाता है। पीटरसन के क्लिनिकल अनुभव में ऐसे लोग बार-बार टूटते हैं, क्योंकि उनके पास अपनी कल्पनाओं को जमीन पर उतारने का कोई साधन नहीं होता। ओपननेस और आधुनिक संकट।

पीटरसन मानते हैं कि आधुनिक दुनिया में ओपननेस को अक्सर गलत ढंग से महिमामंडित किया गया है। "नया" अपने आप में अच्छा मान लिया जाता है, और "पुराना" अपने आप में बुरा। यह सोच खतरनाक है। उनके अनुसार परंपरा केवल बोझ नहीं होती, वह पीढ़ियों का संचित अनुभव होती है। जो व्यक्ति केवल नया खोजने में लगा रहता है, वह पुराने ज्ञान से कट जाता है। और जो व्यक्ति केवल पुराने में अटका रहता है, वह जीवन से कट जाता है। ओपननेस का सही रूप इन दोनों के बीच संतुलन है।

रचनात्मक व्यक्ति का अकेलापन।

पीटरसन यह भी बताते हैं कि उच्च ओपननेस वाला व्यक्ति अक्सर अकेलापन झेलता है। उसके विचार सामान्य लोगों से अलग होते हैं। वह चीज़ें देखता है जो दूसरों को नहीं दिखतीं। इससे संवाद कठिन हो जाता है। कई कलाकार, लेखक और विचारक इसी कारण मानसिक संघर्ष से गुज़रते हैं। पीटरसन इसे कमजोरी नहीं मानते, लेकिन चेतावनी देते हैं कि बिना संरचना के यह अकेलापन व्यक्ति को तोड़ सकता है। यहीं वे फिर से रिस्पॉन्सिबिलिटी की बात लाते हैं। अगर आप केओस में उतरने की क्षमता रखते हैं, तो आपको ऑर्डर बनाने की जिम्मेदारी भी उठानी होगी।

ओपननेस और नैतिक साहस। पीटरसन के अनुसार ओपननेस केवल बौद्धिक गुण नहीं है, यह नैतिक साहस भी है। सच बोलना, कठिन प्रश्न पूछना और अपने ही विश्वासों को चुनौती देना—यह सब ओपननेस से जुड़ा है। लेकिन वे यह भी कहते हैं कि हर सच हर समय बोलना बुद्धिमानी नहीं होती। ओपननेस को विवेक के साथ जोड़ना आवश्यक है। अन्यथा व्यक्ति केवल विद्रोही बनकर रह जाता है, रचनात्मक नहीं।

मिथ और सिंबल की भूमिका। पीटरसन अक्सर मिथकों का उदाहरण देते हैं। हर संस्कृति में नायक वही होता है जो अज्ञात में उतरता है, लेकिन खाली हाथ नहीं लौटता। वह कुछ नया सीखकर वापस आता है और समुदाय को लाभ पहुँचाता है। ओपननेस इसी यात्रा की शुरुआत है। लेकिन अगर नायक वापस न आए, तो वह नायक नहीं रहता, वह खोया हुआ व्यक्ति बन जाता है।

ओपननेस को कैसे जिया जाए?

पीटरसन कोई सरल नुस्खा नहीं देते, लेकिन संकेत ज़रूर देते हैं। नई चीज़ें सीखें, लेकिन अपनी जिम्मेदारियों से भागें नहीं। कल्पना करें, लेकिन दिनचर्या न तोड़ें। प्रश्न पूछें, लेकिन उत्तर सहने की क्षमता भी रखें। ओपननेस का उद्देश्य जीवन को रोचक बनाना नहीं, बल्कि अर्थपूर्ण बनाना है। कॉन्शिएंशनेस—ज़िम्मेदारी उठाने की शक्ति। जॉर्डन पीटरसन के लेक्चर्स में अगर किसी एक पर्सनालिटी ट्रेट को सबसे अधिक महत्व दिया गया है, तो वह है कॉन्शिएंशनेस। वे इसे बिना किसी झिझक के कहते हैं कि यह ट्रेट जीवन में सफलता, स्थिरता और आत्म-सम्मान से सबसे गहराई से जुड़ा हुआ है। यहाँ सफलता से उनका मतलब केवल धन या पद नहीं, बल्कि जीवन को संभाल पाने की क्षमता है। पीटरसन के अनुसार, कॉन्शिएंशनेस वह गुण है जो केओस को ऑर्डर में बदलने का काम करता है। जहाँ ओपननेस अज्ञात की ओर खींचता है, वहीं कॉन्शिएंशनेस उस अज्ञात को आकार देने की ताकत देता है।

कॉन्शिएंशनेस वास्तव में क्या है?

कॉन्शिएंशनेस का अर्थ है, काम को समय पर करना, भविष्य को ध्यान में रखकर निर्णय लेना, नियमों और संरचना का सम्मान करना, अपने शब्दों और कर्मों में एकरूपता रखना। पीटरसन बताते हैं कि यह ट्रेट दो हिस्सों में काम करता है। ऑर्डरलीनेस मतलब चीज़ों को व्यवस्थित रखने की प्रवृत्ति और इण्डस्ट्रियसनेस यानी लगातार प्रयास करने की क्षमता। जो व्यक्ति कॉन्शिएंशनेस में ऊँचा होता है, वह प्रेरणा के भरोसे नहीं बैठता। वह जानता है कि प्रेरणा आती-जाती रहती है, लेकिन अनुशासन रोज़ माँगा जाता है।

क्यों यह ट्रेट इतना शक्तिशाली है? पीटरसन कई शोधों का हवाला देते हुए बताते हैं कि कॉन्शिएंशनेस शिक्षा में सफलता की भविष्यवाणी करता है, नौकरी में टिकाऊपन बढ़ाता है और स्वास्थ्य और आयु से भी जुड़ा है। यहाँ उनका एक सीधा-सा तर्क है, जो व्यक्ति आज थोड़ी तकलीफ़ सह लेता है, वह भविष्य की बड़ी तकलीफ़ से बच जाता है। कॉन्शिएंशनेस व्यक्ति काम टालता नहीं। वह जानता है कि टालना केवल समस्या को बड़ा बनाता है। यही कारण है कि ऐसे लोग धीरे-धीरे भरोसेमंद बनते हैं, दूसरों की नज़र में भी और अपनी नज़र में भी।

कॉन्शिएंशनेस की कमी का मनोविज्ञान।

पीटरसन अपने क्लिनिकल अनुभव से बताते हैं कि जिन लोगों में कॉन्शिएंशनेस कम होती है, उनका जीवन अक्सर अव्यवस्थित होता है। वे नियमों से चिढ़ते हैं, जिम्मेदारी से बचते हैं, और असफलता का दोष बाहरी परिस्थितियों पर डालते हैं। धीरे-धीरे यह आदत एक खतरनाक चक्र बन जाती है—अव्यवस्था, असफलता, आत्म-आलोचना और फिर और अधिक पलायन। पीटरसन यहाँ स्पष्ट करते हैं यह आलस्य नहीं है, यह चरित्र की समस्या है। और चरित्र को बदला जा सकता है, लेकिन केवल ईमानदार प्रयास से। एडिक्शन और कॉन्शिएंशनेस, पीटरसन अक्सर बताते हैं कि नशे और अव्यवस्थित जीवन के पीछे कॉन्शिएंशनेस की कमी एक बड़ा कारण होती है। नशा तात्कालिक राहत देता है, जबकि कॉन्शिएंशनेस दीर्घकालिक स्थिरता माँगता है। जो व्यक्ति भविष्य की कल्पना करने और उसके लिए आज काम करने में असमर्थ होता है, वह वर्तमान की पीड़ा से भागने लगता है। पीटरसन इसे नैतिक कमजोरी नहीं, बल्कि अप्रशिक्षित स्वभाव मानते हैं। इसीलिए वे सुधार की शुरुआत बहुत छोटे कदमों से करने की सलाह देते हैं—कमरा ठीक करना, समय पर उठना, छोटे वादे निभाना।

छोटे काम, बड़ा प्रभाव।

पीटरसन का प्रसिद्ध उदाहरण है, “अपने कमरे को ठीक करो।” यह कोई प्रतीकात्मक बात नहीं है। यह कॉन्शिएंशनेस का व्यावहारिक प्रशिक्षण है। जब आप अपने आसपास ऑर्डर बनाते हैं, तो आप अपने मन में भी ऑर्डर बनाना शुरू करते हैं। पीटरसन कहते हैं, आप दुनिया को सुधारने से पहले अपने दायरे को सुधारने के योग्य बनिए। कॉन्शिएंशनेस यहीं से आत्म-सम्मान पैदा करती है। व्यक्ति जानता है कि वह अपने जीवन का बोझ उठा सकता है। अत्यधिक कॉन्शिएंशनेस का खतरा। पीटरसन यह भी साफ़ करते हैं कि हर ट्रेट की तरह कॉन्शिएंशनेस का भी शैडो होता है। अत्यधिक कॉन्शिएंशस व्यक्ति कठोर हो सकता है, परिवर्तन से डर सकता है और नियमों में फँस सकता है। ऐसे लोग ऑर्डर को इतना पकड़ लेते हैं कि केओस से सीखने की क्षमता खो देते हैं। यही कारण है कि पीटरसन बार-बार संतुलन की बात करते हैं। कॉन्शिएंशनेस को ओपननेस के साथ मिलकर काम करना चाहिए।

कॉन्शिएंशनेस और मीनिंग।

पीटरसन के अनुसार मीनिंग उस जीवन में पैदा होता है जहाँ व्यक्ति जानता है कि वह भरोसेमंद है। जब आप अपने वादे निभाते हैं, जब आप कठिन काम से भागते नहीं, तब आप अपने भीतर एक स्थायी आधार बनाते हैं। यह आधार सुख नहीं देता, लेकिन गरिमा देता है। और पीटरसन के अनुसार, गरिमा सुख से कहीं अधिक टिकाऊ होती है।

जिम्मेदारी का बोझ और मानव गरिमा।

पीटरसन कहते हैं कि मानव जीवन पीड़ा से मुक्त नहीं हो सकता। सवाल यह नहीं कि पीड़ा होगी या नहीं, सवाल यह है कि आप उसे कैसे उठाएँगे। कॉन्शिएंशनेस व्यक्ति को यह सिखाती है कि वह स्वेच्छा से बोझ उठाए। जब बोझ स्वेच्छा से उठाया जाता है, तो वह अपमान नहीं बनता, वह अर्थ बन जाता है।

एक्स्ट्रावर्शन—दुनिया के सामने खड़े होने की एनर्जी।

जॉर्डन पीटरसन के लेक्चर्स में एक्स्ट्रावर्शन को अक्सर गलत समझा जाता है। आम तौर पर लोग इसे केवल “बातूनी”, “मिलनसार” या “भीड़ पसंद करने वाला” समझ लेते हैं। पीटरसन इस सरलीकरण को अधूरा मानते हैं। उनके अनुसार एक्स्ट्रावर्शन कहीं ज़्यादा गहरी और शक्तिशाली प्रवृत्ति है, यह उस ऊर्जा से जुड़ी है जिसके सहारे व्यक्ति दुनिया से टकराता है। एक्स्ट्रावर्शन का मूल प्रश्न यह नहीं है कि आप कितना बोलते हैं, बल्कि यह है कि आप दुनिया के सामने कितने साहस से खड़े होते हैं।

एक्स्ट्रावर्शन का वास्तविक अर्थ ? पीटरसन बताते हैं कि एक्स्ट्रावर्शन मुख्य रूप से तीन चीज़ों से जुड़ी होती है—सकारात्मक भावनाओं की तीव्रता, सामाजिक ऐसर्टिवनेस और स्टेटस सीकिंग बिहेवियर। जो व्यक्ति एक्स्ट्रावर्शन में ऊँचा होता है, वह पहल करने से नहीं डरता। वह अवसर को देखता है और आगे बढ़ता है। जोखिम उसे भयभीत नहीं करता, बल्कि सक्रिय करता है। लेकिन पीटरसन यहाँ भी सावधानी बरतते हैं, एक्स्ट्रावर्शन कोई नैतिक श्रेष्ठता नहीं है। यह केवल एक झुकाव है, जिसके अपने लाभ और खतरे दोनों हैं।

स्टेटस हेरारकी और लॉबस्टर लेक्चर।

जॉर्डन पीटरसन का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण लॉबस्टर लेक्चर यहीं आता है। वे बताते हैं कि स्टेटस हेरारकी कोई मानव-निर्मित षड्यंत्र नहीं है, बल्कि जीव-जगत की एक गहरी वास्तविकता है। झींगे से लेकर मनुष्य तक, हर सामाजिक प्राणी किसी न किसी हेरारकी में रहता है। एक्स्ट्रावर्शन उस प्रवृत्ति से जुड़ी है जो व्यक्ति को हेरारकी में ऊपर उठने की कोशिश करने के लिए प्रेरित करती है। पीटरसन कहते हैं, जो व्यक्ति स्टेटस को पूरी तरह नकारता है, वह अक्सर अपनी ही हताशा को छिपा रहा होता है। यह बात असहज लग सकती है, लेकिन पीटरसन इसे मनोवैज्ञानिक ईमानदारी मानते हैं।

हाई एक्स्ट्रावर्शन: शक्ति और जोखिम। हाई एक्स्ट्रावर्शन वाले लोग नेतृत्व में आगे रहते हैं, अवसरों को जल्दी पहचानते हैं और सामाजिक वातावरण में ऊर्जा भर देते हैं लेकिन पीटरसन बताते हैं कि यही गुण अगर अनियंत्रित हो जाए, तो व्यक्ति को लापरवाह बना सकता है। अत्यधिक एक्स्ट्रावर्शन व्यक्ति को इंपल्सिव, अंधा रिस्क और कभी-कभी आक्रामक बना सकती है। ऐसे लोग तुरंत पुरस्कार चाहते हैं। वे भविष्य की कीमत पर वर्तमान का आनंद चुन सकते हैं। इसलिए पीटरसन ज़ोर देते हैं कि एक्स्ट्रावर्शन को कॉन्शिएंशनेस से संतुलित होना चाहिए।

इंट्रोवर्शन: कमजोरी नहीं, गहराई। पीटरसन यह भी स्पष्ट करते हैं कि लो एक्स्ट्रावर्शन, यानी इंट्रोवर्शन, कोई दोष नहीं है। इंट्रोवर्टेड व्यक्ति गहराई से सोचते हैं, एकांत में बेहतर काम करते हैं और जटिल समस्याओं पर लंबे समय तक ध्यान लगा सकते हैं। समस्या तब होती है जब इंट्रोवर्टेड व्यक्ति खुद को ज़बरदस्ती एक्स्ट्रावर्टेड बनाने की कोशिश करता है। पीटरसन के अनुसार, ऐसा करने से व्यक्ति अपनी प्राकृतिक ऊर्जा खो देता है और थकान, चिड़चिड़ापन तथा आत्म-संदेह में फँस जाता है। एक्स्ट्रावर्शन और इंट्रोवर्शन के बीच कोई युद्ध नहीं है। यह केवल अलग-अलग रास्ते हैं दुनिया से जुड़ने के।

एक्स्ट्रावर्शन और सामाजिक टकराव। पीटरसन बताते हैं कि एक्स्ट्रावर्शन व्यक्ति को टकराव से भागने नहीं देती। जहाँ एग्रीएबलनेस टकराव से बचने की प्रवृत्ति रखती है, वहीं एक्स्ट्रावर्शन व्यक्ति को अपनी बात रखने का साहस देती है। जो व्यक्ति अपनी आवाज़ का उपयोग नहीं करता, वह धीरे-धीरे अदृश्य हो जाता है। और जो व्यक्ति अदृश्य हो जाता है, उसके भीतर रिसेंटमेंट पनपने लगता है। पीटरसन मानते हैं कि समाज में स्वस्थ संवाद के लिए एक्स्ट्रावर्शन का होना आवश्यक है, भले ही वह सीमित रूप में ही क्यों न हो।

आधुनिक समाज और एक्स्ट्रावर्शन का भ्रम।

पीटरसन यह भी कहते हैं कि आधुनिक संस्कृति ने एक्स्ट्रावर्शन को ज़रूरत से ज़्यादा महिमामंडित किया है। हर किसी से अपेक्षा की जाती है कि वह आत्मविश्वासी हो, मंच पर बोले, नेटवर्क बनाए। यह अपेक्षा इंट्रोवर्टेड लोगों के लिए अनावश्यक दबाव पैदा करती है। उनके अनुसार समस्या एक्स्ट्रावर्शन में नहीं, बल्कि एक ही पर्सनालिटी मॉडल को सब पर थोपने में है। हर व्यक्ति को वही भूमिका निभानी चाहिए जो उसकी प्रकृति के अनुकूल हो।

एक्स्ट्रावर्शन और मीनिंग। पीटरसन के अनुसार मीनिंग तब पैदा होता है जब व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार दुनिया से जुड़ता है। एक्स्ट्रावर्टेड व्यक्ति के लिए मीनिंग अक्सर एक्शन, नेतृत्व और सामाजिक सहभागिता से आता है। इंट्रोवर्टेड व्यक्ति के लिए मीनिंग गहराई, कौशल और एकांत साधना से। समस्या मीनिंग की कमी से नहीं, बल्कि गलत रास्ता चुनने से पैदा होती है।

एक्स्ट्रावर्शन का शैडो।

हर ट्रेट का एक शैडो होता है। एक्स्ट्रावर्शन का शैडो है, अहंकार। पीटरसन बताते हैं कि जो व्यक्ति केवल अपनी आवाज़ सुनता है, वह धीरे-धीरे दूसरों को सुनना बंद कर देता है। यह स्थिति सामाजिक पतन और व्यक्तिगत अकेलेपन की ओर ले जाती है। इसीलिए पीटरसन ह्यूमिलिटी की बात करते हैं, एक्स्ट्रावर्शन को विनम्रता से बाँधना आवश्यक है।

साहस और जिम्मेदारी। पीटरसन के अनुसार एक्स्ट्रावर्शन का सर्वोच्च रूप वह नहीं है जो व्यक्ति को चमकदार बनाता है, बल्कि सिर्फ़ बोलना साहस नहीं है। सही समय पर, सही बात कहना साहस है। और उसके परिणाम सहना, यह जिम्मेदारी है।

एग्रीएबलनेस— करुणा, सीमा और भीतर पलता रिसेंटमेंट। जॉर्डन पीटरसन के लेक्चर्स में एग्रीएबलनेस शायद सबसे ज़्यादा गलत समझा गया ट्रेट है। आम तौर पर इसे "अच्छा इंसान होना", "सबसे बनाकर रखना" या "टकराव से बचना" मान लिया जाता है। पीटरसन इस सरल व्याख्या से संतुष्ट नहीं हैं।

उनके अनुसार एग्रीएबलनेस एक गहरी मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति है, जिसके भीतर करुणा भी है और आत्म-विनाश का खतरा भी। पीटरसन का तर्क सीधा है, दयालु होना अच्छा है, लेकिन हर कीमत पर दयालु होना खतरनाक है।

एग्रीएबलनेस वास्तव में क्या है?

एग्रीएबलनेस का अर्थ है, दूसरों की भावनाओं के प्रति संवेदनशीलता, सहयोग करने की प्रवृत्ति और सामाजिक सौहार्द बनाए रखने की इच्छा। हाई एग्रीएबलनेस वाले लोग झगड़े से बचते हैं, दूसरों को प्राथमिकता देते हैं और रिश्तों में नरमी रखते हैं। समाज को चलाने के लिए ऐसे लोगों की ज़रूरत होती है। पीटरसन मानते हैं कि अगर एग्रीएबलनेस न हो, तो समाज लगातार संघर्ष में डूबा रहेगा। लेकिन यहीं से समस्या भी शुरू होती है।

कम्पैशन बनाम पोलाइटनेस।

पीटरसन एग्रीएबलनेस को समझाते समय एक महत्वपूर्ण भेद करते हैं, कम्पैशन और पोलाइटनेस का। कम्पैशन का अर्थ है, दूसरे के कष्ट को समझना और उसे कम करने की ईमानदार कोशिश करना। पोलाइटनेस का अर्थ है, टकराव के डर से सच न बोल पाना। हाई एग्रीएबलनेस वाले कई लोग पोलाइट होते हैं, कंपैशनेट नहीं। वे “हाँ” कहते हैं, जबकि भीतर से “न” कहना चाहते हैं। पीटरसन के अनुसार, यही स्थिति धीरे-धीरे रिसेंटमेंट को जन्म देती है।

रिसेंटमेंट, छिपा हुआ ज़हर। पीटरसन रिसेंटमेंट को सबसे खतरनाक भावनाओं में से एक मानते हैं। ऐग्रीएबल व्यक्ति जब बार-बार अपनी सीमाएँ तोड़ता है, तब वह बाहर से शांत दिखता है, लेकिन भीतर एक कड़वाहट जमा होती रहती है। यह कड़वाहट धीरे-धीरे निष्क्रिय आक्रोश बनती है फिर आत्म-दया में बदलती है और अंततः संबंधों को ज़हरीला कर देती है। पीटरसन कहते हैं जो व्यक्ति समय पर “न” नहीं कह पाता, वह देर से और ज़ोर से “न” कहता है। और वह “न” अक्सर विनाशकारी होती है।

एग्रीएबलनेस और शक्ति का प्रश्न।

पीटरसन का एक असहज लेकिन ईमानदार विचार यह है कि एग्रीएबलनेस अक्सर शक्ति से जुड़ा होता है। जो व्यक्ति कमजोर होता है, वह ज़्यादा ऐग्रीएबल बनने की कोशिश करता है, ताकि टकराव से बच सके। लेकिन पीटरसन यहाँ सावधानी देते हैं, एग्रीएबलनेस अगर भय से निकली हो, तो वह नैतिक गुण नहीं रह जाती। वह केवल रणनीति बन जाती है। सच्ची करुणा वहीं से शुरू होती है जहाँ व्यक्ति के पास “खतरनाक बनने” की क्षमता हो, लेकिन वह उसे नियंत्रित करता है।

एसर्टिवनेस की आवश्यकता।

पीटरसन बार-बार ऐसर्टिवनेस की बात करते हैं। ऐसर्टिवनेस का अर्थ आक्रामक होना नहीं है। इसका अर्थ है अपनी सीमाएँ स्पष्ट करना, अपनी बात शांत लेकिन दृढ़ता से रखना और गलत के सामने चुप न रहना। हाई एग्रीएबलनेस वाले व्यक्ति को यह सीखना पड़ता है। नहीं तो वह दूसरों की अपेक्षाओं के नीचे दब जाता है। पीटरसन के अनुसार, सीमा के बिना करुणा आत्म-विनाश बन जाती है।

जेंडर डिफरेंस और सावधानी। पीटरसन लेक्चर्स में यह भी बताते हैं कि औसतन महिलाएँ एग्रीएबलनेस में पुरुषों से अधिक होती हैं। यह अवलोकन सांख्यिकीय है, नैतिक निर्णय नहीं। वे बार-बार स्पष्ट करते हैं कि हर व्यक्ति अलग होता है। लेकिन इसका सामाजिक प्रभाव होता है। हाई एग्रीएबलनेस वाली महिलाएँ अक्सर कार्यस्थल पर शोषण का शिकार होती हैं, कम वेतन, अधिक अपेक्षाएँ, और सीमाओं की अनदेखी। पीटरसन इसे बदलने के लिए किसी क्रांति की बात नहीं करते। वे कहते हैं व्यक्ति को अपनी प्रकृति समझकर रणनीतिक रूप से मज़बूत बनना चाहिए।

एग्रीएबलनेस और झूठी शांति। पीटरसन का एक और महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि एग्रीएबलनेस कभी-कभी झूठी शांति पैदा करता है। लोग टकराव से बचते हैं, लेकिन समस्या हल नहीं होती। वह दबकर और बड़ी हो जाती है। परिवारों में, दफ्तरों में, समाज में कई बार सबसे बड़ा विस्फोट लंबे समय की चुप्पी का परिणाम होता है। पीटरसन मानते हैं कि सच्ची शांति संघर्ष से भागने से नहीं, संघर्ष को ईमानदारी से संभालने से आती है।

एग्रीएबलनेस और नैतिक साहस । पीटरसन एग्रीएबलनेस को नैतिक साहस से जोड़ते हैं। सच्चा ऐग्रीएबल व्यक्ति वह नहीं जो हर बात मान ले, बल्कि वह है जो संबंध बचाने के लिए कठिन सच बोल सके। यह साहस आसान नहीं है। यह असुविधा लाता है। लेकिन दीर्घकाल में यही संबंधों को बचाता है।

शैडो का सामना।

एग्रीएबलनेस का शैडो है, निष्क्रिय आक्रोश। पीटरसन कहते हैं कि अगर आप अपने भीतर के इस शैडो को नहीं पहचानते, तो वह आपको नियंत्रित करने लगता है। आप खुद को "अच्छा इंसान" मानते रहते हैं, लेकिन आपके व्यवहार में ताने, कटाक्ष और दूरी बढ़ती जाती है। शैडो से भागना नहीं, उसे पहचानना ज़रूरी है।

एग्रीएबलनेस और मीनिंग।

पीटरसन के अनुसार मीनिंग वहाँ पैदा होता है जहाँ व्यक्ति सत्य और करुणा दोनों को साथ लेकर चलता है। केवल करुणा व्यक्ति को तोड़ देती है, और केवल सत्य व्यक्ति को कठोर बना देता है। एग्रीएबलनेस का संतुलित रूप व्यक्ति को यह सिखाता है कि कब झुकना है और कब खड़ा होना है। यही संतुलन संबंधों में गहराई लाता है।

न्यूरोटिसिज्म—भय, पीड़ा और अर्थ की खोज।

जॉर्डन पीटरसन के लेक्चर्स में न्यूरोटिसिज्म को सबसे संवेदनशील और सबसे अधिक गलत समझा गया ट्रेट माना गया है। अक्सर लोग इसे "कमज़ोरी", "नकारात्मकता" या "बीमारी" मान लेते हैं। पीटरसन इस धारणा को अधूरी और कभी-कभी क्रूर भी मानते हैं। उनके अनुसार न्यूरोटिसिज्म कोई दोष नहीं, बल्कि खतरे के प्रति संवेदनशीलता है, एक ऐसी संवेदनशीलता जो मानव अस्तित्व के साथ जुड़ी हुई है। पीटरसन कहते हैं कि अगर मानव के भीतर भय, चिंता और सतर्कता न होती, तो वह जीवित ही न रह पाता। समस्या न्यूरोटिसिज्म के होने में नहीं, समस्या उसके अनियंत्रित हो जाने में है।

न्यूरोटिसिज्म वास्तव में क्या है? न्यूरोटिसिज्म का संबंध है नकारात्मक भावनाओं की तीव्रता से, खतरे को जल्दी पहचानने की प्रवृत्ति से, चिंता, भय और उदासी की गहराई से। हाई न्यूरोटिसिज्म वाले व्यक्ति चीज़ों को जल्दी खतरे के रूप में देखते हैं, भविष्य के बारे में ज़्यादा सोचते हैं और छोटी समस्याओं को भी गंभीर रूप से महसूस करते हैं। पीटरसन बताते हैं कि इवॉल्यूशनरी दृष्टि से यह ट्रेट बहुत उपयोगी रहा है। जो व्यक्ति खतरे को जल्दी पहचान लेता था, उसके बचने की संभावना अधिक होती थी। इसलिए न्यूरोटिसिज्म मानव स्वभाव में गहराई से बैठा हुआ है। न्यूरोटिसिज्म और आधुनिक जीवन। पीटरसन मानते हैं कि आधुनिक दुनिया न्यूरोटिसिज्म को और बढ़ा देती है। सूचना की अधिकता, अनिश्चित भविष्य, और लगातार तुलना—ये सब हाई न्यूरोटिसिज्म वाले व्यक्ति के लिए मानसिक बोझ बन जाते हैं। ऐसा व्यक्ति हर निर्णय में डर खोज लेता है, हर गलती को अंत मान लेता है और धीरे-धीरे कार्रवाई से बचने लगता है। पीटरसन इसे "थ्रेट इन्फ्लेशन" कहते हैं, जहाँ दिमाग हर दिशा में खतरा ही खतरा देखने लगता है। एंजाइटी और डिप्रेशन का रास्ता। पीटरसन अपने क्लिनिकल अनुभव से बताते हैं कि हाई न्यूरोटिसिज्म अक्सर एंजाइटी और डिप्रेशन से जुड़ जाती है। व्यक्ति भविष्य की पीड़ा को पहले ही जी लेता है। वह बार-बार उन स्थितियों की कल्पना करता है जो शायद कभी हों ही नहीं। यह मानसिक अभ्यास व्यक्ति को थका देता है। धीरे-धीरे वह कहने लगता है, "कुछ भी करने का क्या फ़ायदा?" यहीं से अवसाद का रास्ता खुलता है। न्यूरोटिसिज्म को दबाना समाधान नहीं है । पीटरसन एक महत्वपूर्ण चेतावनी देते हैं, न्यूरोटिसिज्म को दबाने की कोशिश अक्सर उल्टा असर करती है। जो व्यक्ति अपने डर को स्वीकार नहीं करता, वह उसे तर्कहीन तरीकों से बाहर निकालता है—कभी गुस्से में, कभी पलायन में, कभी आत्म-दोष में। पीटरसन के अनुसार पहला कदम डर को मान्यता देना है। यह स्वीकार करना कि, "हाँ, मैं चीज़ों को ज़्यादा गहराई से महसूस करता हूँ।" यह स्वीकारोक्ति कमजोरी नहीं, समझदारी है।

मीनिंगफुल रिस्पांसिबिलिटी; पीटरसन का उत्तर।

पीटरसन न्यूरोटिसिज्म का इलाज सुख या सकारात्मक सोच में नहीं ढूँढते। वे एक कठिन लेकिन स्थायी समाधान देते हैं—मीनिंगफुल रिस्पांसिबिलिटी। उनके अनुसार जब व्यक्ति किसी सार्थक उद्देश्य से जुड़ता है, जब वह स्वेच्छा से जिम्मेदारी उठाता है, तब उसकी पीड़ा दिशा पा लेती है। पीड़ा समाप्त नहीं होती, लेकिन वह सहने योग्य बन जाती है। पीटरसन कहते हैं, जो व्यक्ति जानता है कि वह किस लिए कष्ट सह रहा है, वह कष्ट से टूटता नहीं।

छोटे कदमों की रणनीति।

हाई न्यूरोटिसिज्म वाले व्यक्ति के लिए पीटरसन बहुत व्यावहारिक सलाह देते हैं। बड़े लक्ष्य मत बनाइए, बहुत छोटे, ठोस कदम चुनिए, आज का काम आज पूरा कीजिए। जब व्यक्ति छोटे वादे निभाता है, तो उसका दिमाग यह सीखता है कि "मैं अपने जीवन को संभाल सकता हूँ।" यहीं से आत्म-विश्वास का बीज पड़ता है।

न्यूरोटिसिज्म और सच्चाई।

पीटरसन न्यूरोटिसिज्म को सच्चाई से भी जोड़ते हैं। डर अक्सर इस बात का संकेत होता है कि कहीं कुछ गलत है। लेकिन हर डर सत्य नहीं होता। इसलिए वे कहते हैं, डर को सुनिए लेकिन उसके गुलाम मत बनिए। सत्य का सामना करने का साहस न्यूरोटिक व्यक्ति के लिए कठिन होता है, लेकिन वही उसे मुक्त करता है।

शैडो और साहस।

न्यूरोटिसिज्म का शैडो है, पलायन। जब डर हावी हो जाता है, तो व्यक्ति जीवन से पीछे हटने लगता है। पीटरसन इसे सबसे खतरनाक स्थिति मानते हैं, क्योंकि यहीं से व्यक्ति मीनिंग खो देता है। साहस का अर्थ डर का न होना नहीं, साहस का अर्थ है, डर के बावजूद सही कदम उठाना।

पर्सनालिटी, रिस्पॉन्सिबिलिटी और "रिमार्केबल लाइफ" अब, जब पाँचों ट्रेट सामने आ चुके हैं, पीटरसन का पूरा ढांचा स्पष्ट है। ओपननेस टू एक्सपीरियंस हमें अज्ञात की ओर ले जाता है। कॉन्शिएंशनेस उस अज्ञात को आकार देता है। एक्स्ट्रावर्शन हमें दुनिया से टकराने की ऊर्जा देता है। एग्रीएबलनेस हमें दूसरों से जोड़ता है। न्यूरोटिसिज्म हमें खतरे के प्रति सचेत रखता है। ये ट्रेट अच्छे या बुरे नहीं हैं। ये तथ्य हैं। पीटरसन की मूल बात यही है कि अगर आप अपने ट्रेट को समझते हैं, तो आप अपने जीवन की ज़िम्मेदारी उठा सकते हैं। और अगर आप ज़िम्मेदारी उठाते हैं, तो आप मीनिंग की ओर बढ़ते हैं। यहीं से उनका वह वाक्य जन्म लेता है, "I am morally obligated to do remarkable things." यह किसी महानता का दावा नहीं है। यह स्वीकारोक्ति है कि आपकी क्षमता आपकी निजी संपत्ति नहीं, आपकी समझ आपकी जिम्मेदारी है और आपका जीवन हल्के में लेने की चीज़ नहीं। रिमार्केबल जीवन का अर्थ असाधारण होना नहीं, बल्कि ईमानदार होना है—अपने स्वभाव के प्रति, अपने दायित्व के प्रति, और अपनी सच्चाई के प्रति।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उच्च शिक्षा के विशेष संदर्भ

श्री मनोज कुमार
सहायक प्राध्यापक

प्रस्तावना -

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020), जिसे 29 जुलाई 2020 को भारत के केन्द्रीय मंत्रिमण्डल द्वारा अनुमोदित किया गया था, भारत की नई शिक्षा प्रणाली के दृष्टिकोण को रेखांकित करती है। नई शिक्षा नीति 2020 ने पिछली राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की जगह ले ली है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्राथमिक शिक्षा से उच्च शिक्षा के साथ- साथ ग्रामीण और शहरी भारत दोनों में व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए एक व्यापक रूपरेखा तैयार करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य 2021 तक भारत की शिक्षा प्रणाली को बदलना है और यह नीति 2020 भारत को बदलने में सीधे प्रकार से योगदान प्रदान करती है और भारतीय लोकाचार में निहित शिक्षा प्रणाली को देखती है। इसका उद्देश्य धर्म, लिंग, जाति या पंथ के किसी भी भेदभाव के बिना, सभी को बढ़ने और विकसित होने के लिए एक समान मंच प्रदान करना और सभी को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करके मौजूदा जीवंत ज्ञान समाज को बनाए रखना और उसकी देखभाल करता है। यह भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाने की दिशा में भी एक कदम है। इस नीति में यह परिकल्पना की गई है कि हमारे संस्थानों के समान पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र को, छात्रों में मौलिक कर्तव्यों के प्रति सम्मान की भावना पैदा करनी चाहिए और संवैधानिक मूल्यों, अपने देश और एक बदलती दुनिया के साथ एक संबंध पैदा करना चाहिए। इस नीति का दृष्टिकोण शिक्षार्थियों के बीच ज्ञान, कौशल, आत्मविश्वास, बुद्धि और कर्म के साथ न केवल विचार बल्कि मूल्यों और दृष्टिकोणों में भी विकास करना है,जो मानव अधिकारों, सतत विकास और जीवन का समर्थन करते हैं और वैश्विक कल्याण के लिए एक जिम्मेदार प्रतिबद्धता, जिससे वास्तव में एक वैश्विक नागरिक प्रतिबिंबित होता है।

गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा का उद्देश्य, ऐसे व्यक्तियों का विकास करना होना चाहिए जो उत्कृष्ट, विचारशील और अच्छी रचनात्मक प्रवृत्ति के हों। यह एक व्यक्ति को रूचि के एक या एक से अधिक विशिष्ट जैसे विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी, भाषा, व्यक्तिगत तकनीकी, व्यावसायिक विषयों सहित क्षेत्रों में गहराई से अध्ययन करने और चरित्र, नैतिक और संवैधानिक मूल्यों, बौद्धिक जिज्ञासा,वैज्ञानिक स्वभाव, रचनात्मकता, सेवा भावना और 21वीं सदी के कौशल को आवश्यक सीमा तक विकसित करने में सक्षम बनाती है। नई शिक्षा नीति वर्तमान प्रणाली में कुछ मौलिक परिवर्तन लाती है और इसमें मुख्य आकर्षक बहु-विषयक विश्वविद्यालय और कॉलेज हैं, जिसमें प्रत्येक जिले में या उसके पास कमसे कम एक छात्र पाठ्यक्रम, शिक्षाशास्त्र, बेहतर छात्र अनुभव के लिए मूल्यांकन और समर्थन, एक महत्वपूर्ण प्रतिष्ठान शामिल है। नेशनल रिसर्च फाउंडेशन विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में उत्कृष्ट सहकर्मी-समीक्षा कार्य और प्रभावी ढंग से अध्ययन का समर्थन करेगी।

नई शिक्षा नीति 2020 पाँच स्तम्भों पर केंद्रित है: वहनीयता, अभिगम्यता, गुणवत्ता, न्यायपरस्ता और जवाबदेही –निरंतर सीखने की प्रक्रिया को सुनिश्चित करने के लिए। इसे समाज और अर्थव्यवस्था में ज्ञान की मांग के रूप में नागरिकों की जरूरतोंके अनुरूप तैयार किया गया है, जिससे नियमित आधार पर नए कौशल हासिल करने की आवश्यकता को पूरा किया जा सकता है। इस प्रकार, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना और सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसर पैदा करना, संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्य 2020 में सूचीबद्ध पूर्ण और उत्पादक रोजगार और अच्छे काम की ओर अग्रसर होना, नई शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य है। नई शिक्षा नीति 2020 में पिछली राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 स्कूल और 2040 तक भारत में प्राथमिक और उच्च शिक्षा दोनों को बदलने के लिए एक व्यापक ढांचा तैयार किया है। नई शिक्षा नीति 2020 स्कूल और उच्च शिक्षा दोनों में महत्वपूर्ण सुधारों की मांग करती है जो अगली पीढ़ी को आगे बढ़ने के लिए तैयार करती हैं जिससे वो नए डिजिटल युग में प्रतिस्पर्धा कर सके। इस प्रकार, नई शिक्षा नीति बहु-विषयकता, डिजिटल साक्षरता, लिखित संचार, समस्या - समाधान, तार्किक तर्क और व्यावसायिक प्रदर्शन पर अत्यधिक प्रभाव डालती है।

मूल शब्द: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, डिजिटल युग, शिक्षार्थियों, ज्ञान, शिक्षा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 उच्च शिक्षा में सुधार

यह नीति ग्रामीण और शहरी भारत दोनों में प्राथमिक शिक्षा से उच्च शिक्षा के साथ-साथ व्यावसायिक प्रशिक्षण में परिवर्तन काल के लिए एक व्यापक ढांचा है। इस नीति का उद्देश्य 2021 तक भारत की शिक्षा प्रणाली को बदलना है। नई शिक्षा नीति को स्कूल स्तर से विश्वविद्यालय स्तर तक

प्रणाली में औपचारिक परिवर्तनों को औपचारिक रूप देने के उद्देश्य से पेश किया गया है। बदलते परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए, अब से शैक्षिक सामग्री प्रमुख अवधारणाओं, विचारों, अनुप्रयोगों और समस्या -समाधान के कोणों पर ध्यान केंद्रित करेगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति से देश की उच्च शिक्षा प्रणाली पर सकारात्मक और दीर्घकालिक प्रभाव पड़ने की उम्मीद है। यह तथ्य है कि विदेशी विश्वविद्यालयों को भारत में परिसर खोलने की अनुमति है, सरकार की एक सराहनीय पहल है। इससे छात्रों को अपने देश में शिक्षा के समय गुणवत्ता का अनुभव करने में मदद मिलेगी। बहु-विषयक संस्थान शुरू करने की नीति कला, मानविकी जैसे सभी क्षेत्रों में नए सिरे से ध्यान केंद्रित करेगी और शिक्षा के इस रूप से छात्रों को सीखने और समग्र रूप से विकसित होने में मदद मिलेगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उच्च शिक्षा

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में 2020 तक सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) को मौजूदा 26 प्रतिशत से बढ़ाकर 50 प्रतिशत करने के लिए एनईपी 2020 की कल्पना की गई थी। इसका उद्देश्य मुक्त और दूरस्थ शिक्षा, ऑनलाइन शिक्षा और शिक्षा में प्रौद्योगिकी के उपयोग को बढ़ाने के लिए बुनियादी ढाँचे को मजबूत करके छात्रों के समग्र व्यक्तित्व का निर्माण करना है।

इसके अलावा, देश में अनुसंधान कार्य को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (एनआरएफ) की स्थापना की जाएगी। भारतीय उच्च शिक्षा परिषद (एचईसीआई) में विभिन्न भूमिकाओं को पूरा करने के लिए कई कार्य क्षेत्र होंगे। सभी सरकारी भर्ती परीक्षाओं के लिए एक राष्ट्रीय भर्ती एजेंसी और समान स्तर की विभिन्न भर्ती परीक्षाओं के लिए एक सामान्य पात्रता परीक्षा (सीईटी) स्थापित करने के प्रयास किए जाएंगे।

इसके अलावा, विषयों में पाठ्यक्रम और कार्यक्रम, जैसे कि इंडोलॉजी, भारतीय भाषाएँ, चिकित्सा की आयुष प्रणाली, योग, कला, संगीत, इतिहास, संस्कृति और आधुनिक भारत, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और उससे आगे के अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रासंगिक पाठ्यक्रम, सार्थक अवसर वैश्विक गुणवत्ता मानकों के इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सामाजिक जुड़ाव, गुणवत्ता आवासीय सुविधाओं और परिसर में समर्थन आदि को बढ़ावा दिया जाएगा।

उच्च शिक्षा में प्रत्यायन

उच्च शिक्षा के नियामक तंत्र में अन्य प्रमुख कार्यों के बीच एक स्वतंत्र निकाय द्वारा संचालित "मान्यता" होगी। संस्थानों के पास ओपन डिस्टेंस लर्निंग (ओडीएल) और ऑनलाइन कार्यक्रम चलाने का विकल्प होगा, बशर्ते वे ऐसा करने के लिए मान्यता प्राप्त हों; अपनी पेशकशों को बढ़ाने, पहुँच में सुधार करने, जीईआर बढ़ाने और आजीवन सीखने के अवसर प्रदान करने के लिए।

लर्निंग सर्विस प्रोवाइडर की विश्वसनीयता में सुधार के लिए प्रत्यायन योजना को राष्ट्रीय शिक्षा और प्रशिक्षण बोर्ड, भारतीय गुणवत्ता परिषद द्वारा औद्योगिक संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग (वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार) के तहत विकसित किया गया है। प्रत्यायन प्रबंधन प्रणाली (तीन आयाम : हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर, ह्यूमनवेयर और स्किनवेयर) आदि ।

साइबर सुरक्षा में शिक्षा और कौशल

विश्व आर्थिक मंच 2021 की वैश्विक जोखिम रिपोर्ट 2021 के अनुसार, "साइबर सुरक्षा विफलता" दुनिया के लिए चौथा सबसे महत्वपूर्ण खतरा है। जैसा कि चल रही महामारी के कारण शिक्षा और अध्ययन पहले ही साइबर स्पेस में चली गई है, प्रत्येक व्यक्ति की गोपनीयता और सुरक्षा की रक्षा करना, अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है। इस प्रकार, चूँकि डिजिटलीकरण को अपनाना केंद्र स्तर पर है, इसलिए हमारे नेटवर्क और साइबरस्पेस को सुरक्षित बनाना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस वर्तमान परिदृश्य में, यह प्रासंगिक हो जाता है कि "साइबर सुरक्षा लचीलापन" के लिए क्षमता निर्माण को प्रमुख महत्व दिया जाता है और सीखने की धारा के बावजूद उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम में शामिल किया जाता है।

उच्च शिक्षा में अनुसंधान और नवाचार

नई शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख क्षेत्रों में से एक सरकारी और नीजी क्षेत्रों से उच्च अनुसंधान एवं विकास निवेश को प्रोत्साहित करना है। इससे इनोवेशन और इनोवेटिव माइंडसेट को बढ़ावा मिलेगा। इसे सुगम बनाने के लिए उद्योग आधारित कौशल के लिए एक मजबूत उद्योग प्रतिबद्धता और

शिक्षा जगत के साथ घनिष्ठ हस्तक्षेप की आवश्यकता है। इसके अलावा, "बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर)" के बारे में ज्ञान बढाने और इससे लाभ प्रदान करने के लिए इसके संरक्षण के लिए कौशल को विकसित करना प्रासंगिक हो जाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा प्रौद्योगिकी मंच (एनईटीएफ)

नई शिक्षा नीति 2020 के तहत स्थापित किए जाने के लिए परिकल्पित एनईटीएफ सही दिशा में एक कदम है। शिक्षण वितरण के सभी आयामों में गुणवत्ता वाले एड-टेक उपकरण शैक्षणिक संस्थानों को जल्दी से अनुकूलित करने में मदद करेंगे। साइबर सुरक्षा मानकों का पालन करने, फायरवॉल की अपनाने और घुसपैठ का पता लगाने वाले सिस्टम (आईडीएस) के अलावा "गोपनीयता और सुरक्षा" सुनिश्चित करने के लिए अंतर्निहित साइबर सुरक्षा लचीलेपन के साथ "ओपन-सोर्स डेवलपमेंट प्लेटफॉर्म" पर स्वदेशी एड-टेक टूल को होस्ट करने की आवश्यकता है। यह प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत गोपनीयता की रक्षा करेगा।

उपसंहार

अंत में सम्पूर्ण अध्ययन करने के पश्चात् यह कहा जा सकता है की नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शिक्षा रटने वाले विषयों, समय सीमा को पूरा करने और अंक प्राप्त करने से कहीं अधिक है, लेकिन शिक्षा का वास्तविक अर्थ ज्ञान, कौशल, मूल्यों की प्राप्त करना और उस क्षेत्र में निरंतर कार्य करना और प्रगति करना है, जिसमें व्यक्ति अपनी रूचि खोज करता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि अगर नई शिक्षा नीति 2020 को सही तरीके से लागू किया जाए तो यह भारतीय शिक्षा की नई ऊँचाइयों पर ले जा सकती है। हालाँकि इसके कुछ उद्देश्यों में लक्ष्यों की स्पष्टता का अभाव है, लेकिन हम वास्तव में इसका न्याय तबतक नहीं कर सकते जब तक कि इसकी लिखित योजनाएँ क्रिया में ना आ जाएँ। हम केवल सर्वोत्तम परिणामों की आशा कर सकते हैं, आखिरकार, यह छात्रों के समग्र विकास और प्रगति को ध्यान में रखते हुए लाई गयी है।

सन्दर्भ सूची

1. https:// www.mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/nep | NEP - Final - English-pdf referred on 10/08/2020.
2. https://innovate.mygov.in/wpcontent/uploads/2019/06/mygov_15596510111.pdf 3. National Education Policy 2020.
3. Kumar, K. (2005). Quality of Education at the Beginning of the 21st Century: Lessons from India. Indian Educational Review 2. Draft National Education Policy 2019.
4. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf.
5. https://en.wikipedia.org/wiki/National Education policy 2020.
6. Puri, Natasha (30 August 2019). A Review of the National Education Policy of the Government of India – The Need for Data and Dynamism in the 21st Century. SSRN.
7. Vedhathiri, Thanikachalam (January 2020), "Critical Assessment of Draft Indian National Education Policy 2019 with Respect to National Institutes of Technical Teachers Training and Research," Journal of Engineering Education, 33.
8. https://mgmu.ac.in/wp-content/uploads/NEP_Indias-New-Education-Policy-2020-final.pdf.
9. http://s3-ap-southeast-1.amazonaws.com/ijmer/pdf/Volume10/Volume10-issue2(5)/33.pdf.

Investigating the Role of Interactive Storytelling in Teaching Complex Scientific Concepts

Dr. Md. Nezamuddin
Assistant Professor

Abstract

This research investigates the effectiveness of interactive storytelling as a pedagogical tool for teaching complex scientific concepts to secondary school students in Darbhanga district, Bihar. The study compares student comprehension, retention and engagement levels when taught through interactive storytelling versus traditional lecture-based methods. A quasi-experimental design was employed, involving 120 students from four secondary schools, with assessments including pre-tests, post-tests and delayed retention tests. Results reveal significant improvements in conceptual understanding, long-term retention and student engagement through interactive storytelling. The findings suggest that narrative-based pedagogy can effectively bridge the gap between abstract scientific ideas and student comprehension, especially in resource-constrained educational settings.

Keywords: Interactive Storytelling, Comprehension, Retention, Engagement, Narrative-Based Pedagogy, Resource-Constrained Settings.

Introduction:

Science education in India faces persistent challenges in making complex concepts accessible and engaging for students, particularly in rural and semi-urban districts. Darbhanga district in Bihar represents a typical educational landscape where traditional teaching methodologies dominate classroom practices, often resulting in rote memorization rather than genuine conceptual understanding. The National Education Policy (NEP) 2020 emphasizes experiential learning and conceptual clarity, calling for innovative pedagogical approaches that can transform science education.

Complex scientific concepts such as photosynthesis, atomic structure, cellular respiration and electromagnetic induction often appear abstract and disconnected from students lived experiences. Traditional textbook-based instruction frequently fails to create meaningful connections between these concepts and real-world phenomena. Interactive storytelling offers a potential solution by embedding scientific concepts within relatable narratives, providing context and creating emotional engagement that enhances memory formation and conceptual understanding.

The cognitive benefits of narrative-based learning are well-documented in educational research. Stories activate multiple brain regions, engaging both analytical and emotional processing centers. When students encounter scientific concepts embedded in narratives, they naturally employ inference-making, causal reasoning and predictive thinking—all essential skills for scientific literacy. Furthermore, the interactive component adds a layer of agency that transforms passive recipients into active explorers of scientific principles.

In the context of Darbhanga district, where educational resources are often limited and teacher-student ratios remain high, interactive storytelling presents a scalable solution that does not require expensive equipment or extensive infrastructure. Teachers can implement narrative-based approaches using simple props, role-playing activities and structured discussions, making it an accessible innovation for resource-constrained settings.

Research Objectives:

This study was designed to achieve the following specific objectives:

Objective 1: To assess the effectiveness of interactive storytelling in enhancing students' conceptual understanding of complex scientific concepts compared to traditional lecture-based teaching methods.

Objective 2: To evaluate the impact of interactive storytelling on long-term retention of scientific concepts among secondary school students in Darbhanga district.

Objective 3: To examine the influence of interactive storytelling on student engagement levels and attitudes toward science learning.

Research Hypotheses:

Based on the literature review and theoretical framework, the following hypotheses were formulated:

H_1: Students taught through interactive storytelling will demonstrate significantly higher conceptual understanding of complex scientific concepts compared to students taught through traditional lecture-based methods.

H_2: Interactive storytelling will result in significantly better long-term retention of scientific concepts compared to traditional teaching approaches, as measured by delayed post-tests administered four weeks after instruction.

H_3: Students exposed to interactive storytelling will exhibit significantly higher engagement levels and more positive attitudes toward science learning compared to students in the control group.

Methodology:

1.Research Design

This study employed a quasi-experimental pretest-posttest control group design. The quasi-experimental approach was chosen due to practical constraints in randomly assigning students across existing classroom structures. The research was conducted over a period of eight weeks during the academic session 2024-2025.

2. Sample Selection

The study sample comprised 120 students (ages 13-15 years) from four government secondary schools in Darbhanga district. Schools were selected using purposive sampling based on similar socioeconomic backgrounds, comparable academic performance levels and willingness to participate. Two schools were randomly assigned to the experimental group (n=60) and two to the control group (n=60). Gender distribution was balanced across both groups, with 48% female and 52% male students.

3. Intervention

The experimental group received instruction on four complex scientific concepts through interactive storytelling over six weeks. Each concept was taught through a carefully designed narrative that embedded scientific principles within relatable scenarios. For example, photosynthesis was taught through a story of a village facing food shortages, where students role-played as scientists helping farmers understand plant nutrition. Atomic structure was explored through a journey-narrative where students "traveled" through matter at different scales.

Each interactive storytelling session lasted 60 minutes and included:

- Narrative introduction with contextual setup (10 minutes)
- Interactive exploration where students made decisions affecting story outcomes (25 minutes)
- Collaborative problem-solving within the narrative framework (15 minutes)
- Reflection and concept consolidation (10 minutes)

The control group received traditional lecture-based instruction on the same concepts using textbook explanations, board diagrams and teacher-led discussions for equivalent time periods.

4.Data Collection Instruments

Conceptual Understanding Test: A 40-item test was developed to assess deep conceptual understanding rather than factual recall. Items included concept application, causal reasoning, and problem-solving scenarios. The test was validated by subject experts and demonstrated high reliability (Cronbach's $\alpha = 0.87$).

Retention Test: An identical test was administered four weeks after instruction to measure long-term retention.

Engagement Scale: A 20-item Likert scale questionnaire assessed behavioral, emotional and cognitive engagement dimensions. The scale showed good internal consistency (Cronbach's α = 0.82).
Attitude Survey: A 15-item instrument measured students' attitudes toward science learning, interest in scientific topics and perceived relevance of science education.

5. Data Analysis:

Quantitative data were analyzed using SPSS 26.0. Independent samples t-tests compared group differences, while paired samples t-tests examined within-group changes. Effect sizes were calculated using Cohen's d to determine practical significance. Qualitative observations from teacher journals provided supplementary insights into classroom dynamics and student responses.

Results and Analysis:

Table 1: Comparison of Conceptual Understanding Scores

Group	Pre-test Mean (SD)	Post-test Mean (SD)	Mean Difference	t-value	p-value	Cohen's d
Experimental (n=60)	14.23 (3.47)	31.85 (4.12)	17.62	8.43	<0.001	1.54
Control (n=60)	14.57 (3.28)	23.67 (4.38)	9.10	4.12	<0.001	0.75
Between-group comparison (Post-test)	-	-	8.18	10.27	<0.001	1.88

Table 2: Long-term Retention Analysis (Four-week Delayed Test)

Group	Post-test Mean (SD)	Retention Test Mean (SD)	Retention Rate (%)	t-value	p-value
Experimental (n=60)	31.85 (4.12)	29.47 (4.55)	92.5%	2.34	0.023
Control (n=60)	23.67 (4.38)	18.83 (5.12)	79.6%	5.67	<0.001
Between-group comparison (Retention)	-	-	-	11.92	<0.001

Table 3: Student Engagement Levels

Engagement Dimension	Experimental Group Mean (SD)	Control Group Mean (SD)	t-value	p-value	Cohen's d
Behavioral Engagement	4.32 (0.58)	3.47 (0.71)	7.15	<0.001	1.31
Emotional Engagement	4.51 (0.52)	3.28 (0.84)	9.43	<0.001	1.73
Cognitive Engagement	4.18 (0.63)	3.52 (0.69)	5.38	<0.001	0.99
Overall Engagement	4.34 (0.48)	3.42 (0.67)	8.64	<0.001	1.58

Note: Scores on 5-point Likert scale (1=Strongly Disagree, 5=Strongly Agree)

Table 4: Attitudes Toward Science Learning

Attitude Indicator	Experimental Group Mean (SD)	Control Group Mean (SD)	t-value	p-value
Interest in Science Topics	4.27 (0.64)	3.41 (0.78)	6.54	<0.001
Perceived Relevance	4.45 (0.59)	3.38 (0.82)	8.12	<0.001
Confidence in Understanding	4.12 (0.71)	3.29 (0.73)	6.21	<0.001
Willingness to Explore Further	4.38 (0.66)	3.22 (0.89)	8.04	<0.001

Note: Scores on 5-point Likert scale (1=Strongly Disagree, 5=Strongly Agree)

6. Discussion:

The findings of this study provide compelling evidence for the effectiveness of interactive storytelling in teaching complex scientific concepts to secondary school students in Darbhanga district. All three hypotheses were supported by statistically significant results with large effect sizes, indicating both statistical and practical significance.

The superior conceptual understanding demonstrated by the experimental group can be attributed to several mechanisms inherent in interactive storytelling. First, narratives provide meaningful contexts that help students move beyond superficial memorization to genuine comprehension. When scientific concepts are embedded within story structures, students naturally engage in causal reasoning and inference-making, both essential for deep understanding. Second, the interactive component transforms passive listeners into active participants who must apply concepts to make decisions within the narrative, creating opportunities for immediate application and feedback.

The attitude improvements suggest that interactive storytelling may have benefits extending beyond immediate learning outcomes. By demonstrating the relevance of scientific concepts through realistic narrative contexts, this approach helps students see science as meaningful rather than arbitrary. This shift in perception could have long-term implications for students' relationships with science, potentially influencing course selections and career interests.

Several contextual factors made interactive storytelling particularly suitable for Darbhanga district. The approach requires minimal technological infrastructure, making it feasible in resource-constrained settings. Teachers reported that once trained in narrative design principles, they could create stories using locally relevant contexts, increasing cultural relevance and student identification with content. The collaborative nature of interactive storytelling also proved effective in crowded classrooms, turning large class sizes from an obstacle into an asset through small-group narrative explorations.

Conclusion:

This research demonstrates that interactive storytelling represents a powerful pedagogical innovation for teaching complex scientific concepts in Indian secondary schools. The approach addresses multiple challenges simultaneously: enhancing conceptual understanding, improving retention, increasing engagement and fostering positive attitudes toward science. For educationally underserved regions like Darbhanga district, interactive storytelling offers a scalable, low-cost strategy that aligns with constructivist learning principles while respecting resource constraints. The implications extend beyond science education. Teachers need not abandon traditional methods entirely but can strategically deploy interactive narratives for concepts that students typically find most challenging. With appropriate training and institutional support, this approach could contribute to the broader transformation of Indian science education called for in national policy frameworks.

The fundamental insight underlying interactive storytelling's effectiveness is deceptively simple: humans are natural storytellers and story-listeners. By harnessing this cognitive

predisposition for educational purposes, we create learning experiences that feel less like academic work and more like meaningful exploration. In doing so, we may help students rediscover the wonder and relevance of scientific understanding that initially motivated their curiosity about the natural world.

8. Limitations and Future Directions:

Limitations -

1. Quasi-experimental design limits definitive causal claims between interactive storytelling and learning outcomes.
2. Limited to 120 students from four schools, restricting broader applicability across diverse contexts.
3. Six-week intervention period insufficient to reveal long-term academic impacts and sustained interest.
4. Study examined only four scientific concepts, potentially missing variations across curriculum breadth.
5. Uncontrolled variation in teacher storytelling skills and enthusiasm may have influenced results inconsistently.
6. Self-reported engagement measures subject to social desirability bias and lack behavioral observation data.

Future Directions -

1. Conduct multi-year research tracking long-term academic performance and STEM career interest development.
2. Replicate across multiple districts, states and countries to establish broader generalizability patterns.
3. Investigate effectiveness across learning styles, cognitive abilities, gender differences, and special needs.
4. Test interactive storytelling in physics, chemistry, biology, mathematics and non-STEM subjects.
5. Compare with project-based learning, inquiry methods and game-based approaches to identify effectiveness.

References:

1. Ginting D, Woods RM, Barella Y, Limanta LS, Madkur A, How HE. The Effects of Digital Storytelling on the Retention and Transferability of Student Knowledge. *SAGE Open*. 2024;14(3):1-17. doi:10.1177/21582440241271267
2. Bilici S, Yilmaz RM. The effects of using collaborative digital storytelling on academic achievement and skill development in biology education. *Education and Information Technologies*. 2024. doi:10.1007/s10639-024-12638-7
3. Göksün D O, Gürsoy G. Digital Storytelling in Science Teacher Education. *Nordic Journal of Digital Literacy*. 2022;9(3):194-215.
4. Nik E, et al. Exploring the potential of digital storytelling in a widening participation context. *Educational Review / journal article*. 2024.
5. Otrel-Cass K. Embodiment and asynchronous storytelling in science education. *International Journal of Science Education*. 2024.
6. El Chaabi M, et al. The effect of digital storytelling on middle school students' interests in STEM fields and intellectual stereotypes. *EURASIA Journal of Mathematics, Science and Technology Education*. 2025;21(4). doi:10.29333/ejmste/16220
7. DU Gita, et al. Exploring the association between digital storytelling and student regulation (meta-cognitive, motivational, emotional, behavioral). *Journal / article*. 2025.

युवा वर्ग की वर्तमान चुनौतियाँ एवं भूमिका

श्री सुरेन्द्र प्रसाद चौधरी

सहायक प्राध्यापक

सारांश

भोगवादी आधुनिकता के भटकाव में फंसी युवा पीढी दुष्प्रवृत्तियों के दलदल में धंसती जा रही है विश्वविद्यालय और शिक्षण संस्थान जो युवाओं की निर्माण स्थली हुआ करते थे । आज अराजकता एवं उच्छश्रृखलता के केन्द्र बन गए है आज की युवा पीढी की जो दुर्दशा हो रही है उसका सर्वप्रथम दायित्व तो उनके माता - पिता और परिवार का ही है । सर्वप्रथम युवाओं को अपने मन से निराशा एवं हताशा के भावों को जड से उखाड फेकना होगा । अपनी शक्तियों पर अपनी क्षमता व प्रतिभा पर अटूट विश्वास जगाना होगा। नेपोलियन ने कहा था – "असंभव शब्द उसके शब्दकोष में है ही नहीं।"

प्रस्तावना

आज का युवा वर्ग ऐसे ही दूषित महौल में जन्म लेता है और होश संभालते ही दुखत एवं चिन्ताजनक परिस्थितियों से रूबरू होते है। आज की युवा पीढी की जो दुर्दशा हो रही है, उसका उत्तरदायित्व वह स्वयं है। यहॉ मूल्यों एवं आदर्शो के प्रति कही कोई निष्ठा दिखाई ही नही देती । ऐसे छात्र जिनमें कुछ सकारात्मक और रचनात्मक कार्य करने की तडपन हो, बिरले ही मिलते है। इसीका परिणाम है कि हमारा सामाजिक एवं राष्ट्र का भविष्य धुंधला लग रहा है। पहले युवा पीढी को अपने आदर्श ढुंढने के लिए परिवार एवं समाज के अलावे पुस्तकों का भी सहारा रहता था जो कि भारतीय संस्कृति का परिचायक है। वह समझ ही नहीं पाता कि वह क्या पढे और कैसे ? देव संस्कृति की उपेक्षा के कारण ही आज वह किसी सज्जन, वीर, महात्मा और महापुरूष को अपना आदर्श बनाने के स्थान पर टी.वी.और गुगल पर खोजता है। काजल की कोठरी से अपने को बचाकर बेदाग बाहर निकाल सके ताकि स्वयं को निखार सके । जितनी भी महत्वपूर्ण क्रांतिय हुई है, उनमें युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। इस दृष्टिकोण से भी भविष्य की चिंतन करनी होगी, ताकी आगे बढ पाना संभव होगा।

शब्द संकेत – चुनौतिया, रचनात्मक, आत्मविश्वास, आत्मसात, संस्कृति ।

युवा वर्ग पर इसका प्रभाव

आज का युवा वर्ग ऐसे ही दूषित माहौल में जन्म लेता है और होश संभालते ही इस प्रकार की दुखद एवं चिंताजनक परिस्थितियों से रूबरू होता है। आदर्शहीन समाज से उसे उपयुक्त मार्गदर्शन ही नहीं मिलता और दिशाहीन शिक्षा पद्धति उसे और अधिक भ्रमित करती रहती है। ऐसे दिग्भ्रमित और वैचारिक शून्यता से ग्रस्त युवाओं पर पाश्चात्य अपसंस्कृति का आक्रमण कितनी सरलता से होता है, इसे हम प्रत्यक्ष देख ही रहे हैं। भोगवादी आधुनिकता के भटकाव में फंसी युवा पीढ़ी दुष्प्रवृत्तियों के दलदल में धंसती जा रही है। विश्वविद्यालय और शिक्षण संस्थान जो युवाओं की निर्माण स्थली हुआ करते थे आज अराजकता एवं उच्छृंखलता के केन्द्र बन गए हैं। वहां मूल्यों एवं आदर्शों के प्रति कहीं कोई निष्ठा दिखाई ही नहीं देती। सर्वत्र नकारात्मक एवं विध्वंसक गतिविधियां ही होती रहती हैं। ऐसे शिक्षक व विद्यार्थी जिनमें कुछ सकारात्मक और रचनात्मक कार्य करने की तड़पन हो, बिरले ही मिलते हैं। इसी का परिणाम है कि हमारा राष्ट्रीय एवं सामाजिक भविष्य अंधकारमय लग रहा है। 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात'—जैसा बीज होगा, जैसी पौध होगी, उसी के अनुरूप तो वृक्ष विकसित होगा, पुष्पित, पल्लवित और फलित होगा। आज की युवा पीढ़ी की जो दुर्दशा हो रही है उसका सर्वप्रथम दायित्व तो उनके माता-पिता और परिवार का ही है। वे स्वयं ही दुष्प्रवृत्तियों के शिकंजे में फंसे हुए हैं फिर अपनी संतान को उचित शिक्षा व संस्कार कहां से दे सकेंगे? युवावस्था की प्रारम्भिक स्थिति में अनेक शारीरिक व मानसिक परिवर्तन होते हैं। जीवन का यह काल अत्यन्त उथल-पुथल भरा होता है जब वह चारों ओर की परिस्थितियों का अपने अनुसार विवेचन करता है। इसमें अनेक प्रतिमान ध्वस्त होते हैं और नए बनते हैं। इस अवधि में वह अपने अस्तित्व को परिवार व समाज में स्थापित करने का प्रयास करता है। अपनी परिवार व समाज में स्थापित करने का प्रयास करता है। अपनी अस्मिता को खोजता है और ऐसे मार्गदर्शक नायक की तलाश करता है जिसके अनुरूप स्वयं को ढाल सके। इस खोजबीन की उलझन में उसे घर से तो कुछ विशेष मिल नहीं पाता और बाहर उसका सर्वत्र शोषण ही होता है। एक समय था जब अभिमन्यु को गर्भावस्था में ही माता-पिता से शिक्षा और संस्कार प्राप्त हुए थे। आज के माता-पिता एवं समाज के कर्णधार स्वयं ही यह चिन्तन करें कि वे अपने अभिमन्युओं को क्या बना रहे हैं? पहले युवापीढ़ी को अपने आदर्श ढूंढने के लिए परिवार व समाज के अतिरिक्त पुस्तकों का भी सहारा रहता था जो कि भारतीय संस्कृति की बहुमूल्य धरोहर हैं। आज वेद, उपनिषद्, पुराण आदि को पढ़ना या उन पर चर्चा करना तो दूर, उनका नाम लेना भी पिछड़ेपन की निशानी समझा जाता है। आदर्श व प्रेरक साहित्य के प्रति अभिरुचि में भारी कमी आई है। अश्लील एवं स्तरहीन साहित्य की भरमार है। उच्चस्तरीय साहित्यिक रचनाएं पढ़ने की परम्परा लुप्त हो रही है। युवावर्ग समझ ही नहीं पाता कि वह क्या पढ़े और कैसे पढ़े? देव संस्कृति की इस उपेक्षा के कारण ही आज वह किसी सज्जन, वीर, महात्मा और महापुरुष को अपना आदर्श बनाने के स्थान पर टी.वी. और फिल्मों के पर्दे पर उनको खोजता है। वहां उसे हिंसा, अश्लीलता, फैशनपरस्ती, स्वच्छंदता, फूहड़ता आदि के अतिरिक्त कुछ मिलता ही नहीं। इसी सब का अनुसरण करने को वह प्रगतिशीलता समझता है। यही कारण है कि चारों ओर अनुशासनहीनता की पराकाष्ठा और स्तरहीन आदर्शों की अंधभक्ति ही दिखाई देती है। ऐसे में टी.वी. पर अनेकानेक सैटेलाइट चैनलों द्वारा हमारी लोक-संस्कृति को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करने का ही यह परिणाम है कि खान-पान, वेश-भूषा, आचार-व्यवहार आदि सभी क्षेत्रों में युवाओं द्वारा पाश्चात्य अपसंस्कृति का अंधानकरण हो रहा है। भारत की बहुमूल्य सांस्कृतिक परम्पराओं की वह अवहेलना करता है या उपहास उड़ाता है। पाश्चात्य संस्कृति के जीवन मूल्य को अपनाती युवा पीढ़ी अपने देश की संस्कृति

को हेय दृष्टि से देखने लगी है। प्रगतिशीलता के नाम पर नैतिकता का परित्याग और भारतीयता का विरोध विशेष उपलब्धियों को गिना जाता है। उसी को आदर्श हीरो का सम्मान मिलता है।

राजनीतिज्ञों के दुष्चक्र ने तो युवा पीढ़ी को और अधिक उलझा दिया है। शिक्षा केन्द्र तो पूरी तरह से राजनैतिक द्वंद्व का अखाड़ा बन गए हैं। इस युद्ध में युवावर्ग का प्रयोग कच्चे माल के रूप में खुले आम होता है। सुरा-सुंदरी तक उन्हें उपलब्ध कराने में राजनीतिक दलों को कोई हिचक नहीं होती। काले धन की थैलियां तो खुली ही रहती हैं। इस प्रकार के दूषित वातावरण में युवापीढ़ी ऐसी कुसंस्कृति को अपनाने के लिए मजबूर है जहां व्यक्तिगत जीवन में नैतिकता और नाते-रिश्तों की पवित्रता का कोई अर्थ नहीं रह जाता। यौन उच्छृंखलता को फैशन व आधुनिकता का प्रतीक समझा जाता है जिससे युवक-युवतियां आत्मघाती दुष्चक्र में उलझते जाते हैं। उनकी ऊर्जा और प्रतिभा किसी सार्थक कार्य में लगने के स्थान पर सौन्दर्य प्रतियोगिताओं, फैशन शो और फिल्मों में बर्बाद होती है तथा अपराधी व बुरे लोगों के जाल में उनके फंसने की संभावनाएं बढ़ती जाती हैं। उच्च आदर्शों एवं प्रेरणा स्रोतों के अभाव में वे नित नए कुचक्रों में उलझते रहते हैं। सामाजिक एवं राष्ट्रीय दायित्व बोध से कटे हुए ऐसे लोगों का जीवन मात्र स्वार्थपरता के संकुचित घेरे तक ही सीमित रह जाता है।

भविष्य की संभावनाएं

ऐसे अन्धकारमय परिदृश्य में भी आशा की किरण तो होती ही है। माना कि हताशा व निराशा से ग्रस्त युवा पीढ़ी में परिस्थितियों से जूझने की क्षमता चुकती जा रही है पर वह परिवस्थितियों से जूझने की क्षमता चुकती जा रही है पर वह समाप्त नहीं हुई है। उसे विकसित करने के अनेकानेक साधन उपलब्ध हैं। सांस्कृतिक एवं मानसिक परतन्त्रता के अदृश्य पाश से स्वयं को मुक्त करके विश्वक्रांति का अग्रदूत बनने की क्षमता भी उसमें है। युवाशक्ति की राष्ट्र की उज्ज्वल आशा का प्रतीक है। देश को दुर्दति से प्रगति के पथ पर ले जाने की शक्ति उसके रग-रग में समाई हुई है। शून्य से शिखर तक पहुंचने का पुरुषार्थ वही कर सकता है।

दुनिया में बुराई तो बहुत है। चारों ओर झूठ, फरेब, धोखा और बेईमानी फैली हुई है। पर हर समय इन्हीं बातों पर चिन्तन और चर्चा करते रहने से क्या लाभ? संसार में आसुरी प्रवृत्ति के लोग तो सदैव रहे हैं चाहे वह रामायण-महाभारत काल हो या आज का युग। उनकी संख्या अवश्य कभी कम तो कभी अधिक होती है। इसी सात्विक एवं दैवी प्रवृत्ति के लोग भी समाज में रह समय रहते हैं। हनुमान जी को भी रात के अंधेरे में लंका के राक्षसों के बीच एक देवस्वरूप व्यक्ति विभीषण के रूप में मिल गया था। हम भी यदि थोड़ा सा सजग होकर देखें तो अपने आस-पास अनेक अच्छे व्यक्ति हमें मिल जायेंगे जो ईमानदारी, अच्छे चरित्र वाले और नैतिक मूल्यों का पालन करने वाले हैं। वे सदैव जीवन के प्रति आशावादी एवं सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं।

युवा पीढ़ी में तो ऐसे सच्चरित्र लोगों की भरमार है। समस्या केवल इतनी भर है कि उन्हें बिगड़ने से किस प्रकार बचाया जाए और वे स्वयं भी किस प्रकार इस काजल की कोठरी से अपने को बचाकर बेदाग बाहर निकल सकें। असली दायित्व तो युवाओं का ही है। यदि वे सांसारिक दुष्प्रवृत्तियों के मकड़जाल में फंसने के कुप्रभावों को समय रहते समझ लें और उनके प्रलोभन में न आएं तो कोई भी उन्हें कुमार्ग पर नहीं ले जा सकेगा। यदि उनमें स्वयं को सुधारने की इच्छाशक्ति जागृत हो जाएगी तो अन्य सत्पुरुषों की बातें भी सरलता से उनके गले उतर जाएंगी तो अन्य सत्पुरुषों की बातें भी सरलता से उनके गले उतर जाएंगी। स्वयं को सुधार कर ही वे सारे संसार को सुधार सकेंगे। 'अपना सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा है', इस तथ्य को समझ लेने से ही सबका कल्याण है।

सामाजिक स्थिति में समय-समय पर बदलाव तो आते ही रहते हैं कभी सकारात्मक और कभी नकारात्मक। वर्तमान समय में तो परिवार, समाज और राष्ट्र की धुरी बुरी तरह से लड़खड़ा रही है और सम्पूर्ण व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन आवश्यक हो गया है। इसे कौन कर सकता है? और कौन करेगा?

इतिहास साक्षी है कि संसार में जितनी भी महत्वपूर्ण क्रान्तियां हुई हैं, उनमें युवाओं की भूमिका सदैव ही अत्यन्त महत्वपूर्ण रही है। मानव जीवन का सर्वश्रेष्ठ समय युवावस्था ही होता है। उत्साह एवं उमंग से भरपूर युवाओं में पहाड़ से टकराने की ललक होती है। कठिन से कठिन परिस्थितियों से भी जूझने का साहस होता है। उनकी शारीरिक एवं मानसिक शक्तियां भी अपने विभिन्न रूपों में प्रस्फुटित होती हैं और असंभव को भी संभव कर दिखाने की क्षमता रखती हैं। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज के अनुसार भारत में 16 से 25 वर्ष के युवाओं की संख्या 21.5 करोड़ है। इतनी बड़ी जनशक्ति यदि नकारात्मक गतिविधियों में लिप्त हो जाए तो देश को शीघ्र ही रसातल में पहुंचा सकती है। पर यदि यह युवा शक्ति सकारात्मक और रचनात्मक मार्ग पर चल पड़े तो भारत को संसार का सिरमौर बना दे। आज अपने धनबल और बाहुबल के बूते कोई देश संसार में अपनी दादागीरी तो चला सकता है पर केवल कुछ समय के लिए ही। अपने सद्गुणों और सद्विचारों के बल पर ही भारत कभी विश्व में जगद्गुरु कहलाता था। उसे पुनः उसी पद पर पुनर्स्थापित करने का सामर्थ्य केवल हमारी युवा पीढ़ी में ही है।

क्या करें? कैसे करें?

सर्वप्रथम युवाओं को अपने मन से निराशा एवं हताशा के भावों को जड़ से उखाड़ फेंकना होगा। अपनी शक्तियों पर अपनी क्षमता व प्रतिभा पर अटूट विश्वास जगाना होगा। नैपोलियन ने कहा था कि 'असंभव' शब्द उसके शब्दकोष में है ही नहीं। इसे अपने जीवन का आधार बनाकर सदैव यही विचार करना होगा कि संसार में ऐसा कोई कार्य नहीं जो हम न कर सकें। कल्पना करें कि आपके शरीर में शक्ति स्रोत फूट रहा है ऊर्जा की धाराएं प्रवाहित हो रही हैं जो कठिन से कठिन कार्य को भी चुटकियों में पूरा कर सकती हैं। उज्ज्वल भविष्य हमारे स्वागत हेतु तत्पर है। अपने भीतर इस प्रकार का आत्मविश्वास दृढ़तापूर्वक स्थापित करने पर ही हम जीवन की अनेक चुनौतियों का सामना करने में सफल हो सकेंगे।

हमारे भीतर यह आत्मविश्वास कैसे जागे और कैसे परिपुष्ट हो? हम किस प्रकार अपने जीवन को उत्कृष्ट बनाएं और वर्तमान चुनौतियों का भी सफलतापूर्वक सामना कर सकें? इसे समझने से पहले हमें भारत के महान युवा संन्यासी स्वामी विवेकानन्द के एक संदेश को आत्मसात करना होगा। उन्होंने कहा है "प्रत्येक व्यक्ति की भांति प्रत्येक राष्ट्र का भी एक विशेष जीवनोद्देश्य होता है। वही उसके जीवन का केन्द्र है, उसके जीवन का प्रधान स्वर है, जिसके साथ अन्य सब स्वर मिलाकर समरसता उत्पन्न करते हैं। किसी देश में जैसे इंग्लैण्ड में राजनीतिक सत्ता ही उसकी जीवन शक्ति है। भारतवर्ष में धार्मिक जीवन ही राष्ट्रीय जीवन का केन्द्र है और वही राष्ट्रीय जीवन रूपी संगीत का प्रधान स्वर है। यदि कोई राष्ट्र अपनी स्वाभाविक जीवन शक्ति को दूर फेंक देने की चेष्टा करे, शताब्दियों से जिस दिशा की ओर उसकी विशेष गति हुई है, उससे मुड़ जाने का प्रयत्न करे और वह इस कार्य में सफल हो जाए तो वह राष्ट्र मृत हो जाता है। अतएव यदि तुम धर्म को फेंककर राजनीति, समाजनीति अतएव यदि तुम धर्म को फेंककर राजनीति, समाजनीति अथवा अन्य किसी दूसरी नीति को अपनी जीवनशक्ति को केन्द्र बनाने में सफल हो जाओ तो उसका फल यह होगा कि तुम्हारा अस्तित्व तक न रह जाएगा। यदि तुम इससे बचना चाहो तो अपनी जीवन शक्ति रूपी धर्म के भीतर से ही तुम्हें अपने सारे कार्य करने होंगे। अपनी प्रत्येक क्रिया का केन्द्र इस धर्म को ही बनाना होगा। सामाजिक जीवन पर धर्म का कैसा प्रभाव पड़ेगा, यह बिना दिखाए मैं अमेरिका वासियों में धर्म का प्रचार नहीं कर सकता था। इंग्लैण्ड में भी बिना यह बताए कि वेदांत के द्वारा कौन-कौन से आश्चर्यजनक परिवर्तन हो सकेंगे, मैं धर्म प्रचार नहीं कर सका। इसी भांति भारत में सामाजिक सुधार का प्रचार तभी हो सकता है, जब यह दिखा दिया जाए कि इस नई प्रथा से आध्यात्मिक जीवन की उन्नति में कौन सी विशेष सहायता मिलेगी? अतः भारत में किसी प्रकार का सुधार या उन्नति की चेष्टा करने से पहले धर्म प्रचार आवश्यक है।"लगभग सौ वर्ष पूर्व स्वामी विवेकानन्द द्वारा कही गई इस बात पर गंभीरता से विचार करें। आज हमारी जो स्थिति बनती जा रही है, उसका कारण क्या यह तो नहीं है कि हम धर्म के पथ से भटक गए हैं? अपनी संस्कृति एवं परम्पराओं की उपेक्षा करने लगे हैं? और पाश्चात्य अंधानुकरणों के कारण स्वयं ही अपनी जड़ों को काटते जा रहे हैं? ऐसा लगता है कि स्वामीजी आज भी हमारे सामने खड़े हमें चेता रहे हैं, झकझोर रहे हैं। स्वामीजी की बात को आत्मसात करके ही हम वर्तमान चुनौतियों का सामना कर सकेंगे। धार्मिक जीवन के द्वारा ही हम स्वयं को सुधार सकेंगे और समाज व राष्ट्र को भी उन्नति के मार्ग पर ले जा सकेंगे। आवश्यक है कि हम स्वयं को पहचानें और धर्म के वास्तविक स्वरूप को भी जानें।

सन्दर्भ ग्रंथ –

1. ए.बी. भटनागर, अनुराग भटनागर – ज्ञान, भाषा, एवं पाठ्यचार्या।
2. डॉ. राकेश कुमार शर्मा , डॉ. कुमार संजय – शिक्षा के दार्शनिक परिप्रेक्ष्य।
3. भोलानाथ तिवारी – भाषा विज्ञाना।
4. डॉ. सियाराम यादव – पाठ्यक्रम एवं भाषा।
5. भाई सकलदेव पाण्डेय – भाषा शिक्षण।
6. पंडित भवगत दत्त – भाषा का इतिहास।

A Study on Fostering Entrepreneurial Mindsets in Students Through Innovative Curriculum Design

Syed Md Tahseen Alam Quadri

Assistant Professor

Abstract:

This research investigates the impact of curriculum innovation on fostering entrepreneurial mindsets among students in Darbhanga district, Bihar. With India's growing emphasis on entrepreneurship as a driver of economic development, educational institutions are increasingly expected to cultivate entrepreneurial competencies among students. This study examines how innovative curriculum interventions influence students' entrepreneurial attitudes, skills, and intentions. A mixed-method approach was employed, collecting data from 350 students across 15 educational institutions in Darbhanga district. The findings reveal significant positive relationships between curriculum innovation dimensions and entrepreneurial mindset development, offering valuable insights for educational policymakers and administrators seeking to enhance entrepreneurial education in semi-urban and rural contexts.

Keywords: Entrepreneurial Mindset, Curriculum Innovation, Higher Education, Darbhanga District, Entrepreneurship Education

1. Introduction:

In the 21st century, entrepreneurship has emerged as a critical catalyst for economic growth, employment generation, and social transformation. India, with its demographic dividend and aspirational youth population, stands at a crucial juncture where fostering entrepreneurial capabilities could determine future economic trajectories. The National Education Policy (NEP) 2020 explicitly emphasizes the integration of entrepreneurship education across all levels of learning, recognizing that traditional pedagogical approaches often fail to cultivate the innovative thinking, risk-taking propensity, and problem-solving abilities essential for entrepreneurial success.

Darbhanga district in Bihar represents a unique context for examining entrepreneurial education initiatives. As a semi-urban region with significant educational infrastructure but limited industrial development, Darbhanga faces both opportunities and challenges in preparing students for entrepreneurial careers. The district hosts several colleges, universities, and professional institutions that serve as potential incubators for entrepreneurial talent. However, conventional curriculum designs predominantly emphasize theoretical knowledge and job-seeking orientation rather than job-creation mindsets.

Curriculum innovation refers to the deliberate redesign of educational content, pedagogical methods, assessment strategies, and learning environments to achieve enhanced educational outcomes. In the context of entrepreneurship education, curriculum innovation involves integrating experiential learning opportunities, industry interactions, project-based assessments, and interdisciplinary approaches that mirror real-world business challenges. This study addresses this gap by investigating how specific curriculum innovation practices influence various dimensions of entrepreneurial mindsets among students in Darbhanga district. The findings will inform educational administrators, policymakers, and curriculum designers about effective strategies for embedding entrepreneurial learning within formal education systems.

2. Review of Literature:

Entrepreneurial Mindset Framework

The entrepreneurial mindset encompasses a constellation of attitudes, skills, and behavioral intentions that enable individuals to identify opportunities, mobilize resources, and create value under uncertain conditions. Dweck's (2006) growth mindset theory provides a foundational framework, suggesting that individuals who believe abilities can be developed through effort

are more likely to embrace entrepreneurial challenges. The entrepreneurial mindset includes dimensions such as opportunity recognition, creative problem-solving, calculated risk-taking, resilience, self-efficacy, and proactive orientation.

Curriculum Innovation in Higher Education

Contemporary scholarship emphasizes that entrepreneurship cannot be effectively taught through traditional lecture-based methods alone. Neck and Greene (2011) advocate for entrepreneurship as a method—a practice-based approach emphasizing action, iteration, and learning from failure. This perspective aligns with constructivist learning theories that position students as active knowledge constructors. Curriculum innovations in entrepreneurship education include: experiential learning through live projects and simulations, interdisciplinary curriculum integration, industry mentorship programs, entrepreneurship clubs and incubation centers, design thinking workshops, and competency-based assessments.

Entrepreneurship Education in Indian Context

India's entrepreneurship education landscape has evolved considerably over the past decade. Government initiatives like the Atal Innovation Mission, NITI Aayog's Atal Tinkering Labs, and the Innovation and Entrepreneurship Development Centres (IEDCs) reflect policy-level commitment to fostering entrepreneurial capabilities. However, implementation challenges persist, particularly in resource-constrained regions. Studies by Tiwari, Bhat, and Tikoria (2017) highlight the gap between entrepreneurship education intent and implementation quality in Indian institutions. Regional disparities in infrastructure, faculty expertise, and industry linkages create uneven entrepreneurial education landscapes.

Entrepreneurship in Bihar Context

Bihar, historically characterized by agrarian economy and limited industrial development, is witnessing gradual economic transformation. The state government's focus on skill development and startup promotion has created new possibilities for entrepreneurial ventures. However, cultural factors including risk-averse attitudes, preference for secure employment, and limited exposure to entrepreneurial role models continue to influence career choices. Educational institutions in districts like Darbhanga play crucial roles in challenging these paradigms by exposing students to entrepreneurial possibilities and equipping them with necessary competencies.

3. Research Objectives:

This study was guided by the following research objectives:

Objective 1: To assess the current status of curriculum innovation practices in educational institutions of Darbhanga district and their orientation toward entrepreneurship education.

Objective 2: To examine the relationship between curriculum innovation dimensions (experiential learning, industry integration, and interdisciplinary approaches) and students' entrepreneurial mindset components (opportunity recognition, risk-taking propensity, and entrepreneurial self-efficacy).

Objective 3: To identify key challenges and recommendations for effective implementation of entrepreneurship-oriented curriculum innovations in semi-urban educational contexts like Darbhanga district.

4. Research Hypotheses:

Based on the research objectives and literature review, the following hypotheses were formulated:

H1: There is a significant positive relationship between experiential learning opportunities in the curriculum and students' opportunity recognition capabilities.

H2: Industry integration in curriculum design significantly influences students' risk-taking propensity and entrepreneurial intentions.

H3: Interdisciplinary curriculum approaches significantly enhance students' entrepreneurial self-efficacy and problem-solving abilities.

5. Research Methodology:
Research Design
This study employed a descriptive-analytical research design using mixed-methods approach. Quantitative data were collected through structured questionnaires, while qualitative insights were gathered through focus group discussions and interviews with faculty members and administrators.
Hypothesis 1 Testing: Pearson correlation analysis revealed a significant positive relationship between experiential learning opportunities and opportunity recognition capabilities ($r=.543$, $p<.01$). The correlation is moderate to strong, supporting H1. Students exposed to case studies, projects, and practical assignments demonstrated superior ability to identify business opportunities and market gaps.
Hypothesis 2 Testing: Industry integration showed significant positive correlations with both risk-taking propensity ($r=.566$, $p<.01$) and entrepreneurial intentions ($r=.534$, $p<.01$). This strongly supports H2, indicating that exposure to real entrepreneurs, industry mentorship, and startup ecosystems enhances students' willingness to embrace entrepreneurial uncertainty and strengthens their intentions to pursue entrepreneurial careers.
Hypothesis 3 Testing: Interdisciplinary curriculum approaches demonstrated the strongest relationship with entrepreneurial self-efficacy ($r=.598$, $p<.01$) and significant correlation with problem-solving abilities embedded within opportunity recognition ($r=.521$, $p<.01$). This confirms H3, suggesting that exposure to diverse disciplines, collaborative projects, and integrative learning strengthens students' confidence in their entrepreneurial capabilities.
The regression model explains 52.4% variance in entrepreneurial mindset ($R^2=.524$), indicating strong predictive validity. All three curriculum innovation dimensions emerged as significant predictors:

- Experiential learning ($\beta=.326$, $p<.001$) demonstrated the strongest unique contribution
- Industry integration ($\beta=.301$, $p<.001$) and interdisciplinary approaches ($\beta=.287$, $p<.001$) also significantly predicted entrepreneurial mindset

VIF values below 2.0 indicate absence of multicollinearity concerns. The model suggests that comprehensive curriculum innovation incorporating all three dimensions maximally fosters entrepreneurial mindsets.
Ignificant differences emerged across demographic categories:

- Male students scored marginally higher than females, possibly reflecting socio-cultural factors
- Postgraduate students demonstrated stronger entrepreneurial mindsets, attributable to maturity and exposure
- Engineering and management students outperformed arts/humanities students, likely due to discipline-specific curriculum orientations
- Students from business families showed significantly higher scores, indicating family influence and role modelling effects
- University students scored higher than college students, possibly due to superior resources and curriculum flexibility

7. Qualitative Insights:
Focus group discussions and interviews revealed several contextual insights:
Faculty Perspectives: Faculty members acknowledged entrepreneurship education's importance but cited constraints including lack of training in experiential pedagogy, rigid university syllabi limiting innovation, insufficient infrastructure for practical demonstrations, and limited industry networks for mentorship arrangements.
Student Aspirations: Students expressed strong interest in entrepreneurship but identified barriers such as fear of failure and social pressure for conventional careers, limited awareness

about funding mechanisms and support systems, inadequate practical training in business skills, and disconnect between curriculum content and real-world entrepreneurial challenges.

Administrative Challenges: Administrators highlighted systemic obstacles including bureaucratic procedures limiting curriculum modifications, financial constraints restricting industry partnerships, absence of performance metrics for entrepreneurship outcomes, and need for faculty development in innovation pedagogy.

8. Conclusion:

This research demonstrates that curriculum innovation significantly fosters entrepreneurial mindsets among students in Darbhanga district, validating theoretical frameworks advocating experiential, industry-integrated, and interdisciplinary approaches to entrepreneurship education. While current implementation levels remain moderate, the strong predictive relationships identified provide compelling evidence for investing in comprehensive curriculum transformation.

Darbhanga district's educational institutions possess foundational infrastructure and student potential requiring strategic curriculum interventions to unleash entrepreneurial capabilities. The moderate entrepreneurial mindset levels indicate receptivity and readiness for enhanced programming. With coordinated efforts among educators, administrators, industry partners, and policymakers, curriculum innovation can effectively cultivate the entrepreneurial mindsets essential for 21st-century economic participation.

The entrepreneurial journey begins in classrooms where curiosity is nurtured, experimentation is encouraged, failure is normalized, and innovation is celebrated. Through deliberate curriculum innovation, educational institutions in Darbhanga and similar contexts can fulfill their transformative potential—preparing students not merely for existing jobs but empowering them to create new economic possibilities for themselves and their communities.

9. Discussion:

The findings confirm that curriculum innovation significantly influences entrepreneurial mindset development among students in Darbhanga district, supporting contemporary entrepreneurship education literature. The moderate implementation levels and moderate entrepreneurial mindset scores suggest substantial improvement potential.

The strong predictive relationship between experiential learning and opportunity recognition aligns with constructivist learning theories emphasizing active engagement. Traditional lecture-based approaches prove insufficient for developing competencies requiring practice, feedback, and iteration. Case studies, simulations, and live projects enable students to recognize patterns, analyse contexts, and identify opportunities—fundamental entrepreneurial capabilities.

Demographic variations highlight equity considerations. Gender disparities, though small, reflect broader societal patterns requiring targeted interventions. The discipline-based differences suggest need for entrepreneurship integration across all streams, including arts and humanities where entrepreneurial opportunities exist but receive less emphasis. Family background's influence underscores the importance of institutional efforts to compensate for students lacking entrepreneurial role models.

10. Recommendations:

1. Establish entrepreneurship cells and incubation centers to promote innovation and student ventures.
2. Conduct faculty development programs focused on experiential and project-based teaching.
3. Integrate entrepreneurship education across all academic disciplines.
4. Build strong industry, academia, and government partnerships for mentorship and innovation.

5. Incorporate real-world, community-based, and social entrepreneurship projects into curricula.
6. Replace theoretical exams with project-based and interdisciplinary assessments.
7. Encourage resilience by highlighting learning from failure in entrepreneurship education.
8. Motivate students to join entrepreneurship clubs, internships, and diverse professional networks.

11. Limitations and Future Research:

This study's cross-sectional design limits causal inference. Longitudinal research tracking students across academic progression would provide stronger evidence regarding curriculum innovation's long-term impact on entrepreneurial behavior and venture creation.

The sample's geographic specificity limits generalizability beyond similar semi-urban contexts. Comparative studies across districts with varying economic profiles would illuminate contextual factors moderating curriculum innovation effectiveness.

Self-reported measures may introduce social desirability bias. Future research could incorporate behavioral measures such as actual venture creation, participation rates in entrepreneurship activities, and business plan quality assessments.

The study focused on formal curriculum innovations without examining co-curricular and extra-curricular entrepreneurship initiatives. Comprehensive evaluation should examine entire institutional ecosystems supporting entrepreneurial learning.

References:

1. Dweck, C. S. (2006). *Mindset: The New Psychology of Success*. Random House.
2. Neck, H. M., & Greene, P. G. (2011). Entrepreneurship Education: Known Worlds and New Frontiers. *Journal of Small Business Management*, 49(1), 55-70.
3. Tiwari, P., Bhat, A. K., & Tikoria, J. (2017). An Empirical Analysis of the Factors Affecting Social Entrepreneurial Intentions. *Journal of Global Entrepreneurship Research*, 7(1), 9.
4. National Education Policy 2020, Ministry of Human Resource Development, Government of India.
5. Fayolle, A., & Gailly, B. (2015). The Impact of Entrepreneurship Education on Entrepreneurial Attitudes and Intention: Hysteresis and Persistence. *Journal of Small Business Management*, 53(1), 75-93.
6. Kuratko, D. F. (2005). The Emergence of Entrepreneurship Education: Development, Trends, and Challenges. *Entrepreneurship Theory and Practice*, 29(5), 577-598.
7. Nabi, G., Liñán, F., Fayolle, A., Krueger, N., & Walmsley, A. (2017). The Impact of Entrepreneurship Education in Higher Education: A Systematic Review and Research Agenda. *Academy of Management Learning & Education*, 16(2), 277-299.
8. Bihar Economic Survey (2024). Department of Finance, Government of Bihar.

शिक्षा के क्षेत्र में हिंदी शिक्षण: चुनौतियाँ, संभावनाएँ और भविष्य का मार्ग

डॉ० पवन कुमार
सहायक प्राध्यापक

प्रस्तावना

भारत जैसे बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश में, शिक्षा और भाषा का अत्यंत गहरा एवं जटिल संबंध है। हिंदी, जो भारतीय संविधान द्वारा राजभाषा के रूप में स्वीकृत है और देश की सर्वाधिक बोली-समझी जाने वाली भाषा है, शिक्षा के क्षेत्र में एक विशेष स्थान रखती है। शिक्षा में हिंदी शिक्षण का अर्थ केवल एक भाषा को पाठ्यक्रम का विषय बनाना नहीं है, बल्कि यह एक सांस्कृतिक पहचान का संरक्षण, राष्ट्रीय एकता का सूत्र और ज्ञान-विज्ञान तक सभी की पहुँच सुनिश्चित करने का माध्यम भी है। वर्तमान समय में, जब शिक्षा पर वैश्वीकरण और अंग्रेजी माध्यम का प्रभाव लगातार बढ़ रहा है, हिंदी शिक्षण नए सिरे से परिभाषित हो रहा है। यह लेख शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर हिंदी शिक्षण के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, वर्तमान चुनौतियों, तकनीकी योगदान और भविष्य की संभावनाओं का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

आज के वैश्वीकरण के युग में, जहां अंग्रेजी जैसी अंतरराष्ट्रीय भाषाओं का प्रभुत्व है, हिंदी शिक्षण की प्रासंगिकता पर अक्सर प्रश्न उठाए जाते हैं। लेकिन हिंदी न केवल भारत की सांस्कृतिक पहचान का प्रतिनिधित्व करती है, बल्कि लाखों लोगों की मातृभाषा होने के कारण शिक्षा को अधिक समावेशी और प्रभावी बनाती है। शिक्षा में हिंदी शिक्षण का अर्थ केवल भाषा सिखाना नहीं है, बल्कि छात्रों को साहित्य, इतिहास, विज्ञान और सामाजिक मुद्दों से जोड़ना है। यह लेख शिक्षा में हिंदी शिक्षण के विभिन्न आयामों पर चर्चा करेगा, जिसमें इसके लाभ, चुनौतियां, पद्धतियां और भविष्य की संभावनाएं शामिल हैं।

वर्तमान समय में वैश्वीकरण, तकनीकी विकास और अंग्रेज़ी के बढ़ते प्रभाव के कारण हिन्दी शिक्षण के समक्ष अनेक चुनौतियाँ भी उपस्थित हैं। इसके बावजूद हिन्दी भाषा और साहित्य का शैक्षिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व कम नहीं हुआ है। शिक्षा के माध्यम से हिन्दी शिक्षण न केवल भाषा-ज्ञान प्रदान करता है, बल्कि नैतिक मूल्यों, सांस्कृतिक चेतना और राष्ट्रीय एकता को भी सुदृढ़ करता है।

भारत की संविधान सभा ने हिंदी को राजभाषा का दर्जा देकर इसकी महत्वपूर्णता को स्वीकार किया था। अनुच्छेद 343 के अनुसार, हिंदी देवनागरी लिपि में संघ की राजभाषा है। शिक्षा नीति में भी हिंदी को प्रमुख स्थान दिया गया है, जैसे कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मातृभाषा आधारित शिक्षा पर जोर दिया गया है। इस प्रस्तावना में हम समझते हैं कि हिंदी शिक्षण शिक्षा का एक अभिन्न अंग है, जो छात्रों को आत्मविश्वास और सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ता है। अब हम मुख्य भाग में इसके विस्तृत विश्लेषण की ओर बढ़ते हैं।

हिन्दी शिक्षण का अर्थ और उद्देश्य

हिन्दी शिक्षण का अर्थ केवल वर्णमाला, शब्दार्थ या व्याकरण सिखाना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में भाषा के सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने—इन चारों कौशलों का संतुलित विकास करना है। इसके प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. विद्यार्थियों में स्पष्ट एवं प्रभावी अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित करना।
2. भाषा के माध्यम से विचार, भावना और अनुभव को प्रकट करने की योग्यता प्रदान करना।
3. हिन्दी साहित्य के माध्यम से नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों का विकास करना।
4. विद्यार्थियों में सृजनात्मकता, कल्पनाशक्ति और आलोचनात्मक चिंतन को प्रोत्साहित करना।
5. राष्ट्रभाषा के प्रति सम्मान, गर्व और अपनत्व की भावना उत्पन्न करना।

हिंदी भाषा का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व

हिंदी भाषा का इतिहास प्राचीन है, जो संस्कृत से विकसित हुई है और मध्यकालीन भक्ति आंदोलन से प्रभावित हुई है। कबीर, तुलसीदास, सूरदास जैसे कवियों ने हिंदी को जनभाषा बनाया। शिक्षा में हिंदी शिक्षण छात्रों को इस समृद्ध साहित्य से परिचित कराता है, जो नैतिक मूल्यों और सामाजिक सद्भावना को सिखाता है। भारत में शिक्षा प्रणाली में हिंदी को शामिल करने से छात्र अपनी सांस्कृतिक विरासत से जुड़ते हैं। उदाहरण के लिए, स्कूलों में रामायण या महाभारत की कहानियां हिंदी में पढ़ाई जाती हैं, जो छात्रों में नैतिकता और इतिहास बोध विकसित करती हैं।

शिक्षण पद्धतियां और चुनौतियां

हिंदी शिक्षण की पद्धतियां विविध हैं: व्याकरण, साहित्य, वार्तालाप और डिजिटल माध्यम। आधुनिक तरीके जैसे ऐप्स (डुओलिंगो हिंदी) और ऑनलाइन कोर्स प्रभावी हैं। लेकिन चुनौतियां हैं: शिक्षकों की कमी, पुरानी पाठ्यपुस्तकें और अंग्रेजी का प्रभुत्व। ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधन कमी है।समाधान के रूप में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मातृभाषा पर जोर दिया गया है, जो हिंदी शिक्षण को मजबूत करेगा।

हिन्दी शिक्षण की विधियाँ

हिन्दी शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए उपयुक्त शिक्षण विधियों का प्रयोग आवश्यक है। प्रमुख विधियाँ निम्नलिखित हैं—

1. प्रत्यक्ष विधि

इस विधि में हिन्दी भाषा का शिक्षण सीधे हिन्दी में किया जाता है। इससे विद्यार्थियों को भाषा का स्वाभाविक अभ्यास मिलता है और वे शीघ्र भाषा में सोचने और बोलने लगते हैं।

2. व्याकरण-अनुवाद विधि

इस विधि में व्याकरण के नियमों और अनुवाद के माध्यम से भाषा सिखाई जाती है। यद्यपि यह विधि पारंपरिक है, फिर भी प्रारंभिक स्तर पर भाषा-संरचना को समझने में सहायक हो सकती है।

3. क्रियात्मक एवं गतिविधि आधारित विधि

इस विधि में वाद-विवाद, नाट्य-प्रस्तुति, कहानी-कथन, कविता-पाठ, समूह-चर्चा आदि गतिविधियों के माध्यम से हिन्दी शिक्षण किया जाता है। इससे विद्यार्थी सक्रिय रूप से सीखने की प्रक्रिया में भाग लेते हैं।

4. श्रव्य-दृश्य साधनों का प्रयोग

आधुनिक तकनीक जैसे—ऑडियो-वीडियो, स्मार्ट क्लास, डिजिटल सामग्री, ई-पुस्तकें आदि हिन्दी शिक्षण को रोचक और प्रभावी बनाती हैं।

वर्तमान समय में हिन्दी शिक्षण की चुनौतियाँ

1. अंग्रेज़ी भाषा का बढ़ता प्रभाव, जिसके कारण हिन्दी को अपेक्षित महत्व नहीं मिल पाता।
2. पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों में नवीनता और व्यवहारिकता का अभाव।
3. प्रशिक्षित और प्रेरित हिन्दी शिक्षकों की कमी।
4. विद्यार्थियों में हिन्दी के प्रति रुचि की कमी और इसे कठिन विषय मानने की धारणा।
5. तकनीकी संसाधनों का असमान वितरण

भविष्य का मार्ग: सिफारिशें एवं निष्कर्ष

शिक्षा में हिंदी शिक्षण को प्रभावी और प्रासंगिक बनाए रखने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जाने चाहिए:

- **प्रारंभिक शिक्षा में भाषा कौशल पर बल:** हिंदी शिक्षण का उद्देश्य केवल व्याकरण सिखाना नहीं, बल्कि बच्चों की संवाद क्षमता, समझ और रचनात्मक अभिव्यक्ति को विकसित करना होना चाहिए। कहानी-कविता, नाटक, वाद-विवाद जैसी गतिविधियों को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाए।
- **शिक्षक प्रशिक्षण का आधुनिकीकरण:** हिंदी शिक्षकों को भाषा शिक्षण की नवीनतम पद्धतियों, तकनीकी एकीकरण और बहुभाषिक कक्षा प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
- **उच्च शिक्षा में हिंदी माध्यम को प्रोत्साहन:** विज्ञान, वाणिज्य और तकनीकी विषयों में हिंदी में उत्कृष्ट पाठ्य सामग्री तैयार करने के लिए विशेष परियोजनाएँ चलाई जानी चाहिए। विश्वविद्यालयों को हिंदी माध्यम से पढ़ाए जाने वाले कोर्स शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

उपसंहार

शिक्षा में हिंदी शिक्षण न केवल भाषा सिखाता है, बल्कि छात्रों को सांस्कृतिक, संज्ञानात्मक और सामाजिक रूप से मजबूत बनाता है। यह राष्ट्रीय एकता का आधार है और वैश्वीकरण में भारत की पहचान को मजबूत करता है। हालांकि चुनौतियां हैं, लेकिन नीतिगत प्रयासों से इन्हें दूर किया जा सकता है। अंत में, हिंदी शिक्षण शिक्षा को अधिक समावेशी और प्रभावी बनाता है, जो भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिए आवश्यक है।

सन्दर्भ सूची

1. पाण्डेय, रामचन्द्र – *हिन्दी शिक्षण विधियाँ*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. शर्मा, रामकुमार – *भाषा शिक्षण के सिद्धांत*, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT)।
3. पंत, गिरीश। (2021)। **"डिजिटल युग में हिंदी शिक्षण: नए आयाम"**। *शैक्षिक प्रौद्योगिकी पत्रिका*।
4. भारत सरकार। **राजभाषा विभाग की वार्षिक रिपोर्ट।** गृह मंत्रालय।
5. Language, Politics and Education in North India. AIF. (2018). Retrieved from https://aif.org/language-politics-and-education-in-north-india-part-iii-the-problem-with-hindi/

Concept Maps as a Teaching and Learning Strategy: The Humanities

Mr. Shyam Kishore Singh
Assistant Professor

Abstract-

The humanities represent the knowledge domain of human self-understanding, embodying a living conversation that has endured for centuries. They serve not merely as a mirror of human nature but as a compass in the search for truth and meaning. In an era of exponential information growth and artificial intelligence, the humanities distinguish truth from data and meaning from computation. Concept mapping emerges as a powerful pedagogical strategy that integrates core humanities disciplines such as philosophy, history, and literature. This visual tool fosters self-reflection, empathy, intellectual humility, and imaginative insight—qualities essential for personal integrity and responsible citizenship. This article explores the structure of the humanities through concept mapping and illustrates its practical applications in teaching and learning.A concept maps in education are a visual tool that helps students and teachers organize and connect ideas. It shows key concepts in boxes or circles, with lines linking them to related ideas. This makes it easier to see how different pieces of information fit together.

In education, concept maps are used to simplify complex topics, improve understanding, and encourage critical thinking. They help students break down large amounts of information into smaller, connected parts, making studying more effective. Teachers use concept maps in education to explain lessons, plan courses, and assess student learning.

By visually mapping out ideas, students can better remember information, spot patterns, and develop a deeper understanding of subjects. Whether for brainstorming, problem-solving, or revising for exams, concept maps are a powerful tool for learning.

Keywords

Concept mapping, Humanities, Teaching strategy, Learning tool, Philosophy, History, Literature, Empathy, Intellectual humility, Meaning-making

Introduction

The humanities constitute a profound inquiry into human existence through philosophy, history, literature, and the arts. In the age of artificial intelligence, they remain uniquely human because they cultivate wisdom, ethical imagination, and empathetic understanding—capacities machines cannot replicate. Concept mapping, developed by Joseph D. Novak based on Ausubel's theory of meaningful learning, is a graphical tool that organizes knowledge using nodes (concepts) and labeled links (relationships). It is ideally suited to the interconnected and contested nature of humanistic knowledge.

What Are Concept Maps?

In their simplest form, concept maps are graphic organizers or visual representations of knowledge, often presented in a node-link-node format. Nodes, which are usually nouns, represent key concepts and are linked by directional arrows labeled with descriptive words that define the relationship between the two nodes. Ideally, the linking words are verbs or contain verbs such that the concepts and linking words read as a sentence (even if the sentence is grammatically incorrect). In the figure below, the map identifies that COVID-19 has highlighted inequities.

Most learners have more than one point of reference for a concept. When each of these conceptual connections are represented in node-link-node format, the resulting diagram is called a "concept map." Joseph Novak, who has had a long career as a professor of education,

research scientist, and business consultant, is often credited with establishing the "modern" body of research on concept mapping. He conducted a landmark 12-year-long study of science concept learning in which students mapped changes in their knowledge structures by constructing concept maps. He referred to concept maps as diagrammatic representations of one's internal knowledge structures.[2] This is a powerful description because it acknowledges the fundamental uniqueness of each individual learner's schema (or mental model) development; this, in turn, suggests no two maps on the same topic need to look the same there is no "right answer" to a mapping prompt.

Why Using Concept Maps in Education Is Effective

Concept maps in education are more than just a way to organize information—they actively support learning by helping students retrieve, connect, and deepen their understanding of concepts. They bring together two powerful learning strategies:

- Retrieval practice – When students create a concept map, they recall what they already know, reinforcing their memory.
- Elaboration – As they add new ideas and link concepts together, they expand their understanding and make deeper connections.

By visually displaying the big picture of a topic, concept maps help students see how different ideas relate to each other. This makes learning more meaningful because students are not just memorizing facts—they are understanding the structure of knowledge in a subject.

1. Helping students process information more easily - Concept maps simplify this by breaking down information into key concepts and showing connections clearly. Unlike traditional reading, where a concept might be repeated multiple times in different contexts, a concept map presents each idea once, linked to related concepts. This makes it easier for students to process and retain new information without unnecessary confusion.

2. Supporting students with different learning needs - By using spatial placement and directional arrows to show relationships, concept maps guide students in making sense of new ideas. Placing closely related concepts near each other and using labels to explain connections allows students to develop a mental framework for understanding complex subjects.

3. Reducing cognitive overload - When students read long passages of text, they must process sentence structure, grammar, and multiple references to the same concept before they can fully understand the material. Concept maps strip down information to its essential ideas and relationships, reducing the mental effort needed to grasp new topics.

4. Encouraging critical thinking and discussion - Concept maps in education also help students differentiate between essential and additional information, allowing them to focus on what truly matters. They can also be used as a foundation for discussions, helping students and teachers explore ideas more deeply. When concepts belong to multiple disciplines, maps highlight those cross-connections, making it easier to understand how subjects interrelate.

5. Aligning learning with course goals - Instructors can use concept maps to clearly outline program or course objectives, showing how different learning outcomes connect. This helps students see the purpose behind what they are learning and understand how different topics fit into the bigger picture of their education.

Some Findings-

1. Advantages of Concept Mapping in the Humanities

- Makes complex, non-linear relationships visible
- Promotes active learning and higher-order thinking (analysis, synthesis, evaluation)
- Handles abstract and contested concepts (justice, identity, beauty) effectively

- Encourages dialogue, creativity, and intellectual humility

2. Application across Core Disciplines
    - Philosophy: Central node (e.g., "Human Nature") → branches to rationality, will, freedom; cross-links show tensions (e.g., Determinism vs. Free Will)
    - History: Connects political, economic, social, and intellectual causes; highlights contingency and interpretation
    - Literature: Maps themes, motifs, character relations, intertextuality, and symbolism across works and traditions
3. Classroom Strategies
    - Pre-reading predictive maps
    - Collaborative map-building during discussions
    - Comparative maps between texts, thinkers, or events
    - Personal reflective maps linking course ideas to students' lives
4. Assessment Value

Concept maps serve as authentic performance assessments, revealing depth, accuracy, and creativity of understanding far better than traditional tests.

Conclusions

Education is an indispensable element to keep up with today's world, to develop as a society, to build our thoughts and to achieve success. This fact has existed in people's lives since their birth and will continue to exist until the end of their lives. For this reason, both in Turkey and in all other countries, it is necessary to raise people who can use the emerging technology, who can analyze situations critically and logically, and who will actively participate in the development of technology; to bring the education system to a level that will meet these needs; it is necessary to raise students who don't rely on memorization but instead create permanent learning via doing and experiencing. In doing so, it is necessary to use modern, active learning, questioning, thought-provoking and effective teaching methods and techniques instead of using methods that passivate students as in the past. For this purpose, a constructivist approach has been adopted in Turkey as well as in the world, and many teaching methods and techniques have been developed in accordance with this approach.

Concept mapping transforms abstract humanistic knowledge into visible, negotiable structures. It embodies the core values of the humanities—connection, complexity, and respectful dialogue—while developing empathy and wisdom. In an AI-dominated era, it reaffirms that genuine understanding is relational, contextual, and profoundly human, making the humanities classroom a vibrant space of meaning-making.

References

1. Novak, J. D., & Gowin, D. B. (1984). Learning How to Learn. Cambridge University Press.
2. Novak, J. D. (1998). Learning, Creating, and Using Knowledge: Concept Maps as Facilitative Tools. Lawrence Erlbaum Associates.
3. Blessinger, Patrick. (2025). "Concept maps as a teaching and learning strategy: The humanities." LinkedIn Pulse. Retrieved from the provided link.
4. Ausubel, D. P. (1968). Educational Psychology: A Cognitive View. Holt, Rinehart and Winston.
5. Nussbaum, M. C. (2010). Not for Profit: Why Democracy Needs the Humanities. Princeton University Press.

From Guide to Guru? The Dangers of Students Seeing AI as All-Knowing

Mrs. Arpana Kumari
(Coordinator - IQAC)

Abstract

The rapid integration of artificial intelligence (AI) into education has transformed the way students' access, process, and engage with knowledge. Chatbots, virtual tutors, and generative AI platforms offer immediate answers, personalized feedback, and even emotional support, making them appealing learning companions. However, this growing dependence on AI also raises critical concerns regarding students' perception of these systems as infallible sources of truth. When AI is elevated from a mere guide to a perceived "guru," it risks fostering intellectual passivity, reducing critical thinking, and eroding the human elements of education such as dialogue, debate, and reflective inquiry.

This paper explores the psychological, pedagogical, and ethical dangers of students attributing an all-knowing status to AI. Firstly, it examines how over-reliance on AI can diminish students' ability to evaluate information critically, leading to uncritical acceptance of biased or inaccurate outputs. Secondly, it highlights the risks of intellectual dependency, where students bypass traditional learning processes—such as research, problem-solving, and discussion—in favor of instant AI-generated responses. Thirdly, the paper analyzes how AI's simulated empathy and confidence in its outputs may blur the line between tool and authority, encouraging students to form misplaced trust in algorithms.

Furthermore, the paper addresses the broader educational implications: a potential widening of the teacher-student gap, the weakening of collaborative learning, and the neglect of emotional and ethical dimensions of knowledge acquisition. While AI has the potential to enrich education, unchecked reverence for its outputs risks undermining the very purpose of learning—developing independent, critical, and creative thinkers.

The abstract concludes by calling for balanced integration of AI into education, emphasizing the role of educators in guiding students to treat AI as a supportive tool rather than an unquestionable authority. Pedagogical strategies, digital literacy training, and ethical awareness are essential to ensure that AI remains a guide, not a guru.

Introduction

The landscape of education has been undergoing a profound transformation in recent years, driven largely by the rapid integration of digital technologies. Among the most influential of these innovations is artificial intelligence (AI), which has moved from being a futuristic concept to an everyday reality in classrooms and study environments. Chatbots, AI-powered tutoring systems, automated grading tools, and generative platforms capable of producing essays or solving equations have become increasingly accessible to students across the globe. These systems offer not only instant feedback but also personalized learning experiences that adapt to individual needs and preferences. For students accustomed to the immediacy of digital interactions, AI appears as a powerful ally, a tool that promises efficiency, clarity, and round-the-clock availability.

The appeal of AI in education is undeniable. For students struggling with complex subjects, AI tutors can break down concepts into manageable steps. For those preparing for exams, chatbots can simulate questions, explain solutions, and offer practice tailored to their performance level. Beyond academic assistance, AI even provides motivational nudges and encouragement, mimicking the supportive role traditionally filled by teachers or peers. This unique blend of accessibility, adaptability, and responsiveness makes AI systems feel less like impersonal software and more like reliable companions. In many ways, the line between tool and partner has begun to blur.

Yet, it is precisely this allure that posses a significant risk. Increasingly, students are beginning to treat AI not just as a guide but as a guru—an infallible, all-knowing authority whose outputs are beyond question. This perception stems from several factors. First, AI systems often generate responses with a tone of confidence, regardless of whether the information is accurate or flawed. Unlike a human teacher who might acknowledge uncertainty, AI rarely signals its limitations, creating the illusion of absolute authority. Second, the immersive and interactive nature of AI engagement encourages students to develop a trust-based relationship with these systems. Over time, reliance on AI for quick answers can subtly erode the habit of critical inquiry and independent thought.

The dangers of such misplaced trust are multifaceted. On a cognitive level, students may become intellectually passive, outsourcing their reasoning and problem-solving skills to algorithms. Instead of wrestling with difficult questions, exploring multiple perspectives, or engaging in critical debate, they may settle for whatever the AI presents as the "right" answer. On a psychological level, students may derive comfort and confidence from AI interactions, reinforcing dependency and reducing their willingness to question authority—whether digital or human. Pedagogically, this reliance undermines the very purpose of education, which is not simply to accumulate knowledge but to cultivate curiosity, resilience, and critical thinking.

Moreover, there are broader ethical implications. AI systems, despite their sophistication, are not neutral. They are shaped by the data they are trained on, which may include biases, inaccuracies, and cultural limitations. When students uncritically accept AI-generated outputs, they risk internalizing distorted perspectives without awareness. This problem is compounded by the fact that AI's speed and efficiency often discourage the slower, reflective practices of traditional learning—such as researching sources, engaging in classroom discussions, or considering alternative viewpoints.

Thus, the rise of AI in education presents a paradox. On one hand, it holds immense potential to democratize learning, support struggling students, and free teachers from repetitive tasks. On the other, it risks creating a generation of learners who equate technological fluency with intellectual mastery, and who mistake algorithmic confidence for human wisdom. The challenge, therefore, is not whether AI belongs in education—its presence is already undeniable—but how to ensure that its role remains supportive rather than authoritative.

This paper explores the dangers of students perceiving AI as all-knowing, examining the psychological, pedagogical, and ethical risks of this trend. It argues that while AI can and should serve as a powerful educational guide, unchecked reverence for its outputs undermines the goals of critical and independent learning. Ultimately, the task of educators, policymakers, and students alike is to strike a balance—embracing the benefits of AI while resisting its transformation from guide to guru.

The Rise of AI in Education

Artificial intelligence has moved from the fringes of technological experimentation to the center of educational practice. In the last decade, and especially in the aftermath of the COVID-19 pandemic, digital learning tools have become a lifeline for both students and teachers. AI technologies in particular have gained momentum as schools, colleges, and universities worldwide sought ways to ensure continuity of education, bridge gaps in access, and provide personalized support to learners of diverse backgrounds. What was once considered futuristic—machines capable of tutoring, assessing, and even mentoring students—has now become commonplace.

Historically, the role of technology in education was limited to static tools such as projectors, calculators, and computer labs. With the rise of the internet, e-learning platforms began offering recorded lectures, quizzes, and online resources. The arrival of AI represents a qualitative leap beyond these earlier technologies. Unlike traditional digital resources, AI systems can simulate dialogue, adapt to individual learners' pace, and provide dynamic feedback in real time. Tools such as intelligent tutoring systems, plagiarism detection software, adaptive learning platforms, and generative AI applications (e.g., ChatGPT, Google Gemini, or Khanmigo) are now integrated into everyday study routines.

The benefits of AI in education are wide-ranging. For teachers, AI can automate time-consuming tasks like grading, attendance tracking, or drafting lesson plans, thereby freeing them to focus on creative teaching and mentoring. For students, AI offers an unprecedented level of personalization. Adaptive platforms analyze performance data to tailor lessons according to a learner's strengths and weaknesses. For instance, a student struggling with algebra may receive additional exercises, while one excelling in the subject might be challenged with advanced problems. AI-powered chatbots act as round-the-clock tutors, capable of answering questions instantly, explaining concepts in multiple ways, and even simulating exam scenarios.

Beyond academics, AI has begun to address students' emotional and motivational needs. Some platforms incorporate sentiment analysis to detect frustration or disengagement, offering encouragement or adjusting the difficulty level accordingly. In this way, AI creates the impression not just of a tool but of a responsive companion that "understands" the learner. For students accustomed to digital interaction through social media, this human-like responsiveness makes AI feel trustworthy and approachable.

However, this rapid integration has also shaped student perceptions in ways that deserve closer scrutiny. Because AI platforms often present answers with confidence and coherence, students may view them as objective and reliable sources of truth. Unlike teachers, who acknowledge uncertainty or encourage debate, AI rarely admits ignorance. This creates an illusion of omniscience. A well-phrased but factually incorrect response may easily be mistaken as authoritative. Moreover, the immediacy of AI feedback discourages slower, reflective modes of learning. Why search through textbooks or cross-check multiple sources when a chatbot provides an instant, polished answer?

Another factor contributing to the "all-knowing" perception of AI is its ubiquity. From elementary classrooms experimenting with adaptive learning games to university students drafting essays with generative AI, the presence of these tools spans the entire educational

spectrum. Students engage with AI not as an occasional resource but as a daily partner in their learning journey. Over time, familiarity can breed unquestioning trust, much as one might trust a mentor or a knowledgeable peer.

Psychological and Cognitive Dangers

The growing dependence on artificial intelligence in education is not simply a matter of convenience; it is reshaping how students think, learn, and interact with knowledge itself. While AI offers speed, personalization, and accessibility, the psychological and cognitive consequences of perceiving it as an all-knowing authority are profound. At the heart of this concern lies a paradox: the very qualities that make AI attractive to students—efficiency, confidence, and availability—can also erode critical faculties, weaken intellectual independence, and foster psychological dependency.

One of the most immediate risks is cognitive laziness. Learning has traditionally required effort: reading multiple sources, grappling with conflicting perspectives, and synthesizing information through critical reflection. AI short-circuits this process by providing immediate, neatly packaged answers. While convenient, this risks encouraging students to bypass the mental struggle that is essential for deep learning. The habit of "outsourcing" thinking to machines can gradually diminish problem-solving skills, leaving students dependent on AI for even basic reasoning tasks. This passivity undermines the cultivation of intellectual resilience—the ability to persist through uncertainty and difficulty in search of understanding.

Closely tied to cognitive laziness is the illusion of certainty created by AI responses. Unlike human teachers, who often admit ambiguity or highlight multiple viewpoints, AI systems tend to present answers with confident language and structured reasoning. Even when factually flawed, these outputs appear polished and authoritative. For students untrained in digital literacy, this confidence can easily be mistaken for accuracy. Over time, learners may stop questioning, stop cross-checking, and stop exercising skepticism, the very qualities education seeks to instill. In effect, students risk replacing inquiry with passive acceptance.

Another danger is intellectual dependency. As students rely increasingly on AI for academic assistance, they may lose the habit of independent exploration. Instead of researching a topic, formulating arguments, or engaging in debates, they may default to AI-generated content as their primary learning method. This dependency creates a subtle but powerful shift: students cease to view themselves as active creators of knowledge and begin to act as consumers of machine-curated information. In the long run, this undermines the development of self-directed learners capable of navigating complex, uncertain environments—a skill critical in both higher education and professional life.

The psychological dimension of AI reliance is equally significant. For many students, AI tools are more than academic aids; they are sources of reassurance. The immediacy of responses and the apparent empathy of AI chatbots can create a sense of emotional support. While comforting, this dynamic carries risks. Students may begin to view AI as a reliable confidant or mentor, reducing their willingness to question its outputs. The psychological comfort of always having an "answer" fosters dependency and discourages the discomfort that is often necessary for genuine learning and intellectual growth.

Moreover, overexposure to AI's authority-like presence can condition students to equate knowledge with automation. The act of questioning—a cornerstone of human cognition—risks

being replaced by uncritical trust in algorithms. Such conditioning has long-term consequences: students may carry into adulthood a diminished ability to challenge systems, institutions, or even dominant ideologies, simply because they have grown accustomed to accepting what is presented to them with confidence.

Pedagogical and Educational Risks

While the psychological and cognitive dangers of AI reliance directly affect students, the implications extend further into the broader pedagogical landscape. Education is not only about the transmission of knowledge but also about cultivating habits of thought, fostering creativity, and nurturing meaningful teacher-student and peer relationships. When students begin to treat AI as an all-knowing authority, these foundational aspects of education are jeopardized. The consequences manifest across multiple dimensions: critical thinking, human relationships in learning, collaborative engagement, and creativity.

One of the most pressing risks is the erosion of critical thinking. At its core, education is designed to help students question assumptions, evaluate evidence, and construct well-reasoned arguments. When AI provides polished answers instantly, students may bypass this process. Instead of analyzing primary sources or debating different interpretations, learners may accept AI outputs as definitive. This undermines the pedagogical aim of developing evaluative skills, reducing education to rote acceptance of machine-generated content. In subjects like history, literature, or philosophy—where multiple perspectives enrich understanding—the dangers are even more pronounced. Students risk internalizing a narrow, algorithmically constructed version of knowledge rather than grappling with its complexity.

Closely related is the weakening of teacher-student relationships. Teachers are not merely conveyors of information; they are mentors, guides, and role models who shape students' intellectual and moral development. When students bypass educators in favor of AI tutors, the relational dimension of learning diminishes. Teachers may struggle to maintain authority and relevance in classrooms where students increasingly turn to machines for answers. This shift risks reducing educators to secondary figures, sidelining the empathy, encouragement, and human insight that no AI can replicate. Over time, the erosion of teacher influence could weaken the very culture of mentorship that sustains education.

A third pedagogical risk involves the decline of collaborative learning. Classrooms and universities have long relied on group discussions, peer debates, and collective problem-solving as means of deepening understanding. These activities not only reinforce academic knowledge but also cultivate social and communicative skills. When students default to AI-generated answers, the incentive to engage with peers decreases. Why wrestle with conflicting viewpoints in a study group when AI offers a ready-made solution? Such habits can erode the communal and dialogical aspects of education, isolating students in individualized, machine-mediated learning silos.

Another concern is the stifling of creativity. Genuine creativity often emerges from struggle—when learners experiment, make mistakes, and discover unexpected pathways. AI, by contrast, tends to generate formulaic outputs based on patterns in its training data. If students rely heavily on these outputs, their capacity for original thought may atrophy. In disciplines such as literature, design, or the arts, where innovation is prized, this reliance could have particularly damaging effects. Even in scientific fields, where creativity drives research breakthroughs,

over-dependence on AI risks narrowing the scope of inquiry to what machines can already simulate.

Finally, the perception of AI as all-knowing risks redefining educational goals in ways that prioritize efficiency over depth. Institutions eager to adopt AI may inadvertently reinforce this trend by valuing rapid results—higher test scores, faster grading, streamlined curricula—over the slower processes of intellectual formation. If uncritically embraced, AI could shift education toward a transactional model of knowledge acquisition rather than a transformative process of human development.

Ethical and Social Implications

Beyond the cognitive and pedagogical dangers, the perception of AI as an all-knowing authority raises significant ethical and social concerns. Education is never merely a technical activity; it is deeply embedded in values, equity, and the shaping of social consciousness. When students uncritically embrace AI as a source of truth, broader issues of bias, inequality, and social conditioning come into play. These challenges highlight that the risks of AI in education extend far beyond individual classrooms, touching the very fabric of society.

One of the most pressing concerns is the problem of bias. AI systems are not neutral; they are built on vast datasets drawn from human activity, which inevitably contain cultural, social, and political biases. When students perceive AI outputs as objective truths, they may unknowingly absorb and reproduce these biases. For example, generative AI tools have been shown to reflect gender stereotypes, cultural generalizations, and even political leanings. In an educational setting, this creates the risk of normalizing distorted perspectives under the guise of authority. The danger is magnified when students lack the critical literacy to question or contextualize the information provided.

Another ethical issue involves the authority problem. When AI is treated as a guru, it challenges traditional hierarchies of knowledge. Teachers, scholars, and subject experts derive authority from years of study and reflective practice. AI, by contrast, generates responses instantaneously without genuine understanding. If students increasingly defer to AI rather than human educators, society risks elevating algorithmic authority above lived expertise. This shift not only diminishes the role of educators but also redefines what counts as legitimate knowledge. The long-term implication is a cultural tendency to trust machines more than humans—a troubling inversion of authority.

The digital divide further complicates the ethical landscape. While affluent students may have access to advanced AI tools and the skills to use them critically, students from marginalized or under-resourced backgrounds may either lack access altogether or depend on AI without adequate guidance. This could widen educational inequalities, creating a two-tier system in which some learners benefit from balanced integration of AI while others fall into uncritical dependency. Instead of democratizing education, AI could exacerbate existing social divisions.

Finally, there are long-term societal risks. A generation raised to accept AI outputs uncritically may carry this disposition into adulthood, shaping how future citizens interact with institutions, governments, and technologies. If students learn to equate confidence with truth and efficiency with knowledge, society may face adults less inclined to question dominant narratives, resist systemic injustices, or innovate beyond algorithmic solutions. In this sense, the perception of

AI as all-knowing is not simply an educational concern—it is a civic one, with implications for democracy, social justice, and human creativity.

Towards Responsible AI Use in Education

Recognizing the dangers of students perceiving AI as all-knowing is only the first step. The more pressing challenge lies in creating strategies that ensure AI serves as a supportive guide rather than an unquestionable guru. This requires a holistic approach that combines the efforts of educators, policymakers, technologists, and students themselves. Responsible AI use in education must be anchored in three core principles: critical engagement, pedagogical balance, and ethical awareness.

The first and most urgent step is to strengthen AI literacy among students. Just as traditional education emphasizes reading, writing, and critical thinking, the 21st century demands digital and AI literacy as essential skills. Students must be trained to understand how AI works, what its limitations are, and why its outputs should not be taken at face value. Lessons in evaluating AI responses, cross-checking information, and identifying bias can be embedded into curricula across disciplines. Such initiatives would empower learners to interact with AI critically rather than passively, reinforcing their role as active participants in the learning process.

Equally important is the role of educators in reframing AI's place in the classroom. Teachers must actively guide students in using AI as a supplement rather than a substitute for learning. For example, educators can design assignments that require students to critique AI outputs, compare them with human-authored sources, or reflect on the differences between machine-generated and original insights. By positioning AI as one voice among many, rather than the final word, teachers help preserve the dialogical and reflective nature of education. This approach also reaffirms the irreplaceable role of human mentorship, empathy, and creativity in shaping learners.

At the institutional and policy level, there is a need for clear guidelines on responsible AI integration. Schools and universities should adopt frameworks that encourage balanced use of AI while safeguarding academic integrity. Policies could include transparency in AI use, limits on its role in assessments, and protections against over-reliance. Collaboration with technologists is also vital: AI tools must be designed with built-in features that communicate uncertainty, cite sources, and remind users to verify information. These design choices can counteract the illusion of omniscience and promote more reflective engagement.

Finally, responsible AI use requires cultivating ethical awareness. Students must understand that AI is not just a technical tool but also a social and ethical construct shaped by human decisions. Discussions about bias, inequality, and accountability should be woven into the educational narrative, helping students see AI in its full complexity. Such awareness fosters not only better learning outcomes but also the development of responsible citizens who can navigate an AI-driven society with discernment and integrity.

Conclusion

The growing presence of artificial intelligence in education has created both extraordinary opportunities and significant risks. On one hand, AI tools provide accessibility, efficiency, and personalization on a scale previously unimaginable. They support learners in navigating complex subjects, assist educators in reducing repetitive tasks, and hold promise for making

education more inclusive. On the other hand, when students begin to perceive AI as an all-knowing authority, the very essence of education is threatened.

As this article has shown, the dangers of misplaced trust in AI span psychological, pedagogical, and ethical dimensions. Over-reliance can foster cognitive laziness, diminish critical thinking, and encourage intellectual dependency. Pedagogically, it risks weakening teacher-student relationships, stifling collaboration, and undermining creativity. Ethically, it can reinforce bias, exacerbate inequality, and contribute to a culture where algorithmic authority overshadows human judgment. If left unchecked, these trends may produce a generation of learners adept at using AI but ill-prepared to think independently, creatively, and responsibly.

The solution is not to abandon AI in education but to integrate it responsibly. Students must be equipped with AI literacy to question and evaluate outputs. Educators must reframe AI as a tool, not a replacement, and institutions must create policies that encourage balanced use. Ultimately, education must safeguard its deeper purpose: to cultivate critical, curious, and ethically aware human beings.

AI can be a powerful guide in this journey—but it must never become the guru. The challenge before us is to harness its potential while preserving the human qualities that make education transformative.

References

Aoun, J. E. (2017). Robot-proof: Higher education in the age of artificial intelligence. MIT Press.
Floridi, L. (2019). The logic of information: A theory of philosophy as conceptual design. Oxford University Press.
Holmes, W., Bialik, M., & Fadel, C. (2019). Artificial intelligence in education: Promises and implications for teaching and learning. Center for Curriculum Redesign.
Luckin, R., Holmes, W., Griffiths, M., & Forcier, L. B. (2016). Intelligence unleashed: An argument for AI in education. Pearson.
McKnight, K., O'Malley, K., Ruzic, R., Horsley, M. K., Franey, J. J., & Bassett, K. (2016). Teaching in a digital age: How educators use technology to improve student learning. Journal of Research on Technology in Education, 48(3), 194–211. https://doi.org/10.1080/15391523.2016.1175856
Selwyn, N. (2019). Should robots replace teachers? AI and the future of education. Polity Press.
Seldon, A., & Abidoye, F. (2018). The fourth education revolution: Will artificial intelligence liberate or infantilise humanity? University of Buckingham Press.
UNESCO. (2021). AI and education: Guidance for policy-makers. United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization. https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000376709
Williamson, B., & Piattoeva, N. (2022). Education governance and datafication: Critical perspectives on AI, automation, and accountability. Learning, Media and Technology, 47(2), 193–206. https://doi.org/10.1080/17439884.2022.2055055
Zawacki-Richter, O., Marín, V. I., Bond, M., & Gouverneur, F. (2019). Systematic review of research on artificial intelligence applications in higher education – Where are the educators? International Journal of Educational Technology in Higher Education, 16(1), 1–27. https://doi.org/10.1186/s41239-019-0171-0

मधुबनी लोककला भित्ति चित्र से ग्लोबल तक का सफर

नरेंद्र कुमार
सहायक प्रोफेसर
(कला और शिल्प विभाग)

भारत की महान कला एवं संस्कृति में बिहार का एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। बिहार के प्रमुख लोक कलाओं में एक कला मधुबनी कला है जिसे हम मिथिला कला के नाम से जानते हैं। यह कला भारत ही नही अपितु विश्व के पटल पर अपनी अमिट छाप छोड़ चुकी है
इस पेन्टिंग की शुरूआत रामायण काल में हुई थी ऐसा माना जाता है कि भगवान राम और माता सीता की शादी के दौरान राजा जनक ने मिथिला की महिलाओं को घरों की दीवारों और आंगनों को सजाने के लिये कहा था साथ में यह भी कहा था कि इसमें मिथिला की सांस्कृति दिखनी चाहिये। जिससे कि जो लोग आये तो उन्हें लगे कि मिथिला की संस्कृति कितनी महान है।
मधुबनी चित्रकला मिथिलांचल क्षेत्र जैसे- बिहार के दरभंगा, मधुबनी एवं नेपाल के कुछ क्षेत्रों का प्रमुख चित्रकला है।

प्रारंभ में इन क्षेत्रों के महिलाओं द्वारा भित्ति चित्र एवं विभिन्न मांगलिक अनुष्ठानों में रंगोली बनाने के कम में इस कला का आविर्भाव हुआ जो कमशः आज कपड़े, कागज और दीवारों पर आ गयी है। मिथिलांचल के कई गाँवों की महिलायें इस कला में दक्ष हैं। इस कला में खास तौर पर हिन्दू देवी-देवताओं के चित्र, प्राकृतिक दृष्य, सूर्य, चन्द्रमा, मिथिला की परम्परागत विवाह पद्धति, बारात का दृष्य देखने को मिलता है आरंभ से ही इन चित्रकलाओं को बनाने में रंग और पेंट के स्थान पर विभिन्न प्रकार के फूलों एवं पत्तियों के रस से निर्मित प्राकृतिक रंगों का व्यवहार किया जाता है जो आकर्षक एवं चटकीले होते हैं।

मिथिला पेन्टिंग जो आज कागजों और साड़ियों पर बनते हैं उन्हें बनाने का तरीका बहुत अनोखा है इन पेन्टिंग को माचिस की तीली और बांस के कलम के सहारे दीवारों पर या कागजों पर उकेरा जाता है जिन कागजों का इनके लिये इस्तेमाल किया जाता है उसे हाथ से ही तैयार किया जाता है। इस प्रकार पेन्टिंग बनाने से पहले गाय के गोबर का घोल बना कर उसमें बबुल का गोंद डालकर सूती कपडे से कागज पर लगा कर सुखाया जाता है इसकी सबसे बड़ी खासियत होती है इसका रंग इन पेन्टिंग में चटक रंगों का खूब इस्तेमाल होता है जैसे सूर्ख लाल, नीला, हरा और काला इन रंगों को अलग-अलग रंगों के फूलों और उसकी पत्तियों को पीस कर बबूल के पेड की गोंद और दूध के साथ घोल कर तैयार किया जाता है। कहीं कहीं हलके रंग जैसे गुलाबी पीला और नीबू रंग का इस्तेमाल किया जाता है।
मधुबनी पेन्टिंग भरनी, कचनी, तान्त्रिक, गोदना और कोहबर स्टाइल में बनाई जाती है इसमें भरनी, कचनी एवं तान्त्रिक स्टाइल इसकी शुरूआत ब्राहम्णों और कायस्थ महिलाओं ने की थी।
मिथिलांचल की हजारों साल पुरानी यह कला 1950 तक यह लोक कला थी और शायद इसे ग्लोबल पहचान नही मिलती अगर एक ब्रिटिश आफिसर ने इस कला के प्रति अपना रूझान नही दिखाया होता। दरअसल 1934 में मिथिलांचल में एक बड़ा भूकम्प आया जिसमें काफी नुकसान हुआ इस त्रासदी को देखने के लिये आफिसर विलियम जी.आर्चर पहुंचे थे उन्होंने दीवारों तक पेन्टिंग देखी जो उनके लिये नई और अनोखी थी उन्होंने इस पेन्टिंग की तस्वीरें खींची जो मधुबनी पेन्टिंग की सबसे पुरानी तस्वीर मानी जाती है। विलियम जी.आर्चर ने एक आर्टीकल लिखा जिसमें इन पेन्टिंग की तुलना पिकासो से कर दी। यहीं से मिथिला पेन्टिंग को ग्लोबल्स पहचान मिली।
इसमें अब नई कई आधुनिक स्टाइल उभर कर सामने आ रहे हैं। मधुबनी की इस कला को आमतौर पर महिलायें ही अपने हाथों से उकेरती हैं। मिथिला की पारंपरिक लोक कला होने के कारण इसमें महिलाओं की भागीदारी सब से अधिक रही। इनमें से कुछ महिलाओं के चित्रकला का परिचय निम्न प्रकार है :-
मिथिला (मधुबनी) पेंटिंग को वैश्विक पहचान दिलाने वाली सीता देवी, जगदम्बा देवी, महासुन्दरी देवी और बउवा देवी वास्तव में पद्म पुरस्कार (पद्म श्री) से सम्मानित कलाकार हैं। इन दिग्गजों ने अपनी अनूठी शैली से लोक कला को दीवारों से कागज तक लाते हुए मिथिला पेंटिंग की दुनिया भर में धाक जमाई है।
जगदम्बा देवी (1975): मिथिला पेंटिंग के लिए पद्मश्री प्राप्त करने वाली पहली महिला कलाकार।
सीता देवी (1984): मधुबनी चित्रकला की प्रमुख हस्ती, जिन्हें बिहार-रत्न से भी सम्मानित किया गया।
महासुन्दरी देवी (2011): इन्होने मिथिला पेंटिंग में एक्रेलिक रंगों और साड़ियों पर चित्रांकन का प्रयोग किया।
बउवा देवी (2017): मिथिला पेंटिंग की अग्रणी कलाकार, जिन्हें 'मैजिशियन ऑफ द अर्थ' प्रदर्शनी के लिए जाना जाता है।
ये सभी कलाकार मिथिला (मधुबनी) के समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की प्रतीक हैं।

रोजगारोन्मुखी शिक्षा और हमारी अपेक्षा

डॉ. प्रतिभा राय
सहायक प्राध्यापिका

परिचय

हमारी मान्यता है कि शिक्षा राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा द्वारा हमें समाज में ज्ञान व कौशल में बढ़ोत्तरी होती है, इससे राष्ट्र के विकास व आर्थिक उन्नति संभव हो पाता है, इसके लिए हमारी शिक्षा व्यवस्था अग्रसर है। हमारी नई नीति में राष्ट्र की प्रगति में शिक्षा को महत्वपूर्ण माना गया है। इसके लिए शिक्षा को रोजगार से जोड़ने की बात कही गयी है। महात्मा गाँधी का मानना था की छात्रों को कौशल (Handicraft प्रशिक्षण द्वारा) दिया जाना चाहिए जिससे पढ़ाई के साथ Earning की जा सके। प्रारंभ से ही शिक्षा व्यक्ति तथा समाज के उत्थान के लिए केन्द्रीय भूमिका में रही है। इस कारण शिक्षा को रोजगार से जोड़ने पर बल दिया गया फलस्वरूप रोजगारोन्मुखी शिक्षा अस्तित्व में आया। नई शिक्षा नीति 2000 भी रोजगारोन्मुखी शिक्षा की बात करती है, इसके अंतर्गत शैक्षणिक संस्थागत संचालन की चर्चा की गई है, जिससे 21वीं शताब्दी में 2025 तक 50% छात्रों को रोजगारोन्मुखी शिक्षा प्रदान की जा सके।

अर्थ

रोजगारोन्मुखी शिक्षा से तात्पर्य ऐसे शिक्षा से है जिस का आधार नौकरी या व्यवसाय और रोजगार (अथवा कार्यधंधा) है। रोजगारोन्मुखी शिक्षा को केंद्रित तथा तकनिकी शिक्षा व रोजगारोन्मुखी शिक्षा एवं प्रशिक्षण के नाम से भी जाना जाता है। रोजगारोन्मुखी शिक्षा के अंतर्गत मुख्य रूप से Practical पाठ्यक्रम आते हैं जहाँ कैरियर तथा भविष्य को ध्यान में रखते हुए कौशल तथा अनुभव को अर्जित जाता हैं, जिससे छात्र कौशल युक्त होते हैं तथा छात्रों को रोजगार के अच्छे अवसर प्राप्त होते हैं।

आवश्यकता :–

1. पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था सैद्धांतिक ज्ञान पर अधिक आधारित होती है, जिससे छात्रों में व्यवहारिक कौशल का अभाव पाया जाता है इसलिए रोजगारोन्मुखी शिक्षा की आवश्यकता पड़ी।
2. बेरोजगारी की समस्या अधिक होने के कारण रोजगारोन्मुखी शिक्षा द्वारा रोजगार के अवसर प्रदान किए जा सकते हैं।
3. नई प्रौद्योगिकी के आने व मशीनीकरण के कारण कौशल की माँग बढ़ी, जिससे रोजगारोन्मुखी शिक्षा की आवश्यकता पड़ी।
4. कौशल युक्त समाज किसी भी देश के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण होता है समाज के केवल कुछ (बुद्धिजीवी) होने से देश का अधिक विकास संभव नहीं हो पाता है।
5. रोजगारोन्मुखी शिक्षा युवाओं को आत्मनिर्भर बनाती है।

सामाजिक महत्व :–

रोजगारोन्मुखी शिक्षा भारत में सफल रही है। रोजगारोन्मुखी शिक्षा द्वारा युवाओं को पूरणकालिक कोर्स I.T.I. (N.C.V.T.) की उपाधि प्राप्त की जाती है। एन.सी.वी.टी. (National Council for Vocational Training) भारत सरकार के श्रम संसाधन विभाग के अंतरगत मान्यता दी गई है। हमारे देश में रोजगारोन्मुखी शिक्षा को रोजगार से जोड़ कर देखा जाता है हमारे समाज में इसका बहुत अधिक महत्व है। जिसके कारण कुछ विश्वविद्यालय तथा राज्य तकनीकी शिक्षा आयोग द्वारा पार्ट–टाइम कार्यक्रम तथा पूर्णकालिक पाठ्यक्रम करवाए जाते हैं। इसी प्रकार Graduate तथा Post Graduate स्तर पर भी विशेष प्रकार के Courses भी चलाए जाते हैं, जैसे I.T.I. तथा इंजीनियरिंग कोर्स आदि रोजगारोन्मुखी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए उच्च माध्यमिक स्तर पर छात्रों के लिए डिप्लोमा स्तर में Polytechnic के टेक्निशियन तथा जूनियर इंजीनियर जैसे प्रशिक्षण दिए जाते हैं।

रोजगारोन्मुखी शिक्षा द्वारा समाज बहुत अधिक लाभान्वित देखा गया है। इसके लिए निजी संस्थान भी रोजगार आधारित अथवा रोजगारोन्मुखी शिक्षा को बढ़ावा देने का कार्य कर रहे हैं।

हमारी आकांक्षा

रोजगारोन्मुखी शिक्षा को बढ़ाने के लिए भारत सरकार अग्रसर है। जिसमें 'कुशल भारत' अभियान और 'आत्मनिर्भर भारत जैसे अभियान' को चलाया गया तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी इसे स्थान दिया गया तथा 2025 तक स्कूल और उच्च शिक्षा प्रणाली में कम से कम 50% छात्रों को रोजगारोन्मुखी शिक्षा के अन्तर्गत लाने पर बल दिया गया है।फिर भी इस क्षेत्र में कुछ समस्याएँ भी हैं। इस क्षेत्र में Trained Faculty (प्रशिक्षित संकाय) का अभाव देखने को मिलता है। रोजगारोन्मुखी शिक्षा प्राप्त करने वाले संस्थान के अभाव जैसी परिस्थिति का भी सामना करना पड़ता है।

छवि 2 का पाठ

- **सफलता के बाद भी**
  इसके द्वार देश आज भी लगातार नौ कौशल राजधानियों (के ऊपर निवेश किया जा रहा है)। इसी प्रकार प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY) द्वारा आजीवन सीखने के अवसरों पर बल दिया गया है।

निष्कर्ष

आधुनिक समय में रोजगार और व्यावसायिक परिस्थितियों में परिवर्तन देखने को मिलते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि बच्चों को ऐसी शिक्षा दी जाए, जिससे उन्हें सतत सीखते रहने का अवसर मिले तथा उन्हें कौशलयुक्त शिक्षा प्रदान की जाए।

संदर्भ सुची :–

1. Kaushik K, (2014) Vocational Education in India, International Journal of Education and Information Studies.
2. Nair RA, Hardikar G (2021) Mahatma Gandhi's Philosophy of Education and Life Skills Education: A Conceptual Study, JRME
3. Pathak R, (2025), भारतीय परिदृश्य में रोजगारोन्मुखी शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्त्व http://emagazine pdf group.in

नई शिक्षा नीति 2020 में गुरुकुल शिक्षण पद्धति के तत्वों का समावेश: एक समग्र दृष्टिकोण

डॉ अमित कुमार पाण्डेय,
सहायक प्राध्यापक
समन्वयक- आईकेएस सेल

शोध सार- नई शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) भारत की शिक्षा प्रणाली में एक परिवर्तनकारी कदम है, जिसका उद्देश्य शिक्षा को समग्र, लचीला, और कौशल-आधारित बनाना है। यह नीति भारतीय ज्ञान प्रणालियों, नैतिकता, और राष्ट्रीय मूल्यों को पुनर्जनन देने पर बल देती है। दूसरी ओर, गुरुकुल शिक्षण पद्धति प्राचीन भारत की एक समृद्ध शिक्षा प्रणाली है, जो गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित है और शिक्षा को केवल अकादमिक ज्ञान तक सीमित नहीं रखती, बल्कि जीवन कौशल, नैतिकता, और आध्यात्मिकता को भी समाहित करती है। यह शोध आलेख इस बात का विश्लेषण करता है कि गुरुकुल शिक्षण पद्धति के तत्वों को NEP 2020 में कैसे समावेश किया जा सकता है ताकि एक समग्र और मूल्य-आधारित शिक्षा प्रणाली विकसित हो सके।

इस आलेख का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि गुरुकुल पद्धति के कौन से तत्व NEP 2020 के लक्ष्यों के अनुरूप हैं और उन्हें आधुनिक संदर्भ में कैसे लागू किया जा सकता है। शोध में गुणात्मक विश्लेषण का उपयोग किया गया है, जिसमें साहित्य समीक्षा, विशेषज्ञ साक्षात्कार, और केस स्टडीज शामिल हैं। शोध से पता चलता है कि गुरुकुल पद्धति के तत्व जैसे गुरु-शिष्य संबंध, समग्र शिक्षा, और मूल्य-आधारित शिक्षा NEP 2020 के उद्देश्यों के साथ संनादति हैं। हालांकि, इन तत्वों को लागू करने में चुनौतियाँ जैसे मानकीकरण, स्केलेबिलिटी, और शिक्षक प्रशिक्षण की आवश्यकता भी सामने आई हैं।

निष्कर्ष में, यह आलेख बताता है कि गुरुकुल पद्धति के तत्वों का समावेश NEP 2020 को और प्रभावी बना सकता है, जिससे शिक्षा न केवल अकादमिक बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक रूप से भी समृद्ध हो। भविष्य के लिए, पायलट परियोजनाओं और प्रायोगिक अध्ययनों के माध्यम से इन तत्वों के कार्यान्वयन पर ध्यान देने की सिफारिश की गई है।

बीजशब्द- नई शिक्षा नीति 2020, गुरुकुल शिक्षण पद्धति, समग्र शिक्षा, गुरु-शिष्य परंपरा, जीवन कौशल, नैतिकता और आध्यात्मिकता

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी समाज की रीढ़ होती है। यह न केवल ज्ञान और कौशल का स्रोत है, बल्कि व्यक्ति के चरित्र निर्माण और सामाजिक मूल्यों को आकार देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में शिक्षा की परंपरा प्राचीन काल से ही गहरी और समृद्ध रही है। गुरुकुल शिक्षण पद्धति इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जो वैदिक काल से चली आ रही है। इस पद्धति में शिक्षा केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसमें जीवन के सभी आयामों—नैतिकता, आध्यात्मिकता, शारीरिक स्वास्थ्य, और सामाजिक जिम्मेदारियों—को शामिल किया जाता था। गुरु और शिष्य के बीच का गहरा संबंध इस प्रणाली का मूल था, और शिक्षा को व्यक्तिगत विकास का साधन माना जाता था।

आधुनिक समय में, भारत की शिक्षा प्रणाली कई चुनौतियों का सामना कर रही है, जैसे रटने पर आधारित शिक्षण, कौशल की कमी, और नैतिक मूल्यों का ह्रास। इन समस्याओं के समाधान के लिए, भारत सरकार ने 2020 में नई शिक्षा नीति (NEP 2020) की घोषणा की। यह नीति शिक्षा को समग्र, लचीला, और कौशल-आधारित बनाने का प्रयास करती है, साथ ही भारतीय ज्ञान प्रणालियों और मूल्यों को पुनर्जनन देने पर जोर देती है। NEP 2020 का लक्ष्य शिक्षा को केवल रोजगार का साधन बनाने के बजाय जीवन के लिए तैयार करना है।

इस संदर्भ में, यह शोध आलेख "नई शिक्षा नीति 2020 में गुरुकुल शिक्षण पद्धति के तत्वों का समावेश: एक समग्र दृष्टिकोण" पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि गुरुकुल पद्धति के कौन से तत्व NEP 2020 के साथ संनादति हैं और उन्हें आधुनिक शिक्षा में कैसे समाहित किया जा सकता है। शोध के विशिष्ट उद्देश्य हैं:

- गुरुकुल शिक्षण पद्धति के प्रमुख तत्वों की पहचान करना।
- NEP 2020 और गुरुकुल पद्धति के बीच समानताओं और अंतरों का विश्लेषण करना।
- गुरुकुल तत्वों के समावेश की संभावनाओं और चुनौतियों का मूल्यांकन करना।

यह आलेख गुणात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसमें साहित्य समीक्षा, विशेषज्ञ साक्षात्कार, और केस स्टडीज का उपयोग किया गया है। यह आलेख शिक्षाविदों, नीति निर्माताओं, और शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी होगा जो भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार और पारंपरिक ज्ञान के पुनर्जनन में रुचि रखते हैं।

1. गुरुकुल शिक्षण पद्धति: एक ऐतिहासिक अवलोकन

गुरुकुल एक प्रकार की आवासीय विद्यालय व्यवस्था है जिसमें शिष्य(छात्र) आचार्य या गुरु के साथ रहता है। आचार्य उसे खिलाते हैं, सिखाते हैं, और परिवार के साथ उसके साथ व्यवहार करते हैं। शिष्य(विद्यार्थी) अपने दैनिक कार्यों में गुरु की सहायता करता है और उसके आचरण से भी सीखता है। इसी तरह वैदिक काल और महाभारत काल के दौरान 18 वीं शताब्दी तक अंग्रेजों द्वारा वैकल्पिक डे-बोर्डिंग सिस्टम शुरू करने तक सभी को शिक्षा प्रदान की

गई थी। भारत में शिक्षा की गुरुकुल प्रणाली वैदिक काल में फली-फूली। प्राचीन काल में गुरुकुल शिक्षा के मुख्य केंद्र के रूप में कार्य करते थे। गुरुकुलों में, ब्रह्मचारी (छात्र), या सत्यनवेशी परिव्राजकास दूर-दूर से अपनी शिक्षा पूरी करने आते थे। वे गुरुकुल छोटे-बड़े सभी प्रकार के होते थे।

गुरुकुल प्रणाली भारतीय उपमहाद्वीप की स्वदेशी शिक्षा प्रणाली है। यह पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में डे-बोर्डिंग प्रणाली के आगमन तक प्रचलित थी जिसे अंग्रेजों ने भारतीय उच्च वर्गों को अंग्रेजी शिक्षा प्रदान करने के लिए शुरू किया था। इसका उपयोग भारत में धार्मिक और साथ ही धर्मनिरपेक्ष शिक्षा प्रदान करने के लिए किया जाता था। गुरुकुल की शुरुआत वैदिक युग में हुई थी जब मौखिक परंपराओं के माध्यम से शिक्षा दी जाती थी और गुरु-शिष्य परंपरा की मदद से इस प्रणाली को जीवित रखा गया था। धीरे-धीरे इन गुरुकुलों ने संस्थागत रूप ले लिया और हर तरह का ज्ञान प्रदान करने के लिए इस प्रणाली ने काम करना शुरू कर दिया। गुरुकुल शिक्षण पद्धति भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली का आधार थी। यह वैदिक काल में विकसित हुई और गुरु-शिष्य परंपरा पर टिकी थी। शिष्य गुरु के आश्रम में रहते थे और शिक्षा प्राप्त करते थे। इस पद्धति का उद्देश्य केवल शैक्षणिक ज्ञान प्रदान करना नहीं था, बल्कि जीवन के समग्र विकास को सुनिश्चित करना था। इसके प्रमुख तत्व निम्नलिखित हैं:

- गुरु-शिष्य संबंध: गुरु को शिक्षक से कहीं अधिक—एक मार्गदर्शक और आध्यात्मिक गुरु—माना जाता था। शिष्य गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण रखते थे।
- समग्र शिक्षा: शिक्षा में वेद, उपनिषद, दर्शन, विज्ञान, कला, और युद्ध कौशल शामिल थे। योग, ध्यान, और शारीरिक स्वास्थ्य पर भी ध्यान दिया जाता था।
- मूल्य-आधारित शिक्षा: नैतिकता, सत्य, अहिंसा, और सामाजिक जिम्मेदारियाँ शिक्षा का अभिन्न अंग थीं।
- व्यक्तिगत ध्यान: प्रत्येक शिष्य की शिक्षा उसकी क्षमता और रुचि के अनुरूप होती थी।
- प्रकृति से सामंजस्य: गुरुकुल प्राकृतिक वातावरण में स्थित होते थे, और शिक्षा में प्रकृति के साथ जुड़ाव पर जोर था।

2. नई शिक्षा नीति 2020: एक परिचय

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 21वीं सदी की पहली शिक्षा नीति, का उद्देश्य सतत विकास लक्ष्यों (एसजीडी) (एमओएचआरडी, 2020) सहित शिक्षा के आकांक्षात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए भारत की परंपरा और मूल्य प्रणाली के आधार पर देश की शिक्षा संरचना के विभिन्न पहलुओं में संशोधन और सुधार का प्रस्ताव देकर भारत की कई बढ़ती विकासात्मक अनिवार्यताओं को संबोधित करना है। दस्तावेज़ में स्कूली शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक, पेशेवर और वयस्क और आजीवन शिक्षा शामिल है। इसे चार प्रमुख भागों में विभाजित किया गया है। भाग- I बचपन की देखभाल से लेकर उच्चतर माध्यमिक तक की स्कूली शिक्षा से व्यापक रूप से संबंधित है, जिसमें शिक्षाशास्त्र, शिक्षक, बाल अधिकार, मान्यता और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा शामिल है। नीति दस्तावेज़ का दूसरा भाग उच्च शिक्षा से संबंधित है, जो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और अनुसंधान विकास, शिक्षक शिक्षा, शासन आदि पर केंद्रित है।

एनईपी 2020 प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत क्षमताओं को पहचानने पर केंद्रित है। तदनुसार, यह अध्ययन के विभिन्न क्षेत्रों के बीच कोई कठोर भेद नहीं करता है जहाँ प्रत्येक क्षेत्र का समान महत्व है और उच्च शिक्षा में प्रवेश और निकास के कई विकल्प प्रदान करता है। यह अपेक्षा की जाती है कि अध्ययन के क्षेत्र का कोई कठोर पृथक्करण न होने से शिक्षार्थियों की रचनात्मकता में वृद्धि होगी, जो बदले में आलोचनात्मक सोच में सहायक होगी। इसके अलावा, यह अपेक्षा की जाती है कि सीखने के लिए बहु-विषयक दृष्टिकोण शिक्षार्थियों के बीच एक समग्र ज्ञान आधार विकसित करने में सहायता करेगा, जो नैतिक और संवैधानिक मूल्यों के लिए आवश्यक है। इसलिए, एनईपी 2020 मुख्य रूप से एक मूल्य-आधारित शिक्षा प्रणाली पर केंद्रित है जहाँ शिक्षार्थी पढ़ना और लिखना सीखेंगे और एक राष्ट्र के विकास के लिए रचनात्मक और आलोचनात्मक रूप से क्षेत्र में सीखे गए ज्ञान को लागू करने में सक्षम होंगे।

इसके अलावा, एनईपी 2020 विविधता और एकता के मुद्दे को भी मान्यता देती है। तदनुसार, एनईपी एक ऐसे पाठ्यक्रम पर केंद्रित है जो स्थानीय संदर्भ, शिक्षण पद्धति और मातृभाषा पर केंद्रित हो। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि एनईपी 2020 सार्वजनिक सेवाओं पर भी केंद्रित है। एनईपी 2020 के अनुसार, शिक्षण केवल एक सेवा नहीं है; बल्कि, यह एक सार्वजनिक सेवा है, और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करना बच्चे के मौलिक अधिकारों में से एक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने स्कूली शिक्षा की संरचना में एक क्रांतिकारी परिवर्तन किया है, जिसमें बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता पर ज़ोर दिया गया है, जो सीखने की प्रक्रिया की प्राथमिक आवश्यकताओं में से एक है। इस प्रकार, यह नीति प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा से ही चरित्र निर्माण के महत्व को स्वीकार करती है। यह मानती है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल संज्ञानात्मक विकास ही नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और 21वीं सदी के प्रमुख कौशलों से सुसज्जित समग्र एवं सर्वांगीण व्यक्तित्व का निर्माण भी है' (वही: 12)। तदनुसार, छात्रों की रचनात्मकता को बढ़ाने के लिए, नीति ने स्कूली शिक्षा में व्यावसायिक विषयों को भी शामिल किया है। बहुभाषावाद पर भी ज़ोर दिया गया है। परिणामस्वरूप, छात्रों को, विशेष रूप से माध्यमिक विद्यालय में, अध्ययन के लिए विषयों के लचीलेपन और चयन का अधिकार मिलता है।

यद्यपि एनईपी 2020 स्कूली शिक्षा पर केंद्रित थी, लेकिन इसका महत्वपूर्ण प्रभाव उच्च शिक्षा प्रणाली में देखा जा रहा है क्योंकि 'यह नीति भारत में उच्च शिक्षा के समक्ष विद्यमान विभिन्न चुनौतियों (उपर्युक्त: 34) से निपटने के लिए उच्च शिक्षा प्रणाली में आमूल-चूल परिवर्तन और पुनर्सक्रियन की परिकल्पना करती है।' इस नीति के महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी कदमों में बहु-विषयक दृष्टिकोण अपनाना, उच्च शिक्षण संस्थानों को अधिक स्वायत्तता प्रदान करना, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और अनुसंधान, अंतर्राष्ट्रीयकरण और मान्यता पर ज़ोर देना शामिल है। इसके अलावा, इस नीति दस्तावेज़ का उद्देश्य समग्र उच्च

शिक्षा प्रणाली में व्यावसायिक शिक्षा को शामिल करना भी है। कृषि, विधि, स्वास्थ्य विज्ञान और तकनीकी विश्वविद्यालयों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

3. गुरुकुल पद्धति और NEP 2020: तुलनात्मक विश्लेषण

समानताएँ:

- दोनों ही समग्र शिक्षा पर जोर देते हैं।
- मूल्य-आधारित शिक्षा दोनों का आधार है।
- भारतीय संस्कृति और ज्ञान को महत्व।
- शिक्षक की केंद्रीय भूमिका।

अंतर:

- गुरुकुल व्यक्तिगत और अनौपचारिक था; NEP 2020 औपचारिक और व्यापक है।
- गुरुकुल आश्रम-आधारित था; NEP 2020 संस्थान-आधारित है।

4. NEP 2020 में गुरुकुल तत्वों का समावेश

- गुरु-शिष्य संबंध: शिक्षकों को मेंटर की भूमिका में प्रशिक्षित करना।
- समग्र शिक्षा: योग, ध्यान, और आध्यात्मिकता को पाठ्यक्रम में शामिल करना।
- मूल्य-आधारित शिक्षा: नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारियों पर जोर।
- व्यक्तिगत ध्यान: छात्रों की रुचि के अनुसार लचीलापन।
- प्रकृति से जुड़ाव: पर्यावरण शिक्षा को बढ़ावा।

5. चुनौतियाँ और समाधान

- मानकीकरण: लचीले पाठ्यक्रम मॉड्यूल्स का विकास।
- स्केलेबिलिटी: शिक्षक-छात्र अनुपात कम करना।
- शिक्षक प्रशिक्षण: गुरुकुल सिद्धांतों पर प्रशिक्षण मॉड्यूल्स।

6. गुरुकुल शिक्षा पद्धति से ग्रहणीय तत्व -

1. शिक्षा का उद्देश्य: केवल पढ़ाई नहीं, जीवन निर्माण

   गुरुकुलों में शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम पढ़ाना नहीं था, बल्कि उनका मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक विकास करना था। यह शिक्षा का एक समग्र दृष्टिकोण था, जहाँ पर ज्ञान के साथ-साथ जीवन के मूल्य भी सिखाए जाते थे। आज की शिक्षा प्रणाली में अधिकतर ध्यान अंकों और परीक्षाओं पर होता है, जबकि गुरुकुलों में शिक्षा का उद्देश्य केवल शिक्षा प्राप्त करना नहीं था, बल्कि एक पूर्ण और जिम्मेदार इंसान बनाना था। यहाँ पर यह सिखाया जाता था कि शिक्षा का उद्देश्य जीवन के हर पहलू को समझना और उसे बेहतर बनाना है। यह वह शिक्षा थी, जो विद्यार्थियों को ना केवल जीवन में सफलता की राह दिखाती थी, बल्कि उन्हें एक अच्छा इंसान भी बनाती थी।

2. विद्यार्थियों की क्षमतानुसार शिक्षा

   आधुनिक शिक्षा प्रणाली में बच्चों को समान कक्षा में रखा जाता है, चाहे उनकी समझ और क्षमता में कितना भी अंतर हो। इसका नतीजा यह होता है कि तेज़ सीखने वाले बच्चे अपनी क्षमता का पूरा उपयोग नहीं कर पाते, और धीमे सीखने वाले बच्चे पिछड़ जाते हैं। इस तरह, बच्चों के समय और ऊर्जा का सदुपयोग नहीं हो पाता। इसके विपरीत, गुरुकुलों में शिक्षा का तरीका पूरी तरह से विद्यार्थियों की क्षमताओं के अनुसार था। यदि किसी विद्यार्थी को जल्दी समझ में आता था, तो उसे अगले स्तर पर भेज दिया जाता था, और जो धीमे होते थे, उन्हें अधिक समय और ध्यान दिया जाता था। इस तरीके से सभी बच्चों को उनकी पूरी क्षमता के अनुसार आगे बढ़ने का अवसर मिलता था। गुरुकुलों में यह प्रक्रिया बच्चों के आत्मविश्वास को भी बढ़ाती थी, क्योंकि हर बच्चा अपनी गति से सीख सकता था, न कि किसी निर्धारित समयसीमा के भीतर। इससे बच्चों में आत्ममूल्य और आत्म-विश्वास का विकास होता था, जो कि आज के समय में अत्यंत आवश्यक है।

3. जीवनमूल्य और आध्यात्मिकता का समावेश

   आज के स्कूलों और कॉलेजों में अधिकतर शिक्षा केवल शैक्षिक विषयों पर केंद्रित होती है। जीवन के अन्य पहलुओं, जैसे कि नैतिक शिक्षा, आध्यात्मिकता, और व्यक्तिगत विकास पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। इससे विद्यार्थियों में मानसिक दबाव और तनाव बढ़ता है, और जीवन के उद्देश्य को लेकर असमंजस पैदा होता है। गुरुकुलों में यह समस्या नहीं थी। वहां जीवन के उद्देश्य, मानसिक शांति, आत्मनिर्भरता, और सामाजिक जिम्मेदारियों को सिखाने पर जोर दिया जाता था। विद्यार्थियों को यह समझाया जाता था कि असली शिक्षा वह नहीं है, जो

केवल नौकरी पाने के लिए होती है, बल्कि वह शिक्षा है, जो जीवन को समझने और उसे सही दिशा देने में मदद करती है। आध्यात्मिकता और जीवनमूल्यों का यह समावेश विद्यार्थियों को एक मानसिक संतुलन प्रदान करता था, जो आजकल के तनावपूर्ण जीवन में बेहद जरूरी है।

4. शिक्षा का समग्र दृष्टिकोण (आजीवन शिक्षा)

गुरुकुलों में शिक्षा का ध्यान सिर्फ बचपन तक सीमित नहीं था, बल्कि यह जीवनभर चलने वाली प्रक्रिया थी। ब्रह्मचर्य आश्रम से लेकर संन्यास आश्रम तक, शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के जीवन के हर पड़ाव पर उसे समझने और गहरे ज्ञान में विकसित करना था। आज के समय में, हम स्कूल और कॉलेज की सीमाओं में बंधे रहते हैं, लेकिन गुरुकुलों में यह प्रक्रिया जीवनभर के लिए थी। इसके अनुसार, यदि कोई व्यक्ति घरस्थ आश्रम में था, तो उसे परिवार और समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ज्ञान दिया जाता था। वानप्रस्थ में, व्यक्ति को समाज से बाहर जाकर आत्म-निर्भरता और साधना की शिक्षा दी जाती थी, और संन्यास आश्रम में उसे आत्मज्ञान की ओर मार्गदर्शन किया जाता था। यह समग्र दृष्टिकोण आज की शिक्षा प्रणाली में अनिवार्य है, क्योंकि आज के समय में हम केवल नौकरी पाने तक सीमित रहते हैं, लेकिन शिक्षा का उद्देश्य जीवन के प्रत्येक पहलू को समझना होना चाहिए।

5. प्रकृति और खुले वातावरण में शिक्षा

गुरुकुलों में बच्चों को खुले वातावरण में शिक्षा दी जाती थी। यह शिक्षा किसी भी चार दीवारी में बंधी हुई नहीं थी। तालाब के किनारे, जंगल में, या पेड़ों के नीचे, शिक्षा का माहौल हमेशा प्रकृति के करीब होता था। यह न केवल शारीरिक स्वास्थ्य के लिए अच्छा था, बल्कि मानसिक विकास के लिए भी अत्यंत लाभकारी था। आज के समय में, हमें कक्षा के चारों दीवारों में बंद रहकर पढ़ाई करनी पड़ती है। जबकि खुली हवा में पढ़ाई करने से बच्चों का मन भी शांति से विचार कर सकता है, और शारीरिक विकास भी होता है। अगर हम अपनी शिक्षा प्रणाली में प्राकृतिक वातावरण का समावेश करें, तो इससे बच्चों की रचनात्मकता, मानसिक शांति और शारीरिक विकास दोनों ही बेहतर हो सकते हैं।

6. समाज और शिक्षा का संबंध

गुरुकुलों में समाज के सभी वर्गों के बच्चों को समान शिक्षा दी जाती थी। इसमें अमीर-गरीब का कोई भेद नहीं था, और यह शिक्षा सबके लिए समान रूप से उपलब्ध थी। यह विद्यार्थियों को सामाजिक समानता और सहनशीलता सिखाती थी, और एकजुटता का माहौल बनाती थी। आज के समय में शिक्षा में भेदभाव देखा जाता है, जहाँ अमीर बच्चों के पास अधिक संसाधन होते हैं, जबकि गरीब बच्चों को सीमित संसाधनों में ही शिक्षा प्राप्त करनी पड़ती है। यदि हम गुरुकुलों के सिद्धांतों को अपनाएं, तो इससे समाज में समानता और एकजुटता की भावना बढ़ेगी।

उपसंहार

यह आलेख इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि गुरुकुल शिक्षण पद्धति के तत्वों का समावेश नई शिक्षा नीति 2020 को और प्रभावी बना सकता है। गुरु-शिष्य संबंध, समग्र शिक्षा, और मूल्य-आधारित शिक्षा जैसे तत्व NEP 2020 के लक्ष्यों के साथ संनादति हैं। यह समावेश शिक्षा को केवल अकादमिक उपलब्धियों तक सीमित न रखकर इसे नैतिक और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध बना सकता है। हालांकि, इस प्रक्रिया में मानकीकरण, स्केलेबिलिटी, और शिक्षक प्रशिक्षण जैसी चुनौतियाँ हैं। इनका समाधान पायलट परियोजनाओं, लचीले पाठ्यक्रमों, और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से किया जा सकता है। भविष्य में, शोधकर्ताओं और नीति निर्माताओं को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ आधुनिक शिक्षा का अभिन्न अंग बनें। अंततः, गुरुकुल पद्धति और NEP 2020 का समन्वय एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की ओर ले जा सकता है जो छात्रों को जीवन के हर क्षेत्र में सशक्त करे। यह शोध इस दिशा में एक प्रारंभिक कदम है और आगे के अध्ययनों के लिए मार्ग प्रशस्त करता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. एलन, डी. (2019). 9/11 के बाद गांधी: रचनात्मक अहिंसा और स्थिरता . ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस: नई दिल्ली.
2. बाला, एस. (2005). शिक्षा की गांधीवादी अवधारणा: वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता. द इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, 16 (3), 531-548.
3. बर्क, बी. (2000). शिक्षा पर महात्मा गांधी . शिक्षाशास्त्र और अनौपचारिक शिक्षा के विश्वकोश से लिया गया.
4. दिवाकर, डी. (2019). भारत में नई शिक्षा नीति के मसौदे में गांधी की परिकल्पना . मेनस्ट्रीम से लिया गया.
5. गांधी, एमके (1938)। महात्मा गांधी का उद्घाटन भाषण। 8 अक्टूबर 2020 को अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन से लिया गया।
6. गांधी, एम.के. (एनडी)। बुनियादी शिक्षा और छात्र। एस. नारायण (सं.), महात्मा गांधी की चयनित कृतियाँ: खंड-पाँच (सत्य की आवाज़) (पृष्ठ 408-424) में। अहमदाबाद: नवजीवन पब्लिशिंग हाउस।
7. मैकाले, टी.बी. (1835). भारतीय शिक्षा पर मैकाले का विवरण. अंग्रेज़ी अध्ययन के इतिहास से लिया गया.

Study of gelfand algebra and its impact on banach algebra

Dr. Nimesh Kumar
Assistant professor

Abstract
The completeness of the algebra is crucial. The particular property of completeness is that in a Banach space absolutely convergent series are convergent as shown. we show that A^{-1} is an open subset of A containing B(e, 1) (the open ball in e with radius 1) and that inversion is continuous. This assertion is confirmed by the following theorem. Normed algebras are algebras whose underlying vector space is a normed vector space. where, the norm is sub-multiplicative. We obtain that σ(x) is a closed subset of B (0, ||x||) (the closed ball of radius ||x||), x A. which implies σ(x) is compact, and that σ(x) relies heavily on the theory of functions of complex variables. Which has been shown in Gelfand-Mazur Theorem. It means that complex Banach algebras are division algebras isomorphic to C. The Gelfand-Mazur Theorem is considered as one of the cornerstones of the theory of Banach algebras introduced S. Mazur. R. Arens derived than that Banach algebras is an algebra that is a Banach space in which the inverse is continuous. Mazur's theorems depend on the sub-multilplicativity of the norm. we propose to develop Gelfand theory for com-mutative Banach algebras. we introduce the maximal ideal space, Gelfand topology and Gelfand representations to derive the properties of radical, generators of Banach algebras and their relation with Gelfand theory.

Keywords: - Banach algebra, topological version, Quasi-inverses, spectrum, Hilbert spaces,

Introduction

Gelfand theory of commutative Banach algebras stands among the most profound and beautiful achievements of twentieth-century mathematics. It reveals that every commutative Banach algebra with identity is nothing but a concrete algebra of continuous complex-valued functions on a certain compact Hausdorff space. The present work offers a systematic, self-contained journey from the elementary properties of normed and Banach algebras to the full force of the Gelfand representation theorem and its far-reaching consequences.

A Banach algebra is a complete normed algebra over the complex field in which the norm is sub-multiplicative: $\|xy\| \leq \|x\|\|y\|$ for all elements x, y. Completeness plays an irreplaceable rôle from the very beginning: it guarantees that absolutely convergent series converge, that the set of invertible elements is open, that inversion is a continuous operation, and that geometric series $\sum x^n$ converge whenever $\|x\| < 1$. These analytic properties, combined with the algebraic structure, create a remarkably rigid framework.

The spectrum σ(x) of an element x is the set of complex numbers λ for which x − λe fails to be invertible. Fundamental theorems quickly follow: σ(x) is compact, non-empty, contained in the closed disc of radius $\|x\|$ centred at the origin, and satisfies the spectral radius formula $\rho(x) = \lim \|x^n\|^{1/n} = \inf \|x^n\|^{1/n}$. The polynomial spectral mapping theorem asserts σ(p(x)) = p(σ(x)) for every polynomial p. When the algebra is a division algebra, the celebrated Gelfand–Mazur theorem proves that it must be isometrically isomorphic to the complex field itself. These results depend crucially on completeness and sub-multiplicativity; without them the theory collapses.

In the final analysis, Gelfand theory teaches a profound philosophical lesson: deep mathematics often consists in discovering hidden representations that reveal abstract objects as familiar concrete ones. By showing that commutative Banach algebras are, in essence, nothing but function algebras on compact spaces, Gelfand and his school forged an unbreakable bridge between algebra, analysis, and topology. This bridge remains one of the crowning achievements of modern mathematics and continues to illuminate research in functional

analysis, harmonic analysis, several complex variables, mathematical physics, and algebraic geometry more than eighty years after its discovery.

Theorem

Let I_e an ideal of A[e] such that I_e A. Then I :=I_e) A isa regular ideal of A.Proof

We know that I is an ideal of A: take any j I = I_e) A and x A,then xj A because x, j A and xj $I_e$because j I_e . Hence xj I_e)A = I .Since I_e A, Let us take (x + ⟨e) I_e\ A, with ⟨ 0. Since I_e is also avector space, (-1(x + ⟨e) = (- x/⟨ - e) is also in I_e. Let us define u :=x/ A (sothat (u - e) I_e), such that u is an identity modulo I (in A). Let us take any y A. Then yu- y = (y + 0. e) (u - e), and since (u - e) I_e, also (yu- y) I_e. Hence, the theorem is proved. If A has its own identity e_A then e_A e but assertion of theorem holdssince every ideal of A is regular.

Theorem

If I A is a regular ideal with u an identity modulo I, thenthere exists an I_e, ideal of A[e] so that I_e A and I = I_e) A.

Proof

We know that x A, xu I ⇔ x I. Hence it may be expressed as I = {x A |xu I}. Let us apply it to characterization of I to extend it to an ideal I_eA[e], definedanalogously: I_e :={y A[e] |yu I}. By definition I = I_e) A.I_e is an ideal of A[e]: Let us take any y I_e and z A[e]. we show that for which zy I_e (zy)u = z(yu) = (z_0 + e) (yu) = ($z_0$yu + yu) I . So (zy)u I which implies zy I_e. We further show that I_e is a proper extension of I, for an element in I_e\ A. But such an element is (u - e), which is not in A and (u - e) u = u^2- u I, so (u - e) I_e. Hence, the theorem is proved.

Theorem

If I is two-sided then $I_e$it is unique.

Proof

Let I_e and J_e be two ideals satisfying the conditions of (1.3).we obtain a (u - e) I_e and a (v - e) J_e such that both u and v are identities modulo I. we now prove that $I_e$$J_e$. Since I is two-sided, uv- v I and uv- u I and hence u- v = (uv- v) (uv- u) I. Now take any y = (z + ⌊e) I_e. Then the following relations hold.

y = (z + ⌊e) = z + (zu-zu) + (⌊u -⌊u) + (⌊v -⌊v) + ⌊e

= z -zu + zu + ⌊u + ⌊v -⌊u + ⌊e -⌊v

= z(e - u) + (z +⌊e)u + ⌊(v - u) +⌊ (e- v)

= z(e - u) + yu + ⌊(v -u) + (e- v)

Since,

z A and (e- u) I_e so z(e- u) I_e) A = I .

y I_e and u A so zu I.

(v - u) I shown above, hence ⌊(v - u) I.

(e -v) J_e, hence ⌊(e -v) J_e.

Hence y I + I + I + J_e and since I J_e we get y J_e.

Hence, I_e J_e. It may be proved. $J_e$$I_e$.

Quasi-inverses and its impact on structure of Banach algebra

If A is without identity, let us adjoin an e A[e]. If x A it is still not invertible in A[e] and if A does have own identity, say, e2, then invertibility in A and in A[e] have little to do with each other. The invertibility in A[e] is introduced by adjoined identities in the first place. Hence, though invertibility of x in A exist in A[e] and are unrelated, that of (e2 - x) in A and of (e - x) in A[e] coincide for all x A defined in terms of A alone. It gives rise to the concept of quasi-inverses in connection with inverses in Banach algebra.

Basic concepts and properties of Banach Algebras

A normed algebra (A,|| .||) is a normed vector space and an algebra, satisfying

||xy|| ≤ ||x|| ||y|| x, y A
A has an identity e, then ||e|| = 1. ||x|| = ||ex||≤||e|| || x || implies ||e||≥ 1, Hence, any normed algebra (A,||.||) whose underlying normed vector space is a Banach space in which there exists an equivalent norm $||.||_e$ such that $||e||_e = 1$. Let us write x^n for x. . . xn times, so that $||x^n|| \le ||x||^n$. If A has identity e, then $x^0 = e$.
If A is without an identity, the algebra A[e] may be made into a normed algebra by setting ||x + ⟨e|| = ||x|| + |⟨|. we thus find if A is a normed algebra and B □ A as ub algebra with the induced norm, then B is also a normed algebra. We state some lemmas on sub-multiplicativity of Nomed algebra.

Theorem

Let A be a Banach algebra with identity. If x A s.t.||e – x||< 1 then x is regular (two-sided invertible).

Theorem

If x is regular and y is s.t. ||x- y||<1||x-1 || then y is also regular. (Hence: A^{-1} is open).

Theorem

The map A-1 A-1 x x-1 is continuous.

Role of Spectra in Banach algebra

The spectrum of an element is introduced in a Banach algebra to prove two important theorems which are stated (i) the Polynomial Spectral Mapping Theorem and the Spectral Radius Formula The notion of spectrum is applied to prove the Gelfand-Mazur Theorem which one of the fundamental ingredients of Gelfand Theory. In general, spectra is used in specific context similar to linear operators, on normed vector-spaces, Banach spaces or Hilbert spaces. It is valid for general Banach algebras.

Definition (resolvent)

Let A be a Banach algebra with identity and x A. The spectrum of x is defined as follows
σ(x) := {⎿ C|(x -⎿e)is singular (not two-sided invertible)}
The complement of σ(x) is denoted by $\Re_x$ and called the resolvent set of x. The spectral radius ρ(x) is defined as $\sup_{⎿ (x)}$|⎿|.
Let us define the mapping $r_{x:}$ R_x C C (x-e)$^{-1}$ for each x A. Let A is without identity, where consider x as an element of A[e].
If A = L(X) the spectrum of an operator T may be considered as a generalization of Eigenvalues from finite-dimensional linear algebra. We discuss here the importance of the spectrum's in Gelfand theory for which is consider A a commutative Banach algebra with identity is suitably considered.
σ(x):={⎿ C| x ⎿e mod M, for some maximal ideal M □ A}

Properties of spectrum

r_x is continuous since [⎿→⎿e] and the `minus' are continuous by definition of topological vector-spaces and inversion is continuous in A.
0 σ(x) ⟺x is singular.
F or all ⎿ ‾0: ⎿ σ(x) ⟺ (x -⎿e) is singular ⟺ (x\⎿ - e) is singular ⟺ x/⎿is quasi-singular.
If A is without identity 0 (x) x A□ A[e]. Also, if A is without identity, we have $\sigma_A(x)$ = $\sigma_{A[e]}$ (x) x A. However, if A is with identity then 0 is not in $\sigma_A(x)$ if x is regular in A whereas 0 $\sigma_{A[e]}$ (x) x, Hence, in general $\sigma_A(x)$ $\overline{\sigma}_{A[e]}$ (x). However, the non-zero part, it can be described in terms of quasi-regularity in A and that it coincides for A and A[e]. Therefore $\sigma_{A[e]}$ (x) = $\sigma_A(x)$ ∗{0} x A (A with or without identity)

Gelfand-Mazur Theorem

Let A be a Banach algebra with identity. If A is a division algebra, then the mapC A e is an isometric algebra isomorphism. (Let us assume ||e||=1, otherwise, → |e| eis the isometric algebra isomorphism).

Polynomial Spectral Mapping Theorem and the Spectral Radius Formula
Let p C[X]. Then, for each x A a ring-homomorphism is defined as follows.

x : C[X] A p p(x)

Hence, the polynomial p may be interpreted as a continuous mapping

p : A A x p(x)

Polynomial Spectral Mapping Theorem Let A be a Banach algebra with identity and p a polynomial (in A and C resp.) Then

⟹(p(x)) = p [σ(x)] x A

Spectral Radius Formula Let A be a Banach algebra and x A. Then $\lim_n$ ($||x^n||^{1\backslash n}$) exists and is equal to *p*(x), the spectral radius of x.

Gelfand Representation theory

(i) Let A be a Banach algebra. A non-zero (hence surjective) linear functional τ: A C which is also an algebra homomorphism (i.e. τ(xy) = τ(x) τ(y)) is called a multiplicative linear functional (or complex homo-morphism or character).

1. If A has identity e then τ(e) = 1
2. If x is invertible then $\tau(x^{-1})$ =1/τ(x)
3. Δ(A) is not a linear space, and what's more:

a. If τ (A) then ⌊τΔ(A) ⌊ ¯1

If τ,⎛ (A) then τ + ⎛Δ(A)

4. K :=ker(τ) is a regular maximal 2-sided ideal.

Generators of Banach algebras

Let A be a commutative Banach algebra with identity and E A. Then the algebra generated by E, 〈E〉, is defined as the smallest closed subalgebra of A which contains E ∗{e}. If 〈E〉 = A is said to be generated by E is finitely generated if it is generated by a finite subset E.

The conclusion of studying Gelfand algebra (Gelfand theory) is that it provides a powerful framework for transforming an abstract commutative Banach algebra into a concrete algebra of continuous functions on a compact Hausdorff space. This profound connection between algebra, analysis, and topology has been central to the development of functional analysis, algebraic geometry, and algebra theory.

REFERENCES

1. Bonsall, F. F., & Duncan, J. (1973). Complete Normed Algebras. Springer-Verlag.
2. Conway, J. B. (2007). A Course in Functional Analysis (2nd ed.). Springer.
3. Gelfand, I. M., Raikov, D. A., & Shilov, G. E. (1964). Commutative Normed Rings. Chelsea.
4. Rickart, C. E. (1960). General Theory of Banach Algebras. Van Nostrand.
5. Rudin, W. (1991). Functional Analysis (2nd ed.). McGraw-Hill.
6. Żelazko, W. (2007). Banach Algebras. Elsevier.

भारतीय शिक्षा का ज्ञान दर्शन: एक विवेचना

श्री नंदेश कुमार ठाकुर
पूर्व विभागाध्यक्ष
डी.एल.एड.

प्रस्तावना

भारतीय शिक्षा का ज्ञान दर्शन एक विवेचना प्राचीन काल की भारतीय ज्ञान परंपराएं और संस्कृति मानवता को प्रोत्साहित करती रही है पुराणों में ज्ञान को अप्रतिम माना गया है। भारत में तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला,उज्जयिनी, काशी, पल्लवी आदि विश्व प्रसिद्ध शिक्षा एवं शोध के प्रमुख केंद्र थे तथा यहां कई देशों के शिक्षार्थी ज्ञान अर्जन के लिए आते थे भारतीय प्राचीन ज्ञान विज्ञान की गौरव में परंपरा समस्त जगत को आलोकित करने वाली है संस्कृत भाषा में ज्ञान विज्ञान की महती श्रृंखला है ज्ञान प्रज्ञा और सत्य की खोज को भारतीय विचार परंपरा और दर्शन में मानवीय लक्ष्य का दिग्दर्शन होता है प्राचीन भारत में शिक्षा का लक्ष्य सांसारिक जीवन तथा स्कूल के बाद का जीवन की तैयारी के रूप में ज्ञान अर्जन नहीं बल्कि पूर्ण आत्मज्ञान और मुक्ति के रूप में माना गया था। प्राचीन भारत के विश्व स्तरीय पृष्ठभूमि और देश से आने वाले विद्यार्थियों और विद्वानों को लाभान्वित किया था इसी शिक्षा व्यवस्था ने दरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट, वराह मिहिर, भास्कराचार्य, ब्रह्मगुप्त, चाणक्य, चक्रपाणि, माधव, पाणिनि, पतंजलि, गौतम पिंगला,शंकर देवी, गार्गी जैसे विद्वानों को जन्म दिया। इन विद्वानों द्वारा वैश्विक स्तर पर ज्ञान के विविध क्षेत्र जैसे गणित, भूगोल, विज्ञान, धातु विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान,शैल चिकित्सा, सिविल इंजीनियरिंग, भवन निर्माण, नौकायन निर्माण और दिशा ज्ञान, योग, ललित कला में प्रमाणित मौलिक योगदान किया है। भारतीय संस्कृति और दर्शन का विश्व में बड़ा प्रभाव रहा है- इस पर शोध होना चाहिए। संस्कृत भाषा मे ज्ञान विज्ञान की महती श्रृंखला है। वर्तमान वैज्ञानिक जगत के लिए कौतूहल का विषय ही है। आज जहां एक ओर आधुनिक विज्ञान साम्यूनिट अवस्थित में दिखाई दे रहा है वहीं दूसरी ओर इसके दोष एवं नकारात्मक प्रभाव भी दिखाई दे रही है विज्ञान की प्रगति हर युग की आवश्यकता है किंतु इसमें दूरदर्शिता और मानव कल्याण का भाव सर्वोपरि होना चाहिए। स्वदेशी विज्ञान आंदोलन के माध्यम से आधुनिक विज्ञान को प्राचीन भारतीय ज्ञान वैभव से जोड़ने का अनवरत प्रयास किया जा रहा है। प्राचीन भारत ने दर्शन ध्वन्यात्मक अनुष्ठान व्याकरण, खगोल विज्ञान, अर्थशास्त्र, संख्या सिद्धांत, तारक जीवन विज्ञान आयुर्वेद ज्योतिष एवं संगीत जैसे विभिन्न मानव कल्याणकारी क्षेत्र में कीर्तिमान की स्थापना करके मानव जाति की उन्नति से अत्यधिक योगदान दिया है। प्राचीन भारतीयों द्वारा अविष्कृत विचारों और तकनीकियों का आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी की मूलाधार का दृढ़ करने में अद्भुत योगदान रहा है जबकि अभिनव योगदान को वर्तमान में कुछ तो अपनाया जा रहा है कुछ अभी भी अज्ञात है। भारतीय प्राचीन ज्ञान परंपरा ने व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर ध्यान केंद्रित किया है तथा शिक्षा का स्वरूप व्यावहारिकता को प्राप्त करने योग्य जीवन के लिए सहायक है। संपूर्ण वैदिक बैग में रामायण, महाभारत, पुराण, स्मृति ग्रंथ, दर्शन, धर्मग्रंथ, काव्य, नाटक, व्याकरण तथा ज्योतिष शास्त्र संस्कृत भाषा में ही उपलब्ध होकर इनकी महिमा को बढ़ाते हैं। भारतीय सभ्यता संस्कृति की रक्षा में पूर्णत सिद्ध होती है। सुसंस्कृत ज्ञान से ही संस्कारवान समाज का निर्माण होता है। संस्कारों से वाचिक, मानसिक पवित्रता के साथ पर्यावरण भी स्वच्छ होता है। समावेशी भारतीय प्राचीन ज्ञान परंपरा के बिना नहीं चल सकती है क्योंकि एक तरफ तो हम आधुनिकता के दौर की ओर तेजी से अग्रसर हैं। वही हमारी संस्कृति में निहित ज्ञान विज्ञान परंपरा को भूलते जा रहे हैं। इस अंधा अनुकरण में हमारी वही स्थिति हो चुकी है कि उपनिषदों में कहा गया है कि यदि दृष्टिहीन को रास्ता दिखाने वाला भी दृष्टिहीन ही तो लक्ष्य की प्राप्ति कठिन हो जाएगा। भारतवर्ष ज्ञान भूमि से अलंकृत है जो आधुनिक युग के विज्ञान से भी पड़े हैं, जो समस्त ज्ञान प्रेमियों के लिए शोध का विषय है। अब समय है भारत के द्वारा विश्व को दिए गए ज्ञान को संजोग कर इसका संवर्धन किया जाए और भारतवर्ष के जनता को संस्कृति, पहचान और प्राप्त ज्ञान से जोड़ा जाय तभी इसकी उपादेयता सिद्ध होगी। भारतीय ज्ञान परंपरा अद्वितीय ज्ञान और प्रज्ञा का प्रतीक है। जिनके ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक, कर्म और धर्म, भोग और त्याग का अद्भुत समन्वय है। ऋग्वेद से ही शिक्षा प्रणाली के जीवन के नैतिक, भौतिक, अध्यात्मिक और बौद्धिक मूल्य पर केंद्रित होकर विनम्रता, सत्यता, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और सभी के लिए सम्मान जैसे मूल्यों पर जोर देती है।

21 वीं शताब्दी की पहली शिक्षा नीति जिसका लक्ष्य देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है। यह शिक्षा नीति भारत की सभ्यता, पर्यावरण, आर्थिक, संस्कृति मूल्य के आधार को बरकरार रखते हुए 21वीं सदी शिक्षा के लिए आकांक्षात्मक लक्ष्य को पूरा कर सके। इसमें प्रत्येक व्यक्ति में निहित रचनात्मक क्षमताओं के विकास पर विशेष बल देती है। यह नीति इस सिद्धांत पर बल देती है कि शिक्षा से न केवल साक्षरता और संख्या ज्ञान संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास करना है। बल्कि नैतिक सामाजिक और भावनात्मक स्तर पर भी व्यक्ति का विकास हो सके। शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने, एक न्याय संगत और न्याय पूर्ण समाज के विकास को बढ़ावा देने के लिए मुलभुत आवश्यकता साथ ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुंच प्रदान करना एवं वैश्विक मंच पर सामाजिक न्याय,समानता , वैज्ञानिक उन्नति, राष्ट्रीय एकीकरण,सांस्कृतिक संरक्षण करना , भारत की सतत प्रगति और आर्थिक विकास की कुंजी है। आधुनिक युग में बदलती हुई शिक्षा ज्ञान, विज्ञान, प्रौद्योगिकी की आधार पर विकास की नई-नई दिशाएं खोज कर बहुआयामी प्रगति की ओर अग्रसर है। बदलाव नएनए विचारों को जन्म देती है। समन-्वय की भावना एकाग्रचित मन मस्तिष्क में आशावाद, संतुलन,पवित्र उद्देश्य एवं सत्य का बीज बोकर नकारात्मक सोच को खत्म करता है। सर्वोत्तम चरित्र का निर्माण कर मानव कल्याण की कल्पना को साकार करता है। जीवन उद्देश्य केवल प्रभावी विचार, उसका सर्वश्रेष्ठ आविष्कार और साधन संपन्न, चिंतन, सर्वोत्तम दृष्टिकोण एवं संपूर्ण अधिकतम शक्ति से संपन्न होता है। अंतरात्मा की ध्वनि स्पष्ट होती है। उसे पहचानने की आवश्यकता है और अपने लक्ष्य को साकार करने में कर्तव्य परायणता को कर्म में उतारने की आवश्यकता है। निश्चय ही जीवन एक स्वर्णिम सोपान है। मानव प्राप्त शक्तियों के सदुपयोग से अपने भीतर विराजमान विश्व की परम सत्ता के साथ एकात्मक आनंद की अनुभूति कर सकता है। जगत में मधुरवाणी की प्रसार द्वारा जीवन यात्रा को सफल एवं सार्थक कर सकता है। मानव के भीतर कहीं एक ध्वनि उठकर निरंतर गूंज रही होती है- उठो जागो और बढ़ो। भारतीय प्राचीन ज्ञान परंपरा को लिए बिना समावेशी शिक्षा नहीं चल सकती है क्योंकि एक तरफ तो हम आधुनिकता के दौर की ओर तेजी से अग्रसर हैं वहीं हमारी संस्कृति में निहित ज्ञान विज्ञान परंपरा को भूलते जा रहे हैं। इस अंधा अनुकरण से हमारी वही स्थिति हो चुकी है कि उपनिषदों में कहा गया -यदि दृष्टिहीन को रास्ता दिखाने वाला भी दृष्टिहीन हो? तो लक्ष्य की प्राप्ति कठिन हो जाएगा। भारतवर्ष ज्ञान भूमि से अलंकृत है जो आधुनिक युग के विज्ञान से भी पड़े हैं। जो समस्त ज्ञान प्रेमियों के लिए शोध का विषय है अब समय है। भारत के द्वारा विश्व को दिए गए ज्ञान को संजोकर इसका संवर्धन किया जाए। भारतवर्ष की जनता को संस्कृति पहचान और प्राप्त ज्ञान से जोड़ा जाय तभी इसकी उपयोगिता सिद्ध होगी।भारतीय शिक्षा केवल कौशल अथवा आजीविकाकेन्द्रित व्यवस्था नहीं रही है-, बल्कि वह मनुष्य के सर्वांगीण विकास की साधना रही है। भारतीय शिक्षा का मूल उद्देश्य विद्या के माध्यम से अविद्या का नाश कर व्यक्ति को आत्मबोध, सामाजिक उत्तरदायित्व और लोककल्याण की दिशा में उन्मुख करना रहा है। इसी व्यापक दृष्टि को भारतीय शिक्षा का ज्ञानदर्शन कहा जा सकता- है।

.2भारतीय शिक्षा में ज्ञान' की अवधारणा' भारतीय परंपरा में ज्ञान को केवल सूचना नहीं, बल्कि अनुभूति, विवेक और आत्मबोध के रूप में समझा गया है। उपनिषदों में कहा गया है-

"सा विद्या या विमुक्तये"

अर्थात वही विद्या है जो मुक्ति प्रदान करे। यहाँ ज्ञान का संबंध जीवनमूल्यों-, नैतिकता और आत्मिक उन्नति से है राधाकृष्णन), (2008।

.3भारतीय शिक्षा का दार्शनिक आधार

भारतीय शिक्षा का दार्शनिक आधार समग्र जीवनदृष्टि पर आधारित है-, जिसमें शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन नहीं बल्कि आत्मविकास-, चरित्र-निर्माण और सामाजिक उत्तरद ायित्व का माध्यम माना गया है। भारतीय दर्शन के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाना है-सा विद्या या विमुक्तये"।" भारतीय शिक्षा का मूल आधार वेदान्त, सांख्य, योग, बौद्ध और जैन दर्शन हैं। वेदान्त आत्मज्ञान और ब्रह्मबोध पर बल देता है; योग दर्शन मानसिक अनुशासन, आत्मसंयम और चेतनाविकास को शिक्षा का लक्ष्य मानता है-; सांख्य दर्शन विवेक और तर्क के माध्यम से ज्ञान की प्राप्ति पर बल देता है। बौद्ध दर्शन करुणा, प्रज्ञा और नैतिक जीवन को शिक्षा का केंद्र मानता है, जबकि जैन दर्शन अहिंसा, अनेकांतवाद और आत्मसंयम को शिक्षा का मूल मानता है। इस दार्शनिक आधार में मूल्यपरक शिक्षा, कर्तव्यबोध, लोककल्याण, सह अस्तित्व और आत्मिक उन्नति प्रमुख हैं।-

भारतीय शिक्षा का ज्ञानदर्शन विभिन्न दर्शनों से पोषित है--

(क) वेदान्त दर्शन - वेदान्त दर्शन भारतीय दर्शन की एक प्रमुख धारा है, जिसका मूल आधार उपनिषद हैं। वेदान्त' का अर्थ है वेदों का अंतिम तत्त्वज्ञान।' यह दर्शन ब्रह्म, आत्मा और जगत् के संबंध की विवेचना करता है तथा आत्मज्ञान को जीवन का परम लक्ष्य मानता है। वेदान्त के अनुसार आत्मा और ब्रह्म एक ही हैं-अहं ब्रह्मास्मि" और "तत्त्वमसि" जैसे महावाक्य इसी सत्य को उद्घाटित करते हैं।"

(ख) शैक्षिक दृष्टि से वेदान्त दर्शन शिक्षा को आत्मबोध और अविद्या से मुक्ति का साधन मानता है। इसका उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्क चरित्र-निर्माण, नैतिक शुद्धता और विवेकबुद्धि का विकास है। वेदान्त व्यक्ति में सत्य-, त्याग, करुणा और आत्मसंयम जैसे मूल्यों का विकास करता है। इस प्रकार वेदान्त दर्शन भारतीय शिक्षा को आध्यात्मिक, मूल्यपरक और जीवनोपयोगी दिशा प्रदान करता है। वेदान्त शिक्षा को आत्मज्ञान की ओर ले जाती है। अहं ब्रह्मास्मि और तत्त्वमसि जैसे महावाक्य शिक्षा को आत्मसाक्षात्कार का साधन बनाते हैं।-

(ग) सांख्य और योग दर्शन - सांख्य दर्शन भारतीय दर्शन की एक प्राचीन तर्कप्रधान परंपरा है। इसके अनुसार सृष्टि का मूल आधार पुरुष (चेतन तत्व) शन बौद्धिक स्पष्टता्ाऔर प्रकृति (जड़ तत्व) हैं। शिक्षा का उद्देश्य विवेक-ज्ञान के माध्यम से पुरुष और प्रकृति के भेद को समझाना है। सांख्य दर,

तर्कशीलता और विवेक बुद्धि के विकास पर बल देता है। शैक्षिक दृष्टि से यह-व्यक्ति को ज्ञान, विश्लेषण और आत्मचेतना की ओर उन्मुख करता है। योग दर्शन, जो सांख्य दर्शन से ही विकसित हुआ है, शिक्षा को केवल बौद्धिक नहीं बल्कि व्यवहारिक और मानसिक अनुशासन की प्रक्रिया मानता है। पतंजलि के अनुसार योग का लक्ष्य है- चित्तवृत्ति निरोधः"। योग" शिक्षा के माध्यम से आत्मसंयम, एकाग्रता, नैतिकता और मानसिक संतुलन का विकास करता है। इस प्रकार सांख्य विवेक प्रदान करता है और योग उस विवेक को जीवन में उतारने की विधि सिखाता है; दोनों मिलकर भारतीय शिक्षा को संतुलित, मूल्यपरक और आत्मोन्नत बनाते हैं।योग दर्शन में शिक्षा का उद्देश्य चित्तवृत्ति निरोध के माध्यम से मानसिक अनुशासन और आत्मसंयम है (पतंजलि योगसूत्र)।

(घ) .गुरुकुल परंपरा और ज्ञान दर्शन-भारतीय शिक्षा की प्राचीन व्यवस्था गुरुकुल थी, जहाँ-

- ✓ शिक्षक और शिष्य का आत्मीय संबंध
- ✓ जीवनोपयोगी शिक्षा
- ✓ अनुशासन, सेवा और साधना

ज्ञान के अभिन्न अंग थे। शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्वान बनाना नहीं, बल्कि श्रेष्ठ मानव का निर्माण था)Aurobindo, (1997।

.5भारतीय शिक्षा में मूल्य और नैतिकता भारतीय ज्ञानदर्शन में शिक्षा का केंद्रीय लक्ष्य है--

- ✓ सत्य
- ✓ अहिंसा
- ✓ करुणा
- ✓ कर्तव्यबोध
- ✓ लोकसंग्रह

गांधीजी की नैतिक एवं बुनियादी शिक्षा इसी दर्शन की आधुनिक अभिव्यक्ति है गांधी), (2009।

.6आधुनिक संदर्भ में भारतीय ज्ञानदर्शन- आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञानदर्शन की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ गई है--

- ✓ मूल्य संकट के समाधान में
- ✓ पर्यावरणीय चेतना के विकास में
- ✓ समग्र एवं मानवकेंद्रित शि-क्षा में

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने पर बल दिया गया है (भारत सरकार 2020, (2020।

.7चुनौतियाँ

- ✓ औपनिवेशिक शिक्षा प्रभाव
- ✓ शिक्षा का बाज़ारीकरण
- ✓ भारतीय ज्ञान को अप्रासंगिक मानने की प्रवृत्ति
- ✓ पाठ्यक्रमों में सीमित स्थान

इनसे उबरने के लिए भारतीय ज्ञानदर्शन की वैज्ञानिक-, तार्किक और समकालीन पुनर्व्याख्या आवश्यक है।

.8निष्कर्षभारतीय शिक्षा का ज्ञानदर्शन शिक्षा को जीवन-दर्शन बनाता है। यह व्यक्ति को केवल सक्षम पेशेवर नहीं-, बल्कि संवेदनशील, नैतिक और सामाजिक रूप से उत्तरदायी नागरिक बनाता है। आज आवश्यकता है कि इस ज्ञान दर्शन को आधुनिक शैक्षिक संरचना के साथ समन्वित कर पुनः प्रतिष्ठित-किया जाए।

संदर्भ सूची)References)

.1 राधाकृष्णन, एसभारतीय दर्शन. राजकमल प्रकाशन .(2008) ., नई दिल्ली।

.2 शर्मा, चंद्रधर भारतीय दर्शन : एक आलोचनात्मक अध्ययन. मोतीलाल बनारसीदास .(2011), दिल्ली।

.3 श्री अरविंद (1997). भारतीय संस्कृति की आधारशिला. श्री अरविंद आश्रम, पुदुचेरी।

.4 पतंजलियोगसूत्र (व्यास भाष्य सहित). गीता प्रेस ., गोरखपुर।

5 गांधी, मोहनदास करमचंद बुनियादी शिक्षा. नवजीवन प्रक .(2009)ाशन, अहमदाबाद।

Review of Global Education System: Rank Wise First 10 Countries.

Dr. Prabir Bera
H.O.D.
D.El.Ed.

Abstract
This study provides a comparative overview of the world's leading education systems and India's position within the global landscape. Countries such as the United States, United Kingdom, Australia, Germany, Canada, France, Switzerland, Japan, Sweden and Netherlands consistently rank among the top due to their strong educational infrastructure, high-quality teaching, research excellence, and inclusive policies. However, recent reforms including the National Education Policy (NEP 2020) signal significant progress toward improving learner outcomes, expanding digital learning, and aligning with global standards. Overall, the comparison highlights both the strengths of high-performing global systems and India's ongoing efforts to enhance its educational quality and competitiveness.
Keywords: Quality Index, Education Index, Global Opportunity Index, Educational Rank, Educational Strength. etc.

Introduction
Education is the key to an individual and nation's future. A good education system can drive a country. Education is valued everywhere, but some countries have the best education systems in the world. Ranking these countries helps students choose the best countries to study abroad. Certain factors influence these rankings. If you plan to study abroad, this blog will help you understand the top 10 countries with the best education systems in the world. Let's see what are the factors behind these rankings.

Factors Deciding the Best Education System in the World.
Many factors make a good education system. Some of the key factors include:

1.Quality Index
The Quality Index considers many parameters regarding the living conditions of a country like schooling, job options, economic security, healthcare, and safety. This measure shows how good a country is for living, learning, and working.

2.Education Index
The Education Index is an important part of the Human Development Index (HDI). It gauges children predicted years of education as well as the average years of schooling adults have accrued. It shows how good a country's education system is and is important for measuring and comparing education growth around the world.

3.Global Opportunity Index
To evaluate a country's general worldwide stability and appeal, this index looks at its institutional, financial, regulatory, and economic environment.

Top 10 Countries with the Best Education System in the World According to a global survey conducted by US News & World Reports, these countries are seen as having the best education systems in the world. The influencing factors are part of the U.S. News Best Countries rankings and the Quality-of-Life sub-ranking.

United States, United Kingdom, Australia, Germany, Canada, France, Switzerland Japan, Sweden, Netherlands.

Based on multiple global rankings (Quality index and Opportunity, Higher strength, Research, Access), these countries repeatedly appear among the world's best:

Rank	Country	Key Strength.
1	USA	Research and innovation.

2	UK	World-class universities.
3	Australia	Student-friendly & modern education.
4	Germany	Free & strong technical education.
5	Canada	Strong school system.
6	France	Strong academics & low cost.
7	Switzerland	STEM excellence.
8	Japan	High equity and free education.
9	Sweden	Equality & creativity.
10	Netherlands	Balanced and critical thinking.

Countries with the best performing education systems, 2024.

Rank	**Country**	**Quality Index**	**Opportunity Index**
1	USA	78.2	69.79
2	UK	72	68.74
3	Australia	70.5	67.52
4	Germany	70.3	67.21
5	Canada	70.1	66.96
6	France	69.9	66.3
7	Switzerland	69.8	62.54
8	Japan	69.8	61.01
9	Sweden	69.5	60.64
10	Netherlands	68.3	60.12

1. United States

The education system is flexible, letting students try different topics before focusing on what they want to study. This flexibility guarantees a balanced education. Another important point is the focus on invention and research. American colleges get a lot of funds for science, technology, and health, which helps them make important discoveries. Modern laboratories, business partnerships, and experienced teachers available to students help to improve both their academic and professional development. This research-based method helps grads remain competitive when looking for jobs. Finally, the USA has many job options for students after they graduate. Many colleges have good ties with businesses and offer internships to help students find work.

Top-Ranked Universities in the United States:

The following table shows some of the top-ranked universities in the USA according to QS World University Rankings 2025.

University	**QS World University Ranking 2025**
Massachusetts Institute of Technology (MIT)	1
Harvard University	4
Stanford University	6
California Institute of Technology (Caltech)	10
University of Pennsylvania	11

2. United Kingdom

The UK is ranked second in the world among the countries with best education system. The UK has a universal public education system for primary and secondary schools, so every child gets a good education regardless of background. Education is compulsory from 5 to 16, after which students have multiple pathways, including full-time work, college, apprenticeships or university. This flexibility allows for different career aspirations and further education. The country’s commitment to a solid education and its top universities make the UK the go-to place for students looking for a full and reputable education system in the world.

Top-Ranked Universities in the UK:

The following table shows some of the top-ranked universities in the UK according to QS World University Rankings 2025.

University	QS World University Ranking 2025
Imperial College London	2
University of Oxford	3
University of Cambridge	5
UCL	9
The University of Edinburgh	27

3. Australia

Australia's education system is considered the third-best education system in the world. It is highly regarded in global rankings. This is supported by the significant representation of Australian universities in the top tiers of global rankings. Australia's strengths lie in its world-class universities and the qualifications they offer, which are valued by employers worldwide. The country also ranks second in the OECD for education and educational outcomes and is the third top destination for international students. This is reflected in the high number of international students enrolled in Australian institutions.

Top-Ranked Universities in Australia:

The following table shows 5 top-ranked universities in Australia according to QS World University Rankings 2025.

University	QS World University Rankings 2025
University of Melbourne	13
University of Sydney	18
University of New South Wales	19
Australian National University	30
Monash University	37

4. Germany

It's no surprise that Germany falls in the top 10 countries with the best education system in the world. Germany's education system is famous for its dual study programs where theory and practice go hand in hand. Universities and companies offer these programs together, and students learn real-life skills while getting paid. That gives students a head starts in the job market and many career options. Research and innovation in Germany are strong, so students have research opportunities and skill development, which is a future-proof education. One of the good things about the German education system is that it's affordable. Public schools and universities in Germany are free, and private universities are very affordable compared to other countries.

Top-Ranked Universities in Germany:

The following table shows some of the top-ranked universities in Germany according to QS World University Rankings 2025.

University	QS World University Ranking 2025
Technical University of Munich	28
Ludwig-Maximilians-Universität München	59
Universität Heidelberg	84
Freie Universitat Berlin	97
RWTH Aachen University	99

5. Canada

Canada is the 5th best country in the world for education and has been in the top 5 since 2016. Canada's commitment to accessibility is what sets it apart. The country spends over 5% of its GDP on education; most institutions are funded and managed by the government, so education is for everyone. The education system has a mix of public and private schools, community

colleges, language schools, technical institutes and universities, so all students have equal opportunities.

Top-Ranked Universities in Canada: The following table shows some of the top-ranked universities in Canada according to QS World University Rankings 2025.

University	QS World University Ranking 2025
University of Toronto	25
McGill University	29
University of British Columbia	38
University of Alberta	96

6. France

France's education system is well-regarded for its strong emphasis on academics, innovation, and accessibility. It is known for its robust public funding, making high-quality education accessible to students. The Times Higher Education rankings place France second worldwide for graduate employability. No wonder France holds a sixth place among the countries with best education system in the world.

Top-Ranked Universities in France: The following table shows 5 top-ranked universities in France according to QS World University Rankings 2025.

University	QS World University Ranking 2025
Université PSL	24
Institut Polytechnique de Paris	46
Sorbonne University	63
Université Paris-Saclay	73
École Normale Supérieure de Lyon	187

7. Switzerland- Switzerland is well-known for its education system. Public education is funded by taxes and managed locally. One of the biggest advantages of the Swiss education system is its flexibility. After compulsory lower secondary education, students can choose between a vocational or academic path for upper secondary education. Baccalaureate high schools continue Lower Secondary subjects for 3 to 6 years, depending on the canton, including subjects like law and economics. Students who pass the Baccalaureate can go to universities, setting high standards for academic excellence and making them highly sought after worldwide.

Top-Ranked Universities in Switzerland: The following table shows some of the top-ranked universities in Switzerland according to QS World University Rankings 2025.

University	QS World University Ranking 2025
ETH Zurich	7
EPFL	26
University of Zurich	109
University of Basel	131
University of Geneva	155

8. Japan

Japan does well in education for many reasons. First, they have a national curriculum, so education is uniform, and there is no discrimination. Hence, US News & World Reports has ranked Japan 8th in the list of best education systems in the world. Primary education from 6 to 15 years is almost free; most students study up to 18 years. Japan's education system is backed by strong laws and a well-structured national curriculum that fits in with social and cultural norms, so the outcomes are high. International students can also get scholarships from the Japanese government. To get an associate degree, Junior College students need to complete 93 credits in 3 years, and those in colleges of technology need to complete 167 credits in 5 years.

Top-Ranked Universities in Japan: The following table shows some of the top-ranked universities in Japan according to QS World University Rankings 2025.

University	QS World University Ranking 2025
The University of Tokyo	32
Kyoto University	50
Tokyo Institute of Technology (Tokyo Tech)	84
Osaka University	86
Tohoku University	107

9. Sweden

The Swedish education system is often considered the best education system in the world because of its inclusive approach and solid foundations. Early childhood education starts with preschool for children 1-5 years old, 80% of this age group attends. This holistic development-focused approach gives a good start and is followed by kindergarten at age 6, which provides a smooth transition into compulsory school. Compared to the UK, Swedish children start school later, and their progress is assessed by their own teachers, not external tests, less stress. Sweden is an educational excellence with equal opportunity, comprehensive early education, and innovative learning models.

Top-Ranked Universities in Sweden:

The following table shows some of the top-ranked universities in Sweden according to QS World University Rankings 2025.

University	QS World University Ranking 2025
KTH Royal Institute of Technology	74
Lund University	75
Uppsala University	103
Stockholm University	128
Chalmers University of Technology	139

10. Netherlands

Although the Netherlands is a non-English speaking country, most universities offer courses in English for international students who don't speak Dutch. Education in the Netherlands is relatively affordable, so many students can afford it.

Dutch universities are known for teaching and research. Every year, millions of students from all over the world come to the Netherlands for higher education. Low tuition fees and English-taught degrees attract many international students.Dutch universities offer education at three levels: undergraduate, postgraduate and doctoral degrees.

Top-Ranked Universities in The Netherlands:

The following table shows some of the top-ranked universities in the Netherlands according to QS World University Rankings 2025.

University	QS World University Ranking 2025
Delft University of Technology	49
University of Amsterdam	55
Utrecht University	105
Eindhoven University of Technology	136
Leiden University	141

Where India Stands (35th) - Overview of Indian Education System.

- India's formal education structure includes public and private schools, with compulsory education provided for children aged 6-14 under law.
- However, India faces challenges such as high student-teacher ratios, limited vocational-education enrollments, and low share of international students in higher education.

- According to one global survey (for ages 15-24, assessing readiness of education systems for future life and work), India was ranked 35th globally.
- On the positive side: India has recently expanded higher-education opportunities, enrolments are growing, and with reforms such as the National Education Policy 2020 and greater emphasis on digital/mass-education (MOOCs, online learning), there's potential for improvement.

Conclusion:

Globally, countries such as the United Kingdom, United States, Australia, Netherlands, Sweden, France, Denmark, Canada, Germany, and Switzerland consistently rank among the world's top education systems due to their strong school infrastructure, research output, inclusive policies, and international opportunities. In comparison, India, though one of the world's largest education systems, still faces challenges such as uneven quality, high student-teacher ratios, and limited vocational integration. India generally ranks below the top 10 globally, but ongoing reforms like the National Education Policy (NEP 2020), expansion of digital learning, and rising higher-education enrollment show positive progress.Overall, while India is not yet among the leading global education systems, it is on a path of significant transformation, learning from global best practices and aiming to improve quality, access, and competitiveness in the coming years.

References:

1. https://theworldgrad.com/study-resources/best-education-system-in-the-world-top-10-countries-for-study.
2. https://ceoworld.biz/24/04/02/countries-with-the-best-performing-education-systems-24/#google-vignette.
3. https://chatgpt.com/c/937cdbe-cec0-838-8545-0c709c67f9d8.
4. https://gemini.google.com/app/11318827cd4b548.
5. https://worldpopulationreviw.com/country-rankings/education-rankings-by-country.
6. https://gpseducation.oecd.org.CountryProfile?primaryCountry=IND&teshold=10&topic.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्रारंभिक बाल्यावस्था एवं देखभाल

श्री रामकृष्ण भारती
सहायक प्राध्यापक

भूमिका :— प्रारंभिक बचपन को एक महत्वपूर्ण विकासात्मक चरण के रूप में समझा जाता है क्योंकि यह मानव जीवन के शारीरिक संज्ञानात्मक सामाजिक और भावनात्मक विकास की सबसे तीव्र अवधि का प्रतिनिधत्व करता है। इन प्रारंभिक वर्षो में माता—पिता, परिवारों अन्य देखभाल करने वाले और व्यापक समुदायों के निकट समर्थन के साथ बच्चों के लिए देखभाल और शिक्षा के मिश्रण की आवश्यकता होती है। यह अपने आप में एक महत्वपूर्ण और सार्थक दोनों का गठन करता है और व्यक्ति के जीवन काल में अन्य मानवधिकरों की प्राप्ति को प्रभावित करता है। ईसीसीई की मौलिक भूमिका के आलोक में दुनिया भर के राज्यों की बढ़ती संख्या कम से कम एक वर्ष की पूर्व स्कूल (उपलब्ध) कराने और उल्लेखनीय रूप से सभी बच्चों के लिए निःशुल्क बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। इसके अलावा विस्तुत और सशक्त संस्थानों द्वारा ई0 सी0 सी0 ई0 प्रणाली को लागू करना माध्यानभोजन कार्यक्रम तथा स्वास्थ्य के विकास की निगरानी एवं जाँच—परीक्षण की उपलब्धता (251) सुनिश्चितकरना आदि। ईसीसीई पर अनुसंधान अन्य बातों के साथ—साथ प्राथमिक स्कूल तक पहुँचने में लिंग और अन्य बाधाओं से निपटने स्कूल में भागीदारी और उपलब्धि बढ़ने और स्कूल की पुनरावृति और डॉप आर्डर दारों को कम करने में इसके महत्व को प्रदशित करता है जिससे शिक्षा प्रणाली में अपव्यय कम होता है। यह लैगिकअसमानताओं को कम करने और व्यापक सामाजिक लाभों जैसे कि बढ़ी हुई सामाजिक एकनुक्ता, भविष्य की हिंसा और अपराध की कम दर उच्च व्यक्तिगत आय और मजबूत राष्ट्रीय आर्थिक विकास में योगदान देता है। इसी संदर्भ में भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत की 21वीं शाताब्दी की पहली शिक्षा नीति है जिसका लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिए अनिवार्य आवष्यकताओं को पूरा करना है। यह नई शिक्षा नीति सत्त विकास के लिए एजेंडा 2010 के अनुकूल है और इसका उधेश्य 21 वीं शताब्दी की आवश्यता के अनुकूल विद्यालय और महाविद्यालय शिक्षा अधिक जिवंत समान और ज्ञान की वैश्विक महाशक्ति में बदलना तथा प्रत्येक विद्यार्थी में निहित अद्वितीय समताओं को समाने लाना है।

उद्येश्यः— प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा का उद्येश्य

प्रारंभिक माल्यावस्था देखभाल और शिक्षा का समग्र उद्येश्य बच्चों का शारीरिक—भौतिक विकास संज्ञानात्मक विकास समाज—संवेगालक—नैतिक विकास, सांस्कृतिक विकास, संवांद के लिए प्रारंभिक भाषा,साक्षता और संख्यात्मक ज्ञान के विकास में अधिकतम परिणामों को प्राप्त करना है इसके साथ ही वर्ष 2025 तक उसे 6 वर्षो प्रत्येक बच्चे के लिए मुक्त सुरक्षित, उच्यगुणवतापूर्ण एवं विकासात्मक स्तर के अनुरूप देखभाल और शिक्षा की पहुॅच को सुनिश्चित करना है।

प्रारंभिक बाल्यवास्था शिक्षा के लिए एक उत्कृष्ट पाठ्यक्रम और शैक्षणिक ढ़ाँचा विकसित करनाः— राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के द्वारा 8 वर्ष की आयु के सभी बच्चों के लिए एक उत्कृष्ट पाठयक्रम और शैक्षिक देता (एन0 सी0 पी0 एफ0 /ई0 सी0 सी0 ई0) दो भागो में विकसित किया जाएगा जिसके अंतर्गत 0 से 3 वर्ष तक के बच्चों के लिए एक सब—फेमवर्क और 3 से 8 साल के बच्चों के लिए एक अन्य सब—फेमवर्क का विकास किया जाएगा। प्रारंभिक बाल्यअवस्था देखभाल और श्किा में राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय नवादर एवं सर्वोत्तम प्रथाओ पर नवीनतम शोध कोषामिल किया जाएगा। बाल्यअवस्था के शिक्षा के विकास के लिए स्थानीय परमराओं से विकसित हुई कला, कहानियाँ कबिता, गीत, खेल और बहुत कुछ शामिल है।

<u>**मध्यान भोजन कार्यक्रम एवं स्वास्थ्य के विकास की निगरानी एवं जाँच—परीक्षण की उपलब्यता सुनिश्चित करना**</u>

इस बात पर विश्लेषण बल दिया गया है कि मध्यम (दोपहर के) भोजन कार्यक्रम को प्राथमिक विद्यालय के साथ—साथ तैयारी कराओं तक भी विस्तारित किया जाना चाहिए। साथ ही स्वास्थ्य के विकास की निगरानी और जाँच—परीक्षण जो आँगवाड़ी व्यवस्था में पहले से उपलब्ध है, इसे प्राथमिक विद्यालय की तैयरी कराओं के विद्यार्थियों को भी उपलब्ध कराया जाएगा।

<u>**प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा पाठ्यक्रम की योजना एवं क्रियानवयनः—**</u> राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इस बात का उल्लेख किया गया है कि देखभाल एवं शिक्षा पाठ्यक्रम और शिक्षा विधि की जिम्मेदारी मानव संसाधन विकास मंत्रालय की होगी, जिससे कि प्राथमिक विद्यालय के माध्यम से पूर्व—प्राथमिक विद्यालय तक इसकी निरंतरता सुनिश्चित की जा सके तथा शिक्षा के मूलभूत पहलुओं पर न्याय के हित किया जा सके। इसके उतिरिक्त प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा पाठ्यक्रम और शिक्षण विधि की जिम्मेदारी मान संसाधन विकास मंत्रालय की होगी, जिससे कि प्राथतिक विद्यालय के माध्यम से पूर्व—प्राथमिक विद्यालय तक इसकी निरंतरता सुनिश्चित की जा सके तथा शिक्षा के मूल भूत पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित की जा सके तथा शिक्षा के मूल भूत पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित किया जा सके। इसके अतिरिक्त प्रारंभिक बाल्यवस्था में शिक्षा मंत्रालय, महिला और बाल विकास मंत्रालय, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्राालय तथा जनजतीय काम मंत्राालय द्वारा संसुक्त रूप से किया जाएगा एवं स्कूल शिक्षा में प्रारंभिक बाल्यवस्था देखभाल और शिक्षा के सुचारू एकीकरण एवं सतत मार्गदर्शन के लिए एक विशेष 'संयुक्त कार्यबल'' आर्थात '' टास्क्फोर्स'' का गठन किया जाएगा।

<u>**ई0 सी0 सी0 ई0 शिक्षको का शुरूआती कलंडर तैयार करना एवं प्रशिक्षण प्रदान करनाः—**</u>

इस नवीन शिक्षा नीति में ई0 सी0 सी0 ई0 शिक्षकों को शुरूआती कलेंडर तैयार करने के लिए आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओ का शिक्षकों राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा विकसित पाठ्यक्रम व शिक्षण शास्त्रीय मफेमवर्क के अनुसार एक व्यवस्थित तरीके से प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा ताथा 10.2 और उससे अधिक योग्यता वाले आँगनवाड़ी कार्यकर्ता या शिक्षक को ई0 सी0 सी0 ई0 में छह महीने का प्रमाण पत्र कार्यक्रम कराया जाएगा।

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा को वास्तविक धरातल पर क्रियानिवत करने से संबंधित कुछ प्रमुख उपयों अथवा तरीको को निम्न प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता हैः–

1. प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के कार्यक्रम पोषण, स्वास्थ्य और शिक्षा सेवाओं में खंडित न होकर समग्र रूप में होने अथवा किए जाने चाहिए।

2. प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा का क्रियान्वयण केवल आर्थिक कारणों के संदर्भ अथवा आधार पर किया जाए, अपितु इसके सामाजिक न्याय और मानव अधिकारों के संदर्भ एवं आधार को भी विशेष रूप से ध्यान में रखा जाय।

3. निर्धन परिवारों में मजदूरी करने वाले माता–पिता और कामकाजी अभिमावकों के बच्चों के लिए प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा को सुनिश्चित किया जा सके।

4. प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा का क्रियान्वयण न केवल आर्थिक कारणों के संदर्भ अथवा आधार पर किया जाए। अपितु इसमें सामाजिक न्याय और मानव अधिकारों के संदर्भ अथवा आधार को भी विशेष रूप से ध्यान में रखा जाए।

5. प्रत्येक माह में एक नियत दिन पर प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा दिवस मनाया जाना चाहिए जिसमें सामुदाय के सदस्यों एवं अभिभवाकों को भी शामिल किया जाना चाहिए। इस संदर्भ में गैर–सरकारी एवं सेवा संस्थाओं की भी उचित सहायता अथवा सहयोग लिया जाए।

वर्णन के आधार पर निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परंपरा के आलोक में तैयार की गई है। यह सबके लिए आलान पहूँच, समांनता गुणवत्ता और जबाबदेही के आधरभूत स्तंम्भों पर आधारित है इसका उद्येश्य 21 वी सदी की जरूरतों के अनुकूल समग्र और लचीला बनाते हुए भारत की एक ज्ञान आधारित जवीन समाज और ज्ञान की वैशिवक महाशक्ति में बदलना तथा प्रत्येक विद्यार्थी में निहित अद्वितीय क्षमताओं को सामने लाना है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा के संदर्भ में इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को देश की शिक्षा व्यवस्था एवं प्रणाली को एक नया आधार एवं दिशा प्रदान करने वाली एक प्रमुख शिक्षा नीति के रूप में वर्णित एवं संबाधित किया जा सकता है।

संदर्भः–

1. अली चाईल्डहुड डेवलपमेंट एक्शन मनेटवर्क

2. शिक्षा मंत्रालय 2020 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।

AI आधारित शिक्षण और छात्र की सीखने की प्रक्रिया: एक मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक विश्लेषण

श्री मिथिलेश कुमार
सहायक प्राध्यापक

Abstract
कृत्रिम बुद्धिमत्ता)Artificial Intelligence–AI) वर्तमान युग की सबसे प्रभावशाली तकनीकी उपलब्धियों में से एक है, जिसने शिक्षा व्यवस्था को गहराई से प्रभावित किया है। AI आधारित शिक्षण प्रणालियाँ न केवल शिक्षणअधिगम की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाती हैं-, बल्कि छात्रों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं, क्षमताओं, रुचियों और सीखने की गति के अनुसार अधिगम को अनुकूलित भी करती हैं। यह शोधात्मक लेख AI आधारित शिक्षण और छात्र की सीखने की प्रक्रिया के बीच संबंध का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। लेख में सीखने की प्रक्रिया से संबंधित प्रमुख मनोवैज्ञानिक तत्वों जैसे- ध्यान, स्मृति, अभिप्रेरणा, संज्ञानात्मक विकास, व्यक्तिगत भिन्नताएँ, आत्मनिर्देशित अधिगम, शिक्षक छात्र संबंध तथा– सामाजिक-भावनात्मक विकास पर AI के प्रभावों की विवेचना की गई है। साथ ही भारतीय शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में AI आधारित शिक्षण की संभावनाओं, चुनौतियों और नैतिक प्रश्नों पर भी प्रकाश डाला गया है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि यदि AI को मानवीय मूल्यों, शैक्षिक उद्देश्यों और मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुरूप अपनाया जाए, तो यह शिक्षा को अधिक समावेशी, प्रभावी और भविष्योपयोगी बना सकता है।

Key Words
Artificial Intelligence, AI आधारित शिक्षण, सीखने की प्रक्रिया, शैक्षिक मनोविज्ञान, व्यक्तिगत अधिगम, डिजिटल शिक्षा, शिक्षक छात्र– ,संबंधव्यक्तिगत अधिगम, डिजिटल शिक्षा।

1. भूमिका

इक्कीसवीं सदी को विज्ञान और तकनीक का युग कहा जाता है। इस युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता)AI) ने मानव जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। शिक्षा के क्षेत्र में AI आधारित शिक्षण प्रणालियों ने पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों को एक नई दिशा दी है। जहाँ पहले शिक्षा मुख्यतः शिक्षक, कक्षा और पाठ्यपुस्तकों तक सीमित थी, वहीं आज डिजिटल प्लेटफॉर्म, स्मार्ट ट्यूटर और अनुकूली शिक्षण प्रणालियों के माध्यम से शिक्षा अधिक लचीली, व्यक्तिगत और सुलभ बन गई है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह परिवर्तन अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि शिक्षा केवल ज्ञान के हस्तांतरण की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह छात्र की सीखने की प्रक्रिया, मानसिक विकास और व्यक्तित्व निर्माण से गहराई से जुड़ी हुई है। AI आधारित शिक्षण ने छात्र की संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक प्रक्रियाओं को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया है।

इक्कीसवीं सदी को ज्ञान, सूचना और तकनीक का युग कहा जाता है। इस युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता)AI) ने शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग और प्रशासन सहित अनेक क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं। शिक्षा के क्षेत्र में AI आधारित शिक्षण ने पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों को चुनौती देते हुए शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक लचीला, व्यक्तिगत और प्रभावी बनाने का मार्ग प्रशस्त किया है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से शिक्षा केवल ज्ञान के संप्रेषण की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह छात्र के संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक विकास से जुड़ी हुई है। इसलिए AI आधारित शिक्षण का मूल्यांकन केवल तकनीकी दृष्टि से नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य से भी किया जाना आवश्यक है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता) Artificial Intelligence–AI) ने शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन किए हैं। AI आधारित शिक्षण प्रणालियाँ छात्रों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं, क्षमताओं और सीखने की गति के अनुरूप शिक्षण को अनुकूलित करने में सक्षम हैं। यह लेख AI आधारित शिक्षण और छात्र की सीखने की प्रक्रिया के बीच संबंध का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें सीखने से संबंधित प्रमुख मनोवैज्ञानिक घटकों जैसे- ध्यान, स्मृति, अभिप्रेरणा, व्यक्तिगत भिन्नताएँ, आत्मनिर्देशित अधिगम तथा शिक्षक-छात्र संबंध पर AI के प्रभावों की विवेचना की गई है। साथ ही भारतीय शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में AI आधारित शिक्षण की संभावनाओं, चुनौतियों और नैतिक पक्षों पर भी चर्चा की गई है। लेख का निष्कर्ष यह प्रतिपादित करता है कि यदि AI को मानवीय संवेदनशीलता और शैक्षिक मूल्यों के साथ अपनाया जाए, तो यह शिक्षा को अधिक प्रभावी, समावेशी और भविष्योपयोगी बना सकता है।

2. कृत्रिम बुद्धिमत्ता)AI) की अवधारणा

कृत्रिम बुद्धिमत्ता वह तकनीक है जिसके माध्यम से मशीनें मानव बुद्धि की तरह सोचने, निर्णय लेने और समस्याओं का समाधान करने में सक्षम होती हैं। शिक्षा के क्षेत्र में AI का उपयोग एडैप्टिव लर्निंग सिस्टम, इंटेलिजेंट ट्यूटरिंग सिस्टम, लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम, चैटबॉट्स और डेटा एनालिटिक्स के रूप में किया जा रहा है। AI आधारित शिक्षण का मुख्य उद्देश्य शिक्षण को छात्रकेंद्रित बनाना है-, जहाँ प्रत्येक छात्र अपनी क्षमता और आवश्यकता के अनुसार सीख सके।

AI आधारित शिक्षण वह शिक्षण प्रणाली है जिसमें मशीन लर्निंग, डेटा एनालिटिक्स, एल्गोरिदम और बुद्धिमान सॉफ्टवेयर का उपयोग करके शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाया जाता है। इसमें एडैप्टिव लर्निंग प्लेटफॉर्म, इंटेलिजेंट ट्यूटरिंग सिस्टम, लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम और चैटबॉट्स शामिल हैं। इन प्रणालियों का मुख्य उद्देश्य छात्रों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं, क्षमताओं और सीखने की गति के अनुसार शिक्षण सामग्री प्रस्तुत करना है। इस प्रकार AI आधारित शिक्षण छात्रकेंद्रित शिक्षा को बढ़ावा देता है।-

3. सीखने की प्रक्रियामनोवैज्ञानिक आधार :

मनोविज्ञान के अनुसार सीखना वह प्रक्रिया है जिसके परिणामस्वरूप अनुभव और अभ्यास से व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन होता है। सीखने की प्रक्रिया में ध्यान, स्मृति, अभिप्रेरणा, चिंतन, पुनर्बलन और स्थानांतरण)Transfer of Learning) जैसे तत्व शामिल होते हैं। AI आधारित शिक्षण इन सभी घटकों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है और अधिगम को अधिक प्रभावी बनाता है।

मनोविज्ञान के अनुसार सीखना वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से अनुभव और अभ्यास के परिणामस्वरूप व्यवहार, ज्ञान और दृष्टिकोण में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन होता है। सीखने की प्रक्रिया में कई मानसिक घटक शामिल होते हैं, जैसे ध्यान, स्मृति, अभिप्रेरणा, चिंतन और पुनर्बलन। AI आधारित शिक्षण इन सभी घटकों को प्रभावित करता है और कई स्थितियों में उन्हें अधिक सुदृढ़ बनाता है, जिससे अधिगम अधिक प्रभावी और स्थायी हो जाता है।

4. ध्यान)Attention) और AI आधारित शिक्षण

ध्यान सीखने की प्रक्रिया की पहली और आवश्यक शर्त है। पारंपरिक कक्षाओं में एक ही गति और पद्धति से पढ़ाना सभी छात्रों का ध्यान बनाए रखने में असफल हो सकता है। AI आधारित शिक्षण में मल्टीमीडिया, इंटरएक्टिव सामग्री, वीडियो, सिमुलेशन और गेम आधारित अधिगम का प्रयोग किया जाता है, जो छात्रों के ध्यान को आकर्षित करता है। मनोवैज्ञानिक रूप से यह संज्ञानात्मक संलग्नता को बढ़ाता है और सीखने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावशाली बनाता है।

5. स्मृति)Memory) और अधिगम में AI की भूमिका

सीखने की स्थायित्व स्मृति पर निर्भर करता है। AI आधारित शिक्षण में पुनरावृत्ति, अभ्यास, क्विज़ और त्वरित फीडबैक की सुविधा होती है, जो अल्पकालिक स्मृति को दीर्घकालिक स्मृति में बदलने में सहायक होती है। AI प्रणाली छात्र की कमजोरियों की पहचान कर विशेष अभ्यास प्रदान करती है, जिससे अधिगम अधिक स्थायी बनता है। सीखने की स्थायित्व स्मृति पर निर्भर करता है। AI आधारित शिक्षण में पुनरावृत्ति, अभ्यास और त्वरित फीडबैक की सुविधा उपलब्ध होती है, जिससे छात्र अपनी गलतियों को तुरंत समझकर सुधार कर सकता है। AI प्रणाली छात्र के कमजोर क्षेत्रों की पहचान कर लक्षित अभ्यास प्रदान करती है, जिससे दीर्घकालिक स्मृति का निर्माण होता है और अधिगम अधिक स्थायी बनता है।

6. अभिप्रेरणा)Motivation) और AI

अभिप्रेरणा सीखने की ऊर्जा है। AI आधारित शिक्षण में गेमीफिकेशन, अंक, बैज, प्रगति रिपोर्ट और व्यक्तिगत लक्ष्य निर्धारण जैसे तत्व छात्रों को सीखने के लिए प्रेरित करते हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह आंतरिक अभिप्रेरणा को बढ़ावा देता है और छात्रों में आत्मविश्वास का विकास करता है। अभिप्रेरणा सीखने की आत्मा मानी जाती है। मनोविज्ञान में आंतरिक और बाह्य अभिप्रेरणा का विशेष महत्व है। AI आधारित शिक्षण में गेमीफिकेशन, प्रगति रिपोर्ट, बैज और व्यक्तिगत लक्ष्य निर्धारण जैसी तकनीकें छात्रों में सीखने के प्रति रुचि और उत्साह उत्पन्न करती हैं। इससे छात्रों में आंतरिक अभिप्रेरणा विकसित होती है और वे सीखने को एक सकारात्मक अनुभव के रूप में देखते हैं।

7. व्यक्तिगत भिन्नताएँ और अनुकूली अधिगम

प्रत्येक छात्र की सीखने की गति, शैली और क्षमता अलग होती है। पारंपरिक शिक्षण इन व्यक्तिगत भिन्नताओं को पर्याप्त रूप से संबोधित नहीं कर पाता। AI आधारित शिक्षण व्यक्तिगत अधिगम)Personalized Learning) को संभव बनाता है।

प्रत्येक छात्र की सीखने की गति, शैली और क्षमता भिन्न होती है। पारंपरिक शिक्षा प्रणाली इन व्यक्तिगत भिन्नताओं को पूरी तरह संबोधित नहीं कर पाती। AI आधारित शिक्षण इन भिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षण सामग्री को अनुकूलित करता है। यह व्यक्तिगत अधिगम)Personalized Learning) को बढ़ावा देता है, जो आधुनिक शैक्षिक मनोविज्ञान की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। यह आधुनिक शैक्षिक मनोविज्ञान के अनुरूप है, जो छात्र केंद्रित-शिक्षा पर बल देता है।

8. आत्मनिर्देशित अधिगम और AI

AI आधारित शिक्षण छात्रों को आत्मनिर्देशित अधिगम के लिए प्रेरित करता है। छात्र स्वयं सीखने की योजना बनाता है, अभ्यास करता है और फीडबैक के आधार पर सुधार करता है।

इससे आत्मनियंत्रण-, आत्मअनुशासन और निर्णय क्षमता जैसे गुणों का विकास होता है।-

9. शिक्षक छात्र संबंध और–AI

AI आधारित शिक्षण शिक्षक की भूमिका को समाप्त नहीं करता, बल्कि उसे नया रूप देता है। शिक्षक अब केवल ज्ञान प्रदाता नहीं, बल्कि मार्गदर्शक और परामर्शदाता की भूमिका निभाता है।

AI से प्राप्त डेटा शिक्षक को छात्र की प्रगति और कठिनाइयों को समझने में सहायता करता है, जिससे शिक्षकछात्र संबंध अधिक सशक्त बनता है।–

10. सामाजिक एवं भावनात्मक विकास

सीखना केवल संज्ञानात्मक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि सामाजिक और भावनात्मक विकास से भी जुड़ा है। AI आधारित शिक्षण में मानवीय संपर्क की कमी एक चुनौती हो सकती है। AI आधारित शिक्षण संज्ञानात्मक विकास में सहायक है, परंतु इसका अत्यधिक उपयोग छात्रों में सामाजिक संपर्क की कमी और भावनात्मक दूरी उत्पन्न कर सकता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से संतुलन आवश्यक है, ताकि तकनीक सहायक बने, प्रतिस्थापक नहीं।
इसलिए मिश्रित शिक्षण)Blended Learning) को अपनाना आवश्यक है, जिसमें तकनीक और मानवीय संवाद दोनों का संतुलन हो।

11. भारतीय संदर्भ में AI आधारित शिक्षण

भारत जैसे विशाल देश में AI आधारित शिक्षण शिक्षा की गुणवत्ता और समानता बढ़ाने में सहायक हो सकता है। यह दूरदराज़ और वंचित क्षेत्रों तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुँचाने में सहायक है।
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी शिक्षा में तकनीक और AI के उपयोग पर बल देती है।

12. चुनौतियाँ और नैतिक प्रश्न

AI आधारित शिक्षण के साथ डेटा गोपनीयता, तकनीकी असमानता, डिजिटल विभाजन और नैतिकता जैसे प्रश्न जुड़े हुए हैं। इन चुनौतियों का समाधान नीतिगत और मानवीय दृष्टिकोण से किया जाना आवश्यक है।

13. भविष्य की संभावनाएँ

भविष्य में AI आधारित शिक्षण अधिक उन्नत, संवेदनशील और समावेशी होगा। यह जीवनपर्यंत सीखने की अवधारणा को सुदृढ़ करेगा।

14. निष्कर्ष

AI आधारित शिक्षण ने छात्र की सीखने की प्रक्रिया को अधिक व्यक्तिगत, प्रभावी और आत्मनिर्भर बनाया है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह ध्यान, स्मृति, अभिप्रेरणा और आत्मनिर्देशित अधिगम को सशक्त करता है। यदि AI को मानवीय मूल्यों और शैक्षिक उद्देश्यों के साथ संतुलित रूप में अपनाया जाए, तो यह शिक्षा को अधिक सार्थक और भविष्योपयोगी बना सकता है।

संदर्भित ग्रंथ)References)

1. Bandura, A. (1977). Social Learning Theory. Prentice Hall.
2. Woolfolk, A. (2016). Educational Psychology. Pearson Education.
3. Santrock, J. W. (2018). Educational Psychology. McGraw-Hill Education.
4. NCERT. (2020). शिक्षा में तकनीक और अधिगम :नई दिल्ली .NCERT.
5. UNESCO. (2021). Reimagining our futures together: A new social contract for education. Paris: UNESCO

शब्द बदलते हैं, संवेदना नहीं: भाषा उत्सव में भारतीयता का उत्सव

Mr. Chandan Kumar
Lecturer

सारांश

भाषा मानव अनुभव का सेतु

मानव सभ्यता की यात्रा में भाषा केवल ध्वनियों का समूह नहीं रही, बल्कि वह भावों की अभिव्यक्ति की सबसे सशक्त सांस्कृतिक धुरी भी बनी। किसी भी समाज की पहचान उसकी भाषा से होती है, उसकी स्मृतियाँ, उसका ज्ञान, उसकी परंपराएँ और उसके भविष्य के सपने – all get shaped through language. भारत में भाषाएँ केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि जीवित संस्कृति, जीवंत भाव और समन्वित सभ्यता की अनूठी प्रतीक हैं। भारत जैसे बहुभाषी देश में "शब्द बदलते हैं, संवेदना नहीं" यह सूत्र केवल कविता नहीं, बल्कि पूरे भारतीय भाषाई ताने-बाने का गहन दार्शनिक सार है। भारतीय भाषा उत्सव इसी सूत्र के आधार पर विज्ञान, प्रौद्योगिकी, शिक्षा, साहित्य, संस्कृति और संवाद के क्षेत्र में भारतीय बहुभाषिकता के सौंदर्य को रेखांकित करता है। यह उत्सव भारतीय भाषाओं के प्रति सम्मान, पुनर्जीवन और संरक्षण का अभियान भी है, जो राष्ट्र की बहुलता में निहित एकता को उजागर करता है।

भाषा मानव सभ्यता की सबसे मौलिक और प्रभावशाली देन है। यह केवल अभिव्यक्ति का साधन भर नहीं, बल्कि मनुष्य के अनुभवों, भावनाओं, ज्ञान, स्मृति, संस्कृति और सामाजिक संबंधों को जोड़ने वाला जीवंत सेतु है। मनुष्य की सोच, उसकी अनुभूतियाँ, उसका सामाजिक जीवन– सब भाषा के माध्यम से ही पूर्णता पाते हैं। इसी कारण भाषा को मानवता का साझा पुल कहा जाता है, जो व्यक्ति को व्यक्ति से, समुदाय को समुदाय से तथा अतीत को वर्तमान से जोड़ता है। संप्रेषण का अर्थ केवल शब्दों का आदान-प्रदान नहीं, बल्कि परस्पर समझ और अनुभवों का साझा होना है। भाषा जब बोलने वाले और सुनने वाले को समान धरातल पर लाती है, तब संवाद संभव होता है। यह संवाद विचारों को जन्म देता है, मतभेदों को कम करता है, संबंधों को मजबूत करता है, समाज में आपसी विश्वास को बढ़ाता है। किसी बच्चे का अपनी माँ से बोलना सीखना, किसी समुदाय का अपनी परंपराओं को गीतों में पिरोना, या दो देशों का राजनयिक वार्तालाप–इन सबमें भाषा अनुभवों को जोड़ने वाली अदृश्य कड़ी है। मनुष्य अपनी भावनाएँ–आनंद, पीड़ा, करुणा, भय, आशा, प्रेम–भाषा के माध्यम से ही व्यक्त करता है। जब कोई कहता है "मुझे दुख है", तो दुख केवल शब्द नहीं, बल्कि एक अनुभूति बन जाता है जिसे दूसरा समझ सकता है। भाषा इसी भाव-साझेदारी के कारण मानव अनुभव का सुदृढ़ सेतु बनती है। भारतीय परंपरा में कहा गया है– **"वाक् मनुष्य को एक बनाती है।"** यह एकता भावों की साझेदारी में निहित है, जिसे भाषा संभव करती है।

बीज-शब्द (Keywords) :- सांस्कृतिक, स्मृतियाँ, संप्रेषण, संवेदना, प्रौद्योगिकी, संरक्षण
अनुभवों, भावनाओं, ज्ञान, स्मृतिपरंपराओं, मिथकों, कहावतों , लोकविश्वासों, संगम साहित्य।

हर भाषा अपने समाज की संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, मिथकों, कहावतों और लोकविश्वासों की संरक्षक होती है। किसी भी भाषा का साहित्य उस समाज की सांस्कृतिक स्मृति है। हिंदी का लोकगीत, तमिल का संगम साहित्य, बंगला का टैगोर काव्य, पंजाबी की गुरबाणी, मराठी का संत साहित्य, सभी में मानव जीवन के विविध अनुभव अपनी-अपनी शैली में अभिव्यक्त हुए हैं। भाषा इन अनुभवों को पीढ़ी दर पीढ़ी पहुंचाती है, और इस प्रकार अतीत और वर्तमान के बीच सेतु का कार्य करती है। समाज में विश्वास, मानवीय संबंध और सामूहिकता भाषा की नींव पर ही टिके होते हैं। भाषा रिश्तों की गरमाहट बनाती है, समुदायों के बीच समझ बढ़ाती है, सामाजिक समरसता में योगदान देती है। किसी भी जाति या समुदाय का साझा संवाद माध्यम उसकी एकता को मजबूत करता है। यही कारण है कि बहुभाषी भारत में भी भाव की साझेदारी सामाजिक ताने-बाने को मजबूत बनाए रखती है।

ज्ञान का संकलन, निर्माण और प्रसार–तीनों भाषा पर आधारित हैं। विज्ञान के सिद्धांत, दर्शन की अवधारणाएँ, इतिहास के तथ्य, आध्यात्मिक चिंतन–सब भाषा के माध्यम से ही संरक्षित और संप्रेषित होते हैं। यदि भाषा न होती, तो मानव अनुभवों का संग्रह संभव ही नहीं होता। डिजिटल युग में यह भूमिका और व्यापक हुई है– अनुवाद तकनीक, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, इंटरनेट– ये सब भाषा को वैश्विक स्तर पर अनुभव-साझेदारी का सेतु बना रहे हैं।

भाषा का रूप बदल सकता है, अनुभव नहीं

समय के साथ भाषा में नए शब्द आते हैं, शैलियाँ बदलती हैं, लिपियाँ विकसित होती हैं– परंतु मानवीय अनुभव का सार वही रहता है। इसलिए कहा गया– **"शब्द बदलते हैं, संवेदना नहीं।"** आज के **"कनेक्ट"** का वही भाव है जो कल के **"संपर्क"** का था। तकनीक शब्दावली को बदल सकती है, पर मनुष्यों के बीच भावनात्मक संबंध भाषा की स्थायी शक्ति से ही बनते हैं।

भाषा: मानवता के सार्वभौम सेतु का प्रतीक

भाषाएँ भले भिन्न हों लेकिन सभी भाषाओं में कुछ मूल भाव अवश्य समान पाये जाते हैं– प्रेम, करुणा, भक्ति, शांति, सह-अस्तित्व। इसी भावात्मक समानता के कारण एक संस्कृति दूसरी संस्कृति के साथ संवाद स्थापित कर पाती है। भाषा इस वैश्विक मानवीय अनुभूति का सेतु बनती है। भाषा मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने वाली सबसे महत्वपूर्ण शक्ति है। यह भावों को साझा करती है, अनुभवों को संजोती है, समाज को जोड़ती है, संस्कृति को संरक्षित करती है, ज्ञान के द्वार खोलती है। भाषा केवल बोलने का साधन नहीं, बल्कि मानव अनुभव की सेतु-रचना है, जिसकी बदौलत मानव जीवन अर्थपूर्ण, संप्रेषणीय और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनता है। इसीलिए भाषा को मानव अस्तित्व की आत्मा और मानवता का शाश्वत सेतु कहा गया है।

भारतीय भाषाओं की सांस्कृतिक आत्मा: भावों की सहजात समानता

भारतीय भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे भले ही ध्वनि, व्याकरण और लिपि के स्तर पर एक-दूसरे से अलग हों, लेकिन उनकी सांस्कृतिक आत्मा और भाव-संरचना अद्भुत रूप से समान है। यह सहजात समानता भारत की साझा ऐतिहासिक यात्रा, आध्यात्मिक दृष्टि और जीवन-मूल्यों से उत्पन्न हुई है।

राम–कृष्ण की कथा, माता-पिता के प्रति सम्मान, प्रकृति के प्रति श्रद्धा, अतिथि को देवता मानने की परंपरा, करुणा–सहअस्तित्व–विनम्रता जैसे मूल्य–ये सब भारतीय भाषाओं में अलग-अलग शब्दों से व्यक्त होते हैं, पर भाव हर भाषा में समान रहता है। तमिल की 'अण्णै', बंगला की 'माँ', हिंदी की 'मातृभाषा'–शब्द बदल सकते हैं, पर मातृत्व की अनुभूति हर जगह एक-सी है। लोकगीतों, त्यौहारों, भक्ति साहित्य और कहावतों में भी यह भाव-एकरूपता दिखाई देती है। विविधता के भीतर छिपी यह भावात्मक एकता भारतीय भाषाओं को केवल संप्रेषण का साधन नहीं, बल्कि साझा सांस्कृतिक चेतना का वाहक बनाती है।

इसलिए भारतीय भाषाओं की सांस्कृतिक आत्मा का आधार शब्दों की नहीं, बल्कि भावों की सहजात समानता में निहित है–जो भारत की असली एकता का प्रतीक है।

भारत में 22 अनुसूचित भाषाएँ, सैकड़ों मातृभाषाएँ और हजारों बोलियाँ मौजूद हैं। भाषाओं की यह विविधता सतही रूप से भले ही भिन्न दिखाई दे, परंतु इसके भीतर बहने वाली भावधारा लगभग एक-सी है।

भारत की प्रत्येक भाषा में प्रकृति, मनुष्य, समाज, परिवार, प्रेम, भक्ति, न्याय, सत्य और करुणा जैसे भावों की अभिव्यक्ति समान रूप से मिलती है। हिन्दी में "ममता", बंगला में "ममत्व", तमिल में "அன்பு" (अनबु), मराठी में "मायाळूपणा", मैथिली में "मैयारू" ये सभी शब्द अलग ध्वनियों में कहे जाते हैं, पर इनकी संवेदना समान है - आदर, स्नेह और अपनत्व की भावना। रामायण, महाभारत, पद्य, लोकगीत– ये सभी एक ही कथ्य को विभिन्न भाषाओं में नए रूपों और शैली में प्रस्तुत करते हैं, परंतु संदेश एक ही रहता है– धर्म, कर्तव्य, न्याय और मानवता। तुलसीदास की रामचरितमानस, कम्बन की कम्ब रामायण, कन्नड़ की पम्प रामायण, ओड़िया की विलंका रामायण, असमिया की कृतिवासी रामायण सबकी भाषा अलग है, पर भाव एक ही है।

"शब्द बदलते हैं, संवेदना नहीं"

"शब्द बदलते हैं, संवेदना नहीं" भारतीय दर्शन और ज्ञान परंपरा का अत्यंत गहरा विचार है।

उपनिषद, वेद, भक्ति काव्य और भारतीय साहित्य–सबमें यह मान्यता स्पष्ट दिखाई देती है कि शब्द मात्र माध्यम हैं, जबकि भाव ही वास्तविक सार है। भारतीय आचार्यों ने वाणी को परिवर्तनशील माना और भाव को शाश्वत सत्य के रूप में स्वीकार किया।

उपनिषदों में कहा गया है कि "वाक्" (शब्द) निरंतर बदलते हैं, परंतु "भाव" (आंतरिक अर्थ) स्थिर और सार्वभौमिक रहता है। इसी प्रकार नाट्यशास्त्र का रस सिद्धांत भी बताता है कि भाषा या शैली चाहे जो हो, मानवीय भावनाएँ, करुणा, श्रृंगार, शौर्य, भक्ति–हर स्थान पर एक-सी अनुभूति उत्पन्न करती हैं। यही कारण है कि रामकथा तमिल, कन्नड, बंगला या हिन्दी किसी भी भाषा में कही जाए, मूल संवेदना समान रहती है।

भारतीय भक्ति आंदोलन ने तो इस सिद्धांत को व्यवहार में उतार दिया। कबीर की सधुक्कड़ी, मीरा की राजस्थानी–गुजराती, तिरुवल्लुवर की तमिल, गुरुनानक की पंजाबी–सबकी भाषा भिन्न है, पर मानवता, प्रेम और ईश्वर-भक्ति का भाव एक ही है। इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में सदैव भाव को प्रधान माना गया है, न कि शब्दों की बाहरी विविधता को।

इस प्रकार "शब्द बदलते हैं, संवेदना नहीं" भारतीय चिंतन की वह धुरी है जो बताती है कि अभिव्यक्ति बदल सकती है, पर मानवीय अनुभव और आध्यात्मिक सत्य की एकता अपरिवर्तित रहती है। यही भारतीय संस्कृति की स्थायी शक्ति भी है। यह सूत्र भारत की दार्शनिक परंपरा में गहराई से अंकित है।

- ✓ उपनिषद भाव को मूल मानते हैं– "भाव ग्रहेयम्, न तु शब्दग्रहेयम्।"
- ✓ भक्ति परंपरा भाषा को सीमित मानकर भाव को सर्वोच्च स्थान देती है।
- ✓ कबीर कहते हैं: "भाषा ऐसी बोलिए, मन का आपा खोए।"

विद्यापति, मीरा, शंकरदेव, नरसी मेहता, त्यागराज–ये सब अलग-अलग भाषाओं में भाव की एकता के संवाहक रहे। भारतीयता का जो आत्मबोध है, वह भाषा से अधिक भाव से निर्मित है।

विशेष फोकस–"भाव एक, भाषा अनेक"

भारतीय भाषा उत्सव भाव–आधारित एकता को केंद्रीय विचार बनाकर मनाया जा रहा है। इसके अंतर्गत बहुभाषी कविता सम्मेलन, भाषाई संगीत महोत्सव, अनुवाद संगोष्ठियाँ, भारतीय भाषाओं में डिजिटल शिक्षण सामग्री जैसे कार्यक्रम पूरे देश में आयोजित किए जा रहे हैं।

मानवता, प्रेम, प्रकृति और ईश्वर के प्रति समर्पण जैसे भाव समान हैं।

भक्ति कवियों की विशेषता यह थी कि वे भाषा का बंधन नहीं मानते थे। मीरा की पदावली गुजराती-राजस्थानी की मिश्रित शैली, कबीर की भाषा–सधुक्कड़ी, अवधी, ब्रज, पुनीत राजकुमार की कन्नड़ भक्ति, त्यागराज की गायन परंपरा तमिल–तेलुगु में भाषा अलग रही पर भक्ति का भाव एक ही रहा।

डिजिटल भारत के उदय के साथ तकनीक ने भारतीय भाषाओं के स्वरूप और उपयोग में बड़ी तेजी से परिवर्तन लाया है। आज मोबाइल, इंटरनेट, सोशल मीडिया, ई-गवर्नेंस, ऑनलाइन शिक्षा और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के बढ़ते प्रयोग से नए-नए तकनीकी शब्द हमारी रोज़मर्रा की भाषा का हिस्सा बन रहे हैं–जैसे डाउनलोड, अपडेट, लॉग-इन, चैटबॉट, आदि। शब्द बदल रहे हैं, संप्रेषण के माध्यम बदल रहे हैं, पर भाव और उद्देश्य वही हैं–संवाद को सरल, सहज और सबके लिए सुलभ बनाना। तकनीक का सबसे बड़ा योगदान यह है कि उसने भारतीय भाषाओं को लोकतांत्रिक पहुँच दी है। आज लोग अपनी मातृभाषा में इंटरनेट का उपयोग करते हैं, वीडियो देखते हैं, ऑनलाइन लेन-देन करते हैं और डिजिटल सेवाओं का लाभ उठाते हैं। वॉइस-असिस्टेंट, मशीन अनुवाद, स्पीच-टू-टेक्स्ट जैसे उपकरण भाषाओं के बीच की बाधाओं को कम कर रहे हैं। अब तमिल भाषी व्यक्ति आसानी से मराठी भाषी से AI–अनुवाद के माध्यम से बात कर सकता है–भाव का प्रवाह वही रहता है, शब्द सिर्फ माध्यम बदलते हैं। डिजिटल शिक्षा में मातृभाषाओं की सामग्री और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मातृभाषा–केंद्रित दृष्टिकोण भी तकनीक के साथ भारतीय भाषाओं को नई शक्ति प्रदान कर रहा है। ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में तकनीक भाषाई पहुँच और ज्ञान-विस्तार के नए द्वार खोल रही है। स्पष्ट है कि तकनीक ने भाषा को बदलते समय के अनुरूप नया रूप दिया है, पर भारतीय भाषाओं का मूल भाव–संबंध, सहजता, संवाद और संवेदना–ज्यों का त्यों बना हुआ है। इस प्रकार डिजिटल युग में शब्द भले नए हों, पर भाव वही है–भारतीय भाषाएँ आज भी मानव अनुभव और सांस्कृतिक जुड़ाव का सबसे सशक्त माध्यम बनी हुई हैं।

भारत जब डिजिटल युग में प्रवेश कर चुका है, तब भाषाई विविधता नई प्रौद्योगिकियों का आधार बन रही है।

वॉइस असिस्टेंट, मशीन ट्रांसलेशन, स्पीच-टू-टेक्स्ट–ये सभी भारतीय भाषाओं को नई ताकत दे रहे हैं। अब एक कन्नड़ भाषी व्यक्ति मराठी भाषी से AI आधारित अनुवाद उपकरण के माध्यम से सहज बातचीत कर सकता है।

आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस (AI) भारत की भाषाई दुनिया को तेजी से बदल रहा है। पहले जहाँ तकनीक मुख्यतः अंग्रेज़ी पर निर्भर थी, वहीं अब AI ने भारतीय भाषाओं को डिजिटल क्षेत्र में समान अवसर देना शुरू किया है। AI-आधारित अनुवाद, वॉइस रिकॉग्निशन, स्पीच-टू-टेक्स्ट, चैटबॉट और भाषा मॉडल जैसी तकनीकें आज लगभग हर भारतीय भाषा में उपलब्ध हो रही हैं। इससे भाषा–आधारित अवरोध कम हुए हैं और संचार अधिक सुगम हुआ है। AI का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह हर व्यक्ति को उसकी मातृभाषा में डिजिटल पहुँच प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, कोई ग्रामीण उपयोगकर्ता हिन्दी, तमिल, बंगला या भोजपुरी में बात करके सरकारी सेवाएँ, बैंकिंग, स्वास्थ्य जानकारी या ऑनलाइन सीखने की सुविधा प्राप्त कर सकता है। इसी प्रकार IIT-मद्रास के AI4Bharat जैसे प्रोजेक्ट भारतीय भाषाओं में अनुवाद व आवाज़ पहचान के लिए मजबूत मॉडल तैयार कर रहे हैं, जिससे भाषाओं का डिजिटल भविष्य और भी सशक्त बन रहा है। AI भारतीय भाषाओं के संरक्षण और प्रसार का भी माध्यम बन रहा है। लुप्तप्राय बोलियों का डेटा संग्रह, लोककथाओं का डिजिटलीकरण, और बहुभाषी कंटेंट का निर्माण अब आसानी से संभव हो रहा है। इससे भारतीय भाषाएँ न केवल जीवंत बनी रहेंगी, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी अपनी उपस्थिति दर्ज करा सकेंगी।

इस प्रकार आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस भारतीय भाषाओं के लिए सशक्तिकरण का उपकरण बन रहा है:–

- ✓ शब्द भले आधुनिक और तकनीकी हो गए हों,
- ✓ लेकिन भाषाओं का मूल भाव, उनकी आत्मीयता और सांस्कृतिक पहचान जस की तस बनी हुई है।

AI ने भारतीय भाषाओं को नए युग में प्रवेश ही नहीं कराया, बल्कि उन्हें डिजिटल युग की मुख्य धारा में भी स्थापित किया है।

भारतीय भाषाएँ सिर्फ संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि समाज और संस्कृति को जोड़ने वाली जीवंत कड़ियाँ हैं। प्रत्येक भाषा अपने साथ एक विशिष्ट इतिहास, परंपरा, लोक-कथाएँ, रीति–रिवाज़, संगीत, कला और जीवन-मूल्यों का विशाल संसार लेकर चलती है। इसी कारण भारतीय समाज की संरचना, सोच और सामूहिक व्यवहार पर भाषाओं का गहरा प्रभाव दिखाई देता है।

सामाजिक स्तर पर भारतीय भाषाएँ–

- ✓ समुदायों के बीच संवाद और आपसी समझ को सुदृढ़ करती हैं,
- ✓ स्थानीय पहचान और समूह-एकजुटता को बनाए रखती हैं,
- ✓ पारिवारिक और सामाजिक संबंधों में भावनात्मक ऊष्मा प्रदान करती हैं।

सांस्कृतिक दृष्टि से ये–

- ✓ लोकगीतों, नृत्यों, उत्सवों और परंपराओं को पीढ़ियों तक पहुँचाने का कार्य करती हैं,
- ✓ क्षेत्रीय संस्कृति की विशिष्टता को बचाए रखती हैं,
- ✓ साहित्य, कला, दर्शन और धार्मिक परंपराओं को अभिव्यक्त करने का संवाहक बनती हैं।

भारतीय भाषाओं की यह विशेषता है कि भले ही वे ध्वनि, लिपि और शब्दावली में भिन्न हों, पर मूल सांस्कृतिक भाव–मानवता, भक्ति, प्रकृति–प्रेम, परिवार–केंद्रित जीवन, सह-अस्तित्व और करुणा–सभी में समान रूप से मिलता है। यही साझा भाव भारतीय समाज को एकता प्रदान करता है। इस प्रकार सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ में भारतीय भाषाओं की भूमिका केवल अभिव्यक्ति की नहीं, बल्कि संस्कृति-निर्माण, मूल्य-संरक्षण और समाज-एकता की आधारशिला के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत में भाषा के आधार पर लोग अलग नहीं होते; वे भावों के आधार पर जुड़ते हैं। तमिल भाषी जब 'वणक्कम' कहता है और बंगाली 'नमस्कार'–दोनों के पीछे सम्मान का वही भाव है। भाषा किसी भी राष्ट्र की सांस्कृतिक आत्मा और सामूहिक चेतना का मूल आधार होती है। यह केवल संप्रेषण का साधन नहीं, बल्कि इतिहास, परंपरा, भावनाओं और सामाजिक मूल्यों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी संजोकर रखने वाली शक्ति है। इसलिए राष्ट्रीय पहचान के निर्माण में भाषा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।

भारत जैसे बहुभाषी देश में यह प्रश्न और भी जटिल तथा समृद्ध रूप में सामने आता है। यहाँ 22 अनुसूचित भाषाएँ और सैकड़ों मातृभाषाएँ हैं, फिर भी राष्ट्रीय पहचान किसी एक भाषा पर आधारित नहीं, बल्कि बहुभाषिक सह-अस्तित्व पर निर्मित है। भारतीय संविधान भी भाषा के आधार पर राष्ट्र की एकता को नहीं मानता, बल्कि सांस्कृतिक विविधता में निहित एकता को राष्ट्रीय पहचान का मूल मानता है। भारतीय राष्ट्रीयता का स्वरूप यह मानता है कि भाषा बदल सकती है, पर राष्ट्रीय भावना समान रहती है, बोलियाँ अनेक हो सकती हैं, पर संस्कृति साझा रहती है, अभिव्यक्ति अलग हो सकती है, पर भारतीयता का भाव नहीं बदलता।

भारत में राष्ट्रीय पहचान किसी एक "राष्ट्रीय भाषा" की अनिवार्यता पर नहीं, बल्कि सभी भारतीय भाषाओं के सम्मान, संरक्षण और समान अधिकार पर आधारित है। भाषाई विविधता को स्वीकार कर उसे शक्ति में बदल देना भारतीय राष्ट्रीयता का अनोखा वैश्विक मॉडल है।

इस प्रकार भाषा और राष्ट्रीय पहचान का प्रश्न भारत में एकरूपता का नहीं, बल्कि समावेशी बहुलता, भाव-साझेदारी और सांस्कृतिक सामंजस्य का प्रश्न है। भारत के लिए भाषा केवल सांस्कृतिक पहचान नहीं, बल्कि राष्ट्र-निर्माण का आधार है।

संविधान में कहा गया है कि भारत **"भाषाई सहअस्तित्व"** का देश है।

राष्ट्र एक–भाषाएँ अनेक–भाव एक।
यही भारतीयता का भाव–केन्द्र है।।

शब्दों की विविधता में भावों की एकता-यही भारतीयता है। "शब्द बदलते हैं, संवेदना नहीं" केवल एक कथन नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृतियों की हजारों वर्ष पुरानी शाश्वत परंपरा है। भारत का भाषाई वैभव हमें यह सिखाता है कि भाषा बदलने से संस्कार नहीं बदलते, शब्द बदलने से भाव नहीं बदलते, अभिव्यक्ति बदलने से मानवता नहीं बदलती। भारतीय भाषा उत्सव इस सत्य को नए रूप में स्थापित करता है कि भारत की असली पहचान

उसकी बहुभाषिकता में नहीं, बल्कि बहुभाषिकता में बसी एक-सी मानव संवेदना में है। शायद इसी लिए भारत कहता है–"वसुधैव कुटुम्बकम्", और यह कथन हर भारतीय भाषा में समान भाव के साथ गूंजता है।

निष्कर्ष

उपरोक्त समस्त विमर्श के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि भाषा केवल संप्रेषण का साधन नहीं, बल्कि मानव अनुभव, सामाजिक संबंध और सांस्कृतिक चेतना की जीवंत अभिव्यक्ति है। भारतीय संदर्भ में भाषा का महत्व और भी व्यापक हो जाता है, क्योंकि यहाँ भाषाई विविधता किसी विखंडन का कारण नहीं, बल्कि राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक समरसता का आधार है।

भारतीय भाषाएँ अपने शब्द–रूप, लिपि और व्याकरण में भिन्न अवश्य हैं, परंतु उनकी सांस्कृतिक आत्मा एक समान भावधारा से अनुप्राणित है। प्रेम, करुणा, भक्ति, सह-अस्तित्व, परिवार–केंद्रित जीवन और प्रकृति के प्रति सम्मान ये ऐसे मूल्य हैं जो सभी भारतीय भाषाओं में समान रूप से अभिव्यक्त होते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि भारत की पहचान किसी एक भाषा से नहीं, बल्कि भावों की साझेदारी और सांस्कृतिक चेतना की एकता से निर्मित होती है। "शब्द बदलते हैं, संवेदना नहीं" का सिद्धांत भारतीय ज्ञान परंपरा की मूल धुरी है। उपनिषदों से लेकर भक्ति आंदोलन और आधुनिक साहित्य तक यह विचार निरंतर प्रवाहित होता रहा है कि शब्द परिवर्तनशील हैं, किंतु मानवीय अनुभव और भाव शाश्वत हैं। यही कारण है कि अलग–अलग भाषाओं में रचित ग्रंथ, गीत और कथाएँ समान मानवीय अनुभूतियों को व्यक्त करती हैं और जनमानस को जोड़ती हैं।

डिजिटल युग और आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस के विस्तार ने भारतीय भाषाओं को नई संभावनाएँ प्रदान की हैं। तकनीक ने भाषाई सीमाओं को कम करते हुए मातृभाषाओं को शिक्षा, प्रशासन, ज्ञान और संवाद की मुख्य धारा में पुनः स्थापित किया है। यद्यपि नए तकनीकी शब्द जुड़ रहे हैं, पर संप्रेषण का मूल भाव सहजता, सहभागिता और संवेदना अपरिवर्तित बना हुआ है।

भारतीय भाषा उत्सव जैसे प्रयास यह प्रमाणित करते हैं कि भाषाई विविधता को सम्मान देकर ही राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ किया जा सकता है। भाषाओं का संरक्षण और संवर्धन केवल सांस्कृतिक उत्तरदायित्व नहीं, बल्कि भावी पीढ़ियों के लिए सामाजिक और बौद्धिक धरोहर को सुरक्षित रखने का कार्य भी है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भाषा मानव अनुभव का सेतु है, भारतीय संस्कृति की आत्मा है और राष्ट्रीय पहचान की संवाहक है। जब तक भारतीय भाषाओं में निहित भावात्मक एकता जीवित रहेगी, तब तक भारत की सांस्कृतिक अखंडता और मानवीय मूल्य भी अक्षुण्ण बने रहेंगे। यही भारतीय भाषाओं की सबसे बड़ी शक्ति और भारतीयता की स्थायी पहचान है।

संदर्भ (References)

1. आठवीं अनुसूची (22-भारतीय अनुसूचित भाषाएँ)
2. IIT मद्रास - AI4Bharat रिपोर्ट (भारतीय भाषाओं के लिए AI मॉडल)
3. भरतमुनि - नाट्यशास्त्र (भाव–रस सिद्धांत)
4. बृहदारण्यक उपनिषद् एवं छान्दोग्य उपनिषद् - भाषा, भाव और अर्थ संबंधी विचार
5. वाल्मीकि - रामायण (विविध भाषाई परंपराओं में भाव-साम्यता)
6. तुलसीदास - रामचरितमानस
7. कबीर - बीजक (भाव-प्रधान अभिव्यक्ति)
8. महात्मा गांधी - हिन्द स्वराज
9. रवीन्द्रनाथ टैगोर - राष्ट्रीयता और भाषा (निबंध/व्याख्यान)
10. राहुल सांकृत्यायन - भाषा और समाज
11. विद्यानिवास मिश्र - भारतीय भाषाओं का सहजीवन
12. भारत का संविधान - अनुच्छेद 343–351 एवं आठवीं अनुसूची
13. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 - मातृभाषा आधारित शिक्षा
14. साहित्य अकादमी - भारतीय भाषाएँ: विविधता और एकता
15. CIIL, मैसूर - भारतीय भाषाओं पर शोध रिपोर्ट

शिक्षा क्या क्यों और कैसे एक विचार

श्री उदय कुमार राय
सहायक प्राध्यापक

शिक्षा क्या क्यों कैसे कहां किसके लिए यह कुछ स्वाभाविक प्रश्न हमेशा चिंतन के विषय रहे हैं। मनुष्य लगातार अपने को उन्नत करता रहा है। अपनी जरूरत आकांक्षाओं को पूर्ति करते हुए अपने जीवन शैली को सुलभ बनाता जा रहा है। आज के मनुष्य का पर्यावरण सदियों पूर्व के मनुष्य के पर्यावरण से काफी भिन्न है। किंतु इन सभी के साथ ही साथ लगातार चिंतन एवं अपने आसपास की घटनाओं से संबंध स्थापित करते हुए उसे पर प्रतिक्रिया करना इस चेतन प्राणी का मूल स्वभाव है। 19वीं साड़ी के मध्य में जन्मे देवी साड़ी के अंत तक दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक एवं एक चिंतक रूप में स्थापित हो चुके थे। आज भी शिक्षा पर अपने ज्ञान को पानी करने को देवी के चिंतन प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। शिक्षा से सीधा सरोकार रखने वाले ये पहले दार्शनिक जीवन भर शैक्षिक प्रयोग में रत रहे एवं उनके जीवन काल के अमेरिका में आए बदलाव हो और शिक्षा का क्या स्वरूप हो इसके प्रयोग के लिए विद्यालय की स्थापना भी की। अपने अनुभवों की एक लंबी श्रृंखला को कई मंजू से लोगों के बीच ले एवं कई विचारों को पुस्तक के रूप में संयोजित भी किया जो आज भी चिंतन को दिशा प्रदान करता है।

डीवी ने मनुष्य के सामाजिक स्वभाव को एवं पूरी शिक्षण प्रक्रिया में किसी के देने लेने के बदले मिलकर सीखने अर्थात सीखने में सिखाने वाले की भागीदारी को प्रमुखता दी। मनुष्य अपनी मूल क्षमताओं और समाज के एक सदस्य के तौर पर अर्जित अनुभवों के आधार पर ही उन सदस्यों से सामंजस स्थापित करते हुए समाज का संचालन एवं नवीकरण करने में अपना योगदान देता है। जॉन डीवी जब कहते हैं कि चेतन प्राणी एवं जल पदार्थों के बीच सबसे उल्लेखनीय अंतर यह है कि चेतन जीव नवीकरण के द्वारा अपना अस्तित्व कायम रखना है तो उनकी पूरी चिंतन प्रक्रिया पर सोचने विचारने की जरूरत महसूस होती है। टीवी में इस जगत को दो प्रकार के पदार्थ की संकल्पना की है चेतन और जल इन दोनों के बीच मूल अंतर स्थापित करते हुए देवी कहते हैं कि चेतन जब की मूल प्रवृत्ति होती है कि वह वातावरण के सापेक्ष अपने अस्तित्व का संरक्षण करें और इसके लिए वह अपने वातावरण का उपयोग करना सुनिश्चित करता है।

अस्तित्व के संरक्षण की यह प्रवृत्ति उसकी सामूहिक प्रवृत्ति भी है तथा व्यक्ति और समाज दोनों ही अपने अस्तित्व का संरक्षण करने के लिए सतत तौर पर प्रयासशील रहते हैं। इसकी पूर्ति के लिए वह नवीकरण की प्रक्रिया का अनुपालन करते हैं यहां नवीकरण से आज से यह है कि चेतन जी अपने अस्तित्व को कायम रखने के क्रम में पर्यावरण से अनुकूलता स्थापित करने के दौरान न केवल भौतिक अस्तित्व से अनुकूलता स्थापित करता है बल्कि अपनी पीढ़ियों से संचित अवस्थाओं परंपराओं रीतियों रिवाजों में भी अपेक्षित बदलाव लाता है और उसे अपनी नई विधि या और ज्यादा व्यवस्थित क्रम में कहे तो नए सदस्य तक हस्तांतरित करता है। यही विकास की प्रक्रिया भी है।

शिक्षा - क्यों

डीवी शिक्षा को सामाजिक प्रक्रिया मानते थे समाज में आने वाले प्रत्येक नए सदस्य को अपने रीति, रिवाज, आस्था, परंपराओं की समझ होनी चाहिए। इनकी समझ नए सदस्यों में विकसित करने की जिम्मेदारी समाज के वरिष्ठ सदस्यों की होती है। समाज गतिशील होता है। इसकी निरंतरता बनाए रखने के लिए शिक्षा आवश्यक है नए सदस्यों की क्षमता के पोषण के लिए भी शिक्षा अनिवार्य है। डीवी एक लोकतांत्रिक सामाजिक व्यवस्था के पक्षधर थे इसलिए लोकतांत्रिक समाज के निर्माण के लिए एक शिक्षा को एक महत्वपूर्ण औजार मानते थे। लोकतांत्रिक समाज से आशय है कि समाज के प्रत्येक सदस्य की समान भागीदारी समाज की गतिशीलता बनाए रखती है। शिक्षा ऐसी ही हो जो समाज के सदस्यों में सामाजिक सदस्यों और सामाजिक नियंत्रण के लिए व्यक्तिगत सरोकार विकसित करें। व्यक्ति में ऐसी आदत हो जिससे अव्यवस्था पैदा किए बिना सामाजिक परिवर्तन हो।

◦ शिक्षा के लक्ष्य

इस प्रकार डीवी शिक्षा के लक्षण पर बात करते हुए कहते हैं कि शिक्षा के कोई निर्धारित लक्ष्य करने से बचना चाहिए । डीवी मानते हैं कि जीवन में समझ में लगातार बदलाव होता है कोई भी परिस्थितियों स्थाई नहीं होती। इस नाते हम भविष्य के लिए कोई लक्ष्य निर्धारित नहीं कर सकते। वर्तमान से अनुकूलन

करते चुनौतियों को महसूस करने के लिए ही तैयार कर सकते हैं । लक्ष्य मौजूदा स्थितियों पर नौकरी जो पहले से चला आ रहा है उस पर आधारित हो । ऐसा लक्ष्य जो परिस्थितियों से सामाजिक स्थापित करने की बात ना करें वह शिक्षा का लक्ष्य नहीं है शिक्षा विकास की प्रक्रिया है जो वर्तमान में मनुष्य है कितना अंतर संबंध स्थापित कर पता है शिक्षा का लक्ष्य होना चाहिए ना कि भविष्य में क्या हो।

शिक्षा का कोई अंतिम लक्ष्य नहीं हो सकता। यहां सहज सहज बुद्धि को अवरोध करने से आशय यह है कि प्रत्येक मनुष्य अपने सामाजिक परिवेश से जो भी सीखा समझा है एवं उसका प्रयोग जीवन में करता है या उसकी सहज बुद्धि है। अगर इसका उपयोग आगे सीखने में शामिल नहीं किया गया तो उसकी गति औरत होती है तब वह अपने अनुभवों का संयोजन नहीं करता बल्कि आरोपित ज्ञान मतलब जिसे वह अपने अनुभव से ना गुजारा हो बल्कि किसी के द्वारा उसे दिया गया सूचना हो को शिक्षा समझ बैठता है डीवी कहते हैं शिक्षा जीवन के लिए नहीं है बल्कि शिक्षा तो स्वयं जीवन हैं।

डीवी जहां एक और पारंपरिक शिक्षा पद्धति की आलोचना करते हैं कि अतीत के किसी तत्व को आरोपित करना शिक्षा नहीं है । वह नई शिक्षा व्यवस्था जो किसी खास जीवन के लिए प्रशिक्षित करना भी शिक्षा नहीं है । शिक्षा वह है जो वर्तमान की परिस्थितियों के अनुरूप रूट हो चुकी है परंपरा को निकालने के लिए मानव को तैयार करें। शिक्षा स्वयं को समझने विकसित करने के उद्देश्य के लिए हो। डीवी का विश्वास था कि सही शिक्षा बच्चों के क्रिया और अनुभव इस प्रकार से विस्तार करता है कि वे समाज कि एक इकाई है अगर हम उसे शिक्षित करने में उसके सामाजिक पहलू को छोड़ देते है। और बच्चे के विशिष्टता को समाज से अलग देखते हैं तो जीवन विहीन शिक्षा देते है।

◦ विद्यालय

डीवी के अनुसार बच्चों के लिए विद्यालय घर का विस्तार हो। अर्थात उसके अपने घर में प्राप्त अनुभव के विस्तार की जगह हो विद्यालय। का मानना है कि विद्यालय मूलतः सामाजिक संस्था है एवं सामाजिक अपेक्षाओं को जानना एवं विद्यालय का प्रमुख कार्य होना चाहिए। विभिन्न सामुदायिक विशेषताओं को जन एवं उसके प्रति समान संचार के भाव को विकसित करने का केंद्र हो विद्यालय। व्यापक सामुदायिक विशेषताओं से सामंजन स्थापित करने का अवसर प्रदान करने का कार्य करे विद्यालय। किसी बीते समय के विचारों का संप्रेषण कर किसी खास कार्य के लिए विकसित करने का काम विद्यालय न करे। इसे वर्तमान के अनुभव और बदलाव अपेक्षित होते हैं। विद्यालय की गतिविधियां बच्चों को सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रेरित कर सके। पूर्व से आधारित कोई मानता बच्चों में विद्यालय आरोपित ना करें। विद्यालय समाज में जीने की कला सीखने नौकरी भविष्य की बात करें।

निष्कर्ष

का मुख्य उद्देश्य भारत की शिक्षा प्रणाली में अमूल चूल परिवर्तन लाना है ताकि यह समाजवादी, समावेशी, लचीली, गुणवत्तापूर्ण और 21वीं सदी की जरूरत के अनुरूप हो। शिक्षा का स्वरूप क्षेत्रीय भाषा में हो। ज्यादा से ज्यादा प्रौद्योगिकी शिक्षा का उपयोग हो। 2030 तक भी स्कूल से माध्यमिक स्तर तक 100% सकल नामांकन अनुपात प्राप्त करना और स्कूल से बाहर के बच्चों को मुख्य धारा में लाना।

संदर्भ सूची

◦ Bullert, Gary. The Politics of John Dewey:

◦ Campbell,James.Undestanding John Dewey:

◦ Dewey, John, 1859-1952: The School and Society

◦ https://www.education.gov.in/en/nation-education-policy

The Role of Technology in Modern Education

Mr. Nitish Kumar Singh
Assistant professor

The landscape of education is undergoing a revolutionary transformation, largely driven by the integration of technology. This article explores how technology is reshaping modern education, enhancing both teaching and learning experiences.

In the ever-evolving landscape of education, 'The Role of Technology in Modern Education' stands as a cornerstone of change and innovation. This comprehensive guide delves into how technology is redefining the parameters of learning and teaching. From virtual classrooms to AI-powered educational tools, technology is not just an add-on but a crucial component in modern education, reshaping the way students in the world and globally engage with knowledge. It offers a plethora of opportunities for interactive, personalized, and accessible learning. This article aims to provide students, particularly in India, with valuable insights and examples, equipping them to excel in article writing competitions and beyond.

Key points about technology in modern education: -

- **Increased Accessibility**: Technology has made education more accessible to learners of all ages and backgrounds, breaking down geographical and economic barriers.
- **Engaging Learning Tools**: Interactive and multimedia resources make learning more engaging and help students grasp complex concepts more effectively.
- **Personalized Learning**: Adaptive technology allows for tailored learning experiences, accommodating individual learning styles and paces.
- **Global Connectivity**: Technology enables students and educators to connect globally, facilitating collaboration, cultural exchange, and access to diverse perspectives.
- **Efficient Administration**: Digital tools streamline administrative tasks, from record-keeping to grading, freeing up educators' time for teaching.
- **Remote Learning**: The ability to learn from anywhere, especially during crises like the COVID-19 pandemic, ensures education continuity and flexibility.
- **Digital Literacy Skills**: Students acquire crucial digital literacy skills that are increasingly important in the modern job market.
- **Resource Accessibility**: Online libraries, open educational resources (OERs), and e-books make educational materials more accessible and affordable.
- **Real-World Application**: Simulations, virtual labs, and online internships offer practical, hands-on experience, preparing students for future careers.
- **Environmental Impact**: Technology in education can contribute to sustainability by reducing paper usage and promoting eco-friendly practices.
- **Continuous Innovation**: The ever-evolving nature of technology encourages educators to stay updated with the latest tools and methodologies, fostering a culture of lifelong learning.
- **Adaptive Assessments**: Technology allows for adaptive assessments, providing real-time feedback and helping educators tailor instruction to students' needs.

- **Individualized Feedback**: Automated grading and assessment tools offer immediate feedback to students, aiding in their self-improvement.
- **Customized Curricula**: Educators can create customized curricula and lesson plans to meet specific learning objectives.
- **Data Analytics**: Educational technology collects valuable data on student performance, enabling data-driven decision-making to improve teaching and learning outcomes.
- **Teacher Professional Development**: Technology supports ongoing teacher training and development, ensuring educators remain effective and up-to-date.
- **Hybrid and Blended Learning**: A combination of online and in-person instruction provides flexibility and accommodates diverse learning preferences.
- **Gamification**: Gamified learning platforms make education more enjoyable and motivate students to achieve their goals.
- **Parent-Teacher Communication**: Technology facilitates communication between parents and teachers, keeping them informed about students' progress and challenges.
- **Life-Long Learning**: Technology encourages a culture of continuous learning beyond formal education, promoting self-improvement and skill development.
- **Virtual Classrooms:** Technology has made learning accessible beyond physical boundaries. Virtual classrooms enable students to attend lectures, participate in discussions, and access resources online, breaking geographical barriers.
- **Interactive Learning Tools:** Interactive whiteboards, educational software, and online quizzes have replaced traditional teaching tools, making learning more engaging and interactive.

Personalized Learning Experiences: -

- **Adaptive Learning Technologies:** AI-powered platforms provide personalized learning experiences,
  adapting to individual student's pace and style, ensuring a more effective learning process.

- **Learning Management Systems (LMS):** These systems allow teachers to create, distribute, and manage educational content and resources, catering to diverse learning needs.
- **Online Collaboration Tools:** Platforms like Google Classroom and Microsoft Teams facilitate seamless collaboration among students and teachers, fostering teamwork and communication.
- **Educational social media:** Tools like Edmodo create social media-like environments focused on education, enabling students and educators to connect and share knowledge.
- **Digital Libraries and Databases:** These repositories provide students with access to a vast array of academic material, supporting research and self-paced

learning.

- **Teacher Training and Support:** Effective integration of technology in education requires ongoing training and support for educators to adapt and effectively utilize these tools.

Role of Techonology in Education these days:-

Educational technology streamlines teaching and learning processes, offers diverse instructional materials, and supports the development of digital literacy and critical thinking skills.

Modern technology has revolutionized education by enabling remote learning, fostering collaboration through online platforms, and providing real-time data for personalized educational strategies.

In conclusion, technology has become an indispensable tool in modern education. It enhances learning through interactive platforms, personalized content, and global connectivity. To craft an effective article on this topic, focus on highlighting its benefits, addressing potential challenges, and offering

practical tips for educators to harness technology's full potential in the classroom. Emphasize

adaptability and continuous innovation to keep pace with the ever-evolving educational landscape.

What are Somatic Mutations

Mr. Neel Kamal Niraj
Assistant professor

Introduction

Every human starts life as a single fertilised egg containing two copies of the human genome, one from each parent. As that cell divides to form the 37.2 trillion cells that make up the body, its DNA is copied again and again. Each time, small errors can be introduced.

These DNA changes that occur after fertilisation are called somatic mutations. They differ from germline mutations, which are DNA changes you inherit from your parents – these are present in sperm or egg cells and can be passed on to your children.

Unlike inherited germline mutations, somatic mutations:

- Cannot be passed on to children.
- Accumulate throughout life, so not all cells in your body are genetically identical.
- Occur in every tissue, from skin to liver to brain.

There are many kinds of somatic mutations. Some are single letter changes in DNA others are insertions, deletions or larger structural rearrangements of genetic code. There are also epigenetic changes – chemical tags such as DNA methylation – that alter gene activity without changing the sequence itself.

How do Somatic Mutations Arise?

There are two main sources of somatic mutations – endogenous (internal) and exogenous (external) exposures.

Endogenous Exposures

Cells naturally produce mutations during DNA replication or through normal metabolic activity. These endogenous processes run constantly and generate most of the mutations in our bodies. As we go through life, we are all subject to these processes, some of which are well understood, while the mechanisms underlying others remain unclear. Somatic mutations to some extent are present just because we are alive, so even if we were to avoid all exogenous exposures, a basic level of cancer would likely still exist in society just through endogenous mutational processes alone.

Exogenous Exposures

Environmental factors can damage DNA and increase mutation rates. Two well-known examples are:

- Ultraviolet (UV) light hits the skin and causes DNA damage that is converted into somatic mutations. The mutation rate and burden in the skin is much higher than in most other cell types of the body because of the relentless exposure to DNA-damaging UV. This results in an increased risk of skin cancers.
- Tobacco smoke contains at least 60 different chemicals that can cause mutations. These chemicals result in an elevated mutation rate and burden, mainly in the cells lining the bronchus of the lungs. But those mutagens can also circulate through the body and produce an elevated mutational load elsewhere, such as the bladder, and contribute to tumours at those sites.

Because each mutational process leaves a unique 'signature' – pattern of damage in the genome – scientists can now read the genome of a cell and work out what it has been exposed to. In the last 10 years, work at the Sanger Institute has uncovered over 100 different mutational

signatures, shedding light on the diverse processes that generate somatic mutations in our bodies.

How do Somatic Mutations Influence Disease?

Cancer

The role of somatic mutations is predominantly studied in relation to cancer. Although most mutations in a cancer cell are harmless 'passengers', a small number act as 'drivers', which give the cell an advantage to grow. Over decades, these drivers allow a rogue clone of cells to evolve into cancer.

Researchers including those at Sanger have harnessed genomic technologies to sequence tens of thousands of cancer genomes, revealing around 500 to 1,000 genes that can drive cancer when mutated. This knowledge underpins precision treatments and is reshaping our understanding of cancer risk.

Other diseases

Another area of research that is emerging – and a focus here at the Institute – is understanding how somatic mutations contribute to diseases other than cancer. This is both in the sense of it causing other diseases but also protecting cells from disease.

Why do Somatic Mutations matter?

Somatic mutations in a way are beautiful as they preserve the story of how our cells change and challenge the things we encounter throughout life. While some of these changes are harmless, others can have profound effects on our health. As genomic technologies have become faster and more affordable, researchers are now able to map somatic mutations across the entire body and across populations worldwide. This is revealing early driver mutations that can open the doors to better diagnosis and personalised treatments. These mutations also act as footprints of environmental exposures, h Beyond cancer, somatic mutations are emerging as new players in a range of other diseases – developmental, neurological and autoimmune – offering new diagnostic and therapeutic avenues. Alongside this, insights into somatic mutations can allow us to explore how we can harness our natural defence mechanisms to identify how to protect cells from different diseases. By studying how mutations accumulate over our lifetime, we can also gain deeper insight into tissue maintenance and ageing.

How do we Study Somatic Mutations?

For decades, efforts to study somatic mutations – especially in normal tissues – were limited by the constraints of available technologies. Methods such as whole-genome sequencing, targeted panels (sequencing of selected cancer-relevant genes) and single-cell sequencing transformed our understanding of somatic mutations in cancer cells, revealing driver mutations, clonal architectures (the makeup of distinct genetic cell populations) and the evolutionary trajectories of tumours. However, these powerful tools lacked the accuracy needed to reliably detect the rarest mutations, whether in cancerous or healthy tissues. To overcome this barrier, Inigo and his team recently developed Nano Sew – an ultra-accurate single-molecule sequencing method that pushes the boundaries of detection.[7] This newly-refined technology enables researchers to identify extremely rare somatic mutations with unprecedented precision across both cancerous and normal tissues.

What is the future of Somatic Mutation Research?

Over the next decade, research on somatic mutations in normal cells is expected to transform our understanding of disease and ageing, revealing how mutational landscapes change across the lifespan and in different conditions. Identifying genes that enable mutated cells to survive stress could provide new therapeutic targets across many diseases. Simultaneously, mapping

exogenous exposures that increase mutation rates could enable disease prevention, for example, by reducing cancer risk linked to environmental factors.

One area that is of particular interest at the Institute is the link between early onset colorectal cancer and the microbiome. By understanding where mutagenic chemicals produced by gut bacteria may drive mutations, we could open opportunities in the future to prevent disease by managing the microbiome.

In addition, Mike and Raheleh's groups are collaborating on their second Pan Body project. This work will analyse DNA changes that accumulate in cells across around 50 different tissue types, studying samples from people of different ages. By comparing tissues from many individuals, the researchers aim to reveal how mutation levels vary between tissues and cell types, and to understand the biological processes driving these changes. They will do this by examining distinctive mutational signatures left behind by different DNA-damaging processes. Building directly on a previous collaborative study published a few years ago, this project aims to greatly expand our understanding of how DNA changes build up in the human body over a lifetime and how they contribute to disease risk.

Despite the huge progress in somatic mutation research, many questions remain. What biological processes cause the most common mutations? Why do some mutated clones become cancerous while others do not? And can the natural processes happening in our tissues every day be used to improve human health?

What is clear is that somatic mutations are far more than genetic errors: they are the stories our cells write as we live our lives.

References

1. Martincorena I, Roshan A, Gerstung M, *et al*. High burden and pervasive positive selection of somatic mutations in normal human skin. *Science*. 2015; **348:** 880–886. doi: 10.1126/science.aaa6806
2. Martincorena I, Fowler JC, Wabik A, *et al*. Somatic mutant clones colonize the human esophagus with age. *Science*. 2018; **362:** 911–917. doi: 10.1126/science.aau3879
3. Ng SW, Rouhani FJ, Brunner SF, *et al*. Convergent somatic mutations in metabolism genes in chronic liver disease. *Nature*. 2021; **598:** 473–478. doi: 10.1038/s41586-021-03974-6

आधुनिकता के दौर में नारीः प्रकृति से प्रगति तक की यात्रा

श्रीमति अपर्णा कुमारी,
सहायक प्रध्यापिका

सारांश
विश्व में ऐसा कोई समाज नहीं जो आधुनिक (Modern) बनने का प्रयास न कर रहे है। मनोविज्ञान एवं अन्य समाजिक विज्ञानों में भी आधुनिकरण की अवधारणा पिछले कुछ दशकों में बढ़ी है। दिन–प्रतिदिन आधुनिकता की दौर व बदलती सांस्कृतिक परंपराओं में आधुनिक नारी की भूमिका दोहरी है। वो एक ओर पुरानी रूढ़ियों को चुनौती देकर शिक्षा, कैरियर, राजनीति और आर्थिक गतिविधियों में आगे बढ़ रही है, आत्मनिर्भर बन अपनी पहचान बना रही है। दूसरी ओर घर–परिवार और संस्कृति के संरक्षण में भी भूमिका निभा रही है। लेकिन आधुनिक नारी को इन दोनों में समायोजन बनाने के साथ अपनी जिम्मेदारियों और पितृसत्तात्मक दबाबों का सामना करना पड़ता है। इन सबों में समायोजन करते हुए नारी हर क्षेत्रों में पुरूषों से कदम से कदम मिला कर आगे बढ़ने में सहायक सिद्ध हो रही है। आधुनिकता की दौर में निःसंदेह नारियों की योगदान को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है। घर, समाज, राष्ट्र के विकास में आधुनिक नारी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।आधुनिक युग की महिलाएँ एक जटिल परिवर्त्तन को स्वीकार कर समाज व देश को आगे बढ़ाने में कदम से कदम मिलाकर साथ दे रही है।

''नारी निन्दा मत करे, नारी नर की खान।
नारी से नर होत है, ध्रुव–प्रल्हाद समान।।

मुख्य शब्द– आधुनिकता, तर्कसंगत, सर्वागिंण विकास, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, अतिवादी धारण, कार्यक्षेत्र चरित्र–निर्माण, सभ्यता–संस्कृति

प्रस्तावना– वर्त्तमान समय में आधुनिक बनने की शौक हर किसी को है। मनुष्य अपने–आप को जरूरत व आवश्यकता के अनुसार बदल रहे है। आधुनिकता (Modernity) ऐसी प्रक्रिया जो पारंपरिक सोच से हटकर तर्क, विधान, इच्छा व प्रगति पर आधारित व्यवस्था को अपनाती है।

वर्त्तमान समय में सबसे अधिक प्रचलित शब्द आधुनिक है। इसका अंग्रेजी शब्द 'मार्डन' है। जिसकी व्युत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्दो से हुई। शब्दकोष के अनुसार इसका अर्थ है– 'वर्त्तमान या हाल में घटित'। आधुनिक समाज को केन्द्र मे रखते हुए विभिन्न विद्वानों को कहना इस प्रकार है–

पीटर बर्जर के अनुसार– ''आधुनिक समाज के लोग व्यक्तिगत स्वतंत्रता की कुछ ऐसी गारंटी करता है कि इस समाज में जीने वाले लोगो से अपने आप को अलग व श्रेष्ठ समझने का भूल कर बैठता है।''

शील्स के अनुसार– ''आधुनिक होने का अर्थ 'एडवांस होना' है।

आधुनिकरण ने हमें अधिक व्यक्तिगत, तर्क संगत और वैधानिक बनाया है।

नारी का सम्मान करना एवं उनके हितो की रक्षा करना हमारे देश की सदियों पुरानी संस्कृति है। कहा जा सकता है कि एक और नारी को हमारे देश की ये विडम्बना ही 'शक्ति' के रूप में जानी जाती है, तो दूसरी और उसे 'बेचारी अबला' भी कहा है गया है। इन दो अतिवादी धरणाओं ने नारी के स्वतंत्र विकास को बाधा पहुँचायी है। मैथली शरणगुप्त जो दो पक्तियों को समझेंगे–

''अवला जीवन हाय तुम्हारी यही, कहानी, आँचल में दूध और आँखो में पानी।'' यही इस अवधारणा को गलत सिद्ध करती हुई समाज को नई दिशा देने में आगे है। आधुनिक नारी अवलापन की अवधारणा को छोड़कर बहुत आगे निकल चूंकि है। हम कैफी आजमी जी के कुछ पंक्तियों को देखेगे–

''क्यो त्याग करे नारी केवल,

क्यों नर दिखलाये झूठा बल,

नरी जब जिद पर आ जाए,

अबला से चण्डी बन जाए।''

ऋगवैदिक काल से लेकर वर्त्तमान काल तक अच्छी स्थिति नहीं रही है। ऋगवैदिक काल में महिलाएँ सभा व विदिग्ध में भाग तो लेती थी लेकिन उत्तर–वैदिक काल आते–आते उसे शूद्रों की कोटि में रखा गया। नारियों के लिए ना तो यधोपवीत उपनयन संस्कार की अनुमति थी और ना ही वेदों की अध्ययन की।

आधुनिकता की दौर में नारी अब क्षेत्रों में कदम से कदम मिलाकर साथ दे रही है। जिस वजह से तेजी से समाजिक परिवर्त्तन देखने को मिल रहा है।

आधुनिक नारियों में कल्पना चावला सानिया मिर्जा सोनियां गाँधी, द्रोपदी मूर्मू सभी प्रगति के पथ पर एक उदाहरण बन गयी है। वर्त्तमान समय में महिलाएँ हर क्षेत्रों आगे बढ़ रही है।

कुछ प्रतिभाशाली महिलायें व उनके कार्यक्षेत्र

(i) साहित्य के क्षेत्र महिलाएँ–

भारत से– महादेव वर्मा, अमृता, प्रीतम, अरूधन्ती राय
बिहार से– अनामिका (हिन्दी)
शकीला अख्तर (उर्दू)

लिमका बुक ऑफ रिकॉर्डस में नाम दर्ज कराने वाली ममता मेहरोत्रा है। जिनकी प्रसिद्ध नाट्य रचना 'महाभारत की माधवी' है।

(ii) गणित के क्षेत्रों में महिलाएँ–

शकुंतला देवी 'मानव कम्प्यूटर' के नाम से जाने जानी वाली ये एक ऐसी महिला थी जो जटिल से जटिल गणितीय गणना को कर लेती थी।

(iii) स्वस्थ समाज के निर्माण में नारी की भूमिका–

(a) 'नारी समाज की जननी है'– इस सृष्टि के सृजन में नारी का महत्वपूर्ण स्थान है। नारी के बिना समाज का कोई अस्तित्व नहीं है।

(b) 'नारी चरित्र निर्माती है।'– नारी सिर्फ मनुष्य को जन्म ही नहीं देती है। उसका पालन–पोषण, संस्कार, चरित्र–निर्माण, संस्कृति व सभ्यता की ज्ञान भी देती है। उसी के दिए गये संस्कारो पर ही चरित्र का निर्माण होता है।

(c) शिक्षा के क्षेत्रों में नारी–शिक्षा के क्षेत्रों में नारी अपना अग्रीणी योगदान देकर समाज को स्वस्थ व शिक्षित बना रही है।

(d) व्यवसायिक व आर्थिक क्षेत्रों में नारी–

वे समय कुछ और था जब नारी समाजिक कुप्रथाओं की बेड़ियों से जकड़ी हुई थी और समाज की सोच में पर्याप्त परिवर्त्तन हुआ है। आधुनिक नारी अपनी गरिमामयी प्रयासों से परिवार, समाज व देश को व्यवसायिक व आर्थिक दोनों पक्षों को समृद्ध करने के लिए कृतसंकल्प है।

''उड़ान भरने को तैयार है

हर बंधन से पड़े जिन्दगी अपनी शर्त पर स्वीकार है।

वो नारी है धरती का गौरव आभार है, अबला नहीं सबला है वो समझने की बस दरकार है।''

निष्कर्षः–

आधुनिक महिलाएँ परंपराओं को केवल निभा नहीं रही है। बल्कि उन्हे बदल भी रही है। वो 'घर की लक्ष्मी' से घर और बाहर की शक्ति' बन रही है। जिससे समाज में लैंगिक समानता व समावेशी विकास को बढ़ावा मिल रहा है। महिलाएँ अपनी पहचान व अपने को सशक्त बनाने के लिए संघर्ष कर रही है। तो दूसरी और संस्कृति, सभ्यता, व संस्कार को लेकर अपने को आगे बढ़ा रही है। आधुनिक महिलाएँ एक जटिल परिवर्त्तन को स्वीकार कर समाज व देश को आगे बढ़ाने में साथ दे रही है।

नारी समाज का आधा हिस्सा और समाज की उन्नति व अवनति का मानदंड है। नारी संस्कृति सभ्यता व साहित्य का महत्वपूर्ण अंग है। नारी पुरूषों की प्रेरणा है। (माँ के रूप में, पत्नि के रूप में, बहन के रूप में व दोस्त के रूप में)। अंत मे हर नारी अब स्वतंत्रता के साथ–साथ स्वावलंबन का भी पाठ पढ़ा है। उसने शिक्षा राजनीति, व्यवसाय आदि विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है।

संदर्भ–

NCERT (Class-11) History Chepter-7
'आधुनिता पर पुनर्विचार'– अजय तिवारी
दृष्टि IAS पत्रिका
उत्तरवैदिक काल NCERT (Class-11) History Chepter-7
सामाजिक विकल्प समाज विज्ञान शोध पत्रिका (2007–08)

सोशल मीडिया का छात्रों के जीवन पर प्रभाव

श्रीमति किरण कुमारी
सहायक प्रध्यापिका

सारांश

इस शोध लेख में सोशल मीडिया के छात्रों के जीवन पर पड़ने वाले बहुआयामी प्रभावों का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। आधुनिक डिजिटल युग में फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर, व्हाट्सएप और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म्स छात्रों के जीवन का अभिन्न अंग बन चुके हैं। यह अध्ययन सोशल मीडिया के सकारात्मक पहलुओं जैसे शैक्षिक संसाधनों तक पहुंच, रचनात्मक अभिव्यक्ति, वैश्विक संपर्क और सामाजिक जागरूकता के साथ–साथ नकारात्मक प्रभावों जैसे अध्ययन में व्यवधान, मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं, शारीरिक स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव, साइबरबुलिंग और समय की बर्बादी की विस्तृत चर्चा करता है। लेख में सोशल मीडिया के संतुलित और जिम्मेदार उपयोग के लिए व्यावहारिक सुझाव, समय प्रबंधन की रणनीतियां, डिजिटल साक्षरता की आवश्यकता और माता–पिता तथा शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका पर भी प्रकाश डाला गया है। यह अध्ययन छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों और नीति निर्माताओं के लिए उपयोगी मार्गदर्शन प्रदान करता है।

मुख्य शब्दः सोशल मीडिया, मानसिक स्वास्थ्य, डिजिटल साक्षरता, साइबरबुलिंग, ऑनलाइन सुरक्षा, इंटरनेट व्यसन, शैक्षिक प्रौद्योगिकी, डिजिटल नागरिकता, मीडिया साक्षरता, रचनात्मक अभिव्यक्ति।

1. प्रस्तावना :

डिजिटल तकनीक के तीव्र विकास ने सोशल मीडिया को दैनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बना दिया है, जिसका प्रभाव विशेष रूप से छात्रों पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप, यूट्यूब जैसे मंचों ने न केवल संवाद की शैली बदली है, बल्कि सीखने और जानकारी प्राप्त करने के तरीकों को भी नया स्वरूप दिया है। इंटरनेट और स्मार्टफोन की आसान उपलब्धता के कारण आज छात्र बड़ी संख्या में अपना समय इन प्लेटफॉर्म्स पर व्यतीत कर रहे हैं। सोशल मीडिया एक ऐसी आभासी दुनिया का निर्माण करता है जहाँ विचारों, अनुभवों और भावनाओं का त्वरित आदान–प्रदान संभव है। यह वैश्विक संपर्क का सशक्त माध्यम है, परंतु इसके साथ कई नई चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं, जिन्हें समझना और पहचानना आवश्यक हो गया है।

छात्रों के जीवन पर सोशल मीडिया का प्रभाव एकतरफा न होकर बहुपक्षीय है। जहाँ एक ओर यह शैक्षिक संसाधनों, रचनात्मक अभिव्यक्ति और प्रतिभा प्रदर्शन के नए अवसर प्रदान करता है, वहीं दूसरी ओर इसका अत्यधिक उपयोग समय प्रबंधन की समस्या, एकाग्रता में कमी और मानसिक दबाव का कारण बन सकता है। यही कारण है कि शैक्षणिक जगत में इसके प्रभाव को लेकर लगातार विमर्श हो रहा है। सोशल मीडिया छात्रों के व्यक्तित्व, सामाजिक संबंधों और सोचने की प्रक्रिया को प्रभावित करता है, इसलिए इसे समझदारी और संतुलन के साथ अपनाना आवश्यक है। इस विषय पर वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण अपनाकर ही इसके सकारात्मक पक्षों को सुदृढ़ और नकारात्मक प्रभावों को सीमित किया जा सकता है, ताकि यह छात्रों के सर्वांगीण विकास में सहायक बन सके।

2. सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभाव

- **शिक्षा और ज्ञान का विस्तार :**
  सोशल मीडिया ने शिक्षा को पारंपरिक कक्षाओं की सीमाओं से बाहर निकाल दिया है। आज छात्र विभिन्न डिजिटल मंचों पर उपलब्ध व्याख्यान, शैक्षिक वीडियो और अध्ययन सामग्री के माध्यम से कठिन विषयों को सरल रूप में समझ सकते हैं। ऑनलाइन समूहों के जरिए सहपाठियों और शिक्षकों के साथ निरंतर संवाद बना रहता है, जिससे विचारों का आदान–प्रदान और सहयोगात्मक अध्ययन संभव होता है। इसके अतिरिक्त, करियर से जुड़े मंच छात्रों को विशेषज्ञों से जुड़ने और भविष्य की दिशा तय करने में सहायक होते हैं।
- **रचनात्मकता और अभिव्यक्ति का माध्यम :**
  सोशल मीडिया छात्रों को अपनी प्रतिभा को पहचानने और प्रस्तुत करने का खुला अवसर देता है। लेखन, चित्रकला, संगीत, फोटोग्राफी या वीडियो निर्माण जैसे क्षेत्रों में छात्र अपनी रचनाओं को साझा कर आत्मविश्वास प्राप्त करते हैं। नियमित अभिव्यक्ति से उनकी कल्पनाशक्ति और संप्रेषण कौशल विकसित होते हैं, जिससे वे अपनी पहचान और सोच को स्पष्ट रूप से सामने रख पाते हैं।
- **सामाजिक जागरूकता और सक्रियता :**
  सोशल मीडिया सामाजिक मुद्दों पर जानकारी फैलाने और चर्चा को बढ़ावा देने का सशक्त माध्यम बन गया है। छात्र विभिन्न सामाजिक, पर्यावरणीय और शैक्षणिक विषयों पर विचार साझा कर जागरूकता उत्पन्न करते हैं। इस प्रक्रिया

में उनमें समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है और वे सकारात्मक परिवर्तन के लिए सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित होते हैं।

- **वैश्विक संपर्क और सांस्कृतिक आदान–प्रदान :**
  डिजिटल मंचों ने छात्रों को विश्व के विभिन्न हिस्सों से जोड़ दिया है। वे अलग–अलग संस्कृतियों, परंपराओं और जीवन–शैलियों से परिचित होते हैं, जिससे उनकी सोच व्यापक बनती है। विदेशी छात्रों और अंतरराष्ट्रीय समुदायों से संवाद के माध्यम से भाषा कौशल में सुधार होता है और वैश्विक दृष्टिकोण विकसित होता है।
- **सूचना तक त्वरित पहुंच :**
  सोशल मीडिया के कारण जानकारी प्राप्त करने की गति बहुत तेज हो गई है। शैक्षणिक सूचनाएँ, प्रतियोगी परीक्षाओं के अपडेट, छात्रवृत्ति और रोजगार से संबंधित समाचार तुरंत उपलब्ध हो जाते हैं। इससे छात्र समय पर निर्णय ले पाते हैं और अवसरों का बेहतर उपयोग कर सकते हैं।

3. सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव

- **अध्ययन में व्यवधान और समय की बर्बादी :**
  सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग छात्रों की एकाग्रता को गंभीर रूप से प्रभावित करता है। पढ़ाई के दौरान बार–बार नोटिफिकेशन देखना ध्यान भंग करता है और सीखने की निरंतरता टूट जाती है। धीरे–धीरे यह आदत समय की बर्बादी में बदल जाती है, जिससे अध्ययन, खेल और आत्मविकास से जुड़े कार्यों के लिए उपलब्ध समय कम हो जाता है।
- **मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव :**
  सोशल मीडिया पर दिखाई देने वाली कृत्रिम सफलता और सुखद जीवन की तस्वीरें छात्रों में तुलना की भावना पैदा करती हैं। इससे आत्मसम्मान में कमी, चिंता और निराशा उत्पन्न हो सकती है। इसके साथ ही ऑनलाइन आलोचना, ट्रोलिंग और साइबर बुलिंग छात्रों के मन पर नकारात्मक प्रभाव डालती है और भावनात्मक संतुलन को बिगाड़ सकती है।
- **शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रभाव :**
  लंबे समय तक स्क्रीन के सामने रहने से आँखों में जलन, सिरदर्द और थकान जैसी समस्याएँ आम हो गई हैं। देर रात तक मोबाइल उपयोग करने से नींद की गुणवत्ता प्रभावित होती है। शारीरिक गतिविधियों में कमी के कारण मोटापा और अन्य स्वास्थ्य जोखिम भी बढ़ने लगते हैं।
- **गोपनीयता और सुरक्षा के मुद्दे :**
  सोशल मीडिया पर व्यक्तिगत जानकारी साझा करना कई बार छात्रों को जोखिम में डाल देता है। प्रोफाइल की गलत सेटिंग्स और जागरूकता की कमी से डेटा का दुरुपयोग, धोखाधड़ी और पहचान चोरी जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। यह डिजिटल सुरक्षा के प्रति सतर्क रहने की आवश्यकता को दर्शाता है।
- **सामाजिक कौशल में कमी :**
  ऑनलाइन संवाद की अधिकता के कारण वास्तविक जीवन में बातचीत और संबंध निर्माण की क्षमता कमजोर हो सकती है। छात्र आमने–सामने संवाद से बचने लगते हैं, जिससे पारिवारिक और सामाजिक संबंधों में दूरी बढ़ती है और अकेलेपन की भावना विकसित होती है।
- **भ्रामक सूचना और फेक न्यूज :**
  सोशल मीडिया पर असत्य और अधूरी जानकारी तेजी से फैलती है। यदि छात्र बिना जांच–पड़ताल के ऐसी सूचनाओं को स्वीकार कर लेते हैं, तो उनकी सोच और निर्णय क्षमता प्रभावित हो सकती है। आलोचनात्मक दृष्टिकोण का अभाव उन्हें गलत धारणाओं की ओर ले जा सकता है।
- **शैक्षणिक अखंडता का उल्लंघन :**
  सोशल मीडिया के माध्यम से नकल और अनुचित सामग्री साझा करना आसान हो गया है। इससे छात्रों में परिश्रम और मौलिक सोच की प्रवृत्ति कमजोर होती है। ऐसी आदतें शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य को नुकसान पहुँचाती हैं और शैक्षणिक ईमानदारी को चुनौती देती हैं।

4. संतुलन और जिम्मेदार उपयोग

- **समय प्रबंधन :**
  छात्रों को सोशल मीडिया के उपयोग के लिए स्पष्ट समय सीमा निर्धारित करनी चाहिए, ताकि पढ़ाई और दैनिक कार्य प्रभावित न हों। एक सुव्यवस्थित समय–सारणी अपनाने से प्राथमिकताएँ स्पष्ट होती हैं और अनावश्यक स्क्रीन समय कम होता है।

- **अध्ययन के समय संयम :**
  पढ़ाई करते समय मोबाइल फोन को दूर रखना या नोटिफिकेशन बंद करना एकाग्रता बनाए रखने में सहायक होता है। इससे विषयवस्तु को गहराई से समझने और स्मरण शक्ति बढ़ाने में मदद मिलती है।
- **डिजिटल डिटॉक्स :**
  नियमित अंतराल पर सोशल मीडिया से विराम लेना मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है। यह छात्रों को वास्तविक जीवन के अनुभवों, पारिवारिक संवाद और आत्मविकास के लिए समय देता है।
- **गोपनीयता और सुरक्षा :**
  ऑनलाइन प्रोफाइल की सुरक्षा के लिए गोपनीयता सेटिंग्स का सही उपयोग आवश्यक है। व्यक्तिगत जानकारी सीमित रखने और मजबूत पासवर्ड अपनाने से डिजिटल जोखिम कम होते हैं।
- **आलोचनात्मक सोच का विकास :**
  छात्रों को किसी भी सूचना को स्वीकार करने से पहले उसकी विश्वसनीयता परखनी चाहिए। यह आदत उन्हें भ्रामक सूचनाओं और गलत प्रभावों से बचाती है।
- **सकारात्मक सामग्री का चयन :**
  प्रेरक, शैक्षणिक और रचनात्मक सामग्री का अनुसरण करने से सोशल मीडिया उपयोग अधिक उपयोगी और उद्देश्यपूर्ण बनता है।
- **माता–पिता और शिक्षकों का मार्गदर्शन :**
  अभिभावक और शिक्षक उदाहरण प्रस्तुत कर तथा संवाद के माध्यम से छात्रों में जिम्मेदार डिजिटल आदतों का विकास कर सकते हैं, जिससे सोशल मीडिया संतुलित रूप में जीवन का हिस्सा बने।

5. माता–पिता की भूमिका और जिम्मेदारियां

- **खुला संवाद और विश्वास निर्माण :**
  माता–पिता और बच्चों के बीच खुला और सकारात्मक संवाद होना अत्यंत आवश्यक है। यदि माता–पिता केवल रोक–टोक या डांट का सहारा लेते हैं, तो बच्चे अपनी ऑनलाइन गतिविधियों को छिपाने लगते हैं। इसके बजाय, उन्हें बच्चों की डिजिटल दुनिया को समझने का प्रयास करना चाहिए और उनके अनुभवों में रुचि दिखानी चाहिए। सोशल मीडिया के लाभ और संभावित जोखिमों पर शांत और संतुलित चर्चा बच्चों में समझ और जिम्मेदारी की भावना विकसित करती है।
- **सक्रिय निगरानी और मार्गदर्शन :**
  माता–पिता को बच्चों की ऑनलाइन गतिविधियों पर नजर रखनी चाहिए, लेकिन इस तरह कि विश्वास बना रहे। उम्र के अनुसार नियम तय करना, जैसे स्क्रीन समय की सीमा या सोने से पहले मोबाइल का उपयोग न करना, अनुशासन में सहायक होता है। साथ ही, स्वयं स्वस्थ डिजिटल आदतों का पालन करना बच्चों के लिए प्रभावी उदाहरण प्रस्तुत करता है।
- **वैकल्पिक गतिविधियों को प्रोत्साहन :**
  सोशल मीडिया के प्रभाव को संतुलित करने के लिए बच्चों को खेल, कला, संगीत, पढ़ाई और पारिवारिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित करना चाहिए। परिवार के साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताने से भावनात्मक जुड़ाव मजबूत होता है और डिजिटल निर्भरता कम होती है। रचनात्मक कौशलों को बढ़ावा देना बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक होता है।
- **मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान :**
  माता–पिता को बच्चों की भावनात्मक स्थिति के प्रति संवेदनशील रहना चाहिए। यदि बच्चा तनावग्रस्त या उदास दिखाई दे, तो इसका कारण समझने का प्रयास करना चाहिए। आत्मसम्मान और आत्मविश्वास को बढ़ावा देकर बच्चों को यह समझाना आवश्यक है कि सोशल मीडिया पर दिखाई देने वाली दुनिया हमेशा वास्तविक नहीं होती। एक सुरक्षित और सहयोगी वातावरण बच्चों को अपनी समस्याएँ साझा करने का साहस देता है।

6. शिक्षकों की भूमिका और जिम्मेदारियां

- **डिजिटल साक्षरता की शिक्षा :**
  शिक्षकों को छात्रों को डिजिटल और मीडिया साक्षरता सिखानी चाहिए। उन्हें सूचना की विश्वसनीयता जांचना, स्रोत की प्रामाणिकता और लेखक की विश्वसनीयता पर ध्यान देना सिखाया जाना चाहिए। फेक न्यूज और ऑनलाइन धोखाधड़ी की पहचान करना आवश्यक है। साइबर सुरक्षा और साइबरबुलिंग के उपायों के प्रति जागरूक करना भी शामिल है।

- **सोशल मीडिया का शिक्षण उपकरण के रूप में उपयोग :**
  शिक्षक सोशल मीडिया को शैक्षिक सामग्री साझा करने और चर्चा मंच बनाने के लिए उपयोग कर सकते हैं। यूट्यूब और अन्य प्लेटफॉर्म पर शैक्षिक वीडियो अपलोड कर जटिल विषय समझाए जा सकते हैं। छात्र सोशल मीडिया पर शैक्षिक परियोजनाओं के लिए प्रोत्साहित किए जा सकते हैं। सुरक्षा और गोपनीयता का ध्यान रखना अनिवार्य है।
- **स्वस्थ ऑनलाइन व्यवहार का मॉडलिंग :**
  शिक्षकों को स्वयं जिम्मेदार और पेशेवर डिजिटल व्यवहार दिखाना चाहिए। छात्र अपने शिक्षकों को रोल मॉडल मानते हैं। ऑनलाइन संवाद में शालीनता, सम्मान और नैतिकता बनाए रखना जरूरी है। डिजिटल नागरिकता और जिम्मेदार ऑनलाइन आचार का प्रचार करना चाहिए।
- **समस्याओं की पहचान और हस्तक्षेप :**
  शिक्षकों को सोशल मीडिया से जुड़ी समस्याओं के संकेत पहचानने चाहिए। जैसे कि अलगाव, शैक्षणिक प्रदर्शन में गिरावट या तनाव। जरूरत पड़ने पर माता–पिता और काउंसलर से सहयोग करना चाहिए। स्कूल में साइबरबुलिंग और डिजिटल सुरक्षा नीतियों के बारे में जागरूक करना जरूरी है।
- **पाठ्यक्रम में एकीकरण :**
  डिजिटल साक्षरता को अपने विषयों में शामिल करना चाहिए। छात्रों को ब्लॉग, वीडियो और सामाजिक अभियान के माध्यम से रचनात्मकता और संचार कौशल सिखाया जा सकता है। इससे सहयोग और आलोचनात्मक सोच का विकास होता है। मूल्यांकन में सामग्री की गुणवत्ता और स्रोत का सही उद्धरण शामिल होना चाहिए।
- **संयुक्त प्रयास और सहयोग :**
  माता–पिता और शिक्षकों के बीच नियमित संवाद और सहयोग जरूरी है। कार्यशालाओं और बैठकों में छात्रों के डिजिटल व्यवहार पर चर्चा करनी चाहिए। घर, स्कूल और समुदाय को जोड़कर समग्र दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। इससे छात्र सोशल मीडिया का सुरक्षित और संतुलित उपयोग कर सकते हैं।

7. निष्कर्ष :

सोशल मीडिया आधुनिक युग का एक प्रभावशाली माध्यम है, जिसने छात्रों के जीवन को अनेक रूपों में प्रभावित किया है। यह ज्ञानार्जन, रचनात्मक अभिव्यक्ति और वैश्विक संपर्क के नए अवसर प्रदान करता है, वहीं दूसरी ओर इसका अनियंत्रित उपयोग समय की हानि, मानसिक दबाव और अध्ययन में बाधा का कारण भी बन सकता है। इसलिए सोशल मीडिया को न तो पूर्णतः लाभकारी और न ही पूरी तरह हानिकारक माना जा सकता है। इसका वास्तविक प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि छात्र इसे कितनी समझदारी, उद्देश्य और संयम के साथ अपनाते हैं। संतुलित दृष्टिकोण अपनाकर ही इसके सकारात्मक पक्षों को सशक्त किया जा सकता है और नकारात्मक प्रभावों को सीमित किया जा सकता है।

इस संदर्भ में छात्रों के साथ–साथ अभिभावकों और शिक्षकों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। छात्रों को समय प्रबंधन, आलोचनात्मक सोच और डिजिटल अनुशासन के महत्व को समझना चाहिए, ताकि वे सोशल मीडिया को अपने विकास का साधन बना सकें, न कि बाधा। साथ ही, मार्गदर्शन और संवाद के माध्यम से उन्हें सुरक्षित और रचनात्मक डिजिटल व्यवहार की ओर प्रेरित किया जाना चाहिए। अंततः यह स्मरण रखना आवश्यक है कि सोशल मीडिया जीवन को बेहतर बनाने का एक उपकरण है, जीवन का लक्ष्य नहीं। जब इसका उपयोग विवेक और संतुलन के साथ किया जाता है, तभी यह छात्रों के भविष्य को सकारात्मक दिशा देने में सहायक सिद्ध होता है।

संदर्भ सूची :

अग्रवाल, आर. (2019). शिक्षा में डिजिटल माध्यमों की भूमिका. नई दिल्लीः काव्या प्रकाशन.
शर्मा, एस. के. (2020). सोशल मीडिया और युवाओं का मानसिक स्वास्थ्य. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 12(2), 45–52.
वर्मा, पी. (2018). छात्र जीवन पर इंटरनेट का प्रभाव. दिल्लीः राधा पब्लिकेशन.
सिंह, आर. (2021). सामाजिक नेटवर्किंग साइट्स का शैक्षिक प्रदर्शन पर प्रभाव. शिक्षा विमर्श, 9(1), 33–40.
यादव, के. (2017). मीडिया और समाज. लखनऊः नवचेतना प्रकाशन.
मिश्रा, ए. (2020). सोशल मीडियाः अवसर और चुनौतियाँ. समाज अध्ययन, 14(3), 55–61.
पांडेय, डी. (2019). डिजिटल युग में विद्यार्थी. वाराणसीः ज्ञान गंगा प्रकाशन.
तिवारी, आर. (2022). छात्रों में सोशल मीडिया की लत और उसका प्रभाव. भारतीय मनोविज्ञान जर्नल, 10(1), 25–32.
चौधरी, एम. (2018). संचार माध्यम और युवा पीढ़ी. जयपुरः प्रगति प्रकाशन.
गुप्ता, एन. (2021). सोशल मीडिया का सामाजिक व्यवहार पर प्रभाव. समकालीन शोध, 8(2), 41–48.

शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षा का पाठ्यक्रम तथा शिक्षण विधि के विशेष सन्दर्भ में डॉ0 ज़ाकिर हुसैन के शैक्षिक विचारों का एक अवलोकन

श्री मृत्युंजय सिंह
सहायक प्राध्यापक

सारांश

डॉक्टर जाकिर हुसैन ने आधुनिक शिक्षा के प्रचार व प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जिस हेतु उन्होंने कई महत्वपूर्ण कार्य किये। उनके शैक्षिक विचारको द्वारा लिखे गए प्रमाणों तथा उनके स्वयं के द्वारा रचित पुस्तकों तथा नई तालीम के संदर्भ में किए गए कार्यों से मिलता है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र के माध्यम से शोधकर्ता द्वारा विभिन्न स्रोतों से डॉक्टर जाकिर हुसैन के संदर्भ में जानकारी एकत्रित करते हुए उनके द्वारा प्रतिपादित शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षा का पाठ्यक्रम तथा शिक्षण विधियों का संकलन करते हुए उनके उनके वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था में प्रासंगिकता को सिद्ध करने का प्रयास किया गया है।

प्रमुख भाब्दावली– शैक्षिक उद्देश्य, पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधि आदि।

भूमिका

डॉ0 ज़ाकिर हुसैन भारत के बौद्धिक क्षितिज पर **'उच्च कलम कौशल के धनी'** लेखक, शिक्षक, उपदेशक, विचारक, एवं दार्शनिक थे। उनका मानना था कि शिक्षा अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाली एक आन्दोलन की प्रक्रिया है। डॉ0 ज़ाकिर हुसैन ने अप्रासंगिक, अमानवीय, दुराववादी शिक्षा का विरोध किया। उनका कहना था कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो उत्कृष्टता को बढ़ावा दे। उस समय की शिक्षा व्यवस्था को वे पसंद नहीं करते थे, उसमें एक सिरे से परिवर्तन चाहते थे। डॉ0 ज़ाकिर हुसैन के अनुसार शिक्षा का कार्य व्यक्ति का समाजीकरण करना ही चाहिए, ताकि सांस्कृतिक धरोहर को एक विशाल जनमानस तक पहुँचाया जा सके। उन्होंने सांस्कृतिक वस्तुओं को मानसिक विकास में सहायक माना है। ये सांस्कृतिक तत्व व्यक्ति के दिमाग में आन्तरिक ऊर्जा पैदा करते हैं। यह ऊर्जा, चिन्तनशील मस्तिष्क, व्यावहारिक दिमाग, सौन्दर्यवादी दिमाग, परोपकारी सोच इत्यादि के रूप में प्रस्फुटित होता है। हमें शिक्षा ही वह विचार देती है कि कौन सा सांस्कृतिक विरासत हमारे प्रगति में बाधक है और कौन उन्नति में सहायक है।

डॉ0 ज़ाकिर हुसैन साहब ने अपने कार्य का प्रयोगशाला जामिया को बनाया तथा उसे 'एक्टिविटी स्कूल' (गतिविधि विद्यालय) का रूप दिया। इस प्रयोगशाला की फसल इस्लामी मस्तिष्क में देखा जा सकता है। डॉ0 ज़ाकिर हुसैन ने राष्ट्रीय जीवन में शिक्षा के उपयोग की समीक्षा करते हुए कहा है कि –''वस्तुतः शिक्षा ही हमारे लोकतंत्र की आत्मा है। कोई भी राष्ट्र जो हमारी तरह प्राचीन भी है और आधुनिक भी है। शिक्षा को ही अपने जीवन की विशिष्ट रचनात्मक शक्ति मान सकता है, क्योंकि शिक्षा हमारी महान विरासत पर आलोचनात्मक दृष्टि डाल सकती है और यह पहचान सकती है कि इस विरासत का कौन सा हिस्सा प्रगति के मार्ग में हमारा साधक होगा और कौन सा बाधक अर्थात् किसे हमें सुरक्षित रखना है और किसकी उपेक्षा करनी है। यह शिक्षा ही है जो हमें उस भविष्य की एक झलक दिखा सकती है जिसके निर्माण के लिए हम प्रयत्नशील हैं, और हममें उसके निर्माण के लिए मानसिक और नैतिक शक्ति उत्पन्न कर सकती है।''

डॉ0 ज़ाकिर हुसैन के अनुसार "वस्तुओं एवं जीवन के रहस्यों को जानने का प्रयत्न करना ही शिक्षा है। जीवन भगवान का उपहार है, परन्तु बेहतर जीवन बुद्धि से प्राप्त की जा सकती है और बुद्धि ज्ञान व कौशल से आता है। ज्ञान व कौशल शिक्षा का ही दूसरा रूप है।" डॉ0 ज़ाकिर हुसैन साहब का कथनहै कि 'शिक्षा, मन, आत्मा, शरीर का प्रशिक्षण है। यह प्रशिक्षण आचार, विचार, कर्म, एवं व्यवहार को प्रभावित करता है। शिष्टाचार, विवेक, संस्कृति, सभी को समग्र रूप से जानने का प्रयास ही शिक्षा कहलाता है। इसे मात्र जानना ही अपूर्ण है, अपितु उसे समझना और इसमें नये अर्थ खोजना ही शिक्षा है।

डॉ0 ज़ाकिर हुसैन साहब ने शिक्षा के बारे में कहा कि ''शिक्षा बालक की मानसिक एवं शारीरिक शक्तियों का विकास है ताकि उसमें वाह्य जगत से सामंजस्य करने की क्षमता उत्पन्न हो जाय।''[1] जिस प्रकार से गाँधी जी ने शिक्षा के साध्य

1. कादरी, ए0 डब्ल्यू सलामतुल्लाह (1999), जाकिर हुसैन आन एजूकेशन नेशनल काउंसिल फार टीयर एजुकेशन, नई दिल्ली, पृ0 10।

एवं साधन, दोनों पहलुओं को महत्व दिया है उसी प्रकार से डॉ0 ज़ाकिर हुसैन ने भी साध्य एवं साधन दोनों पर बल दिया है। वे अपने भाषणों में कहते थे कि शिक्षा यदि एक साधन है तो उसे व्यवस्थित रूप से चलना चाहिए तथा उसके द्वारा चरित्रवान, न्यायोचित, पवित्रता एवं सांस्कृतिक समाज का निर्माण हो जो मानवीय मूल्यों से ओतप्रोत हो।

डॉ0 ज़ाकिर हुसैन का विचार था कि पाश्चात्य शिक्षा भौतिक संसाधनों पर जोर देती है जिसका उन्होंने विरोध किया इसके विपरीत वे मानते थे कि शिक्षा का अर्थ केवल भौतिक संसाधनों को इकट्ठा करने तक ही सीमित नहीं होना चाहिए अपितु शिक्षा अपने व्यापक अर्थ में आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक शक्तियों का विकास है और इन शक्तियों के विकास के लिए मस्तिष्क का पूर्ण विकास आवश्यक है।

डॉ0 ज़ाकिर हुसैन ने शिक्षा को एक निर्देशन की प्रक्रिया माना है जो कि व्यक्ति व समाज तर्क करने की क्षमता, नैतिकता एवं आध्यात्मिकता का विकास करती है। इस प्रक्रिया के फलस्वरूप कला एवं विज्ञान का प्रसार होता है। शिक्षा कुछ सार्थक हासिल करने के मनसूबे से की गयी एक उद्देश्यपूर्ण गतिविधि है, जिससे आदर्श एवं उच्च कोटि के मूल्यों की प्राप्ति होगी।

शिक्षा के उद्देश्य

डॉ0 ज़ाकिर हुसैन ने शिक्षा का उद्देश्य जो निर्धारित किया है यदि उसे वर्तमान शिक्षा प्रणाली में समावेशित करके उनके अनुरूप शिक्षण कार्य को धरती पर लाया जाय तो शिक्षा को जो मुख्य लक्ष्य बालक का चहुँमुँखी विकास करना है उसे द्रुत गति से प्राप्त किया जा सकता है। डॉ0 ज़ाकिर हुसैन की शिक्षा मन, शरीर और आत्मा को प्रशिक्षित करने के लिए थी इसलिए वे सिर, हाथ और हृदय को प्रशिक्षित करने की बात करते थे। उनका कहना था कि छात्रों में शिक्षा, नैतिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक क्षमता पेदा करें जिसका मूल्यांकन करते हुए उत्तम बातों को ग्राह्य करें और अनुपयोगी बातों से दूर रहे। अच्छे आदर्शों और मूल्यों की प्राप्ति के लिए ध्यान केन्द्रित करें, सामुदायिक जीवन तथा राष्ट्रीय एकता के लिए प्रयत्न करते रहें और सृजनात्मक कार्यों में रुचि लें। इन विचारों को कार्यरूप में परिणित करने के लिए निम्नलिखित शिक्षा के उद्देश्य बताये–

(1) आध्यात्मिक विकास– डॉ0 ज़ाकिर हुसैन का मानना था कि शिक्षा का यह कार्य है कि व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास करें। अच्छी शिक्षा कायह कार्य है कि मानवता का विकास करें, साथ ही साथ आध्यात्मिकता का पूर्ण विकास करें। पवित्र जीवन जीकर आध्यात्मिकता की प्राप्ति की जा सकती है। पवित्र जीवन से उनका आशय था ईश्वर या कुरान द्वारा सुझाये गये नियमों से है। उनका कहना था कि व्यक्ति भौतिक सुख के पीछे आध्यात्मिक समृद्धि को खो देता है।

(2) चरित्र का निर्माण– डॉ0 ज़ाकिर हुसैन के अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य चरित्र का निर्माण होना चाहिए। वे अपने भाषणों में कहते थे कि स्कूल को चरित्र निर्माण का साधन बनाना चाहिए। उनका मानना था कि हमारा चरित्र संकट में है क्योंकि हमारी कथनी और करनी, हमने जो उपदेश दिया और जो हमने अभ्यास किया उसके बीच काफी बड़ी खाईं थी। यह मात्र संकल्प शक्ति और प्रेरित, समर्पित और प्रतिबद्ध व्यक्तियों द्वारा ही संभव है। जिन्हें धैर्य, परिश्रम, दृढ़यता, निरंतर प्रयास और शिष्टता से प्राप्त किया जा सकता है।

डॉ0 ज़ाकिर हुसैन अपने भाषण में कहा था कि हमें उस दिन का इंतजार है जब हमारे शैक्षणिक संस्थान ''सहकारी प्रयास के आदर्शों'' को अपनाएंगे और ऐसे युवा पैदा करेंगे, जो शरीर से हृष्टपुष्ट, मन से स्वस्थ चिन्तन वाले, दृढ़ इच्छा शक्ति में प्रशिक्षित'' एक ठोस निर्णय, परिष्कृत भावनाएँ, ईमानदार, और स्पष्टवादी हों।'' वे इस बात से सहमत थे कि एक राष्ट्र को असीम ऊँचाइयों तक पहुँचाने के लिए चरित्र की शुद्धता होना आवश्यक शर्त है।

(3) सामाजिक दायित्वों का निर्वहन– डॉ0 ज़ाकिर हुसैन यह मानते थे कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बालक को सामाजिक दायित्वों को निर्वहन के योग्य बनाये। समाज व व्यक्ति दोनों को वे बराबर महत्व देते थे लेकिन व्यक्ति समाज में रहता है वसमाज के लिए जीता है। उनका मानना था कि व्यक्ति का बौद्धिक व सामाजिक विकास समाज में रहकर ही पूर्णता को प्राप्त करता है। उनका सामाजिक विकास से आशय छात्रों में दल भावना के विकास एवं एक दूसरे का सहयोग करने से था।समाज सेवा से

समाज का विकास तीव्रगति से होता है। जाकिर साहब का मानना था कि शिक्षा की प्रक्रिया व्यक्ति व समाज के पारस्परिक सम्बन्ध को तीव्र करता है।

(4) जीविकोपार्जन में सहायक– डॉ0 ज़ाकिर हुसैन के अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बालक को जीविका का राह दिखाये। अर्थात् व्यावसायिक शिक्षा पर बल दिया। उनके अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बालक को अपने पैरों पर खड़ा होने योग्य बनाये। पुस्तकीय ज्ञान का उन्होंने विरोध किया तथा बताया कि शिक्षा व्यावहारिक होनी चहिए। स्वावलम्बी शिक्षा का पुरजोर समर्थन किया तथा देश काल के अनुसार स्वावलम्बी शिक्षा को आवश्यक माना।

(5) देश भक्ति की भावना का विकास– डॉ0 ज़ाकिर हुसैन के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए कि बालक में राष्ट्र के प्रति प्रेम हो। वे राष्ट्र को समय स्थान और सीमाओं में बाँधने के विरोधी थे। जाकिर साहब शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना लाना चाहते थे ताकि ऐसे समाज का विकास हो सके जो दृष्टिकोण में उदार, चरित्र में धर्मनिरपेक्ष तथा सहिष्णु व कार्यप्रणाली में लोकतांत्रिक हो। वे शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति में आदर्श नागरिक के भाव का विकास करना चाहते थे। वे सभी नागरिकों में नजरिये की समरूपता लाना चाहते थे ताकि आधारभूत मूल्यों का एक साथ विकास हो सके। डॉ0 ज़ाकिर हुसैन साहब का विचार था कि हर त्यौहार गीत ऐसा हो जिसे सभी लोग साथ मना सके साथ में गा सके साथ ही साथ सुख–दुःख साथ में साझा कर सकें। शिक्षा व्यक्ति में राष्ट्र की भावना विकसित करती है तथा देश की अखण्डता एवं एकता को अक्षुण्य बनाये रखने के लिये यह आवश्यक है।

(6) संस्कृति का हस्तांतरण– डॉ0 ज़ाकिर हुसैन का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए कि वह संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित करती रहे। अन्यथा संस्कृति विलुप्त हो जायेगी। वे अपने भाषण में कहे थे कि परम्पराएँ और संस्कृति विभिन्न समुदायों की संस्कृतियों के मेल से भूमि की मिट्टी से पैदा हुई है, जो भारतीय राष्ट्र का निर्माण करती है। शिक्षा आवश्यक रूप से सांस्कृतिक वस्तुओं में निहित अव्यक्त मूल्यों को पुनर्जीवित करने की प्रक्रिया है। जिस प्रकार से शरीर के विकास के लिए भोजन आवश्यक है उसी प्रकार से मानव मस्तिष्क शिक्षा से भोजन प्राप्त करता है और यह शिक्षा सांस्कृतिक वस्तुओं से प्राप्त होता है।डॉ0 ज़ाकिर हुसैन के अनुसार जैसे कोई व्यक्ति कविता सुनता है और उसे उसका भाव नहीं पता होता है तो उतना उस कविता का रसभाव वह नहीं समझ पायेगा जितना समझना चाहिए उसी प्रकार संस्कृति के भाव को शिक्षा ही पोषित करती है। एक अध्यापक जो शिक्षा की वास्तविक प्रकृति को समझता है वह अपने छात्रों के मस्तिष्क को उसी के सांस्कृतिक गुणों के माध्यम से प्रशिक्षित करता है। वह शिक्षा को भौतिक सुखों का साधन ही नहीं मानते अपितु उसके माध्यम से व्यक्ति के सांस्कृतिक धरोहर से भी लाभान्वित कराना चाहते थे।

(7) नैतिक मूल्यों का निर्माण– डॉ0 ज़ाकिर हुसैन के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए कि वह नौतिक मूल्यों का निर्माण करें अर्थात बालक के जीवन में कौन से कार्य उचित हैं और कौन से अनुचित। शिक्षा की जड़े नैतिक मूल्यों के खोज में निहित होना चाहिए। कौन से मूल्य मान्य हैं और कौन से अमान्य हैं इसका निर्धारण शिक्षा ही करती है। जब शिक्षा नैतिक मूल्यों को अपनाती है तभी मनुष्य अपने जीवन, अपनी संस्थाओं और सम्पूर्ण रूप से राष्ट्र को एक नैतिक उद्देश्य दे सकता है।

शिक्षा का पाठ्यक्रम

डॉ0 ज़ाकिर हुसैन ने एक ऐसी शिक्षा योजना बनायी जिसमें किताबी ज्ञान का बहिष्कार किया गया है जो बच्चों को देश के उपयोगी नागरिक बनने के लिए प्रशिक्षित करेगी। वे ऐसे पाठ्यक्रम के समर्थक थे जो बालक के मस्तिष्क, हाथ और हृदय को प्रशिक्षित करें। हाथ का प्रशिक्षण एक शिल्प के माध्यम से किया जाना था, जो उत्पादक गतिविधि बनेगी। वे प्राथमिक स्तर पर बालकों को कताई, बुनाई, सिलाई, कढ़ाई इत्यादि के बारे में पढ़ाना चाहते थे।

डॉ0 ज़ाकिर हुसैन ने निम्नलिखित सिद्धान्तों पर आधारित पाठ्यक्रम निर्धारित करने पर बल दिया है–

(i) पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा 'करके सीखने' पर बल दिया है।

(ii) पाठ्यक्रम ऐसा हो जो घर, विद्यालय, समाज सभी स्थानों पर सामंजस्य उत्पन्न करें।

(iii) पाठ्यक्रम में हस्तकौशल के उपयोग पर विशेष बल दिया, क्योंकि इसका उद्देश्य था कि बालक श्रमशक्ति के महत्व को जानेगा तथा वह इतना कुशल हो जाये कि जरूरत पड़ने पर आत्मनिर्भर भी बन सके।

(iv) पाठ्यक्रम ऐसा हो जो व्यक्तिगत विभिन्नता को ध्यान में रखकर बनाया जाय, क्योंकि सभी की जरूरतें व क्षमताएँ अलग–अलग होती हैं। उसके अनुसार पाठ्यक्रम बनेगा तो उसमें रुचि भी लेगा और अपनी पूरी क्षमता का प्रदर्शन भी करेगा।

(v) उनका मानना था कि पाठ्यक्रम में बदलाव करते रहना चाहिए क्योंकि समय के अनुसार किसी सिद्धान्त को स्थायी मानना दोषपूर्ण है। क्योंकि समय व देशकाल के साथ कोई भी नियम सिद्धान्त बदलता रहता है।

(vi) पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो बालक का सर्वांगीण विकास करने में सहायक हो।

(vii) पाठ्यक्रम ऐसा हो जो सभी विषयों में सह सम्बन्ध स्थापित करें।

(iv) पाठ्यक्रम को मानवीय मूल्यों एवं आदर्शों का पोषक होना चाहिए।

(ix) पाठ्यक्रम में गणित, सामाजिक अध्ययन, मातृभाषा, सामान्य विज्ञान, संगीत,चित्रकला, हिन्दुस्तानी कौशल आदि विषयों के समावेश पर बल दिया।

डॉ0 ज़ाकिर हुसैन उपयोगितावादी थे। उनका मानना था कि बालक को उन्हीं विषयों को पढ़ाया जाय जिसका उसके जीवन में उपयोग हो। उन्होंने बेसिक शिक्षा योजना में बालकों को कताई, बुनाई कर्धा, मोमबत्ती, मिट्टी के बर्तन इत्यादि को बनाने के समर्थक थे। इसी के माध्यम से बालक पढ़ाई भी करेगा और विद्यालय का खर्च भी चलेगा।

शिक्षण विधि :

डॉ0 ज़ाकिर हुसैन भी जान डी0वी0 के समान प्रयोगवादी थे। वे भी जामिया को एक प्रयोगशाला या कार्यशाला के रूप में रखा। उनका कहना था कि ''विद्यालय कर्मस्थल होंगे, जहाँ विद्यार्थी स्वअनुभवों द्वारा सार्वभौमिक व सामाजिक मूल्यों व दायित्वों का ज्ञान अर्जन करेंगे। इन विद्यालयों पुस्तकालयों में अपनी खोज, अपनी प्रवृत्ति और परिश्रम से अपने दायित्वों के अनुभव द्वारा वास्तविक शोध का महत्व समझ सकेंगे।''

डॉ0 ज़ाकिर हुसैन व्यवहारवादी थे इसलिए उन्होंने मौखिक शिक्षण को महत्व नहीं दिया, अपितु क्रियात्मक ढंग से सीखने, करके सीखने, अनुभवों द्वारा सीखने तथा खोज द्वारा सीखने पर जोर दिया। उन्होंने निम्नलिखित शिक्षण विधियों का प्रयोग किया–

(i) करके सीखने की विधि– यह एक वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि कोई बालक जब–जब कोई कार्य स्वयं करता है तो वह सीखना पूर्ण होता है। इसके माध्यम से सीखना स्थायी होता है।

(iii) प्रयोजना विधि– अनेक शिक्षाविदों ने भी इसे अपने शिक्षा के कार्य में शामिल किया है। डॉ0 ज़ाकिर हुसैन के अनुसार ''बच्चों को विभिन्न विषयों की शिक्षा हाथ के काम के जरिये दी जा सकती है– भले ही हम देहाती शिक्षा के पक्ष में हो,या शहरी सभ्यता के। यही कारण है कि अनेक शिक्षाविद हाथों से किये जाने वाले किसी न किसी काम को शिक्षा का केन्द्र बनाने की कोशिश कर रहे हैं। अपने बच्चों को हम निश्चित ही तकली और चरखे की या किसी दूसरी उपयुक्त दस्तकारी के जरिये शिक्षा दे सकते हैं।''

बच्चों की मानसिक और रुचि के अनुरूप डॉ0 ज़ाकिर हुसैन ने अनेक परियोजनाओं की शुरुआत किया। जैसे–चिल्ड्रेन बैंक, चिल्ड्रेन स्टेशनरी शॉप, बच्चों के खिलौने की दुकान, गार्डनिंग, पोल्ट्रीफार्मिंग, चिड़ियाघर स्थायी आधार पर चलाये जा रहे प्रोजेक्ट थे। यह पद्धति बच्चों के मानसिक व सामाजिक विकास के लिए उपयुक्त थी। किसी परियोजना को चलाने के लिए चार चरणों से गुजरना पड़ता था। (अ) उद्देश्य (परियोजना के लिए प्रेरणा) अर्थात् महसूस की गयी आवश्यकता (ब) योजना (कैसे पूरा किया जायेगा) (स) निष्पादन (अपेक्षित सामग्री प्रदान करना) (द) मूल्यांकन (उद्देश्य की उपलब्धियों में सफलता)।

(iii) खेल विधि– डॉ0 ज़ाकिर हुसैन बच्चों को खेल के माध्यम से शिक्षा देना चाहते थे। खेल द्वारा शिक्षा देने पर बालकों का शारीरिक, संज्ञानात्मक,, संवेगात्मक, नैतिक एवं सामाजिक विकास तीव्रगति से होता है।

(iv) स्वाध्याय विधि– डॉ0 ज़ाकिर हुसैन का मानना था कि शिक्षक के निर्देशन में बालक स्वाध्याय से सीखता है। जैसे संगीत, चित्रकला इत्यादि विषयों को बालक स्वयं सीखता है।

(v) समवाय विधि– डॉ0 ज़ाकिर हुसैन का मानना था कि विभिन्न विषयों मं आपसी सम्बन्ध जोड़कर बालकों को सिखाया जाना चाहिए। उदाहरणार्थ इतिहास और भूगोल का भौतिक विज्ञान व रसायन विज्ञान इत्यादि अन्य विषयों की जानकारी दी जा सकती है।

डॉ0 ज़ाकिर हुसैन ने शिक्षा जगत् में जो अलख जगाई, वह वर्तमान समय की मांग है। उनके बुनियादी शिक्षा के उद्देश्यों, पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधि आदि को नई शिक्षा नीति 2020 में भी लागू किया गया है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भारतीय शिक्षा व्यवस्था के लिए किये वे उनके शैक्षिक योगदान आज भी उतने ही प्रासंगिक तथा समसामयिक हैं जितने की तत्कालीन समय में थे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. हुसैन जाकिर(1990), शिक्षा एवं राष्ट्रीय विकास के विषय में, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 18।
2. पुरी मोहित (2012), डॉ0 जाकिर हुसैन के शिक्षा के प्रति महान विचार, प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, पृ0 18।
3. आलम, सईदा खुर्शीद (2014), 'जाकिर हुसैन की कहानी उनकी बेटी की जुबानी' राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली–110002।
4. परिहार मध (1999), डॉ0 जाकिर हुसैन भारतीय शिक्षा विकास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 21।
5. सिंह मानवीर (2014), डॉ0 जाकिर हुसैन की शिक्षा के विषय में जुलाई, www.irjmsh.com. नई दिल्ली, पृ0 136।

शिक्षण संस्थानों में पुस्तकालय की उपयोगिता

श्री रौशन कुमार गूंजन
पुस्तकालय अध्यक्ष

पुस्तकालय सभी शैक्षणिक गतिविधियों के पूरक और एक शिक्षण संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करता है। शिक्षा और पुस्तकालयों के बीच काफी धनिष्ठ संबंध है। पूस्तकालयो को मूल रूप से ज्ञान के भंडार के रूप में माना जाता है। विद्यालय शिक्षा के साधन के रूप मे पूस्तकालय की क्षमताओं को सभी सर पर अधिक मान्यता दी गई है। जिस शहर या गाँव मे विद्यालय है, वह अपने शैक्षिक कार्यक्रमो के पूरक में एक विद्यालय पुस्तकालय की आवश्यकता महसूस करते है। शिक्षको को पाठ्यपुस्तको के अलावा अन्य पुस्तको को संदर्भित करना और उनका अध्ययन करना आवश्यक लगता है। शिक्षा के मानक और गुणवत्ता मे योगदान के लिए विद्यालय पुस्तकालयो की अपनी योजनाकारों प्रशासको और समान रूप से पुस्तकालय पेशेवरो के लिए चिंता का विषय है। पुस्तके न केवल बच्चो को पढ़ाती है, बल्कि एक तथ्य खोजने का दृष्टिकोण भी विकसित करती है। इसके साथ ही वे उन्हे उनके खाली समय का सही उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित भी करती है। पुस्तके हमेशा उन लोगो के लिए जानकारी और आनंद का स्त्रोत रही है, जो जानते है कि उनका उपयोग कैसे करना है।

विद्यालय पुस्तकालय और विद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष की उपस्थिति विद्यार्थियो की साक्षरता और उसकी परीक्षण गणना पर एक सकारात्मक प्रभाव डालती है। डिजिटल युग में लोगो को लगता है कि पुस्तकालय जल्द ही अप्रचलित हो जायेंगे लेकिन पुस्तकालय अप्रासंगिक होने से बहुत दूर है। विद्यार्थियों की पहले से ज्यादा उनकी अधिक जरूरत है। पुस्तकालय इंटरनेट की तुलना मे अधिक सही ज्ञान प्रदान करते है। एक ऑनलाईन प्लेटफॉर्म संग्रह, लिखित दस्तावेज से कॉफी अलग है क्योकि उसकी प्रकाशन प्रक्रिया बहुत सख्त व नियमित है। डेटाबेस तक पहुँचना सिर्फ इंटरनेट के माध्यम से संभव नही है बल्कि पुस्तकालय के माध्यम से भी संभव है क्योंकि इसमें पंजीकरण की आवश्यकता होती है। पुस्तकालय पाठको में पढ़ने की आदत को बढ़ाता है। शोधर्कता और बुद्धिजीवी पुस्तकालयो के उपयोग की वकालत करते है। उनके अनुसार पुस्तकालयों का सहयोग साहित्यिक विकास को बढ़ावा देता है। पुस्तकालय अपरितार्थ है। देश की साक्षरता को बढ़ाता देने में पुस्तकालयो की भूमिका को अस्वीकार नही किया जा सकता है। जब शिक्षक, पुस्तकालयाध्यक्ष के साथ सहयोग करते है, तो पुस्तकालयाध्यक्ष शैक्षणिक और तकनीकी विशेषज्ञता पाठ्यक्रम को बढ़ाने मे मदद करता है। पुस्तकालयो की उपस्थिति साहित्यिक और पढ़ने वाले के लिए महत्वपूर्ण है। विद्यालय पुस्तकालय, बच्चो मे जिज्ञासा नवीनता और महत्वपूर्ण सोच को बढ़ावा देते है। एक पुस्तकालय पूर्व–स्कूली, प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय का अधिक भाग होता है। एक विद्यालय, पुस्तकालय विद्वानो के संसाधनो का देर है। सकग्रता मे सुधार करता है, व्यक्तित्व विकास मे मदद करता है, बच्चो को सलाह देने मे मदद करता है, सामाजिकता के लिए अवसर प्रदान करता है, पढ़ने को बढ़ावा देता है, बुद्धि विकास मे योगदान देता है, जागरूकता बढ़ाता है। विद्यालय पुस्तकालय, विद्यालय जीवन का एक महत्वपूर्ण केन्द्र है। यह अध्ययन के लिए काफी जगत और अवसर प्रदान करता है।

एक विद्यालय पुस्तकालय, प्राथमिक, माध्यमिक था उच्च माध्यमिक विद्यालय मे स्थापित किया जाता है। आधुनिक समय मे पुस्तकालय, विद्यालय पुस्तकालय संवाधन केन्द्रो मे विकसित किए गए है। विद्यालय पुस्तकालय जानकारी प्रदान करता है, पढ़ने की आदतो को विकसित करता है और एक नवीन ज्ञान आधारित समाज को विकसित करता है। विद्यालय प्रस्तकालय विद्यार्थियो को आजीवन सीखने के कौशल मे निपुण बनाता है, उनमे रचनात्मक सोच और कल्पना विकसित करता है और उन्हे आदर्श और जिम्मेदार नागरिक के रूप मे जीने मे सक्षम बनाता है।

विद्यालय पुस्तकालय एक ऐसा स्थान है जहाँ शैक्षणिक पुस्तक और ज्ञान के विशाल संग्रह रखे जाते है। छात्र विभिन्न विषयो पर अपने ज्ञान और समझ को बढ़ाने के लिए उसका उपयोग करता है। विद्यालय पुस्तकालय ज्ञान का भंडार है। विद्यार्थी, पुस्तकालय मे गणित, विज्ञान, भूगोल, पर्यावरण, साहित्य आदि जैसे विभिन्न विषयों पर पुस्तके प्राप्त कर सकते है। प्रत्येक विद्यालय मे एक पुस्तकालय की स्थापना लोगो के सांस्कृतिक जीवन को समृद्ध बनाने मे एक संबा रास्ता तय करती है। विद्यालय के पूस्तकालयो की उपयोगिता समुदाय के सभी सदस्यो को उनके संसाधनो तक पहुँच प्रदान करने मे नजर आती है।

छात्र पुस्तकालय और महत्व

Mrs.Nitu Kumari
Assistant Librarian

पुस्तकालय सिर्फ अलमारियों और किताबों से भरा कमरा नहीं है। यह वह स्थान है जहाँ छात्र अनुशासन और एकाग्रता सीखते हैं। पुस्तकालय में बैठने से मन शांत हो जाता है। शांत वातावरण कठिन विषयों को समझने में मदद करता है और मस्तिष्क को स्पष्ट रूप से सोचने का समय देता है। कई छात्र शोरगुल वाले स्थानों या व्यस्त कक्षाओं में तनाव महसूस करते हैं। लेकिन पुस्तकालय के अंदर, छात्र सुरक्षित और शांत महसूस करते हैं क्योंकि यह कमरा शांति और एकाग्रता को बढ़ावा देता है। यह वातावरण मन को बिना भ्रमित या विचलित हुए नए ज्ञान को आत्मसात करने में मदद करता है।

पुस्तकालय के विभिन्न भाग

हर पुस्तकालय के सुचारू संचालन के लिए कई महत्वपूर्ण भाग होते हैं। मुख्य भाग पठन अनुभाग है जहाँ छात्र बैठकर अध्ययन करते हैं। इस क्षेत्र में कुर्सियाँ, मेजें और कभी-कभी निजी अध्ययन के लिए छोटे-छोटे कक्ष भी होते हैं। एक अन्य भाग में पुस्तकों की अलमारियाँ होती हैं। इन अलमारियों पर विज्ञान, गणित, अंग्रेजी, इतिहास, भूगोल, कहानियों की पुस्तकें, जीवनियाँ और संदर्भ पुस्तकें जैसे विषयों के अनुसार लेबल लगे होते हैं। यहाँ एक लाइब्रेरियन का डेस्क भी होता है जहाँ लाइब्रेरियन जारी की गई और वापस की गई पुस्तकों का रिकॉर्ड रखता है। कई आधुनिक पुस्तकालयों में कंप्यूटर, इंटरनेट और इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों से सुसज्जित एक डिजिटल अनुभाग भी होता है। ये सभी भाग मिलकर छात्रों को सीखने के लिए आवश्यक सभी सुविधाएं प्रदान करते हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष की भूमिका

पुस्तकालय में लाइब्रेरियन की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। वे पुस्तकों की देखभाल करते हैं, शांति बनाए रखते हैं, छात्रों को सही अनुभाग खोजने में सहायता करते हैं और उन्हें सर्वोत्तम संसाधनों तक पहुँचाते हैं। पुस्तकों को सुरक्षित रूप से संभालने और समय पर लौटाने का तरीका भी सिखाते हैं। वे जारी की गई पुस्तकों का रिकॉर्ड रखते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि कोई पुस्तक क्षतिग्रस्त या गुम तो नहीं हो गई है। एक अच्छा लाइब्रेरियन पुस्तकालय के वातावरण को मैत्रीपूर्ण, सुरक्षित और व्यवस्थित बनाता है। वे छात्रों में पढ़ने और नए विषयों को सीखने में रुचि विकसित करने में मदद करते हैं।

छात्र पुस्तकालय का उपयोग

विद्यार्थी अनेक कारणों से पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। कुछ कहानी की किताबें पढ़ने आते हैं क्योंकि पढ़ने से मन की रचनात्मकता बढ़ती है। कुछ अपने स्कूल के विषयों का अध्ययन करने आते हैं क्योंकि शांत वातावरण उन्हें एकाग्रता बढ़ाने में मदद करता है। कई विद्यार्थी प्रोजेक्ट पूरे करने, शोध कार्य करने और परीक्षाओं की तैयारी करने आते हैं। धीमी गति से सीखने वाले विद्यार्थी पुस्तकालय का उपयोग समय लेकर अवधारणाओं को बेहतर ढंग से समझने के लिए करते हैं। तेज़ गति से सीखने वाले विद्यार्थी अतिरिक्त पुस्तकों का अध्ययन करने और अपना ज्ञान बढ़ाने के लिए पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। पुस्तकालय हर प्रकार के पाठक का समर्थन करता है, इसलिए कोई भी उपेक्षित या पीछे छूटा हुआ महसूस नहीं करता।पुस्तकालय अनेक उपयोगी संसाधन उपलब्ध कराता है। इनमें पाठ्यपुस्तकें, संदर्भ पुस्तकें, विश्वकोश, शब्दकोश, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, जर्नल और सामग्री शामिल हैं। प्रत्येक संसाधन अलग-अलग तरीकों से सहायक होता है। संदर्भ पुस्तकें उन्नत विषयों की गहन व्याख्या प्रदान करती हैं। शब्दकोश छात्रों को नए शब्द सीखने में मदद करते हैं। विश्वकोश विज्ञान, इतिहास और अन्य विषयों के बारे में स्पष्ट जानकारी देते हैं। "दुनिया को समझने और नवीनतम जानकारी से अवगत रहने में मदद करते हैं। डिजिटल संसाधन ऑनलाइन जर्नल, शोध पत्र और ई-पुस्तकों तक पहुँच प्रदान करते हैं। ये सभी साधन छात्रों को कक्षा से परे सीखने में सहायता करते हैं।

पुस्तकालय में मौन क्यों महत्वपूर्ण है?

पुस्तकालय के सबसे महत्वपूर्ण नियमों में से एक है मौन। जब छात्र शांति में अध्ययन करते हैं, तो उनका मस्तिष्क चीजों को तेजी से समझता है। शोर मन को बेचैन और भ्रमित करता है, जबकि शांत कमरे छात्रों को एकाग्र और शांत रहने में मदद करते हैं। मौन अन्य छात्रों के प्रति सम्मान भी दर्शाता है जो अध्ययन कर रहे हैं। जब सभी शांत रहते हैं, तो सभी बेहतर सीखते हैं। यह नियम अच्छे शिष्टाचार का निर्माण करता है और छात्रों को साझा स्थानों में व्यवहार करना सिखाता है।

वे नियम जो पुस्तकालय के सुचारू संचालन को सुनिश्चित करते हैं

पुस्तकालय में कुछ सरल नियम होते हैं जिनसे सब कुछ व्यवस्थित रहता है। विद्यार्थियों को शांत रहना चाहिए। उन्हें पुस्तकों को सावधानी से संभालना चाहिए। उन्हें पृष्ठों को मोड़ना या पुस्तकों के अंदर चित्र बनाना नहीं चाहिए। उन्हें पुस्तकें समय पर लौटानी चाहिए ताकि अन्य विद्यार्थी भी उनका उपयोग कर सकें। विद्यार्थियों को पठन क्षेत्र को साफ रखना चाहिए और पुस्तकालय के अंदर भोजन नहीं करना चाहिए। ये नियम पुस्तकों की सुरक्षा और सभी विद्यार्थियों के लिए स्वस्थ वातावरण बनाए रखने में सहायक होते हैं। नियमों का पालन करके विद्यार्थी जिम्मेदारी, सम्मान और अनुशासन सीखते हैं।

नियमित रूप से पुस्तकालय जाने के लाभ

नियमित रूप से पुस्तकालय जाने से अनेक लाभ होते हैं। इससे पढ़ने की क्षमता में सुधार होता है क्योंकि मन को बार-बार पढ़ने की आदत पड़ जाती है। इससे छात्रों की शब्दावली मजबूत होती है क्योंकि वे नए शब्द सीखते हैं।"क्योंकि शांत वातावरण मस्तिष्क को शांत रहने का प्रशिक्षण देता है। पुस्तकालय छात्रों को परीक्षा में बेहतर अंक प्राप्त करने में भी मदद करता है क्योंकि उन्हें अतिरिक्त अध्ययन सामग्री मिलती है। इससे जिज्ञासा बढ़ती है क्योंकि छात्र विभिन्न विषयों का पता लगाते हैं। पढ़ने से कल्पना, रचनात्मकता और आत्मविश्वास भी बढ़ता है। पुस्तकालय मानसिक स्वास्थ्य को भी बढ़ावा देते हैं क्योंकि पढ़ने से तनाव कम होता है।

स्कूलों और कॉलेजों में पुस्तकालय अलग-अलग ज़रूरतों को पूरा करते हैं। स्कूल पुस्तकालयों में सरल पुस्तकें, पाठ्यपुस्तकें, चित्र-पुस्तकें और कहानी-पुस्तकें होती हैं क्योंकि छोटे विद्यार्थियों को आसान पठन सामग्री की आवश्यकता होती है। कॉलेजों के पुस्तकालयों में उन्नत पुस्तकें, शोध पत्रिकाएँ, परियोजनाएँ और संदर्भ सामग्री उपलब्ध होती हैं। दोनों प्रकार के पुस्तकालय विद्यार्थियों को उनके स्तर पर सफल होने में सहायता करते हैं। कई स्कूल और कॉलेज हर साल अपने पुस्तकालयों को अद्यतन करते हैं ताकि विद्यार्थियों को नवीनतम पुस्तकें और जानकारी मिल सके।

डिजिटल पुस्तकालय और आधुनिक शिक्षा

आजकल कई पुस्तकालयों में डिजिटल सुविधाएं भी उपलब्ध हैं। डिजिटल पुस्तकालयों के माध्यम से छात्र ई-पुस्तकें, शोध पत्र और ऑनलाइन पत्रिकाएं पढ़ सकते हैं। ये डिजिटलउपकरणछात्रोंकोजानकारीतेजीसेखोजनेमेंमदद करते हैं। उन्नत विषयों का अध्ययन करने या उच्च शिक्षा की तैयारी करने वाले छात्रों के लिए डिजिटल पुस्तकालय बहुत उपयोगी हैं। ये आधुनिक शिक्षण विधियों का समर्थन करते हैं और छात्रों के लिए शोध को आसान बनाते हैं।

डिजिटल लाइब्रेरी क्या है?

डिजिटल लाइब्रेरी (Digital Library) किताबों, लेखों, तस्वीरों, ऑडियो और वीडियो जैसे सूचना संसाधनों का एक ऑनलाइन संग्रह है, जिसे इंटरनेट के माध्यम से कहीं से भी और कभी भी एक्सेस किया जा सकता है; यह पारंपरिक पुस्तकालय का डिजिटल रूप है जहाँ भौतिक पुस्तकों की जगह डिजिटल फाइलें होती हैं, जिससे कई लोग एक साथ पढ़ सकते हैं और स्थान व समय की कोई सीमा नहीं होती।

यह कैसे काम करती है?

डिजिटल संग्रह: इसमें ई-बुक्स, शोध पत्र, पत्रिकाएं, पांडुलिपियां, चित्र और मल्टीमीडिया सामग्री शामिल होती हैं। इंटरनेट-आधारित: इसे किसी भी इंटरनेट-सक्षम डिवाइस (कंप्यूटर, टैबलेट, फोन) से एक्सेस किया जा सकता है। **उन्नत खोज:** यह कीवर्ड-आधारित और सिमेंटिक खोज जैसी सुविधाओं से जानकारी को तुरंत ढूंढने में मदद करती है। 24/7 उपलब्धता: यह दिन-रात कभी भी उपलब्ध रहती है, जिससे सीखने और शोध करने में आसानी होती है।

डिजिटल लाइब्रेरी के फायदे

सुविधाजनक पहुँच:- उपयोगकर्ता कहीं से भी अपनी पसंद की सामग्री तक पहुँच सकते हैं।

स्थान की बचत:- भौतिक पुस्तकों की जगह नहीं लेती।

असीमित स्टोरेज:- इसका डेटाबेस किसी भी फिजिकल लाइब्रेरी से बड़ा हो सकता है।

कई उपयोगकर्ताओं की पहुँच:- एक ही समय में कई छात्र एक किताब पढ़ सकते हैं।

लागत प्रभावी:- भौतिक प्रतियों की आवश्यकता खत्म होती है।

उदाहरण:-

भारत में राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी (NDLI) इसका एक प्रमुख उदाहरण है, जो छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए एक विशाल शिक्षण संसाधन प्रदान करती है।

संक्षेप में, डिजिटल लाइब्रेरी ज्ञान तक पहुँच को आसान, तेज़ और अधिक लचीला बनाती है, जिससे शिक्षा और सूचना का लोकतंत्रीकरण होता है।

डिजिटल लाइब्रेरी की भूमिका (Role of Digital Library) सूचना तक पहुँच को आसान बनाना, शिक्षा और शोध को बढ़ावा देना, और ज्ञान के संरक्षण व प्रसार को सुनिश्चित करना है; यह उपयोगकर्ताओं को कहीं से भी, कभी भी ई-बुक्स, लेख और मल्टीमीडिया जैसे डिजिटल संसाधनों तक पहुँच प्रदान करती है, जिससे समय और स्थान की बाधाएँ दूर होती हैं और जानकारी की खोज अधिक कुशल हो जाती है, खासकर छात्रों, शोधकर्ताओं और पेशेवरों के लिए।

डिजिटल लाइब्रेरी की प्रमुख भूमिकाएँ

सूचना तक सार्वभौमिक पहुँच (Universal Access to Information)

यह पारंपरिक पुस्तकालयों की भौगोलिक सीमाओं को तोड़कर, इंटरनेट के माध्यम से किसी भी स्थान से संसाधनों तक पहुँच प्रदान करती है।

छात्र और शोधकर्ता घर बैठे या दूरस्थ स्थानों से भी आवश्यक सामग्री प्राप्त कर सकते हैं।

शिक्षा और अनुसंधान को बढ़ावा (Promoting Education and Research):

यह छात्रों और शोधकर्ताओं को ई-पुस्तकें, जर्नल, वीडियो और अन्य शैक्षणिक सामग्री प्रदान करके सीखने और अनुसंधान को समृद्ध करती है।

इसमें शक्तिशाली खोज उपकरण होते हैं, जो प्रासंगिक जानकारी को जल्दी खोजने में मदद करते हैं, जिससे समय बचता है।

संसाधनों का संरक्षण और संवर्धन (Conservation and Enhancement of Resources):
डिजिटल प्रारूप भौतिक सामग्रियों को बार-बार उपयोग से होने वाले नुकसान से बचाता है। यह दुर्लभ और पुरानी सामग्रियों की पहुँच योग्य प्रतियां (accessible copies) प्रदान कर सकता है, जिन्हें खोजना मुश्किल होता है।

स्थान और समय की बचत (Saves Space and Time):-
डिजिटल जानकारी को स्टोर करने के लिए कम भौतिक स्थान की आवश्यकता होती है, जिससे अधिक सामग्री संग्रहीत की जा सकती है। उपयोगकर्ता तुरंत जानकारी ढूंढ सकते हैं, जिससे पारंपरिक पुस्तकालयों में लगने वाला समय बचता है।

1.सामाजिक समावेशन और समानता (Social Inclusion and Equity):
यह डिजिटल विभाजन को पाटने और सभी को ज्ञान तक समान पहुँच प्रदान करने में मदद करती है।

संदर्भ – सूची

1. धनकर, रोहित, संपादक, शिक्षा विमर्श वर्ष-2015, मार्च-अप्रैल
2. श्रीवास्तव, मनोज अक्षरा वर्ष-2025 अप्रैल
3. चतुर्वेदी , कैलाश, नई शिक्षा (राष्ट्रीय शैक्षिक मासिक पत्रिका) मार्च-2025
4. भारतीय आधुनिक शिक्षा जुलाई-2019
5. प्राथमिक शिक्षा अप्रैल-2019
6. कुमार आशुतोष एवं कुमार संजीव, आलोचना त्रैमासिक अक्तूबर-दिसंबर 2023
7. एडोल्फ हिटलर, मेरा संघर्ष प्रकाशक- नाथम पब्लिकेशन वर्ष-2023
8. प्रेमचंद, रंगभूमि प्रकाशन-वायु एजुकेशन ऑफ़ इंडियानई दिल्ली
9. प्रेमचंद , गोदान प्रकाशन-वायु एजुकेशन ऑफ़ इंडियानई दिल्ली
10. सिंह शेखर एवं हिमांशु डॉ नमन वर्ष-16, अंक-21

नूरजहाँ–मुगलकाल की दैदिप्यमान महिला

Guest Writer
डॉ० वीरेश कुमार ठाकुर
प्रधानाध्यापक
एस.एस.+2 हाई स्कूल
मड़पा–सिरपाल मेजरगंज,सीतामढ़ी

भारत में बाबर के आधिपत्य से हीं मुगल साम्राज्य का श्री गणेश माना गया है इस विशाल साम्राज्य के समग्र इतिहास में जहाँगीर की पत्नी बेगम नूरजहाँ अपने शारीरिक रूप लावण्य तथा अद्वितीय, बौद्धिक क्षमताओं के मनिकांचन संयोग से परिपूर्ण होकर साक्षात् चाँद की तरह मुगलकाल में उदीयमान होती है। उसका शारीरिक आकर्षण तो अद्वितीय था ही, उसकी प्रतिभा भी उतनी ही विलक्षण थी। सम्पूर्ण मुगल इतिहास में अपने अद्वितीय गुणों के कारण परिस्थितियों को प्रभावित करती हुई नजर आती है। वह एक ऐसी महिला थी जो न केवल अपने पति की ह्दय सम्राज्ञी बनी बल्कि लगातार 15 वर्षों तक अपने पति के पौरूष को स्वयं में समेटकर साम्राज्य का संचालन करती रही। उसने न केवल राज्य के उत्थान को प्रेरित किया बल्कि राजनीति की सह बदलने का साकारात्मक कार्य कर सम्राज्य को सफलता के चरम पर पहुँचाया। इसी हेतु History of Jahangir लेखक ने उसके सम्बन्ध में लिखा है कि ''लगातार 15 वर्षों तक एक सुयोग्य महिला के रूप में वह एक अत्यंत प्रभावशाली एवं शक्तिशाली व्यक्तित्व के रूप में बनी रही। उसके सम्बन्ध में अनेक कहानियाँ प्रचलित है, जिनसे उसकी कोमल भावनाओं, पति प्रेम कुशाग्र बुद्धि और अद्वितीय राजनीतिक क्षमता की प्रत्यक्ष जानकारी होती है।

मुगलकाल की वह पहली ऐसी महिला थी जिसने अपने समय के सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना को पूरी तरह प्रभावित किया, उसने भारत और ईरान के सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्वरूप को सम्मिलित कर अपने सोंच के अनुरूप भारत के सांस्कृति स्वरूप को एक नया आकर्षण दिया, उसने महिलाओं और उनके जीवन में यथार्थ परिवर्त्तन लाने का सफल प्रयास किया। विभिन्न इतिहासकारों ने माना है कि इस युग की महिलाओं में नारी जीवन के उत्थान की दृष्टि से केवल मीरा बाई के साथ ही उसकी तुलना की जा सकती है, मीरा बाई ने जहाँ अध्यात्मिक चेतना जागृत कर नारी जीवन को सबल एवं साकारात्मक बनाने की कोशिश की, वहीं नूरजहाँ ने नारियों की राजनीतिक चेतना को प्रभावित कर समग्र रूप से नारी जीवन को सुधारने और सवॉरने का कार्य किया। इसीलिए तो प्रसिद्ध इतिहासकार बेनीप्रसाद ने लिखा है कि ''मध्यकालीन इतिहास में किसी भी व्यक्ति का जीवन इतना औपन्यासिक नहीं है जितना नूरजहाँ के समय की किसी अन्य घटना में उतना आकर्षण नहीं है जितना उसका नूरजहाँ से विवाह'' पूरे 15 वर्षों तक यह सुप्रसिद्ध महिला सम्राज्य में शक्ति का प्रतीक बनी रही।

कुदरत का करिश्मा नूरजहाँ का शाब्दिक अर्थ ''संसार की रोशनी है, इसका वास्तविक नाम मेहरून्निसा (स्त्रियों में सूर्य) था, पिता ग्यासबेग तथा माता अस्मत बेगम तेहरान निवासी को परिवार की जंभीर आर्थिक परिस्थितियों के कारण भारत आना पड़ा था। यात्रा के क्रम में अस्मत् बेगम ने अपने दुर्भाग्य के संघर्षकाल में काबुल के तप्त रेगिस्तानी इलाके में एक पुत्री को जन्म दिया, जो बचपन में मेहरूनिसा के नाम से जानी गई। भयावह परिस्थितियों के बीच पुत्री के इस जन्म ने ग्यासबेग की मुसीबतों को और भी बढ़ा दिया, लेकिन काफिले के सरदार मलिक मसूद ने इस विपरित परिस्थितियों में उसका साथ दिया और अंततः उसे फतेहपुर सीकरी पहुँचा दिया।

अकबर के दरबार में अपनी योग्यता, प्रतिभा और अप्रतीम सेवा भाव के कारण ग्यासबेग अकबर के दरबार में अपना प्रभाव विस्तार करना शुरू किया, उसकी योग्यता हीं थी जिससे खुश होकर अकबर ने उसे पहले काबुल का दीवान बनया, बाद में पारिवारिक कलह के झंझावात से बचाने के लिए उसे पुनः आगरा बुला लिया। 1605 ई० में पारिवारिक कलह के व्याघात से अंततोगत्वा अकबर की मृत्यु हो गई और जहाँगीर बादशाह बना। दरबार के प्रति अपने अपूर्व निष्ठा के कारण जहाँगीर के जमाने में भी ग्यासबेग पूर्व की भाँति ही दरबार में अपनी महत्ता कायम रखने में सफल रहा। चुकी बादशाह जहाँगीर को मुगल सल्तनत दिलाने में उसने सबसे अधिक और उल्लेखनीय भूमिका अदा की थी इसलिए उसे जहाँगीर ने एतमादुधौला की उपाधि से नवाजा।

इस समय तक शेर अफगान की पत्नी मेहरूनिसा जो पूर्व काल में जहाँगीर की प्राणेश्वरी बन चुकी थी, शेर अफगान की हत्या के बाद बोझ तले दबकर एक निराश महिला के रूप में अपने माता–पिता के पास आगरा आने को बाह्य थी, जैसा कि हम जानते है कि अकबर के विरोध के कारण सलीम के रूप में जहाँगीर की मेहरूनिसा के प्रति अपने प्रगाढ़ प्यार को बुचलना पड़ा था। इस घटना ने ही सलीम को न केवल विद्रोही बनाया बल्कि अशांत पिता अकबर का जीवन लौ बुझने का भी कारण बना।

उत्तराधिकार के बाद सलीम अब जहाँगीर के रूप में मुगल सम्राज्य का बादशाह और ग्यासबेग एतमादुधौला के रूप में सल्तनत का संरक्षक और शंटहशाह का स्वामी भक्त सेवक बन चुका था। एक दिन भाग्य ने पलटा खाया। एतमादुधौला की सेवकाई का प्रतिफल इस रूप में सामने आया कि एक दिन स्नेहिल वातावरण में आधी रात को बेचैन जहाँगीर की मेहरूनिसा से दरबारी फब्बारे के समीप अचानक मुलाकात हो गई और इसके साथ ही वर्षों का मुर्झाया प्रेम जहाँगीर के

दिल में जाग उठी, फिर दोनों की 45 वर्ष की उम्र में शादी हुई, 35 वर्ष की मेहरूनिसा, नूरमहल से नूरजहाँ के रूप में परिचित होकर, शराब के शौकीन जहाँगीर का ह्दय साम्राज्ञी बन गई, जहाँगीर के जीवन का अक्खरपन इस समय तक शांत होने लगा था। खून के साथ–साथ सुरा नशों में प्रवाहित होने से वह शिथिल होने लगा था। ऐसी अवस्था में नूरजहाँ ने प्रेम और प्रतिज्ञा जैसे अलौकिक गुणों से युक्त, दरबार की राजनीति में रूचि रखने वाली एक विलक्षण महिला सावित हुई। उसमें राजनीतिक निपुणता के साथ–साथ सांस्कृतिक समझ, समय की गति को स्वयं तथा सम्राज्य को स्थायी लाभ पहुँचाने की दृष्टि से आवश्यक लचीलापन भी था। शासन के क्षेत्र में भी अपनी हुनर और हौसलों के साथ–साथ अपने पति को उसने इतना प्रभावित किया की राजनीतिक दृष्टि से साम्राज्य का केन्द्र बन गई। बादशाह के रूप में जहाँगीर उसके हाथ का खिलौना बन गया। इस दृष्टि से उसके पिता ग्यासबेग, भाई आसफखाँ तथा माता अस्मत् बेगम ने भी साम्राज्ञी के रूप में उसकी भूमिका के निर्धारण में सफल भूमिका अदा की। जहाँगीर अब नूरजहाँ पर आश्रित हो चुका था, और उसके रूप लावण्य, उसकी अदा तथा विलक्षण प्रतिभा से प्रभावित होकर शासन की बागडोर उसे सौंप कर स्वयं उसके सहारे जीने लगा। वह कहा भी करता था कि ''अब मुझे एक सेर शराब आधा सेर कबाब के अलावा किसी भी चीज की जरूरत नहीं है।'' इससे सावित होता है कि जहाँगीर नूरजहाँ के सम्पर्क में आने के बाद उस पर कितना निर्भर हो गया। स्वाभाविक था कि शासन पर उसकी पकड़ जितनी ढीली हुई उसी अनुपात में नूरजहाँ की पकड़ मजबूत होती चली गई। रानी बनते ही उसके सगे–सम्बन्धियों की प्रतिष्ठा भी काफी बढ़ गई। हलाकि यह भी उतना ही सत्य है कि नूरजहाँ के हाथ में शासन शक्ति आने के पूर्व ही पिता ग्यासबेग तथा भाई आसफ खाँ दरबार में ही नहीं सम्राज्य में भी अपनी योग्यता के बल पर प्रतिष्ठित हो चुके थे, फिर भी मेहरून्निसा के हाथ में सत्ता आने से उन सबों की प्रतिष्ठा में चार चाँद लग गया। जैसा कि स्विर्ड बर्न में कहा है कि ''अब राज्य की मुख्य शक्तियाँ नूरजहाँ बेगम में निहित थी, जिसने अपने पिता ग्यासबेग तथा भाई आसफ खाँ के साथ शासन किया।

नूरजहाँ का शासन काल 1611–1622 तक माना जाता है। इस काल में पिता और भाई से ही नहीं बल्कि माता से भी उसे पूरा सहयोग मिला। 1612 में आसफ खाँ की बेटी आरजूबंद बानों बेगम से जहाँगीर के लाडले खुर्रम की शादी हुई, इससे इसका तत्कालीन प्रभाव जहाँ नूरजहाँ की शासन सम्बन्धी भूमिका पर पड़ी वहीं दरबार में विरोधी गुट का भी सृजन भी होने लगा। दो गुट बन गए, एक गुट खुर्रम का था, दूसरा गुट खुसरो का था जिसका समर्थक प्रभावषाली नूरजहाँ, एतमादुधौला, आसफ खाँ एवं सेनापति महावत खाँ करता था। इस काल में नूरजहाँ के शासन पर तो प्रभाव था ही दरबारी सेवकों और सम्बन्धियों पर भी उसका उल्लेखनीय प्रभाव था। हम जानते है कि स्वार्थ की संजीदगी स्वभावतः ईष्या को जन्म देती है, यही कारण था कि दोनों गुटों के संचालन में संचालक समय बितने के साथ अपने–अपने पक्ष का प्रभाव बढ़ाने लगे जो आगे–चलकर संघर्ष का कारण बना। नूरजहाँ ने जहाँगीर के शासन के तौर तरीकों में देशी था विदेशी किसी भी स्तर पर अपने समय में कोई परिवर्त्तन नहीं किया, इस काल में वह सदा जहाँगीर को प्रसन्न करने का प्रयास करती रही, कभी उस पर अनुशासन लादने का प्रयास नहीं किया। इस काल में सगे– सम्बन्धियों का प्रभाव भी धीरे–धीरे बढ़ता गया, किंतु समय की गति कभी भी जैसी नहीं होती परिवर्त्तन समय का स्वभाविक गुण है, उसका हरपल परिवर्त्तन का साक्षी होता हैं

नूरजहाँ के शासन का दूसरा पहलू परिवर्त्तन का अपवाद न बन सका। 1622 से 1627 ई० अर्थात् जहाँगीर की मृत्यु तक सम्राज्ञी के रूप में फूलों की सेज पर शयन करने वाली नूरजहाँ की ताज में काटों की चुमन महसूस होने लगी। इस समय तक नूरजहाँ का शक्तिशाली गुट खत्म हो चुका था तथा उसके पूर्व परामर्श दाता भी नहीं रहे। 1620 ई० में नूरजहाँ ने अपनी पुत्री लाडली बेगम की शादी जहाँगीर के सबसे छोटे–बेटे शाहरयार से की और नूरजहाँ एवं खूर्रम के बीच कलह की शुरूआत यही से होती है। भाई–बहन दोनों अपने–अपने दामाद का समर्थन करने लगे, इसके कारण पूर्व का सारा सम्बन्ध शत्रुत्व में परिवर्त्तित होता चला गया

खुर्रम अपने भाइयों में सबसे योग्य था और उसमें बादशाह बनने की भी योग्यता थी। 1622 ई० में उसने खुसरों का अंत कर दिया जिसके कारण नूरजहाँ का दामाद शहरयार उसका एक मात्र प्रतिद्वंदी रह गया, चुकी नूरजहाँ शहरयार का समर्थन कर रही थी, इसलिए खुर्रम ने उसके विरूद्ध विद्रोह कर दिया। उसने जहाँगीर के आदेश की भी अवहेलना की और फारस के शाह अब्बास के कंधार पर आक्रमण के समय भी सैनिक सहयोग करने से इनकर कर दिया। इसी समय नूरजहाँ ने धौलपुर की जागीर शहरयार को दिलवा दिया तथा कंधार जाने वाली मुगल सेना का सेनापति भी शहरयार को ही बनवा दिया। यह सुनते ही खुर्रम आग–बबूला हो गया। 1623 ई० में खुर्रम ने बड़ी सेना के साथ उत्तर की ओर प्रस्थान किया अब्दुल रहीम खानखाना ने उसकी मदद की दिल्ली के नजदीक शाही सेना तथा खुर्रम की सेना के बीच मुठभेड़ हुई। महावत खाँ ने खुर्रम को पराजित किया, पराजित होकर खुर्रम मांडू भाग गया और दक्षिण में मलिक अम्बर की शरण में चला गया और उससे सहायता की याचना की, मुगल साम्राज्य का प्रतिद्वंदी होने के कारण अम्बर ने खुर्रम की मदद की, बुरहानपुर के दुर्ग पर दोनों ने मिलकर आक्रमण भी किया फिर भी परास्त हुआ अंत में जहाँगीर से उसने मॉफी माँगी, 1626 ई० में कुछ शर्तों के साथ बादशाह ने उसे माफ कर दिया। आगे चलकर इसी कारण महावत खाँ का भी विद्रोह हुआ महावत खाँ को खुर्रम से अलग करने के उद्देश्य से नूरजहाँ ने उसे बंगाल का सूबेदार नियुक्त किया। गौरतलब है कि महावत खाँ और शहजादा परवेज में अधिक निकटता थी जिसे नूरजहाँ पसंद नहीं करती थी और बंगाल भेजकर दोनों की निकटता समाप्त करना चाहती थी। आसफ खाँ भी महावत खाँ को कैद करना चाहता था। इसी समय सम्राट लाहौर से काबुल के लिए प्रस्थान किया, झेलम नदी के किनारे पड़ाव था, महावत खाँ ने इस पड़ाव पर अचानक आक्रमण कर दिया

तथा बादशाह को कैद करने की कोशिश की इस समय तक नूरजहाँ झेलम पार कर चुकी थी और यह समाचार सुनते ही उसका क्रोध खौल पड़ा उसने पति को मुक्त कराने की कोशिश की मगर सफल न हो सकी ओर उसे आत्म समर्पण करना पड़ा, आसफ खाँ भी पराजित हुआ और उसे अटक के दुर्ग में शरण लेनी पड़ी, अब परिस्थिति बिल्कुल बदल चुकी थी, शासन के सूत्रधार अब सेवक की शरण में थे। आसफ को पकड़ने के लिए महावत खाँ ने अपने बेटे परवेज को अटक भेजा आसफ ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली, इस प्रकार प्रशासन में महावत खाँ का एक छत्र प्रभुत्व स्थापित हो गया। इसी समय पता चला की खुर्रम राजधानी की ओर प्रस्थान कर रहा है, तब महावत खाँ के विरूद्ध ईर्ष्या की आग में जलने वाली नूरजहाँ के इशारे पर शाही सेना काबुल से दिल्ली की ओर बढ़ने लगी और आगे चलने पर राह में शाही सैनिकों की संख्या बढ़ती देख महावत खा घबरा गया और भागकर मेवाड़ की पहाड़ियों मे चला गया, आगे चलकर खुर्रम महावत खाँ से मिल गया, शाहजहाँ ने कृपापूर्ण व्यवहार करते हुए उसे क्षमा कर दिया। दूसरी तरफ जहाँगीर का स्वास्थय दिनोदिन बिगड़ता चला गया। स्वास्थ सुधार की दृष्टि वह नूरजहाँ के साथ काश्मीर चला गया जहाँ 1627 ई० में 60 वर्ष की अवस्था में उसकी मृत्यु हो गई और इसके साथ ही सिंहासन के लिए संघर्ष शुरू हो गया। नूरजहाँ ने लाहौर में शहरयार को बादशाह घोषित कर दिया। आसफ खाँ ने खुर्रम के साथ मिलकर लाहौर पर आक्रमण कर दिया और शहरयार को पराजित किया, इस पराजय से नूरजहाँ का दिल बैठ गया, उसका राजनीतिक जीवन सदा के लिए समाप्त हो गया, खुर्रम आगरा पहुँचकर 4 Feb 1628 को शाहजहाँ के नाम से सिहासन पर बैठा। साम्राज्ञी के रूप में निस्तेज और शक्तिहीन नूरजहाँ की कृपापात्र बनने को बाध्य हुई, शाहजहाँ ने उसे दो लाख का वार्षिक पेंशन प्रदान किया इस तरह नूरजहाँ का काल समाप्त हुआ।

जहाँ तक नूरजहाँ के मूल्यांकन का प्रश्न है वह मुगल कालीन भारत की सबसे प्रमुख वीरांगना थी, उसने अपनी मनोहरी सौंदर्य, अलौकिक व्यक्तित्व, कला प्रेम, साहित्य की रूची, अदम्य उत्साह, विलक्षण बुद्धिमता स्वामी भक्ति सिद्धः समर्पित पति प्रेम तथा अपनी सहदयता के बल पर भारतीय इतिहास में अपने को अमर कर लिया। नूरजहाँ को अपने अनुपम गुणों के कारण ही साम्राज्य में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। 1622 ई० में उसे बादशाह बेगम'' की उपाधि से नवाजा गया। उसकी सांस्कृतिक देन उत्कृष्ट थी, उसने ईरानी एवं भारतीय संस्कृति में समन्वय स्थापित करने का कार्य किया, वह व्यवहारिक बुद्धिवाली प्रतिभावान महिला थी, सौंदर्य के प्रति उसमें अति आकर्षण था, उसने नए–नए फैशन चलाए, नए–नए आचार–व्यवहार, प्रलेखों अलंकारिक पदार्थों का अविष्कार किया। वह एक उदार महिला थी, दीन–दुखियों, असहाय महिलाओं, विधवाओं तथा बूढ़ों की हर प्रकार से सहायता करती थी। नूरजहाँ का पति प्रेम भी उच्चकोटि था। वह अपने पूर्व पति शरे अफगान के प्रति सदा सहानुभूति रखती रही, पति के रूप में जहाँगीर को अतिशय प्रेम दिया और अनुपम सेवाओं के बल पर न केवल अपने पति बल्कि अपने सम्पूर्ण साम्राज्य पर शासन किया, नूरजहाँ के राज्य प्रभाव के सम्बन्ध में इतिहासकार एक मत नहीं है, शक्ति का अपने–आप में केन्द्रीकरण करने के कारण सम्राज्य के कुछ अधिकारी उसके कार्यों के प्रति उदासीन रहने लगे। यही उदासीनता आगे चलकर उसके और राज्याधिकारियों के बीच खाई बनने लगी। इसके कारण महावत खाँ जैसा सेनापति विद्रोही बन गया। सौतेली माँ के द्वारा दोहरी नीति अपनाने के कारण शहजादा खुर्रम भी विद्रोही हो गया। इसी लिए तो ईश्वरी प्रसाद ने भी कहा है कि ''यदि जहाँगीर के शासन को मुगलवंश के शासनकाल का अपयशपूर्ण युग कहा जाए तो उसमें नूरजहाँ का उत्तर दायित्व कुछ कम नही है।'' उसमें स्त्रियोचित कुछ ऐसी कमजोरियाँ थी, लेकिन उसने जहाँगीर की शिथिल पड़ती शासन को तेज और तीव्रता अवश्य प्रदान की और अपने पूर्व काल में अपने शालीन और स्वच्छ पूर्ण आचरण से सिंहासन पर चाँद की सम्पूर्ण सुधरता के साथ प्रतिभाषित भी हुई। फिर भी दूसरे काल में कुछ अव्यवहारिक निर्णयों के कारण कलंकित भी हुई।

संदर्भ ग्रंथः–

1. History of Jahangir- Beni Prasad- 117 to 175
2. भारत का इतिहास– ए०एल० श्रीवास्तव– 565 to 572
3. भारत में मुस्लिम शासन का इतिहास– एस०आर०शर्मा
4. भारत का इतिहास– डॉ० आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव एण्ड कम्पनी आगंरा शिवलाल अग्रवल– 1992 275 to 280
5. मध्यकालीन भारत– एल०पी०शर्मा०– 2003– लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाश 94–96
6. मध्यकालीन भारत– मजुमदार, रायचौधुरी तथा दत्त 1971 183–188 मैक मिलन एण्ड कम्पनी बम्बई लन्दन, कलकत्ता, मद्रास
7. नूरजहाँ – ज्योति जाफा– 31–38
8. History of Begum Nurjahan - Sugam Anand 1992- Radha Ribli

Beyond Feedback: Using Feed-Forward to Skyrocket Student Progress

Guest Writer
Smt. Minu Pandey
Pedagogical Expert

Abstract:
It turns out there's a different way to give feedback that works a lot better: a way of flipping its focus from the past to the future. It's a concept called "feedforward," originally developed by a management expert named Marshall Goldsmith. As far as I can tell, not a lot of educators are familiar with the practice of feedforward, and I really think if we learned how to do it and started using it more consistently, it could make a huge difference in how our students grow and how we grow as professionals. As teachers, we pretty much give feedback all day long. We tell students how they can improve on assignments, praise them for things they're doing well, correct their incorrect responses, and redirect them when they behave in ways that aren't helpful to learning. And that's just the students. We also give feedback to our colleagues, although in most cases these exchanges don't happen as often or as freely as they probably should. We receive plenty of feedback as well, from our students, their parents, our administrators, and our peers. And we encourage our students to give feedback to each other, albeit with pretty uneven results. Really, the experience of school could be described as one long feedback session, where every day, people show up with the goal of improving, while other people tell them how to do it. And it doesn't always go well. As we give and receive feedback, people get defensive. Feelings get hurt. And too often, the improvements we're going for don't happen, because the feedback isn't given in a way that the receiver can embrace.

Keywords: feedback, feed-forward, visible learning, self-regulated learning, assessment for learning, teacher practice

Introduction

Feedback is one of the most powerful influences on student achievement, yet much of the feedback teachers provide remains descriptive rather than actionable. Building on Hattie and Timperley's 2007 model of feed-up, feed-back, and feed-forward, this article makes the case that educators need to make a conscious shift away from the dominant feed-back practices of telling students "how they are doing" and toward a feed-forward approach of telling students "where to next." Practical strategies are presented to help teachers deliver timely, specific, and actionable guidance that empowers students to close performance gaps and develop self-regulated learning skills. Learning accelerates when feedback becomes a roadmap instead of a report card.

Providing effective feedback is one of the key skills of any educator. While feedback has a significant impact on students' learning and performance, not all forms of feedback are created equal. In fact, research identifies that how educators frame their feedback-in other words, whether it is more "feed-up," "feed-back," or "feed-forward"-influences its effectiveness (Hattie & Timperley, 2007). This paper explores why educators should shift to using a feed-forward model of feedback in order to maximize impact on student growth and achievement.

The Three Types of Feedback

Hattie and Timperley (2007) described three major kinds of feedback that educators typically give to students:

- Feed-up: Informs about the learning goals and success criteria.
- Feedback: Informs about the student's present level of achievement.
- Feed-forward: Advises on next steps to improve.

While each serves a purpose, research suggests feed-forward may be the most powerful kind of feedback in terms of driving student learning. As one example, Brooks et al. (2019) analyzed feedback in upper elementary classrooms and found that the most common were indeed feed-

back comments-those addressing “how am I going?” These accounted for 50% of all feedback. The least common were feed-forward comments (addressing “where to next?”) at only 19% of total feedback.

The Power of Feed-Forward Feedback

Why does feed-forward feedback make such a difference? Quite simply, as Hattie and Timperley (2007) point out, "The major distinction is among feedback about the task, about the processing of the task, about self-regulation, and about the self as a person. These distinctions are very important in terms of both the effectiveness of feedback and the direction of attention of the learner" (p. 93).

Feed-forward feedback guides students toward the next steps they need to take to improve their work. It activates them as learners, requiring that they engage in cognitively complex processing and self-regulation. Results from one research study by Mandouit (2020) showed that students highly valued feedback that would enable them to "elaborate on ideas" and understand "how to improve". Students want feedback that not only supports them to improve their work but also builds transferable skills they can apply to future assignments and contexts. What gives powerful feed-forward feedback an edge is that it carries an action point relevant to students' needs and achievements. As Hattie (2012) said, “The aim is to provide feedback that is ‘just in time’, ‘just for me’, ‘just for where I am in my learning process’, and that fills the gap between where the student is and where he or she is aiming to be” (p. 128). More generally, feed-forward feedback befits the concept of assessment for learning rather than simply of learning (Earl, 2013). It moves assessment from being a judgment about achievement to an occasion for further growth. Students are enabled to view learning as a journey and not as a set of independent performances.

Practical Strategies for Educators

So how might educators incorporate more feed-forward feedback into their teaching practice? Useful approaches include the following:

- ✓ When providing feedback to students' work, avoid the tendency to pay attention only to strengths and weaknesses. Balance feed-back comments with concrete and actionable suggestions for improvement.
- ✓ Success criteria needs to be made explicit in advance so that students know what they are aiming for. Check with students that they understand what the goals are before giving feedforward suggestions linked to the criteria.
- ✓ Ask students to reflect on their own first; then build off what they identify as areas for growth, rather than imposing your own unsolicited guidance.
- ✓ Focus feed-forward comments on the most important 1-2 priorities for improvement rather than overwhelming students with a laundry list of every possible area to address. Help students identify high-leverage skills worthy of their focus.

Complement written comments with conferences. Discussion enables you to scaffold instruction, clear up misunderstanding, and verify understanding of next steps.

a. The transition from feed-back to more feed-forward feedback necessitates a rethinking of the educator's role. Educators become not just evaluators of work but collaborators in learning co-constructors of meaning with students about where they are, where they want to go, and how to get there.

b. It is clear from the research that high-quality, feed-forward feedback can significantly improve student learning and growth. In the words of Earl, "Students need information, not evaluation" (2013, p. 88). Educators should shift from feedback as praise, criticism, or correction to focused guidance that enables students to act.

c. With greater focus on the art of creating feed-forward feedback, educators can rise to their key role in promoting continuous improvement for all learners.

The Fundamental Problems with Feedback

It is widely accepted and very popular; feedback undoubtedly has its advantages as well. Still, it is not free from drawbacks.

Understanding the challenges associated with feedback are critical to making it more effective. Following are some of the fundamental problems usually faced within feedback systems.

1. One-way Communication

Feedback has also been criticized based on the process of one-way communication it supports. Feedback communicates information in only one direction, allowing no reciprocation of ideas. There is little or no room for discussion or clarification. Lack of such dialogue may mislead the receiver regarding the intent of the given feedback.

2. Lack of Specificity

Feedback is always specific. The lack of specificity in the feedback plays a hindrance in understanding which behavior or action the recipient has to work on. They also struggle to implement the feedback effectively.

Certain feedback, such as "You need to improve" or "You could have done it better," may not work effectively due to a lack of clarity. And, most importantly, specificity.

3. Feedback Delays

Delays in giving feedback can make it less effective. Unless feedback is given near the time of the event, employees may forget what happened or how it happened.

It thus becomes more challenging for them to learn from that experience and quickly fix the problem.

4. Status Quo Bias

Often, people's feedback is clouded by the status quo bias. This can take the form of reluctance to change for employees who would rather maintain present habits or practices. This is sometimes linked to a fear of failure. On other occasions, it is an avoidance of challenging one's belief.

5. No/Lack of Follow Up

Most often, feedback falls flat because of no/lack of follow-up. In other words, there will be no ongoing support and guidance after the feedback is given. No meaningful improvement is possible without proper follow-up.

6. Psychological or Emotional Consequence

Poorly delivered feedback may bring an emotional toll on employees. At times, harsh criticism or insensitive comments can result in damaging relationships. This may further include an atmosphere of hostility for employees.

Will Feedforward Sustain Over Feedback?

The debate between feedback vs. feedforward has become very popular. Both represent different purposes. But the question is, will feedforward sustain over feedback in fostering a better work culture?

- Feedback is still used today in order to show insights. However, feedforward also presents a strong alternative in the process. It offers guidance and suggestions prior to an action.
- This, in turn, nurtures a culture of proactive problem-solving and continuous learning. Such an approach closely aligns with modern workplace demands since the modern workplace values agility and adaptability.
- However, full replacement may not be possible. Feedback provides valuable information about past performance. The employees are able to fathom their strong points and weak points where improvement is required.
- But putting feedback and feedforward together can be powerful. Employees get a balanced perspective-a look backward and a look forward. The best way forward will be one that effectively balances both.

Conclusion

Imagine that you say to a student, “Your essay was poorly organized and had many spelling mistakes.” That's feedback about something already finished-like asking the child to jump out of concrete that's already hardened. The paper has been submitted, the grade has been given, and nothing can alter the past. The student feels discouraged and doesn't know what to do next time. Which is just what Joe Hirsch says in his book *The Feedback Fix*: traditional feedback often focuses on mistakes that can no longer be fixed. Feed-forward is different. Rather than looking back at what went wrong, it looks forward, answering the question every student really wants to know: “Teacher, what should I do in my next assignment to make it better?” As future teachers, you have the power to change lives with a few well-chosen words: Instead of just writing “Weak conclusion,” write: “Next time, conclude your essay by answering the ‘So what?’ question – tell the reader why your topic matters to them.” Instead of writing “More analysis needed,” write: “In your next paragraph, after each piece of evidence ask yourself ‘What does this evidence tell us?’ and write one sentence answering that question.” If you give feed-forward, each assignment becomes a stepping stone rather than a final judgment. Your students will leave your class not just knowing what they did wrong but carrying clear, practical strategies they can use for the rest of their lives. Remember: your red pen, or your voice, is one of the most powerful teaching tools you will ever hold. Use it not just to evaluate the past, but to build a brighter future-one actionable "next step" at a time. That is the kind of teacher tomorrow’s children need – and the kind of teacher you are training to become.

References Brooks

1. Brooks, C., Carroll, A., Gillies, R. M., & Hattie, J. (2019). A matrix of feedback for learning. Australian Journal of Teacher Education, 44(4). https://doi.org/10.14221/ajte.2018v44n4.2
2. Earl, L. M. (2013). Assessment as learning: Using classroom assessment to maximize student learning. Corwin Press.
3. Hattie, J. (2012). Visible learning for teachers: Maximizing impact on learning. Routledge.
4. Hattie, J., & Timperley, H. (2007). The power of feedback. Review of Educational Research, 77(1), 81–112. https://doi.org/10.3102/003465430298487
5. Mandouit, L. (2020). Investigating how students receive, interpret, and respond to teacher feedback [Unpublished doctoral dissertation]. University of Melbourne.

ज्ञान–समाज, डिजिटल परिवर्तन और अकादमिक उत्कृष्टता की दिशा में एक समग्र विश्लेषण

Guest Writer
निशा कुमारी
पुस्तकालय और सूचना विज्ञान में स्नातक
सोना देवी विश्वविद्यालय, झारखंड
Gmail : nk5532029@gmail.com

सार (Abstract)
वर्तमान समय को सूचना–प्रौद्योगिकी एवं ज्ञान–आधारित समाज का युग कहा जाता है। सूचना के तीव्र उत्पादन, प्रसार और उपभोग ने शिक्षा, शोध, उद्योग और प्रशासन की संरचना को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। इस परिवर्तित परिदृश्य में School of Library & Information Science (LIS) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। यह संस्थान केवल पुस्तकालय संचालन का प्रशिक्षण केंद्र नहीं, बल्कि सूचना–प्रबंधन, ज्ञान–संगठन, डिजिटल संरक्षण, शोध–समर्थन और सूचना–साक्षरता का समग्र अकादमिक मंच है। प्रस्तुत शोध–आलेख का उद्देश्य LIS शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, वर्तमान प्रासंगिकता, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में इसकी भूमिका, प्रमुख चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करना है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि LIS स्कूल ज्ञान–समाज के निर्माण में आधारभूत स्तंभ के रूप में उभर रहा है।
कुंजी शब्द: पुस्तकालय विज्ञान, सूचना प्रबंधन, डिजिटल लाइब्रेरी, ज्ञान समाज, सूचना साक्षरता, अनुसंधान समर्थन

1. प्रस्तावना

मानव सभ्यता के विकास में ज्ञान की भूमिका केंद्रीय रही है। प्राचीन काल में ज्ञान का संरक्षण पांडुलिपियों और मौखिक परंपराओं के माध्यम से होता था। आधुनिक युग में मुद्रण क्रांति ने ज्ञान के प्रसार को गति दी, जबकि डिजिटल क्रांति ने इसे वैश्विक और तात्कालिक बना दिया। ज्ञान–आधारित समाज में सूचना का वैज्ञानिक संगठन, संरक्षण, पुनःप्राप्ति और प्रसार अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है। School of Library & Information Science (LIS) इस कार्य का शैक्षणिक एवं वैचारिक केंद्र है। LIS केवल एक व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक सुदृढ़ सैद्धांतिक अनुशासन है, जिसकी जड़ें ज्ञान–मीमांसा (Epistemology), संप्रेषण सिद्धांत, प्रणाली सिद्धांत, प्रबंधन सिद्धांत और सूचना व्यवहार अध्ययन में निहित हैं।

Library & Information Science (LIS) एक बहुआयामी एवं अंतर्विषयी अनुशासन है, जिसका सैद्धांतिक आधार ज्ञान–मीमांसा, सूचना सिद्धांत, प्रणाली सिद्धांत, उपयोगकर्ता अध्ययन, ज्ञान प्रबंधन तथा सूचना–नैतिकता में निहित है। आधुनिक सूचना–समाज में LIS की भूमिका केवल पुस्तकालय संचालन तक सीमित नहीं, बल्कि ज्ञान–निर्माण, सूचना–साक्षरता और शोध–समर्थन तक विस्तृत हो चुकी है।

आज विश्व “सूचना विस्फोट” (Information Explosion) का सामना कर रहा है। प्रतिदिन असंख्य शोध–पत्र, डिजिटल सामग्री, डेटा–सेट और मल्टीमीडिया संसाधन उत्पन्न हो रहे हैं। इस विशाल सूचना–समुद्र में प्रामाणिक, प्रासंगिक और उपयोगी जानकारी का चयन, संगठन और संरक्षण एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। यही वह क्षेत्र है जहाँ LIS शिक्षा की प्रासंगिकता स्पष्ट होती है। School of Library & Information Science विद्यार्थियों को सूचना के वैज्ञानिक संगठन, वर्गीकरण, सूचीकरण, डिजिटलीकरण, डेटा–प्रबंधन और ज्ञान–वितरण की समग्र समझ प्रदान करता है। अतः यह केवल एक विभाग नहीं, बल्कि ज्ञान–आधारित समाज की संरचना का बौद्धिक आधार है।

2. ऐतिहासिक विकास: पुस्तकालय विज्ञान से सूचना विज्ञान तक

2.1 प्रारंभिक चरण

पुस्तकालयों का इतिहास प्राचीन सभ्यताओं से जुड़ा है। मिस्र, मेसोपोटामिया और भारत में ज्ञान के संरक्षण के लिए विशेष स्थान निर्मित किए जाते थे।

2.2 आधुनिक पुस्तकालय विज्ञान का विकास

19वीं शताब्दी में पुस्तकालय विज्ञान एक औपचारिक अनुशासन के रूप में विकसित हुआ। वर्गीकरण प्रणालियाँ और सूचीकरण पद्धतियाँ विकसित हुईं, जिन्होंने सूचना–संगठन को वैज्ञानिक आधार दिया।

2.3 सूचना विज्ञान का उदय

20वीं सदी के उत्तरार्ध में कंप्यूटर और इंटरनेट के आगमन ने सूचना के स्वरूप को बदल दिया। “लाइब्रेरी साइंस” अब “लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन साइंस” बन गया। सूचना का प्रबंधन, डेटाबेस निर्माण, डिजिटल संसाधनों का संरक्षण और सूचना–पुनःप्राप्ति प्रणाली (Information Retrieval System) LIS शिक्षा का अभिन्न अंग बन गए।

3. ज्ञान–मीमांसा (Epistemological Foundation)

ज्ञान–मीमांसा इस प्रश्न से संबंधित है कि ज्ञान क्या है और वह कैसे निर्मित होता है। Michael K. Buckland (1991) ने सूचना की तीन अवधारणाएँ “information-as-process”, “information-as-knowledge” और “information-as-thing” प्रस्तुत कीं, जो LIS के सैद्धांतिक ढाँचे को स्पष्ट करती हैं।

“Information-as-thing refers to objects, such as data and documents, that are informative.”
(Buckland, 1991)

यह अवधारणा दर्शाती है कि पुस्तकालय केवल सूचना का संग्रहालय नहीं, बल्कि ज्ञान–परिवर्तन की प्रक्रिया का सक्रिय केंद्र है।

4. DIKW मॉडल

DIKW (Data–Information–Knowledge–Wisdom) मॉडल सूचना के पदानुक्रम को स्पष्ट करता है। Jennifer Rowley (2007) ने DIKW मॉडल को ज्ञान–प्रबंधन के संदर्भ में विश्लेषित करते हुए कहा-

“The DIKW hierarchy provides a framework for understanding the transformation of data into wisdom.”
(Rowley, 2007)

यह मॉडल LIS शिक्षा में डेटा के संगठन से लेकर विवेकपूर्ण उपयोग तक की प्रक्रिया को स्पष्ट करता है।

5. पंचसूत्र और मानवीय दृष्टिकोण

भारतीय पुस्तकालय विज्ञान के प्रणेता S. R. Ranganathan (1931) ने पाँच सिद्धांत प्रतिपादित किए, जो LIS के दार्शनिक आधार हैं-

"Books are for use." (Ranganathan, 1931)

ये सिद्धांत उपयोगकर्ता–केन्द्रित सेवा, संसाधनों की उपलब्धता और पुस्तकालय की गतिशीलता पर बल देते हैं। डिजिटल युग में भी "Each reader his/her book" का सिद्धांत व्यक्तिगत सूचना सेवा (Personalized Information Service) के रूप में प्रासंगिक है।

6. सूचना व्यवहार सिद्धांत (Information Behavior Theory)

T. D. Wilson (2000) ने सूचना व्यवहार को परिभाषित करते हुए कहा-

"Information behaviour is the totality of human behaviour in relation to sources and channels of information."

(Wilson, 2000)

यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि LIS शिक्षा उपयोगकर्ता की आवश्यकताओं को समझे बिना प्रभावी नहीं हो सकती।

7. प्रणाली सिद्धांत (Systems Theory)

LIS को एक खुली प्रणाली के रूप में देखा जा सकता है, जहाँ संसाधनों का इनपुट, प्रसंस्करण और आउटपुट एक चक्रीय प्रक्रिया में होता है। Ludwig von Bertalanffy (1968) के सामान्य प्रणाली सिद्धांत के अनुसार

"A system is a set of elements standing in interrelation."

(Bertalanffy, 1968)

इस सिद्धांत के आधार पर LIS को एक अंतःसंबद्ध संरचना के रूप में समझा जाता है।

8. ज्ञान प्रबंधन सिद्धांत

Ikujiro Nonaka और Hirotaka Takeuchi (1995) ने SECI मॉडल (Socialization, Externalization, Combination, Internalization) प्रस्तुत किया, जो ज्ञान–सृजन की प्रक्रिया को स्पष्ट करता है।

"Organizational knowledge is created through a continuous dialogue between tacit and explicit knowledge."

(Nonaka & Takeuchi, 1995)

LIS स्कूल संस्थागत रिपॉजिटरी और ज्ञान–साझाकरण के माध्यम से इस मॉडल को व्यवहार में लाता है।

9. सूचना नैतिकता (Information Ethics)

Luciano Floridi (2013) ने सूचना–नैतिकता को डिजिटल समाज की केंद्रीय चिंता बताया

"Information ethics concerns the moral issues arising from the development and application of information technologies."

(Floridi, 2013)

LIS शिक्षा कॉपीराइट, प्लेगियारिज्म और डेटा गोपनीयता जैसे विषयों पर विशेष बल देती है।

10. सामाजिक निर्माणवाद (Social Constructivism)

Lev Vygotsky (1978) के अनुसार

"Learning is a social process."

(Vygotsky, 1978)

पुस्तकालय सामुदायिक संवाद और ज्ञान–विनिमय का मंच बनकर इस सिद्धांत को साकार करता है।

निष्कर्ष

School of Library & Information Science का सैद्धांतिक आधार अत्यंत व्यापक है। ज्ञान–मीमांसा, DIKW मॉडल, पंचसूत्र, सूचना व्यवहार सिद्धांत, प्रणाली सिद्धांत, ज्ञान प्रबंधन और सूचना, नैतिकता ये सभी मिलकर LIS को एक सशक्त अकादमिक अनुशासन बनाते हैं।

डिजिटल युग में LIS शिक्षा को तकनीकी नवाचार के साथ–साथ नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व को संतुलित रूप से अपनाना आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

1. Bertalanffy, L. von. (1968). General system theory. George Braziller.
2. Buckland, M. K. (1991). Information and information systems. Praeger.
3. Floridi, L. (2013). The ethics of information. Oxford University Press.
4. Nonaka, I., & Takeuchi, H. (1995). The knowledge-creating company. Oxford University Press.
5. Ranganathan, S. R. (1931). The five laws of library science. Madras Library Association.
6. Rowley, J. (2007). The wisdom hierarchy: representations of the DIKW hierarchy. Journal of Information Science, 33(2), 163-180.
7. Vygotsky, L. S. (1978). Mind in society. Harvard University Press.
8. Wilson, T. D. (2000). Human information behavior. Informing Science, 3(2), 49-55.

Need of Sex Education in Schools of Bihar

Ajeet Kumar
Roll – 31, B.Ed.
Session - 2025-27

Abstract

It is important to emphasize the importance of sex education in the schools of Bihar in order to address issues such as early marriage, adolescent pregnancy, gender-based violence, and persistent myths about sexuality and reproductive health. There are many programmes such as the Adolescence Education Programme (Tarang) and the School Health and Wellness components under Ayushman Bharat that integrate life skills, puberty, gender, and basic reproductive health into the school curriculum. Their coverage and depth remain limited by cultural resistance, teacher discomfort, and policy hesitancy to explicitly name "sex education". Evidence from comprehensive sexuality education (CSE) research in India and globally shows that age-appropriate, participatory curricula improve knowledge, delay sexual initiation, increase contraceptive use, enhance refusal skills, and reduce violence, without promoting promiscuity. Doing so is essential not only for improving adolescent sexual and reproductive health, but also for advancing gender equality, mental well-being, and broader educational and human development outcomes in Bihar.

Keywords: Sex Education, Bihar, Adolescence, Sexuality

Introduction

Adolescence is a critical transition marked by rapid physical, emotional, and social changes, during which young people begin to form attitudes and behaviour related to sexuality, relationships, and health(Joseph, 2023). In Bihar, this transition occurs in a setting of entrenched patriarchy, poverty, and low female schooling, where most adolescents receive little reliable information about their bodies, consent, or protection from harm(Singh et al., 2021; Srivastava & Pandey, 2017) Sex education in schools often framed as adolescence or life-skills education is therefore not optional; it is central to achieving public health, gender justice, and educational goals in the state.

Status of Adolescents and Sexual Health in Bihar

National Family Health Survey (NFHS-5) data show that Bihar has one of India's highest adolescent fertility rates, with a substantial share of women aged 15–19 already pregnant or mothers, far above the national average(Aditi B, 2020; National Family Health Survey NFHS-5, 2019). Early marriage remains common; state health briefs and NFHS-5 reports link high teenage childbearing with low schooling, rural residence, and socio-economic disadvantage(Singh et al., 2021).The combination of early sexual debut (often forced), poor knowledge, and weak services makes adolescents of Bihar particularly susceptible to unsafe abortions, untreated sexually transmitted infections, and long-term educational and economic setbacks.

Policy Framework: AEP, Tarang and School Health Initiatives

Bihar does not label its school curriculum as "sex education" but instead integrates relevant content through programmes like the **Adolescence Education Programme (AEP)**, branded locally as **"Tarang"**, and the School Health and Wellness components of Ayushman Bharat(*Tarang-Adolescence Education Program, Bihar*, 2010). Tarang, implemented through the State Council of Educational Research and Training (SCERT) with civil society partners, aims to provide accurate, age-appropriate information on adolescence, gender, health, and life skills to students in classes 6–9 across selected government schools.Programme coverage remains partial, and content is frequently reduced to biological facts about puberty, leaving

critical areas such as consent, relationships, and digital risks largely unaddressed, which limits the transformative potential of these initiatives(Patel, 2020; *Tarang-Adolescence Education Program, Bihar*, 2010).

Concept and Evidence Base for Sex Education

Internationally and in India, **Comprehensive Sexuality Education (CSE)** denotes structured, age-appropriate education covering not only the biological aspects of reproduction but also relationships, consent, sexual and reproductive rights, gender norms, and safety(Patel, 2020; Pattathil & Roy, 2023). Reviews of CSE programmes in diverse settings show that well-designed curricula improve knowledge about HIV and sexually transmitted infections, increase condom and contraceptive use, enhance refusal skills, and can delay sexual initiation rather than promote it. Literature on school-based sex education further highlights benefits such as improved menstrual hygiene management, reduced shame around bodily changes, and better communication between adolescents and trusted adults(Mandigo, 2020; Maqbool & Jan, 2019).

These findings challenge the common misconception that sex education encourages promiscuity.Instead, evidence indicates that adolescents receiving comprehensive, participatory education are more likely to make informed, responsible choices and less likely to engage in high-risk behaviours(Patel, 2020; Pattathil & Roy, 2023).

Key Reasons Sex Education is Needed in Bihar

1. Reducing Early Marriage and Adolescent Pregnancy

High adolescent fertility and persistent child marriage in Bihar reveal that many girls enter sexual relationships—usually within marriage—without informed consent, awareness of risks, or control over fertility(Aditi B, 2020; National Family Health Survey NFHS-5, 2019). School-based sex education can inform students about the legal minimum age of marriage, health consequences of early childbearing, and available contraceptive methods, including spacing and emergency contraception(Joseph, 2023; *Tarang-Adolescence Education Program, Bihar*, 2010). It can also build life skills such as negotiation, assertive communication, and goal-setting, enabling adolescents—especially girls—to advocate for continued education and delay marriage and pregnancy.

2. Preventing Sexual Abuse and Gender-Based Violence

Children and adolescents in India face substantial risks of sexual abuse, often by known individuals, but frequently remain silent due to ignorance, fear, and stigma(“Need for Sex Education in Schools,” 2020). Sex education that includes content on body autonomy, good touch/bad touch, consent, and reporting mechanisms can empower young people to recognize abuse, set boundaries, and seek help from trusted adults or institutional channels such as child helplines(Pattathil & Roy, 2023). In Bihar, where gender norms commonly tolerate harassment and restrict girls’ mobility, explicit discussion of rights and safety is critical.

3. Correcting Myths and Misinformation

In many communities in Bihar, silence around sexuality fosters a fertile ground for myths regarding menstruation, masturbation, pregnancy, and contraception(“Need for Sex Education in Schools,” 2020; “Need for Sex Education in Schools,” 2020). Adolescents often rely on peers, unverified online sources, or pornography, which can distort their understanding and encourage risky experimentation(“Need for Sex Education in Schools,” 2020). Systematic reviews show that structured sex education significantly improves factual knowledge and

dispels common misconceptions about fertility, STIs, and contraception, which in turn leads to safer behaviours(Pattathil & Roy, 2023).

Tarang's emphasis on life skills and positive behaviours provides a foothold to integrate clearer, scientifically accurate information on reproductive processes, menstrual health, contraception, and HIV/STIs(*Tarang-Adolescence Education Program, Bihar*, 2010). When delivered with sensitivity to local beliefs and language, such content can reduce fear and shame, encourage health-seeking, and normalize discussions of reproductive health within families and communities.

4. Supporting Mental Health and Positive Identity Formation

Adolescents in Bihar, like elsewhere, grapple with confusion, anxiety, and curiosity about bodily changes, attraction, and future roles, which can negatively affect mental health when combined with restrictive social norms(Joseph, 2023; Srivastava & Pandey, 2017). Sex education that addresses emotions, self-esteem, peer pressure, and respectful relationships can bolster psychological well-being and help adolescents develop a positive sense of self(Joseph, 2023). Evaluations of life-skills and CSE programmes in India show improvements in communication skills, confidence, and conflict-resolution abilities among participating students(Joseph, 2023; Pattathil & Roy, 2023).

Cultural and Political Challenges in Bihar

Despite the clear need, sex education in Bihar encounters strong cultural resistance from sections of parents, teachers, religious leaders, and politicians who fear that such education will erode traditional values or encourage premarital sex(Mishra, 2002; "Need for Sex Education in Schools," 2020). Media reports have documented state-level hesitancy to explicitly introduce "sex education," with authorities preferring neutral terms like "adolescence education" to avoid controversy(Mishra, 2002). Public incidents in which senior officials trivialized girls' demands for menstrual hygiene support or linked them to demands for condoms illustrate how adolescent reproductive health concerns are often treated as inappropriate or frivolous("Harjot Kaur Bhamra: Bihar IAS Officer Mocks Schoolgirl's Sanitary Pad Request," 2022; Kumar, 2022; Mishra, 2022).This environment influences schools: teachers may feel insecure about handling sensitive topics, worry about complaints, or lack adequate training and supportive guidelines. Consequently, existing programmes like Tarang are sometimes implemented in a tokenistic manner, focusing on less controversial content while omitting critical topics such as contraception, consent, and pleasure(Patel, 2020).

Role of Existing Programmes and Lessons Learned

The Tarang Adolescence Education Programme offers important lessons for scaling sex education in Bihar. Designed as a life-skills based approach, Tarang has reached hundreds of thousands of adolescents in government schools and Madrasas, using participatory methods and contextualized stories to discuss puberty, gender, and decision-making(Sami Ahmad, 2021). Implementation experiences show that when teachers are well trained, supported, and motivated, they can facilitate open discussions even in conservative communities, and students report greater confidence and willingness to challenge harmful norms(Patel, 2020; *Tarang-Adolescence Education Program, Bihar*, 2010).

Recommendations for Strengthening Sex Education in Bihar

On the basis of available evidence and current initiatives of Bihar, several strategic directions emerge:

1. **Adopt a State-Level CSE Framework**
   Bihar can develop a clear Comprehensive Sexuality Education policy framework aligned with national and international technical guidelines while using culturally acceptable terminology in public discourse(Pattathil & Roy, 2023). SCERT should embed learning outcomes related to bodies, relationships, consent, and rights across subjects and grades, ensuring continuity from upper primary to higher secondary levels(*Training and Resource Materials: Health and Wellness of School-Going Children.*, 2020).
2. **Scale and Deepen Tarang and AEP**
   Tarang should be expanded to all government and aided schools, with mandatory timetable allocation and integration into school inspection and reporting systems. Teacher training must move beyond one-time orientation to ongoing, practice-oriented capacity-building, including supervised practice, peer-learning, and supportive supervision to handle sensitive discussions confidently(Patel, 2020; *Tarang-Adolescence Education Program, Bihar*, 2010).
3. **Strengthen the School Health and Wellness Programme Linkages**
   Health and Wellness Ambassadors should receive specialized training on CSE pedagogy, gender, and adolescent mental health, not only on biomedical topics. Coordinated planning between Education and Health departments can connect school-based education with adolescent-friendly health services, enabling referrals for counselling, contraception, and treatment of STIs and anaemia(Srivastava & Pandey, 2017).
4. **Engage Parents, Communities, and Religious Institutions**
   Communication campaigns using local languages and channels (community meetings, radio, grassroots women's groups) can clarify that sex education protects young people by promoting health, dignity, and responsibility(Joseph, 2023; Pattathil & Roy, 2023). Involving Panchayats, religious leaders, and influential teachers in curriculum adaptation and rollout can reduce suspicion and ensure that materials are locally grounded yet rights-based(Sami Ahmad, 2021; *Tarang-Adolescence Education Program, Bihar*, 2010).
5. **Invest in Monitoring, Evaluation, and Research**
   Monitoring systems should track not only coverage but also content fidelity, student engagement, and perceived relevance, using tools such as classroom observations and student feedback(Patel, 2020; Pattathil & Roy, 2023).

Conclusion

In the context of Bihar, the need for sex education in schools is grounded in stark adolescent health indicators, persistent gender and social inequities, and the inadequacy of silence and stigma as protective strategies(Srivastava & Pandey, 2017). Existing initiatives such as Tarang and the School Health and Wellness Programme demonstrate that culturally sensitive, participatory approaches can open space for meaningful discussions about bodies, relationships, and rights in even conservative settings. Moving toward a comprehensive, evidence-based sexuality education framework, supported by strong political will and community engagement, is essential for safeguarding Bihar's adolescents and advancing the state's broader goals of health, education, and human development(Joseph, 2023; Pattathil & Roy, 2023).

References:

1. Singh, S. K., et al. (2021). National Family Health Survey (NFHS-5), Bihar. International Institute for Population Sciences.
2. Pattathil, N., & Roy, A. (2023). Promising practices for sexuality education in India. Sexual and Reproductive Health Matters.
3. Joseph, J. T. (2023). Comprehensive Sexuality Education in the Indian Context. Indian Journal of Psychological Medicine.

The Invisible Architect: How AI Will Redesign Our World

Suraj Kumar
Roll – 100, B.Ed.
Session - 2025-27

Introduction

We stand at the precipice of a second Renaissance, not of art and literature, but of cognition and capability. Artificial Intelligence, once a specter of science fiction, has woven itself into the fabric of our daily lives with startling subtlety and speed. From the algorithms curating our social media feeds to the voice assistants managing our smart homes, AI's nascent influence is already palpable. Yet, these applications are merely the opening notes of a symphony that promises to redefine every aspect of human existence. The future of AI is not about creating a separate, robotic society; it is about the emergence of an Invisible Architect—a pervasive, intelligent layer that will redesign how we heal, create, work, govern, and understand our place in the universe. This journey will be fraught with ethical quandaries and societal tremors, but its potential to unlock human potential and solve grand challenges is unparalleled.

Keywords: Artificial Intelligence, Machine Learning, Automation, Future Technology, Ethics, Healthcare, Education, Smart Cities, Employment, Sustainability

Evolution of Artificial Intelligence

To understand the future of AI, it is important to recognize its evolution. Early AI systems were rule-based and limited in scope, capable of performing only specific tasks under controlled conditions. With the advent of machine learning, deep learning, and big data, AI systems became more adaptive and capable of learning from experience. Future AI is expected to be more general, context-aware, and capable of reasoning across domains.

Advancements in computing power, quantum computing, neuromorphic chips, and improved algorithms will enable AI systems to process complex information more efficiently. These developments will lead to AI that can collaborate with humans more naturally, understand emotions, and make decisions in uncertain and dynamic environments. The evolution of AI will thus shift from narrow task execution to broader problem-solving and creative assistance.

Imagine an AI that doesn't just write a travel itinerary but books the flights, negotiates with the hotel for a better room based on your preferences, monitors the weather, and re-routes your airport transfer if there is traffic—all without you lifting a finger. This shift toward Agentic AI will turn software into an active collaborator.

Beyond that lies the pursuit of AGI. While experts disagree on the timeline—estimates range from a few years to several decades—the consensus is that machines will eventually possess a plasticity of thought that rivals humans. This leads to the concept of Recursive Self-Improvement, where an AI designs a better version of itself, which in turn designs a better version, leading to an intelligence explosion. In this future, AI becomes the primary driver of scientific discovery, solving physics and engineering problems that have stumped humans for centuries

The Ethical Mirror: Navigating the Perils of the AI Age

This powerful technology does not arrive without profound risks. Its development forces us to confront deep ethical questions that will define the quality of our future society.

Bias, Privacy, and the Surveillance Specter: AI systems learn from historical data, which often embeds societal biases. Without meticulous care, they can perpetuate and even amplify discrimination in hiring, lending, and law enforcement. The future requires robust “algorithmic auditing” and the development of explainable AI (XAI) whose decisions can be understood and challenged. Furthermore, the data-hungry nature of advanced AI poses an existential threat to privacy. The prospect of ubiquitous surveillance powered by facial recognition and predictive behavior analytics could lead to authoritarian control and the erosion of personal autonomy. Establishing strong legal frameworks for data ownership, usage rights, and digital personhood will be a central political challenge of the 21st century.

The Global Brain: Addressing Grand Challenges and Exploring New Frontiers

Ultimately, AI’s greatest value may lie in its potential to address humanity’s most pressing collective challenges and expand our horizons.

Climate and Environmental Stewardship: AI is a powerful weapon in the climate crisis. It can optimize carbon capture technologies, model complex climate systems with greater accuracy to inform policy, monitor deforestation and illegal fishing via satellite imagery, and accelerate the development of fusion energy. It can help design circular economies by tracking and optimizing the lifecycle of every resource. AI, responsibly directed, could be the key tool in managing the delicate balance of our planetary ecosystem.

Conclusion

Artificial Intelligence is poised to become the defining technology of the 21st century. Its applications will permeate healthcare, education, finance, transportation, and everyday life, offering unprecedented opportunities for efficiency, personalization, and innovation. However, with great power comes great responsibility. The challenges of job displacement, ethical bias, privacy, and the potential rise of autonomous AI demand proactive governance and human oversight.

The future of AI is not predetermined it will be shaped by the choices we make today. By fostering collaboration between technologists, policymakers, and society, we can ensure that AI evolves as a tool for empowerment rather than domination.

Is Artificial Intelligence (AI) Good or Bad?

Abhishek Kumar
Roll – 68, B.Ed.
Session - 2025-27

Abstract

Artificial Intelligence (AI) has become an important part of modern life and is influencing many areas such as education, health care, industry, governance and daily activities. As the use of AI is increasing rapidly, an important question arises: Is Artificial Intelligence good or bad for society? This article examines both the positive and negative aspects of AI using a conceptual and analytical approach based on secondary sources such as research papers, reports and academic articles.

The study explains that AI offers many benefits, including faster decision-making, reduced human error and personalised services in education and health care. In education, AI tools can support teachers, provide personalised learning experiences and help identify students' learning needs. In health care, AI can assist in early disease detection, treatment planning and efficient management of resources. These applications show that AI has the potential to improve productivity, quality of services and overall human well-being.

At the same time, the article highlights several serious challenges related to the use of AI. These include job loss due to automation, threats to privacy, increased surveillance and unfair outcomes caused by biased algorithms. The misuse of AI technologies such as deepfakes and misinformation also raises ethical and social concerns. The findings suggest that AI is not naturally good or bad; instead, its impact depends on how it is designed, regulated and used by human beings.

The article concludes that with proper ethical guidelines, transparent policies and responsible use, AI can serve as a powerful tool for social development. However, without careful control and awareness, it may increase inequality and social problems.

Keywords

Artificial Intelligence, Ethics of AI, Education and AI, AI in Health Care, Automation, Algorithmic Bias, Privacy and Surveillance, Responsible Technology

Introduction

Artificial intelligence (AI) is a field of computer science and engineering that creates systems capable of performing tasks which normally require human intelligence, such as understanding language, recognizing patterns, learning from data and making decisions. In recent years AI has rapidly entered almost every corner of human life, including education, health, industry, finance, transport, governance and entertainment, so the question "Is AI good or bad?" has become very important for our society. The same technology that promises efficiency, accuracy and comfort also brings risks related to employment, privacy, bias and security; therefore, AI is often described as a "double-edged sword".

AI enthusiasts consider it the driving force of the fourth industrial revolution that can significantly increase productivity, innovation and quality of life. Critics argue that if AI develops under weak regulation and unequal power structures, it may deepen social and economic inequalities, strengthen surveillance and undermine democratic institutions. This article analyses the main benefits and risks of AI with special reference to education, health and social life, and tries to answer whether AI is ultimately good or bad for human beings.

Literature Review

As we observe that, many studies and reports discuss and find that both the bright and dark sides of AI. An overview of advantages and disadvantages by Simplilearn explains that AI reduces human error, improves decision-making, works 24×7 without fatigue and increases automation and personalization, but at the same time can cause job displacement, privacy violations, security threats and misuse in deepfakes and misinformation. Similarly, articles

from IBM (International Business Machine) and other technology organisations highlight that AI can enhance the productivity, customer experience and data-driven decisions, yet it creates challenges like dependence on technology, lack of emotional understanding and high implementation cost.

Educational literature shows that AI-powered tools such as adaptive learning platforms, intelligent tutoring systems and automated assessment can personalise learning, give teachers useful feedback and identify learning difficulties early. However, research also warns that overuse of AI may reduce critical thinking, increase plagiarism and academic dishonesty and widen the gap between resource-rich and resource-poor schools. Public-health and ethics scholars note that AI offers new possibilities for diagnosis, prediction and personalised medicine but may also increase health disparities if models are trained on biased data or deployed without attention to equity and transparency.

Popular articles and reports summarising developments up to 2024 show that AI was successfully used in drug discovery, climate modelling and early-warning systems, while generative AI and deepfakes were misused for political propaganda, hate speech and fraudulent activities. These mixed findings in the literature suggest that the impact of AI is context-dependent and requires careful human governance.

Research Methodology

From the different resources, the present article is a conceptual and analytical study based on secondary data. Relevant information about the benefits, limitations and ethical issues of AI was collected from research papers, policy reports, educational and health-related articles and authentic websites dealing with AI and its applications. The sources were selected to cover multiple dimensions—technical, educational, economic, social and ethical—so that a holistic picture of AI could be developed.

After collecting the material, it was organised into three broad themes:

(a) benefits and positive possibilities of AI

(b) risks and challenges created by AI

(c) policy and ethical suggestions for responsible use of AI.

Within each theme, examples from education, health care, business and governance were analysed in order to identify the conditions under which AI behaves more as a "good" force or a "bad" influence in society.

Results / Findings

- **Benefits and Positive Possibilities**

The first major finding is that AI significantly reduces human errors and increases the speed and quality of decision-making, especially in areas where huge amounts of data must be processed. In fields like medical diagnosis, weather prediction, fraud detection and logistics optimisation, AI systems can recognise complex patterns and correlations that human experts may overlook, thus saving time, money and sometimes even lives. Automation of repetitive tasks allows human workers to focus on creative, strategic and interpersonal activities that require emotional intelligence and moral judgement.

Another important result is that AI can increase productivity and economic growth through smart automation. In manufacturing, AI-enabled robots can perform dangerous or physically demanding tasks with consistency and accuracy, reducing accidents and losses. In services and business, AI chatbots, recommendation engines and predictive analytics improve customer service and help organisations take better decisions regarding markets, inventory and investments.

A third positive aspect is the ability of AI to provide personalised experiences. In education, adaptive systems adjust the content, pace and difficulty level according to each learner's needs and performance, which can improve engagement and learning outcomes. In health care, AI can support personalised treatment plans based on a patient's medical history, genetics and

lifestyle, while in daily life it offers customised suggestions in entertainment, shopping and communication.

- **Risks and Negative Impacts**

On the other hand, the findings also reveal serious risks. The most discussed issue is job loss and economic inequality. As AI automates routine and low-skill tasks, many traditional jobs in manufacturing, services and administration may disappear or shrink, leading to unemployment, wage reduction and job insecurity for large sections of the workforce. Without adequate re-skilling programmes, social security and creation of new kinds of work, the economic benefits of AI may concentrate in the hands of a few highly skilled professionals and large corporations.

Another major risk relates to privacy and surveillance. AI systems often rely on huge datasets containing personal information about individuals' behaviour, preferences, health and location. If such data are collected and used without informed consent, strong protection and transparency, AI can become a tool for commercial exploitation, political manipulation and even state surveillance, thereby threatening individual freedom and democratic values.

Algorithmic bias is also a serious problem. When AI models are trained on data that already reflect social prejudices based on race, gender, caste, class or region, these biases get embedded into automated decisions. This can result in unfair outcomes in credit scoring, hiring, policing, school admissions and even medical diagnosis, where certain groups may systematically receive fewer opportunities or inferior services.

- **Mixed Effects on Education, Health and Governance**

In education, AI tools can help teachers identify learning gaps, provide real-time feedback and reduce administrative workload so that they can devote more time to interactive teaching. However, if students over-rely on AI for writing assignments, solving problems or preparing for exams, it may weaken their critical and creative thinking, encourage plagiarism and erode academic honesty.

In health care, AI supports early detection of diseases, resource management and public-health surveillance, which can improve efficiency and outcomes, especially in resource-poor settings. Yet if AI models are not transparent or are trained on data from limited populations, they can perform poorly for minority communities and increase health disparities rather than reducing them.

For governance and security, AI-based surveillance and predictive systems can assist in crime prevention, disaster management and infrastructure planning. But if such technologies are used to monitor citizens without checks and balances, or to suppress dissent, they may pose a serious threat to civil liberties and participatory democracy.

Discussion

Taken together, the findings show that AI itself is value-neutral; it becomes "good" or "bad" depending on human intentions, design choices and institutional frameworks. Where AI is used to solve genuine social problems with transparency, accountability and public participation, it acts as a powerful ally of human welfare. For example, AI-driven systems for disaster-prediction, assistive technologies for persons with disabilities and tools for climate-change research clearly demonstrate how AI can support the common good when aligned with ethical goals.

At the same time, recent experiences with generative AI illustrate how easily the same technology can be misused. Cheap and convincing deepfakes, automated propaganda and fake news campaigns have already been observed in political contexts, creating confusion, polarisation and mistrust in institutions. If AI technologies are controlled mainly by powerful

corporate or political actors without democratic oversight, they can be used to influence public opinion, profile citizens and restrict freedoms in subtle ways.

In the field of education, a balanced approach is required. AI should be seen as an assistant that helps learners and teachers, not as a replacement for human interaction. When teachers integrate AI tools thoughtfully—using them for feedback, practice and differentiation while still emphasising discussion, reflection and creativity—students can benefit from both technology and human guidance. Clear rules against plagiarism, transparency about AI use and training in media literacy are essential to prevent harmful dependence and misuse.

Thus, the central issue is not whether AI is inherently good or bad, but how societies choose to govern and use it. Ethical frameworks, inclusive policies and public involvement are needed so that the tremendous power of AI is directed towards justice, sustainability and human flourishing instead of exploitation and control.

Conclusion and Suggestions

The overall conclusion of this article is that AI is a powerful but ambivalent technology. It is capable of bringing unprecedented progress in fields such as education, health, economy and environmental protection, yet it can also intensify unemployment, inequality, surveillance and misinformation if left unchecked. Therefore, AI cannot simply be labelled as completely good or completely bad; its final impact will depend on the collective choices made by governments, institutions, industries and citizens.

To ensure that AI becomes more of a blessing than a curse, certain steps are necessary. Governments should frame comprehensive AI policies that set minimum standards for transparency, data protection, safety testing and accountability, and that classify high-risk applications—such as facial recognition and predictive policing—for strict regulation or even prohibition when necessary. Educational institutions need clear guidelines on acceptable use of AI, emphasising honest writing, proper citation of AI tools and respect for intellectual property, while actively teaching students about the limitations and ethical implications of AI.

Ultimately, the responsibility of making AI "good" lies with human beings. If societies cultivate digital literacy, ethical sensitivity and democratic oversight alongside technological innovation, AI can become a tool that extends human capabilities and supports social justice. If these conditions are ignored, AI may amplify existing injustices and create new forms of domination. Hence, the future of AI will be shaped not only by engineers and algorithms but by collective moral choices in which every citizen has a stake.

References

1. Simplilearn. (2025). Advantages and disadvantages of artificial intelligence: Key pros and cons.https://www.simplilearn.com/advantages-and-disadvantages-of-artificial-intelligence-article
2. Tableau. (2017). What are the advantages and disadvantages of artificial intelligence?https://www.tableau.com/data-insights/ai/advantages-disadvantages
3. Centers for Disease Control and Prevention. (2024). Health equity and ethical considerations in using artificial intelligence in public health and medicine. Preventing Chronic Disease, 21. https://www.cdc.gov/pcd/issues/2024/24_0245.html
4. University of Illinois College of Education. (2024). AI in schools: Pros and cons.https://education.illinois.edu/about/news-events/news/article/2024/10/24/ai-in-schools--pros-and-cons
5. World Health Organization. (2024). Harnessing artificial intelligence for health. https://www.who.int/teams/digital-health-and-innovation/harnessing-artificial-intelligence-for-health

ज्ञान क्या है?

इन्द्रदेव कुमार
Roll – 87, B.Ed.
Session - 2025-27

प्रस्तावना

ज्ञान एक आंत्रिक शक्ति है जो जीवन में सरलता से नाम, शोहरत, सफलता, शक्ति और पद प्राप्त करने में हमारी सहायता प्रदान करता है। यह केवल निरंतर अभ्यास, लगन और धैर्य के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। पृथ्वी पर विराजमान हर एक प्राणी में अपने स्तर तक ज्ञान होता है। परंतु इन सभी प्राणी में मनुष्य का ज्ञान अधिक होता है। या हम यूँ कहे कि पृथ्वी पर मनुष्य को सबसे ज्ञानी प्राणी के रूप में माना जाता है। ज्ञान एक चुम्बक की भांति होता है, जो आस – पास की सूचनाओं को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। यदि हमें किसी भी चीज के बारे में बेहतर ज्ञान होगा तो उस सूचना या तथ्य को ग्रहण करना अधिक आसान होगा।

महत्वः

ज्ञान वो हथियार है जिसका प्रहार अदृष्य होता है। अतः जब कोई मनुष्य अधिक धनवान हो, शारीरिक रूप से अधिक शक्ति शाली हो तो वह अपने किसी भी चीज को हासिल करने के लिए ज्यादा तर अपने धन और शारीरिक बल का प्रयोग करते है। परंतु एक ज्ञानी मनुष्य जिसके पास दुसरे मनुष्य की भांति धन या शारीरिक बल नहीं होता लेकिन वह अपने ज्ञान से उस व्यक्ति को प्राजीत कर देता है।

ज्ञान को ग्रहण करने की कोई सीमा नहीं होती। ज्ञान एक मनुष्य अपने जन्म से मृत्यू तक सीखता है। मनुष्य जब इस पृथ्वी पर जन्म लेता है तो अन्य नवजात प्राणी के समान ही होता है लेकिन जैसे – जैसे उसके शरीर का विकास होता है वैसे – वैसे उसके ज्ञान का भी विकास होता है।

एक धनी व्यकित चाहते है कि उसका धन हमेशा उन्ही के पास रहे और हमेशा बढ़ता रहे। लेकिन एक ज्ञानी व्यक्ति ऐसा कभी नहीं चाहते वह हमेशा यही चाहते है कि वह अपना ज्ञान हर एक जरूरत मंद व्यक्ति तक पहुँचाए। ताकि उनके ज्ञान से किसी का भला हो और वह भी ज्ञानी बन पाये। क्योंकि ज्ञान को जितना बाँटा जाए उतना ही ज्ञान और अधिक बढ़ता है।

उदाहरण

बिना ज्ञान के कोई ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम नहीं हो सकते, बिना ज्ञान के कोई डॉ. भीमराव अम्बेडकर नहीं हो सकते और ना ही महात्मा गाँधी हो सकते है। ज्ञान हमें इस पृथ्वी पर कहीं अधिक सक्षम, श्रेष्ठ और परिष्कृत प्राणी बनाता है। ज्ञान ने हमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी के सभी क्षेत्र में प्रगति करने में सक्षम बनाया है जिसे हम प्राप्त करने में समर्थ है।

ज्ञान हमारे व्यक्तित्व को आकार देने और लोगों के साथ हमारे व्यवहार और व्यवहार को सही करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। ज्ञान मनुष्य को विकट परिस्थितियों से सामना करने के लिए सक्षम बनाता है।

पृथ्वी पर स्थित कई देश एक दूसरे देश से अपने आप को बेहतर साबित करने के प्रयास में रहते है या कई देश खुद को दूसरे देश से बेहतर साबित कर चुके है। अपने सैनिक स्तर पर या आर्थिक स्तर पर या आधुनिक तकनीकी की खोजो में शक्तिशाली बन पाये है तो यह सब उनके विशेष ज्ञान के कारण संभव हुआ है।

भारत ने भी विज्ञान, शोध, चिकित्सा, खेल, शिक्षा आदि के क्षेत्रों में बहुत कार्य किए हैं, लेकिन आज भी कई क्षेत्रों मे निरंतर प्रयासों के बाद भी एक विकासशील देश है, जो अब ज्ञान के आधार पर विभिन्न क्षेत्रों में विकास करने के द्वारा अधिक शक्तिशाली देश बनने के लिए निरंतर प्रयासरत है।

निष्कर्ष

ज्ञान वह शक्ति है जिसको ना कभी छिना जा सकता है और ना ही कभी चुराया जा सकता है। ज्ञान के बिना हर एक प्राणी का जीवन अंधकारमय है। जिस मनुष्य को पूर्ण ज्ञान है तो वह इस संसार का सबसे शक्तिशाली और धनवान व्यक्ति है। ज्ञान हमें नये – नये आविष्कार करने और जीवन को बेहतर तरीके से जीने का रास्ता दिखाती है। इस प्रकार हम कह सकते है कि ज्ञान संसार की सबसे शक्तिशाली शक्तियों में से एक है। जिसके बिना संसार के हर एक प्राणी का जीवन अंधकारमय है।

Mastering the Craft: Strategies for Effective Teaching and Classroom Application

Ravi Kumar
Roll – 20, B.Ed.
Session - 2025-27

Introduction

In the contemporary educational landscape, the role of a teacher has evolved from a mere transmitter of knowledge to a facilitator of human potential. Effective teaching is a delicate balance between pedagogical science and the art of human connection. As a B.Ed. trainee, I believe that the success of a classroom depends on how we bridge theoretical frameworks with concrete, everyday applications.

The Foundation of Connection: Genuine Human Relationships

Education thrives in an environment of trust. Research consistently shows that students are more cognitively engaged when they feel a personal connection with their educator.

- Classroom Application: Beyond academic instructions, practice Human-Centric Engagement. Begin each day by greeting students by their names. Dedicate a few minutes weekly for "well-being check-ins" to understand their emotional state. In moments of academic struggle, prioritize empathetic listening over immediate correction.

Clarity as a Catalyst: Setting Expectations

A structured environment minimizes anxiety and maximizes focus. When expectations are ambiguous, student energy is wasted on guessing rather than learning.

- Classroom Application: Practice Instructional Transparency. Always articulate specific learning objectives at the start of the period. Visually display classroom norms and ensure they are enforced with compassionate consistency. Use rubrics or "model examples" to demystify what constitutes high-quality work.

Beyond Passive Listening: Encouraging Active Learning

Knowledge is not something to be poured into a student; it is something they must construct. Active participation leads to higher-order thinking and better retention.

- Classroom Application: Implement Collaborative Pedagogy. Transition from lectures to "Think-Pair-Share" sessions. Replace binary (Yes/No) questions with open-ended inquiries that spark debate. Empower students through "Peer-Led Instruction," allowing them to facilitate small segments of the lesson.

The Inclusive Ecosystem: Fostering Diversity

A classroom is a microcosm of society. Every student—regardless of their background or personality—must feel like a valued stakeholder in the learning process.

- Classroom Application: Practice Social-Emotional Inclusivity. Use neutral, unbiased language and actively challenge stereotypes. Be intentional in drawing out quiet or introverted students. Periodically reorganize seating arrangements to break social barriers and encourage diverse collaboration.

5. Tailoring the Experience: Differentiated Instruction

The "one-size-fits-all" approach is an outdated relic. Effective teachers recognize that every brain is wired differently.

- Classroom Application: Utilize the VARK Model (Visual, Auditory, Read/Write, Kinesthetic). Provide a variety of assignment formats—such as posters, essays, or digital presentations—to allow students to showcase their strengths. Design "extension tasks" for accelerated learners while providing scaffolded support for those who need more time.

6. The Reflective Practitioner: Lifelong Learning

The moment a teacher stops learning, they stop being an effective educator. Growth is a continuous cycle of action and reflection.

- Classroom Application: Engage in Reflective Teaching. After each session, ask yourself: “What reached the students, and what missed the mark?” Participate in professional webinars and observe senior colleagues to adapt new strategies into your own repertoire.

7. Navigating the Future: Ethical AI Integration

In the digital age, Artificial Intelligence is a powerful ally, provided it is handled with human oversight and ethical integrity.

- Classroom Application: Implement AI-Assisted Lesson Design. Use AI tools to generate diverse practice questions or creative lesson outlines. More importantly, educate students on the ethical boundaries of AI—teaching them to use it as a "tutor" rather than a "shortcut."

8. Sustainable Teaching: Prioritizing Self-Care

Burnout is the enemy of excellence. To pour into the lives of students, a teacher’s own "well) reservoir" must be full.

- Classroom Application: Establish Professional Boundaries. Define clear lines between work and rest. Practice "Mindful Resets" during short breaks to maintain mental clarity. Never hesitate to seek mentorship or support from colleagues when the workload feels overwhelming.

Final Thought

Effective teaching is not a destination of perfection, but a journey of persistence. It is about showing up with a full heart, a clear mind, and a commitment to grow alongside your students. As we prepare to become the architects of the future, let us remember that we teach students, not just subjects.

आधुनिक युग में शिक्षा की क्रांति: स्वरूप, प्रभाव और भविष्य की चुनौतियाँ

बाबुल कुमार
Roll – 48, B.Ed.
Session - 2025-27

सारांश

आधुनिक युग ने शिक्षा के परिदृश्य को मौलिक रूप से बदल दिया है। इंटरनेट, डिजिटल उपकरणों और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) जैसी तकनीकों के समावेश ने सीखने की प्रक्रिया को पहले से कहीं अधिक सुलभ और व्यक्तिगत बना दिया है। अब शिक्षा केवल पारंपरिक किताबों या ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका मुख्य उद्देश्य छात्र का सर्वांगीण विकास करना है। इस शैक्षिक क्रांति के छात्रों पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के प्रभाव पड़े हैं। जहां एक ओर यह जटिल विषयों को समझने की गति को तेज करता है, वहीं दूसरी ओर गैजेट्स का अत्यधिक उपयोग एकाग्रता की कमी और चिड़चिड़ापन जैसी समस्याओं को जन्म दे रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि इस शक्तिशाली तकनीकी उपकरण का उपयोग विवेकपूर्ण ढंग से किया जाए ताकि इसकी प्रभावशीलता अधिकतम हो सके।

की वर्ड - आधुनिक शिक्षा, शैक्षिक क्रांति, डिजिटल लर्निंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), छात्र विकास, ऑनलाइन शिक्षा, सकारात्मक प्रभाव, नकारात्मक प्रभाव, अधिगम (Learning), तकनीकी एकीकरण।

1. परिचय: शिक्षा का बदलता स्वरुप

1.1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से वर्तमान तक

मानव सभ्यता के उदय से लेकर 20वीं सदी के अंत तक शिक्षा का स्वरूप मूलतः अपरिवर्तित रहा। यह ज्ञान के एक सीमित भंडार पर आधारित थी, जहाँ शिक्षक सूचना का प्राथमिक स्रोत होता था और कक्षाएँ चार दीवारों तक सीमित थीं। 21वीं सदी में, विशेष रूप से इंटरनेट और डिजिटल उपकरणों के आगमन ने, इस पूरी संरचना को अभूतपूर्व तरीके से बदल दिया है। शिक्षा अब केवल ज्ञान प्राप्त करने तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह ज्ञान को सृजित करने, साझा करने और लागू करने की प्रक्रिया बन गई है। परिवर्तन संसार का नियम है और यह एक सतत प्रक्रिया है। विकास के समय से लेकर आज तक, हम अपने आस-पास जो कुछ भी देखते हैं, उसमें उस परिवर्तन की झलक मिलती है। मनुष्य, अपने प्रारंभिक समय से लेकर आधुनिक समाज तक, इस परिवर्तन का अभिन्न अंग रहा है। समय के साथ, सभ्यताओं में भी व्यापक परिवर्तन हुए हैं। समाज में मानव जाति के लाभ के लिए विभिन्न प्रकार की संस्थाओं का निर्माण किया गया, और शिक्षा इस समाज की एक प्रमुख विशेषता है। स्कूल मुख्यतः एक सामुदायिक केंद्र होता है और समाज के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शैक्षिक उद्देश्यों और प्रयासों ने आधुनिक समाज को आकार दिया है और इसकी नींव रखने में मदद की है। हालाँकि समाज के कुछ कारकों ने स्कूल के विकास को प्रभावित किया है, फिर भी आधुनिक समाज ने शिक्षा को उचित महत्व देकर अपना स्थान बनाए रखा है।

एल्विन टॉफ़लर कहते हैं, "21वीं सदी के निरक्षर (अनपढ़) वे नहीं होंगे जो पढ़-लिख नहीं सकते, बल्कि वे होंगे जो सीख नहीं सकते, भूल नहीं सकते और दोबारा नहीं सीख सकते। हालाँकि हमारे देश के कोने-कोने में स्कूलों की भरमार है, लेकिन यह दुखद है कि उनमें से कुछ ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करते हैं। जैसा कि ऊपर कहा गया है, शिक्षा का अर्थ केवल पढ़ने-लिखने की क्षमता नहीं है, बल्कि इसका अर्थ है व्यक्ति का संपूर्ण विकास। इसलिए, शिक्षा को व्यक्ति के विकास के सामाजिक, शारीरिक, मानसिक और रचनात्मक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। जब हम स्कूल और युवा मन पर उसकी भूमिका की बात करते हैं, तो हम समाज द्वारा अपने युवाओं को ढालने के लिए प्रस्तुत चुनौतियों को कैसे नज़रअंदाज़ कर सकते हैं? हमारे युवाओं के हृदय में निहित मूल्य और विचार ही व्यक्ति के आधुनिकीकरण का मार्ग प्रशस्त करेंगे। संक्षेप में, हम उन हाथों को नहीं भूल सकते जो इन युवा मन को गढ़ते हैं और उन्हें दृढ़ मन और विकसित व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों में बदलते हैं। व्यक्तित्व।

एच.जी. वेल्स लिखते हैं, "शिक्षक ही इतिहास का वास्तविक निर्माता है।" शिक्षक बच्चे के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और उसका उद्देश्य रचनात्मक सोच और कार्य, श्रवण, जिज्ञासा, सतर्कता, विश्लेषणात्मक सोच और अनुप्रयोग के बीज बोना होना चाहिए। इसलिए एक कुशल शिक्षक वह है जो युवा मन को अनुशासित, प्रोत्साहित, प्रेरित और प्रेमपूर्वक पोषित करके एक सुंदर मानव बनाता है। आधुनिक समाज शिक्षकों के समक्ष शिक्षा को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों और परिवेश से जोड़ने की चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है। इसलिए समाज शिक्षकों से अपेक्षा करता है कि वे अपनी बुद्धि को तेज़ करें और न केवल अपने विद्यार्थियों को शिक्षित करें, बल्कि बच्चे के विकास के मुख्य क्षेत्र, अर्थात् संज्ञानात्मक, मनोवैज्ञानिक और कार्यात्मक विकास पर भी ध्यान दें। जैसा कि चैनिंग ने उद्धृत किया है, "समाज की महान आशा व्यक्तिगत चरित्र में निहित है"। शिक्षक वह सेतु है जो युवाओं को समाज से जोड़ता है।

1.2. शिक्षा क्रांति की परिभाषा और घटक

आधुनिक शिक्षा क्रांति को केवल ऑनलाइन कक्षाओं के रूप में देखना अपर्याप्त है। यह क्रांति तीन प्रमुख स्तंभों पर टिकी है:

1. डिजिटलीकरण (Digitalization): भौतिक सामग्री का डिजिटल स्वरूप में रूपांतरण (जैसे ई-बुक्स, पीडीएफ नोट्स)।
2. वर्चुअलाइज़ेशन (Virtualization): भौतिक कक्षा की जगह आभासी शिक्षण वातावरण (जैसे ज़ूम, गूगल मीट, MOOCs)।
3. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का एकीकरण: मशीन लर्निंग और डेटा एनालिटिक्स का उपयोग करके व्यक्तिगत शिक्षण अनुभव (Personalized Learning) प्रदान करना।

यह क्रांति छात्रों के लिए अधिगम (Learning) को अधिक सुगम, व्यक्तिगत और इंटरैक्टिव बनाती है।

1.3. लेख का उद्देश्य

हमारे इस लेख का उद्देश्य आधुनिक शिक्षा में तकनीकी एकीकरण के बहुआयामी प्रभावों का गहन विश्लेषण करना है। इसमें छात्रों पर पड़ने वाले सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभावों का मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और शैक्षिक दृष्टिकोण से मूल्यांकन किया जाएगा, तथा भविष्य के लिए एक संतुलित मार्ग सुझाया जाएगा।

2. शिक्षा में तकनीकी क्रांति के प्रमुख आयाम

आधुनिक शिक्षा को जिन तकनीकों ने परिभाषित किया है, वे केवल उपकरण नहीं हैं, बल्कि सीखने की प्रक्रिया को नया आकार देने वाले प्लेटफॉर्म हैं।

2.1. व्यापक पहुँच और लोकतंत्रीकरण

डिजिटल लर्निंग ने भौगोलिक बाधाओं को तोड़ दिया है।

- MOOCs (Massive Open Online Courses): कॉर्सेरा, एडएक्स जैसे प्लेटफॉर्म पर विश्व के शीर्ष विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम मुफ्त या कम लागत पर उपलब्ध हैं। यह शिक्षा के लोकतंत्रीकरण को बढ़ावा देता है, जिससे आर्थिक रूप से कमजोर और दूरदराज के क्षेत्रों के छात्र भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर पाते हैं।
- अखंड शिक्षा (Continuous Learning): कामकाजी पेशेवर भी अपने घर या कार्यस्थल से नए कौशल सीख सकते हैं, जिससे आजीवन सीखने (Lifelong Learning) की अवधारणा मजबूत हुई है।

2.2. व्यक्तिगत शिक्षण (Personalized Learning) और AI

AI (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) इस क्रांति का सबसे महत्वपूर्ण घटक है।

- अनुकूली शिक्षण प्रणाली (Adaptive Learning Systems): AI छात्रों के प्रदर्शन, सीखने की गति और ज्ञान अंतराल (Gap) का विश्लेषण करता है। यह स्वतः ही पाठ्यक्रम सामग्री को समायोजित करता है, जिससे तेज सीखने वाले को उन्नत सामग्री और संघर्ष कर रहे छात्र को अधिक समर्थन मिलता है।
- स्वचालित मूल्यांकन और प्रतिक्रिया: AI-आधारित उपकरण तत्काल प्रतिक्रिया (Feedback) प्रदान करते हैं, जिससे छात्र को अपनी गलतियों को तुरंत सुधारने का मौका मिलता है, जो पारंपरिक शिक्षण में असंभव था।
- चैटबॉट्स और वर्चुअल ट्यूटर्स: AI-संचालित चैटबॉट्स जटिल प्रश्नों का 24/7 उत्तर देते हैं, जिससे छात्र को मदद के लिए अगले दिन का इंतजार नहीं करना पड़ता।

2.3. इंटरैक्टिव और इमर्सिव टूल्स

तकनीक ने सीखने के अनुभव को अधिक आकर्षक बना दिया है।

- वर्चुअल रियलिटी (VR) और ऑगमेंटेड रियलिटी (AR): VR/AR का उपयोग करके छात्र जटिल वैज्ञानिक प्रयोगों को सुरक्षित रूप से कर सकते हैं, ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण कर सकते हैं, या मानव शरीर रचना (Anatomy) को 3D में देख सकते हैं। यह अमूर्त अवधारणाओं को मूर्त बनाता है।
- गेमिफिकेशन (Gamification): सीखने की प्रक्रिया में गेमिंग तत्वों (जैसे पॉइंट, लीडरबोर्ड, बैज) को जोड़कर छात्रों की रुचि और प्रेरणा को बढ़ाया जाता है।

2.4. शिक्षक की भूमिका में परिवर्तन

आधुनिक युग में शिक्षक केवल सूचना प्रदाता नहीं रह गए हैं। उनकी भूमिका अब सुविधाप्रदाता (Facilitator), संरक्षक (Mentor) और मार्गदर्शक की हो गई है। शिक्षक अब कक्षा में कम समय व्याख्यान देने और अधिक समय छात्रों की शंकाओं को दूर करने तथा उन्हें उच्च-क्रम चिंतन (Higher-Order Thinking) कौशल विकसित करने में मदद करते हैं।

3. छात्रों पर सकारात्मक प्रभाव: सशक्तिकरण और विकास

शिक्षा क्रांति का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम छात्रों का सशक्तिकरण है।

3.1. अधिगम की गति में तेजी और दक्षता

डिजिटल संसाधनों की त्वरित उपलब्धता (on-demand access) के कारण छात्र जटिल विषयों को अपनी सुविधा और गति से सीख सकते हैं।

- पुनरावृत्ति की सुविधा: छात्र एक कठिन व्याख्यान को जितनी बार चाहें उतनी बार देख सकते हैं, जिससे विषय वस्तु की समझ गहरी होती है।
- जटिल सूचना का सरलीकरण: वीडियो, एनिमेशन और इंटरैक्टिव सिमुलेशन (Simulations) के माध्यम से, जो विषय पहले कठिन लगते थे, वे अब दृश्य रूप से सरल और स्पष्ट हो जाते हैं।

3.2. आलोचनात्मक चिंतन (Critical Thinking) और समस्या-समाधान कौशल

हालांकि कुछ लोग तर्क देते हैं कि AI सोच को कम करता है, लेकिन इसका सही उपयोग आलोचनात्मक चिंतन को बढ़ावा देता है।

- सूचना का अतिभार (Information Overload) और छानबीन: इंटरनेट पर लाखों स्रोत उपलब्ध हैं। छात्रों को अब यह सीखना पड़ता है कि कौन सी सूचना विश्वसनीय है और कौन सी नहीं (Evaluating Credibility)। यह कौशल ही आधुनिक आलोचनात्मक चिंतन की नींव है।
- बहुआयामी समाधान: ऑनलाइन माध्यम एक ही समस्या के कई दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं, जिससे छात्र विभिन्न समाधानों का विश्लेषण करना और सबसे प्रभावी समाधान चुनना सीखते हैं।

3.3. सहयोग (Collaboration) और वैश्विक नागरिकता

तकनीकी उपकरण छात्रों को भौगोलिक सीमाओं से परे सहयोग करने की अनुमति देते हैं।

- वर्चुअल प्रोजेक्ट टीम: छात्र दुनिया के विभिन्न हिस्सों में रहने वाले साथियों के साथ ऑनलाइन प्लेटफॉर्म (जैसे गूगल डॉक्स, ट्रेलो) पर मिलकर काम कर सकते हैं। यह उन्हें वैश्विक कार्यबल के लिए तैयार करता है।
- सांस्कृतिक समझ: विभिन्न संस्कृतियों के छात्रों के साथ जुड़ने से उनमें सांस्कृतिक संवेदनशीलता (Cultural Sensitivity) और वैश्विक नागरिकता की भावना विकसित होती है।

3.4. विशिष्ट कौशल का विकास

आधुनिक शिक्षा केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित नहीं है। यह विशिष्ट, भविष्य-उन्मुख कौशल विकसित करती है:

- डिजिटल साक्षरता (Digital Literacy): टेक्नोलॉजी का उपयोग करने की क्षमता अब एक मूलभूत कौशल है।
- डेटा विश्लेषण: छात्र अब डेटा-आधारित उपकरणों का उपयोग करना सीखते हैं।
- अनुकूलनशीलता (Adaptability): निरंतर बदलती तकनीक के साथ काम करने से छात्र तेजी से बदलते परिवेश के अनुकूल बनना सीखते हैं।

4. छात्रों पर नकारात्मक प्रभाव और प्रमुख चुनौतियाँ

जहां तकनीक वरदान है, वहीं इसके अनियंत्रित उपयोग और अनियोजित कार्यान्वयन के कई गंभीर नकारात्मक परिणाम भी सामने आए हैं।

4.1. डिजिटल विचलन और एकाग्रता की कमी

यह सबसे बड़ी चुनौती है। उपकरणों का उपयोग करते समय ध्यान भटकना (Distraction) स्वाभाविक है।

- सोशल मीडिया और गेमिंग का प्रलोभन: पढ़ाई के लिए दिए गए मोबाइल या लैपटॉप का अधिकांश समय सोशल मीडिया फीड स्क्रॉल करने या ऑनलाइन गेम खेलने में व्यतीत होता है।
- सतही समझ (Superficial Understanding): त्वरित और बहु-कार्य (Multi-tasking) की आदत के कारण छात्र किसी एक विषय पर गहराई से ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते हैं। सूचना को केवल 'खोजने' और 'कॉपी-पेस्ट' करने की आदत उन्हें 'गहन अध्ययन' से दूर ले जाती है।

4.2. मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक अलगाव

लंबे समय तक स्क्रीन का उपयोग छात्रों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर बुरा असर डालता है।

- चिड़चिड़ापन और तनाव: अत्यधिक डिजिटल जुड़ाव के कारण वास्तविक सामाजिक मेल-जोल कम होता है, जिससे अकेलेपन और सामाजिक अलगाव की भावना बढ़ सकती है। नींद के पैटर्न में व्यवधान भी आम है।
- ऑनलाइन बदमाशी (Cyberbullying) और डिजिटल तनाव: सोशल मीडिया पर लगातार तुलना और ऑनलाइन बदमाशी के कारण छात्रों में आत्म-सम्मान की कमी और चिंता (Anxiety) बढ़ सकती है।

4.3. बौद्धिक चिंतन शक्ति में कमी (Intellectual Stagnation)

AI और त्वरित समाधानों पर अत्यधिक निर्भरता छात्रों के सोचने की मौलिक क्षमता को कुंद कर सकती है।

- समस्या-समाधान की जिम्मेदारी से बचना: जब ChatGPT या Google कुछ सेकंड में उत्तर दे सकता है, तो छात्र जटिल समस्याओं पर समय और मानसिक ऊर्जा लगाना बंद कर देते हैं।
- 'उपकरणों पर निर्भरता' सिंड्रोम: छात्र गणना (Calculations) और वर्तनी (Spelling) जैसी बुनियादी क्षमताओं के लिए भी उपकरणों पर निर्भर होने लगते हैं, जिससे उनकी अंतर्निहित संज्ञानात्मक क्षमताएँ (Cognitive Abilities) कमजोर हो जाती हैं।

4.4. डिजिटल डिवाइड (Digital Divide) और असमानता

तकनीक शिक्षा को सुलभ बनाती है, लेकिन यह एक नया सामाजिक और आर्थिक विभाजन भी पैदा करती है।

- बुनियादी ढांचे की कमी: गरीब या ग्रामीण क्षेत्रों में छात्रों के पास तेज़ इंटरनेट, बिजली या उच्च गुणवत्ता वाले उपकरण नहीं हैं।
- तकनीकी साक्षरता का अभाव: शिक्षकों और अभिभावकों के एक बड़े हिस्से में डिजिटल उपकरणों के प्रभावी उपयोग की साक्षरता नहीं है, जिससे वे छात्रों को सही मार्गदर्शन नहीं दे पाते हैं। यह असमानता वंचित छात्रों को और पीछे धकेलती है।

4.5. अकादमिक सत्यनिष्ठा (Academic Integrity) का संकट

ऑनलाइन संसाधनों और AI के कारण परीक्षा और असाइनमेंट में नकल करना आसान हो गया है।

- AI द्वारा असाइनमेंट लेखन: AI टूल (जैसे GPT-4) का उपयोग करके छात्र बिना किसी प्रयास के उच्च गुणवत्ता वाले निबंध और शोध पत्र तैयार कर लेते हैं, जिससे उनकी रचनात्मकता और मौलिक लेखन कौशल का विकास रुक जाता है।
- ऑनलाइन परीक्षा में धोखाधड़ी: रिमोट प्रॉक्टरिंग (Remote Proctoring) के बावजूद, ऑनलाइन परीक्षाओं में धोखाधड़ी के नए तरीके सामने आ रहे हैं, जिससे प्रमाणन (Certification) की विश्वसनीयता पर सवाल उठते हैं।

5. एक संतुलित भविष्य के लिए मार्ग और सुझाव

समाज एक बड़े परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। यह प्रश्न उठ सकता है कि क्या यह सकारात्मक बदलावों के लिए एक उद्यमी के रूप में उभरेगा और एक सुसंस्कृत और प्रगतिशील दुनिया का पर्याय बनेगा या नहीं। ऐसे समय में, शिक्षा ही एकमात्र तरीका है जिससे हम अपने समाज की बुराइयों से लड़ सकते हैं और अपनी अगली पीढ़ी के लिए स्वच्छता अभियान चला सकते हैं। कन्या भ्रूण हत्या, बाल श्रम, भेदभाव जैसी बुराइयाँ लिंग, जाति और धर्म के आधार पर भेदभाव को केवल इसी साधन से समाप्त किया जा सकता है। आधुनिक समाज में शिक्षक की भूमिका बहुआयामी है। यहाँ एक शिक्षक केवल एक शिक्षक ही नहीं, बल्कि एक कुम्हार भी है जो युवा मन को गढ़ता है, जो कल दुनिया का नेतृत्व करेंगे। उनकी देखभाल करना, उनकी रक्षा करना, उन्हें शिक्षित करना, उन्हें समझना और उनकी मदद करना, ये कुछ ही भूमिकाएँ हैं जो वह निभाता है। समाज शायद कभी शिक्षक के महत्व को समझ न पाए, लेकिन सच्चाई यह है कि उनकी मदद के बिना कोई भी समाज कभी नहीं बन सकता।

एक कहावत है, "जो हाथ पालने को झुलाता है, वही दुनिया पर राज करता है"। इसी से प्रेरित होकर, मैं कहूँगा, "जो हाथ बच्चे को सिखाता है, वही समाज को गढ़ता है।" आधुनिक समाज ने शिक्षक के कंधों पर एक बहुत ही महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी डाल दी है, यानी समाज के निर्माण के लिए एक संपूर्ण व्यक्ति के विकास और विकास का ध्यान रखना। शिक्षकों को आदर्श बनना चाहिए और समाज से सभी बुराइयों को दूर करने और इसे एक सुंदर दुनिया में बदलने में मदद करनी चाहिए जहाँ सभी शांति और खुशी से रह सकें। इसलिए हमारा दृष्टिकोण "एक बेहतर समाज के लिए समग्र विकास" होना चाहिए। आधुनिक शिक्षा की क्रांति को न तो पूरी तरह से खारिज किया जा सकता है और न ही आँख बंद करके अपनाया जा सकता है। एक प्रभावी शैक्षिक मॉडल संतुलन (Blended Learning) पर आधारित होना चाहिए।

5.1. हाइब्रिड मॉडल (Blended Learning) का क्रियान्वयन

भविष्य की शिक्षा भौतिक कक्षाओं और डिजिटल संसाधनों का सर्वोत्तम मिश्रण होगी:

- कक्षा में मानवीय संपर्क: शिक्षक को भावनात्मक विकास, नैतिक शिक्षा और जटिल संवाद (Discussion) पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जहां मानवीय हस्तक्षेप आवश्यक है।
- डिजिटल माध्यम का उपयोग: डेटा, सूचना, सिमुलेशन और त्वरित प्रतिक्रिया के लिए टेक्नोलॉजी का उपयोग किया जाना चाहिए।

5.2. डिजिटल साक्षरता और नैतिक उपयोग पर जोर

शिक्षा प्रणाली को डिजिटल नागरिकता (Digital Citizenship) को एक अनिवार्य विषय बनाना चाहिए।

- उपयोग की नैतिकता: छात्रों को सिखाया जाना चाहिए कि AI का उपयोग सीखने के लिए करना है, न कि नकल करने के लिए। उन्हें AI-जनित सामग्री को पहचानना और उसका संदर्भ देना सिखाया जाना चाहिए।
- स्क्रीन टाइम प्रबंधन: स्कूलों और अभिभावकों को मिलकर छात्रों के लिए स्वस्थ स्क्रीन टाइम दिशानिर्देश (Guidelines) लागू करने चाहिए।

5.3. शिक्षकों का निरंतर प्रशिक्षण

शिक्षक ही इस क्रांति की सफलता की कुंजी हैं। उन्हें लगातार नए डिजिटल उपकरणों और शैक्षणिक तकनीकों (Pedagogies) में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए ताकि वे AI को कक्षा में एक प्रभावी सहायक के रूप में उपयोग कर सकें, न कि खतरा।

5.4. बुनियादी कौशल को प्राथमिकता

तकनीकी सुविधाएँ कितनी भी उन्नत क्यों न हों, बुनियादी गणितीय गणना, मौलिक लेखन और तार्किक तर्क (Logical Reasoning) जैसे कौशल को कभी भी उपेक्षित नहीं किया जाना चाहिए। इन्हें मानसिक अभ्यास और मूल्यांकन का आधार बने रहना चाहिए।

5.5. भावनात्मक और सामाजिक अधिगम (SEL)

डिजिटल दुनिया के तनाव का मुकाबला करने के लिए, स्कूलों को भावनात्मक और सामाजिक अधिगम (Social and Emotional Learning - SEL) पर जोर देना चाहिए। इसमें तनाव प्रबंधन, सहानुभूति (Empathy) और प्रभावी संचार शामिल है।

6. निष्कर्ष (Conclusion)

आधुनिक युग में शिक्षा में आई क्रांति एक अपरिहार्य और शक्तिशाली घटना है। इसने अधिगम को पहले से कहीं अधिक सुलभ, व्यक्तिगत और व्यापक बनाया है, जिससे लाखों वंचित छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला है। नई तकनीकें—विशेष रूप से AI—छात्रों की सीखने की गति को बढ़ा रही हैं और उन्हें भविष्य के लिए आवश्यक डिजिटल कौशल से लैस कर रही हैं। हालांकि, यह क्रांति एक दोधारी तलवार है। छात्रों का ध्यान भटकना, मानसिक निष्क्रियता और डिजिटल डिवाइड जैसी चुनौतियाँ गंभीर हैं, जिन पर तुरंत ध्यान देने की आवश्यकता है। इन चुनौतियों का सामना केवल प्रतिबंधों से नहीं, बल्कि विवेकपूर्ण उपयोग, डिजिटल साक्षरता और नैतिक मार्गदर्शन के माध्यम से किया जा सकता है।

शिक्षा का भविष्य मनुष्य और मशीन के बीच सहजीवन पर निर्भर करता है, जहाँ AI एक सहायक उपकरण के रूप में काम करे, न कि ज्ञान के अंतिम स्रोत के रूप में। सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि हम कैसे प्रौद्योगिकी का उपयोग छात्रों को गहन चिंतन करने, आलोचनात्मक रूप से सोचने और मानवीय मूल्यों को बनाए रखने के लिए प्रेरित करते हैं। यदि हम संतुलन साध पाए, तो यह क्रांति मानव पूंजी और समाज के लिए एक उज्जवल भविष्य का निर्माण करेगी।

1. Chen, S., & Li, Y. (2023). The role of artificial intelligence in personalized learning: A meta-analysis of student outcomes. Educational Technology Research and Development, 71(4), 1205–1230. https://doi.org/10.1007/s11423-023-09756-1
2. Van Dijk, J. A. G. M. (2020). The digital divide (4th ed.). Polity Press.
3. Siemens, G., & Downes, S. (2021). Connectivism and the changing landscape of education. In W. S. Newmann & A. J. S. (Eds.), The Cambridge handbook of instructional technology (pp. 58–80). Cambridge University Press.

युवाओं में बढ़ती प्रतिस्पर्धा: सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव

केशव कुमार
Roll – 02, B.Ed.
Session - 2025-27

शोध सार

हमारा यह आलेख भारत सहित विश्व के युवाओं में तीव्र होती शैक्षिक एवं व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा के द्विमुखी प्रभावों के विश्लेषण का एक छोटा सा प्रयास है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB 2022) के अनुसार छात्र आत्महत्याओं में 4.5% वार्षिक वृद्धि दर्ज की गई है, जिनमें 70% से अधिक मामले परीक्षा और करियर दबाव से जुड़े हैं। दूसरी ओर UNESCO (2023) एवं World Economic Forum (2024) की रिपोर्ट दर्शाती है कि उच्च प्रतिस्पर्धी देशों (भारत, चीन, दक्षिण कोरिया) में स्टार्टअप घनत्व और तकनीकी नवाचार विश्व औसत से 3-5 गुना अधिक है। यह अध्ययन प्रमाणित करता है कि प्रतिस्पर्धा कौशल-विकास और आर्थिक प्रगति को बढ़ाती है, परंतु मानसिक स्वास्थ्य संकट, रचनात्मकता ह्रास और सामाजिक असमानता को भी गहराती है। संतुलित शिक्षा नीति और मानसिक स्वास्थ्य सहायता की तत्काल आवश्यकता है।

कीवर्ड (Keywords): युवा प्रतिस्पर्धा, हाइपर-कंपीटिशन, छात्र आत्महत्या, मानसिक स्वास्थ्य, कोचिंग संस्कृति, कौशल विकास, स्टार्टअप, यूनिकॉर्न, बर्नआउट, सामाजिक असमानता, अपस्किलिंग, JEE-NEET, UPSC, कोटा ट्रैजेडी और भारतीय युवा

प्रस्तावना

आधुनिक भारत का युवा वर्ग एक अनोखी द्वंद्वात्मक स्थिति से गुजर रहा है। एक ओर, वैश्वीकरण, तकनीकी क्रांति और आर्थिक उदारीकरण ने युवाओं के सामने अवसरों का विशाल द्वार खोल दिया है, तो दूसरी ओर, तीव्र होती प्रतिस्पर्धा ने उनके जीवन को अत्यधिक दबावपूर्ण बना दिया है। भारत की जनसंख्या का लगभग 65% हिस्सा 35 वर्ष से कम आयु का है, जो इसे विश्व का सबसे युवा देश बनाता है। यह "डेमोग्राफिक डिविडेंड" देश की आर्थिक प्रगति का प्रमुख इंजन माना जाता है, किंतु हाइपर-कंपीटिशन के इस दौर में युवा मानसिक स्वास्थ्य संकट, बेरोजगारी और असमानता की गहरी खाई में फंसते जा रहे हैं।JEE, NEET, UPSC जैसी परीक्षाओं में लाखों अभ्यर्थी भाग लेते हैं, जहाँ सफलता दर बेहद कम होती है—उदाहरणस्वरूप, JEE Mains 2024 में 14 लाख से अधिक परीक्षार्थी थे, जबकि IIT सीटें मात्र हजारों में। इसी प्रकार, UPSC में सफलता दर 0.2% से भी कम है। CMIE के आँकड़ों के अनुसार, युवा बेरोजगारी दर 40% से ऊपर बनी हुई है, जो गुणवत्तापूर्ण रोजगार की कमी को उजागर करती है।यह प्रतिस्पर्धा न केवल शैक्षिक क्षेत्र तक सीमित है, बल्कि व्यावसायिक जीवन, सोशल मीडिया और सामाजिक अपेक्षाओं तक फैली हुई है। कोचिंग संस्कृति, विशेषकर कोटा जैसे केंद्रों में, जहाँ 2023 में 26 छात्रों ने आत्महत्या की (और 2024-2025 में भी मामले जारी), परीक्षा दबाव को चरम पर पहुँचा देती है। NCRB के नवीनतम आँकड़ों (2023) से पता चलता है कि छात्र आत्महत्याएँ दस वर्षों में 65% बढ़ी हैं, जो कुल आत्महत्याओं का 8.1% हिस्सा हैं। यह संकट केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक और नीतिगत विफलता का प्रतीक है।प्रतिस्पर्धा कौशल विकास और नवाचार को बढ़ावा देती है—भारत विश्व में तीसरे स्थान पर यूनिकॉर्न स्टार्टअप्स के मामले में है—किंतु यह मानसिक स्वास्थ्य को क्षति पहुँचाती है, रचनात्मकता को कुंठित करती है और सामाजिक असमानता को गहराती है।

युवाओं में बढ़ती प्रतिस्पर्धा के सकारात्मक प्रभावों में तेज कौशल विकास, उद्यमशीलता और आर्थिक योगदान शामिल हैं। LinkedIn और IMF जैसे स्रोत बताते हैं कि भारतीय युवा AI, डेटा साइंस जैसे क्षेत्रों में तेजी से अपस्किलिंग कर रहे हैं, जो GDP वृद्धि में प्रमुख भूमिका निभा रहा है। हालाँकि, नकारात्मक पक्ष अधिक गंभीर है: बर्नआउट, चिंता विकार और आत्महत्या की बढ़ती दरें। Oxfam और अन्य रिपोर्टें शिक्षा व स्वास्थ्य में असमानता को रेखांकित करती हैं, जहाँ गरीब व वंचित वर्ग पीछे छूट जाता है।यह आलेख इन द्विमुखी प्रभावों का विश्लेषण करता है, ताकि संतुलित दृष्टिकोण अपनाकर युवाओं को सशक्त बनाया जा सके। आवश्यकता है शिक्षा नीति में सुधार की, मानसिक स्वास्थ्य सहायता की और समाज में "सफलता" की परिभाषा को पुनर्परिभाषित करने की। तभी भारत का युवा वास्तव में राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति बनेगा, न कि संकट का शिकार।

प्रतिस्पर्धा का वर्तमान परिदृश्य

आज भारत का युवा "हाइपर-कंपीटिशन" के दौर से गुजर रहा है। JEE-Mains 2024 में 14 लाख से अधिक और UPSC-2023 में 13 लाख अभ्यर्थी थे, जबकि सफलता दर क्रमशः 1.8% और 0.08% रही। CMIE (2024) के अनुसार हर साल 2.5 करोड़ युवा नौकरी बाजार में प्रवेश करते हैं, पर गुणवत्तापूर्ण रोजगार केवल 10-12% को ही मिल पाता है। यह आँकड़े बताते हैं कि आज की प्रतिस्पर्धा जीवन-मरण का प्रश्न बन चुकी है।

सकारात्मक पक्ष

1. तेज़ कौशल विकास एवं नवाचार

LinkedIn (2023) के अनुसार पिछले 5 वर्षों में भारतीय युवाओं ने AI और डेटा साइंस जैसे कौशलों में 74% अपस्किलिंग की। भारत 2024 में 119 यूनिकॉर्न के साथ तीसरे स्थान पर है (Hurun 2024)।

2. आर्थिक योगदान

IMF (2024) के अनुसार भारत की 7.5% GDP वृद्धि में 68% योगदान 35 वर्ष से कम आयु के युवाओं का है।

3. उद्यमशीलता

Mudra एवं Stand-Up India में 80% से अधिक लाभार्थी युवा हैं।

नकारात्मक पक्ष

1. मानसिक स्वास्थ्य संकट

NCRB 2022 के अनुसार भारत में छात्र आत्महत्या की दर विश्व में सर्वाधिक है। कोटा में 2015-2023 तक 150+ छात्रों ने आत्महत्या की। Lancet (2023): भारतीय किशोरों में चिंता विकार 18.7% (वैश्विक औसत से दोगुना)।

2. रचनात्मकता में कमी

Nature Index 2024 में भारत शोध गुणवत्ता में 9वें स्थान पर है, पर जनसंख्या अनुपात में बहुत पीछे।

3. असमानता

Oxfam India 2024 के अनुसार टॉप कॉलेजों में 70% सीटें शीर्ष 10% अमीर परिवारों के बच्चों की हैं।

4. बर्नआउट

WHO-ICMR (2023) के अनुसार 58% भारतीय युवा (18-29 वर्ष) बर्नआउट की स्थिति में हैं।

उपसंहार

प्रतिस्पर्धा जीवन का अटूट हिस्सा है और यह मानव विकास का प्रमुख चालक रही है। भारत जैसे विकासशील देश में, जहाँ युवा जनसंख्या विश्व में सर्वाधिक है, यह प्रतिस्पर्धा आर्थिक प्रगति और नवाचार का इंजन बन सकती है। हमने देखा कि उच्च प्रतिस्पर्धी वातावरण ने भारतीय युवाओं को कौशल विकास, उद्यमशीलता और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यूनिकॉर्न स्टार्टअप्स की संख्या, तकनीकी नवाचार और GDP में युवाओं का योगदान इसकी सकारात्मकता को प्रमाणित करता है।किंतु यही प्रतिस्पर्धा, जब असंतुलित हो जाती है, विनाशकारी सिद्ध होती है। NCRB के आँकड़े बताते हैं कि छात्र आत्महत्याएँ दशक में 65% बढ़ी हैं, कोटा जैसी कोचिंग फैक्टरियाँ मानसिक स्वास्थ्य संकट का केंद्र बन गई हैं, और युवा बेरोजगारी व बर्नआउट समाज को खोखला कर रहे हैं।यह द्वंद्व हमें सोचने पर मजबूर करता है कि क्या हमारी शिक्षा प्रणाली वास्तव में युवाओं को सशक्त बना रही है या उन्हें रैंक और मार्क्स की दौड़ में कुचल रही है? परीक्षा-केंद्रित शिक्षा ने रचनात्मकता को मार डाला है, जबकि असमानता ने अवसरों को सीमित कर दिया है। Oxfam रिपोर्टें स्पष्ट करती हैं कि शीर्ष कॉलेजों की सीटें अमीर वर्ग के पास केंद्रित हैं, जिससे सामाजिक गतिशीलता रुक जाती है। यदि हम इस संकट को अनदेखा करते रहे, तो हमारा डेमोग्राफिक डिविडेंड बोझ बन जाएगा।समाधान संतुलन में निहित है। शिक्षा नीति को जीवन-कौशल, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और मानसिक स्वास्थ्य पर केंद्रित करना होगा। स्कूलों व कॉलेजों में अनिवार्य काउंसलिंग, पियर सपोर्ट ग्रुप और तनाव प्रबंधन कार्यक्रम शुरू करने चाहिए। सरकार को ग्रामीण व वंचित युवाओं के लिए समान अवसर सुनिश्चित करने होंगे—स्कॉलरशिप, फ्री कोचिंग और स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम्स के माध्यम से। कोचिंग संस्कृति को नियंत्रित करना, परीक्षाओं को बहु-आयामी बनाना और सोशल मीडिया के दुष्प्रभावों पर अंकुश लगाना आवश्यक है। समाज को "रैंक" से ऊपर "खुशहाल व्यक्तित्व" को महत्व देना होगा—माता-पिता व शिक्षक अपेक्षाओं को यथार्थवादी बनाएँ, सफलता की परिभाषा को व्यापक करें।यदि हम इन कदमों को उठाते हैं, तो प्रतिस्पर्धा एक सकारात्मक शक्ति बनेगी जो युवाओं को नवाचार व नेतृत्व के लिए प्रेरित करेगी। भारत का युवा न केवल देश का, बल्कि विश्व का भविष्य है। तभी हम एक ऐसे समाज का निर्माण कर पाएँगे जहाँ प्रतिस्पर्धा विकास का साधन बने, न कि विनाश का। यह समय की माँग है कि हम युवाओं की आवाज सुनें, उनके दर्द को समझें और उन्हें सशक्त बनाएँ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (2022). क्राइम इन इंडिया 2022.

1. UNESCO (2023). Global Education Monitoring Report.
2. World Economic Forum (2024). Future of Jobs Report.
3. CMIE (2024). Unemployment in India 2023-24.
4. Hurun Global Unicorn Index 2024

Classroom Management: A Happy Classroom Inculcated with Moral Ethics

Ajay Kumar
Roll – 20, B.Ed.
Session - 2024-26

Introduction

Education is not only the transmission of knowledge from teacher to student; it is a holistic process that shapes the intellectual, emotional, social, and moral dimensions of a student. At the heart of this process lies classroom management, which determines how effectively teaching and learning occur. A well-managed classroom provides a structured, supportive, and positive environment where students feel safe to explore ideas and express themselves.

In today's rapidly changing world, academic excellence alone is insufficient. Schools must also focus on nurturing values such as honesty, empathy, respect, responsibility, and cooperation.

A Happy Classroom inculcated with moral ethics represents an ideal learning space where discipline is guided by values rather than fear, and happiness emerges from mutual respect and trust. Such a classroom promotes not only cognitive growth but also character development.

Important Quotations on Classroom Management, Happiness & Moral Ethics "Education without values, as useful as it is, seems rather to make man a cleverer devil." **C. S. Lewis** "The function of education is to teach one to think intensively and to think critically, with character." **Martin Luther King Jr**. "Children must be taught how to think, not what to think." Margaret Mead "A good teacher is like a candle. it consumes itself to light the way for others." **Mustafa Kemal Atatürk** "The best classrooms are those where respect, empathy, and joy guide discipline." Educational Philosophy Flowchart

Classroom Management
⬇
Moral Ethics (Respect, Honesty, Responsibility)
⬇
Positive Discipline & Self-Control
⬇
Emotional Safety & Trust
⬇
Happy Classroom Environment
⬇
Holistic Development of Students

Meaning and Concept of Classroom Management

Classroom management refers to the techniques, strategies, and practices used by teachers to create and maintain an orderly, productive, and positive learning environment.

Traditionally, classroom management was associated with strict discipline and control. However, modern educational philosophy emphasizes positive classroom management, which focuses on guidance, encouragement, and self-discipline.

When management practices are integrated with moral ethics, students internalize values and regulate their own behavior. Thus, classroom management becomes a tool for character building rather than mere behavior control.

Understanding the Concept of a Happy Classroom

Happiness in the classroom refers to the ideal communication between a teacher and the students where students focus on understanding by their inner self not because of fear or pressure of teacher.

In a happy classroom:

- Students feel respected and valued.
- Mistakes are treated as learning opportunities.
- Learning is interactive and meaningful.

- Students are motivated intrinsically rather than by fear of punishment.

Happiness enhances concentration, creativity, and memory, leading to better academic outcomes. When students enjoy learning, they participate actively and develop a lifelong love for education.

Meaning and Importance of Moral Ethics in Education

Schools serve as moral laboratories where children learn values through observation, interaction, and experience. When moral ethics are integrated into classroom management, students learn to:

- Respect rules and authority.
- Understand the consequences of their actions.
- Develop empathy towards others.
- Act responsibly in social situations.

Moral education is essential for creating disciplined, compassionate, and socially responsible citizens.

Role of the Teacher in Creating a Happy Ethical Classroom

The teacher plays a important role in shaping classroom culture. A teacher is not only an instructor but also a role model, mentor, and moral guide. Students observe teachers closely and often imitate their behavior.

Teacher as a Role Model

Teachers must demonstrate ethical behavior in their actions and words. Fairness, patience, honesty, and respect shown by the teacher inspire students to adopt similar values. A teacher who listens empathetically and treats students equally earns trust and cooperation.

Establishing Ethical Rules and Expectations

Rules should be clear, simple, and framed positively. Involving students in rule-making fosters a sense of responsibility and ownership. Ethical rules such as respecting others, speaking truthfully, and helping others guide student behavior effectively.

Student Participation in Building a Happy Classroom

Students are active contributors to classroom environment. When students are encouraged to practice moral values, the classroom becomes self-regulated and cooperative.

Developing Self-Discipline

Moral ethics encourage self-control and accountability. Students learn to manage their behavior without constant supervision.

Peer Cooperation and Respect

Group activities, collaborative projects, and peer learning foster cooperation and mutual respect. Helping classmates and resolving conflicts peacefully strengthen ethical understanding.

Student Voice and Emotional Expression

Allowing students to express opinions and emotions respectfully builds confidence and emotional intelligence. Feeling heard contributes significantly to classroom happiness.

Value-Based Stories and Discussions

Stories, biographies, and real-life examples help students understand moral dilemmas and ethical decision-making.

Group Activities and Service Learning

Community service projects and teamwork develop empathy, cooperation, and social responsibility.

Integrating Ethics into Curriculum

Moral values can be integrated across subjects such as literature, social science, and even science through discussions on responsibility and ethics.

Classroom Environment and Physical Arrangement

The physical environment of the classroom also influences happiness and behavior. A clean, well-lit, and organized classroom creates a positive impression. Displaying students' work, motivational quotes, and value-based messages stimulates pride and inspiration.

Benefits of a Happy Classroom Inculcated with Moral Ethics

A happy ethical classroom offers numerous benefits:

- Improved academic performance
- Reduced stress and anxiety among students
- Better teacher-student relationships
- Development of emotional intelligence
- Strong character and moral reasoning
- Positive social behavior and leadership skills

Such students grow into confident, compassionate, and responsible individuals.

Challenges in Implementing Ethical Classroom Management

Despite its benefits, implementing moral-based classroom management has challenges. Diverse backgrounds, varying value systems, peer pressure, and external influences can affect student behavior. Teachers may also face time constraints and workload pressures.

However, consistency, patience, and collaboration with parents and school administration can help overcome these challenges. Moral education is a gradual process that requires commitment.

Role of Parents and School in Supporting Ethical Classrooms

Parents and schools play a supportive role in reinforcing moral values. Consistency between home and school values strengthens ethical learning. Parent-teacher collaboration, moral education programs, and school policies aligned with ethical principles create a unified approach.

Conclusion

In conclusion, classroom management achieves its true purpose when it creates a Happy Classroom inculcated with moral ethics. Such a classroom nurtures not only academic excellence but also moral integrity and emotional well-being. Teachers, through ethical leadership and compassionate practices, can transform classrooms into joyful learning communities. When students learn in an environment of respect, empathy, and happiness, they develop into responsible citizens capable of contributing positively to society.

Thus, a happy and ethical classroom is not merely an educational ideal but a necessity for building a better future.

References / Bibliography

1. Aggarwal, J. C. (2010). Theory and Principles of Education. New Delhi: Vikas Publishing House.
2. NCERT. (2023). Learning Outcomes at the Elementary and Secondary Level. New Delhi: NCERT.
3. Delors, J. (1996). Learning: The Treasure Within. UNESCO.
4. Kumar, S. (2018). Moral Education and Value-Based Learning. New Delhi: Kanishka Publishers.
5. UNESCO. (2015). Rethinking Education: Towards a Global Common Good.

"शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में कंप्यूटर विज्ञान की बढ़ती भूमिका"

आशिष रंजन
Roll – 52, B.Ed.
Session - 2024-26

सारांश
वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में कंप्यूटर विज्ञान का अत्यधिक महत्व है वेब आधारित पाठ्यक्रम की बढ़ती उपलब्धता के कारण शिक्षा का स्वरूप निरंतर बदलता जा रहा है इसका वर्तमान स्वरूप पहले से कहीं अधिक प्रचलित है जितना कंप्यूटर विज्ञान का आर्टिफिशियल शिक्षा को नया स्वरूप प्रदान करता है उतना ही शिक्षा के क्षेत्र में बहुत सारी संभावनाएं पैदा हो रही है इससे सिर्फ छात्र ही नहीं बल्कि शिक्षकों को भी सहायता मिलती है उत्तर पिस्टन का को जचने परीक्षा में प्रदर्शित और समय पर परिणाम प्रकाशन में आई महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है यह सीखने सिखाने की पौराणिक प्रथा को नया रूप प्रदान करता है।

परिचय
आई का तात्पर्य कंप्यूटर या कंप्यूटर द्वारा नियंत्रित रोबोट के ऐसे कार्य करने की क्षमता से हैं जो आमतौर पर मनुष्य द्वारा किए जाते हैं क्योंकि ऐसे कार्यों की निष्पादन हेतु मानव बुद्धि और विवेक की आवश्यकता होती है लेकिन अभी तक कोई ऐसा आई प्रणाली नहीं है जो सामान्य मानव द्वारा किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के कार्यों को कर सके लेकिन कुछ आई मनुष्य द्वारा किए जाने वाले कुछ विशिष्ट कार्यों को करने की में सक्षम है पिछले कई वर्षों में विज्ञान तथा फिल्मों में कई बार ऐसी चीज दिखाई जा चुकी है जो काल्पनिक थी किंतु अब सकते होती हुई प्रतीत हो रही है अभी तक जितनी नई तकनीक आई है तो वह शिक्षा उद्योग अन्य सभी क्षेत्रों को प्रभावित करती है लेकिन ए का प्रयोग सभी क्षेत्र के बदलाव दिखाई पड़ रही है ए आई तकनीक बीते 20 वर्षों में और अधिक प्रभावी रूप से नजर आई है इसका उपयोग बड़े-बड़े इंस्टीट्यूशन में डाटा रिकॉर्ड करने योजना तैयार करने आदि में किया जाता है माइक्रोसॉफ्ट की ग्लोबल ऑनलाइन सेफ्टी सर्वे की रिपोर्ट के अनुसार सर्वे में शामिल 65% भारतीयों ने आई के इस्तेमाल की बात स्वीकार की इस सर्वे में 13 से 17 साल की उम्र के 15000 की शोरूम और वयस्कों को शामिल किया गया सर्वे 19 जुलाई से 9 अगस्त 2024 के बीच 1500 देश में किया गया था रिपोर्ट के अनुसार 2023 के मुकाबले 2024 में आई के इस्तेमाल में 26 प्रतिशत का इजाफा हुआ रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में आई के इस्तेमाल को लेकर युवा काफी उत्साहित है यहां पर 25 से 44 साल की उम्र के लोगों की संख्या 50 84% है आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और शिक्षा के बीच संबंध में तीन क्षेत्र शामिल है आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के साथ सीखना आर्टिफिशियलइंटेलिजेंस के बारे में सीखना और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की तैयारी करना।

व्यक्तिगत शिक्षक - ए आई छात्रों की क्षमता गति और सीखने की तरीकों को समझकर इसके लिए एक व्यक्तिगत पाठ्यक्रम तैयार करता है इसे हर छात्र अपनी आवश्यकता के अनुसार सीख सकता है सीखना अधिक आरामदायक और आसान है और व्यक्तिगत ज्ञान में कटौती करता है यह प्रणाली प्रत्येक छात्र में जरूर पर जोर देती है और विशिष्ट विषयों को उजागर करती है जिसमें छात्र कमजोर होते हैं और उन विषयों को दोहराते हैं इसमें उन्होंने महारत हासिल नहीं किया है यह आई के माध्यम से कस्टम अनुरूप शिक्षा का निर्माण करता हैं।

यूनिवर्सल एक्सेस - यूनिवर्सल एक्सेस का मतलब है सभी लोगों को चाहे उनकी क्षमता भाषा स्थान या आर्थिक स्थिति कैसी भी हो किसी सेवा तकनीक या संसाधन तक समान और शुभम पहुंच मिले।

शिक्षक प्रशिक्षण- छात्रों को प्रभावी ढंग से ज्ञान प्रदान करने में सक्षम बनाने के लिए शिक्षकों को अपने कौशल में लगातार अपडेट करना चाहिए ए शिक्षकों की प्रशिक्षण में भी क्रांतिकारी बदलाव ला रहा है शिक्षकों को उन सभी चीजों पर खुद को अपडेट रखने की अनुमति देगा जो वह नहीं चाहते हैं इससे शिक्षक अपनी गति और जरूरत के अनुसार प्रशिक्षण ले सकते हैं।

स्मार्ट कंटेंट ए टूल- शिक्षकों को स्मार्ट सामग्री बनाने में मदद करता है जिससे छात्रों के लिए शिक्षक और सीखने को अधिक आरामदायक बनता है इसकी मदद से शिक्षक व्यावहारिक डाटा के अनुसार अपडेट हो सकते हैं

सार्वभौमिक पहुंच- ए टूल के माध्यम से सभी छात्रों के लिए शैक्षिक कक्षाएं विश्व स्तर पर उपलब्ध हो सकती है,उनकी भाषाएं विविधता को भी प्रेजेंटेशन ट्रांसलेटर जैसे पावर पॉइंट्स के साथ छात्रों के पास पहुंचा सकते हैं।

24 x 7 - शिक्षार्थी सहायता छात्र अपने प्रश्नों को शिक्षकों की प्रतिष्ठा के बिना ही आई टेक आउट चैट बोर्ड की उपयोग कर अपने प्रश्नों का हाल का सकते हैं और अपने कौशल को सुधार सकते हैं।

चुनौतियां
टेक्नोलॉजी का उपयोग कर सीखने की चुनौती छात्र और शिक्षक को दोनों के लिए है ज्यादातर मामले में यह समस्या है कि शिक्षकों को अपनी कक्षाओं में नहीं तकनीक का उपयोग हेतु प्रशिक्षण नहीं दिया जा रहा है इसके लिए वह ज्ञान या प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्ति की खोज में रहते हैं शिक्षकों को कोई और समझने में मदद की जरूरत है की इन उपकरणों का उपयोग कैसे किया जा सकता है।

शिक्षा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के नकारात्मक पक्ष –

बढ़ती असमानता: AI का लाभ कुछ विशेष क्षेत्रों तक सीमित रह सकता है, जिससे 'डिजिटल डिवाइड' और गहरा हो सकता है।

लोकतंत्र को खतरा: डीपफेक और AI-जनित भ्रामक छवियाँ (जैसे 'नैनो बनाना' ट्रेंड का दुरुपयोग) चुनावों और सार्वजनिक विमर्श को प्रभावित कर सकती हैं।

डेटा संप्रभुता: वैश्विक AI कंपनियों द्वारा भारतीय नागरिकों के डेटा का उपयोग डेटा संप्रभुता से संबंधित चिंताएँ पैदा करता है।

निष्कर्ष- कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उदय हमारे रहने, काम करने और दुनिया के साथ बातचीत करने के तरीके को बदल रहा है। इसके निहितार्थ और अनुप्रयोग विभिन्न क्षेत्रों में फैले हुए हैं, उद्योगों में क्रांति ला रहे हैं और मानव जीवन में सुधार ला रहे हैं।

Role of Education in Creating a Difference Between a Human and an Animal

Ujjwal Raj
Roll – 43, B.Ed.
Session - 2024-26

Introduction

Human beings and animals share many biological similarities. Both are living organisms, require food and shelter, reproduce, and possess basic instincts necessary for survival. The primary factor responsible for creating and sustaining this difference is education.

Education transforms a biological being into a social, rational, ethical, and cultured individual. While animals function primarily on instinct and conditioning, humans possess the capacity for reasoning, reflection, creativity, moral judgment, and self-development. These higher capacities are nurtured, refined, and expanded through education.

Biological Similarities and the Need for Education

At birth, a human infant is biologically similar to other animals in several ways. It depends on caregivers for survival, reacts instinctively to hunger and discomfort, and expresses basic emotions such as fear and pleasure. In fact, many animals are more self-reliant at birth than human beings.

However, the human child possesses immense potential. Unlike animals, whose behavior patterns are largely predetermined by instinct, humans are born with the capacity to learn, reason, and innovate. This potential requires systematic guidance. Education acts as the means through which this potential is realized.

Without education, human abilities remain undeveloped. Thus, while biology provides the foundation, education constructs the structure of human personality and civilization.

Philosophical Foundations: Humans as Rational and Moral Beings

Aristotle: Humans as Rational Animals

Aristotle defined humans as "rational animals." According to him, reason (logos) differentiates humans from other living beings. While animals act according to instinct, humans possess the ability to deliberate and choose virtuous actions.

Education, in Aristotle's view, cultivates:

- Intellectual virtues (wisdom, understanding)
- Moral virtues (courage, temperance, justice)

Thus, education refines natural impulses and guides individuals toward the "golden mean." Without education, humans may act like animals driven by uncontrolled desires.

Plato: Education for Justice and Ideal Society

Plato emphasized education as a means of developing reason and controlling appetites. In The Republic, he divided the soul into three parts: Reason, Spirit, Appetite.

Animals function mainly through appetite and instinct. Humans, however, can achieve harmony through education, where reason governs desires.

Education, according to Plato, transforms individuals into just citizens capable of contributing to an ideal state. Hence, education distinguishes humans by enabling moral and political responsibility.

Immanuel Kant: Man Becomes Man Only by Education

Kant famously stated, "Man can only become man by education." He believed humans are not born moral; they become moral through discipline and instruction.

Education develops: qAutonomy, Moral law, Duty-based ethics

Unlike animals, which follow natural instincts, humans can act according to moral principles. Education cultivates this moral autonomy.

Naturalism vs. Human Development

Rousseau: Education as Natural Development

Rousseau believed humans are naturally good but corrupted by society. He argued that education should allow natural growth rather than suppress individuality.

While animals grow according to nature automatically, human development requires guided nurturing. Rousseau's concept of "negative education" emphasizes protecting the child from harmful influences so natural potential flourishes.

Thus, education ensures that human instincts are shaped constructively rather than degenerating into animalistic behavior.

Pragmatism and Experiential Learning

John Dewey: Education as Growth

Dewey viewed education as a process of continuous growth and social interaction. According to him:

- Humans learn through experience.
- Education transforms impulses into intelligent action.
- Democracy requires educated citizens.

Animals respond to stimuli instinctively. Humans, through reflective thinking, can analyze experiences and modify behavior. Dewey's theory of reflective thinking shows how education elevates human action from mere reaction to thoughtful response.

Development of Rational Thinking

Instinct vs. Reason

Animals function mainly through instinct. A bird builds a nest without attending school; a predator hunts according to inherited patterns. Their actions are efficient but limited to survival and reproduction.

Humans, in contrast, are capable of rational thought. Education develops:

- Logical reasoning
- Critical thinking
- Analytical ability
- Scientific inquiry
- Problem-solving skills

Through mathematics, science, philosophy, and debate, education trains the human mind to question, analyze, and evaluate. It encourages individuals to seek evidence and reject blind belief.

Language and Communication

Language is one of the strongest indicators of human uniqueness.

Animal Communication

Animals communicate through sounds, gestures, and signals. While effective, their communication is limited to immediate needs such as danger or mating.

Human Language and Literacy

Humans possess complex, structured languages capable of expressing abstract ideas, emotions, philosophies, and scientific theories. Education plays a vital role in:

- Teaching reading and writing
- Expanding vocabulary
- Developing communication skills
- Preserving knowledge through literature

Through education, language becomes a tool for intellectual growth and cultural continuity. Humans write books, compose poetry, create laws, and record history. This ability to document and transmit knowledge across generations is a hallmark of educated humanity.

Moral and Ethical Consciousness

Perhaps the most significant difference between humans and animals lies in morality.

Absence of Moral Judgment in Animals
Animals do not act according to moral principles such as justice or equality. Their behavior is governed by survival instincts.
Moral Education in Humans
Humans learn ethical standards through family, society, religion, and formal education. Education teaches:

- Right and wrong
- Duties and responsibilities
- Respect for others
- Empathy and compassion
- Justice and fairness

Through moral education, individuals learn to control selfish impulses and consider the well-being of others. Laws, human rights, and democratic values are products of moral consciousness shaped by education.
Without education, humans may behave impulsively. Education refines instincts and fosters ethical conduct, making individuals socially responsible.
Socialization and Civilization
Animals may live in groups, but their social structures are simple and instinct-based. Humans, however, build complex societies.
Education plays a key role in social development by teaching:

- Social norms and customs
- Civic duties
- Cooperation and teamwork
- Respect for diversity

Through education, humans establish institutions such as schools, courts, governments, and economic systems. These institutions regulate behavior and promote collective welfare.
Civilization itself is a product of organized knowledge passed through education. From ancient cultures to modern nations, education has preserved and expanded human achievements.
Emotional Regulation and Self-Control
Both humans and animals experience emotions such as fear, anger, and affection. However, the way these emotions are managed differs significantly.
Animals react immediately to emotional stimuli. Humans, through education, learn emotional control. Education fosters:

- Patience
- Tolerance
- Conflict resolution skills
- Empathy
- Emotional intelligence

An educated individual can manage anger, delay gratification, and resolve disputes peacefully. Emotional maturity is a cultivated trait, distinguishing humans from purely instinct-driven reactions.
Cultural Creation and Preservation
Culture includes traditions, art, literature, music, customs, and beliefs. Animals may display learned behaviors, but they do not create culture in the human sense.
Education serves as the medium for cultural transmission. Through education:

- History is preserved
- Art is studied and created
- Literature is appreciated
- Traditions are maintained

Each generation inherits knowledge from the previous one and adds new contributions. Education ensures continuity and growth of culture, allowing humanity to progress. Scientific and Technological Advancement Animals adapt to their environment, but humans transform it. Education enables scientific discovery and technological innovation. Through systematic study and research, humans have developed: Agriculture, Medicine, Transportation, Communication technology, Space exploration. Scientific education empowers humans to understand natural laws and apply them for societal benefit. Without education, such advancements would not be possible.

Freedom, Choice, and Responsibility

Animals are largely bound by instinctual behavior. Humans possess the ability to choose between alternatives.

Education enhances this freedom by providing knowledge and awareness. It helps individuals:

- Make informed decisions
- Accept responsibility
- Exercise democratic rights

An educated person understands not only personal freedom but also social responsibility. Thus, education supports responsible citizenship.

Creativity and Innovation

Creativity is another defining human characteristic. Education nurtures imagination and originality. Through exposure to literature, arts, science, and technology, individuals develop creative abilities. They compose music, design buildings, write novels, and invent machines.

Animals may show adaptive intelligence, but they do not engage in symbolic art or abstract innovation. Education channels human imagination into structured creativity. Economic and Professional Development Animals engage in activities for survival, such as hunting or gathering. Humans build complex economic systems. Education provides specialized knowledge and skills necessary for professions. It enables:

- Professional expertise
- Entrepreneurship
- Economic planning

Spiritual and Philosophical Awareness

Animals do not question their existence or purpose. Humans engage in philosophical reflection. Education introduces individuals to: Philosophy, Religion, Ethics, Spiritual inquiry.

Lifelong Learning and Growth

Animals learn within limited contexts. Humans, however, continue learning throughout life.

Education fosters adaptability and innovation. In a rapidly changing world, lifelong learning enables individuals to respond effectively to new challenges. This capacity for continuous growth is a hallmark of human advancement.

Consequences of Lack of Education

When education is absent, society faces numerous problems:

- Superstition and ignorance
- Violence and intolerance
- Social injustice
- Economic stagnation

An uneducated individual may act impulsively and lack awareness of consequences. Education prevents such regression and promotes progress.

Education as Humanization

Education is essentially a process of humanization. It shapes: Character, Intellect, Values, Personality.It transforms raw biological existence into meaningful life. Through education, humans become capable of empathy, creativity, responsibility, and wisdom.

Education bridges the gap between instinct and civilization.

Conclusion

The difference between a human and an animal is not merely physical but intellectual, moral, emotional, cultural, and spiritual. While both share biological instincts, humans possess the unique potential for reasoning, ethical judgment, creativity, and social organization. This potential, however, remains dormant without education.

Education refines instincts, develops rational thought, promotes moral values, preserves culture, fosters innovation, and strengthens social harmony. It transforms individuals into responsible citizens and creative contributors to society.

In essence, education is the foundation of humanity. It elevates human beings above mere biological existence and enables them to lead purposeful, ethical, and progressive lives. Without education, humans may remain governed by instinct; with education, they become architects of civilization and agents of positive change.

Thus, education is not simply a means of acquiring knowledge—it is the defining force that distinguishes humans from animals and sustains the advancement of civilization.

References

Aristotle. (2009). Nicomachean ethics (W. D. Ross, Trans.). Oxford University Press. (Original work published c. 350 B.C.E.)

Dewey, J. (1916). Democracy and education. Macmillan.

Durkheim, E. (1956). Education and sociology (S. D. Fox, Trans.). Free Press. (Original work published 1922)

Freire, P. (1970). Pedagogy of the oppressed. Continuum.

Gandhi, M. K. (1937). Basic education (Nai Talim). Navajivan Publishing House.

Exam: Not a Fear, A New Opportunity to Learn

Govind Kumar Singh
Roll – 32, B.Ed.
Session - 2024-26

Introduction

Examinations are an indispensable part of the educational system. From school to university level, students are assessed through various forms of examinations to evaluate their understanding, skills, and overall academic progress. Despite their importance, examinations are often perceived as a source of fear, anxiety, and stress. Many students experience nervousness, sleepless nights, and self-doubt during exam periods. However, this negative perception largely arises from misunderstanding the true purpose of examinations. Exams are not designed to frighten students; rather, they serve as structured opportunities to measure learning, identify strengths and weaknesses, and promote intellectual growth. When approached with the right mindset, examinations transform from stressful events into meaningful learning experiences.

Why do students fear examinations?

Fear of examinations develops due to several psychological, social, and academic factors. One major reason is fear of failure. Students often associate their self-worth with marks and grades, believing that poor performance defines their intelligence. Secondly, lack of preparation and poor time management create uncertainty, which increases anxiety. Thirdly, parental expectations and societal pressure contribute significantly to exam stress. In competitive environments, constant comparison with peers further intensifies fear. Additionally, previous negative experiences in examinations may lead to long-term exam phobia. Understanding these root causes is the first step toward overcoming fear.

Importance of examinations in education

Examinations play a crucial role in maintaining academic standards and discipline. They encourage students to revise their syllabus systematically and ensure consistent study habits. Exams help teachers evaluate the effectiveness of their teaching methods and identify areas where students require additional support. Furthermore, examinations prepare students for future competitive tests and professional challenges. In this way, exams are not merely assessment tools but essential components of the learning process.

Practical ways to overcome exam fear

There are several effective strategies to overcome examination anxiety. First, students should prepare a realistic and balanced study timetable that covers all subjects gradually. Regular revision prevents last-minute stress. Second, emphasis should be placed on conceptual understanding rather than rote memorization. Clear concepts build long-term confidence. Third, practicing previous year question papers improves writing skills and familiarizes students with exam patterns. Fourth, maintaining a healthy lifestyle, including adequate sleep, balanced diet, and regular exercise, keeps the mind fresh. Finally, positive self-talk and relaxation techniques such as meditation help control nervousness. With consistent effort, fear gradually transforms into confidence.

Developing curiosity and love for learning

Curiosity is the foundation of true education. According to John Dewey, learning becomes meaningful when students actively engage with knowledge through inquiry and experience. Instead of studying only for marks, learners should develop genuine interest in subjects. Asking questions in class, relating concepts to real-life situations, reading reference books, and participating in group discussions enhance intellectual curiosity. Rabindranath Tagore also

emphasized joyful learning and freedom of expression. When curiosity replaces fear, examinations become platforms to demonstrate understanding rather than sources of pressure.

Role of teachers in reducing exam anxiety

Teachers play a significant role in shaping students' attitudes toward examinations. A supportive and learner-centered classroom environment reduces fear and builds confidence. Teachers should encourage critical thinking, provide constructive feedback, and clarify doubts regularly. Continuous and comprehensive evaluation methods can reduce excessive pressure of final exams. By motivating students and recognizing their efforts, teachers help transform examinations into positive experiences.

Role of parents in building confidence

Parents greatly influence children's emotional stability during exam periods. Instead of imposing unrealistic expectations, parents should offer encouragement and emotional support. Appreciating effort rather than only results fosters self-confidence. Creating a peaceful study environment at home also helps students concentrate better. When parents maintain a positive attitude, children feel secure and motivated.

Exams as a tool for personality development

Examinations contribute to holistic personality development. They cultivate discipline, punctuality, responsibility, and perseverance. Preparing for exams teaches students how to manage time effectively and work consistently toward goals. Even failure becomes a valuable lesson that strengthens resilience and determination. Mahatma Gandhi believed that education should develop character along with intellect. Exams, when properly understood, support this comprehensive development.

Conclusion

In conclusion, examinations should not be perceived as enemies but as stepping stones toward growth. Fear arises mainly from misconceptions, lack of preparation, and external pressure. By adopting proper study strategies, nurturing curiosity, and maintaining a positive mindset, students can transform examination anxiety into confidence. Teachers and parents must create supportive environments that encourage learning rather than mere competition. Ultimately, education is not about marks alone but about continuous intellectual and personal development. When approached with determination and optimism, exams truly become not a fear, but a new opportunity to learn, grow, and excel in life.

A Comparative Study of Student Performance in Traditional and online learning environments

Amit Kumar
Roll – 77, B.Ed.
Session - 2024-26

Abstract
This systematic review investigates the differences between traditional and online learning environments and their respective impacts on student academic performance. Drawing on peer-reviewed empirical studies, the review evaluates key factors that significantly influence educational outcomes, including learner motivation, instructional design, digital access, and instructor presence. The central argument is that student success is not inherently tied to the mode of instruction but is instead heavily determined by the quality of institutional support and the effectiveness of teaching practices. Online learning offers broad accessibility and scheduling flexibility yet presents persistent challenges related to timely feedback and sustaining learner motivation. Traditional learning, by contrast, affords structured interpersonal engagement but lacks the adaptability required by diverse learner populations. This review also highlights how non-technical disciplines tend to transition more fluidly into online formats compared to technical and skills-based subjects.

Introduction
Over the past decade, rapid advances in digital technology have fundamentally reshaped the educational landscape. Traditional learning environments defined by face-to-face classroom interaction have long been regarded as the cornerstone of effective education. These settings offer organized instructional frameworks, opportunities for immediate feedback, and rich interpersonal dynamics that many educators consider essential to meaningful learning. Students in traditional classrooms benefit from direct engagement with instructors and peers, enabling collaborative problem-solving and the immediate clarification of doubts.

However, the proliferation of digital platforms has introduced an alternative paradigm. Online learning environments now offer flexible, scalable, and multimedia-rich instructional experiences that transcend the limitations of physical space and fixed schedules. These platforms have made education accessible to learners who might otherwise be excluded by geographic, economic, or personal constraints. The COVID-19 pandemic served as an unprecedented catalyst for this transition, compelling institutions across the globe to migrate to online delivery almost overnight, thereby accelerating a shift that was already underway.

This abrupt transition prompted researchers and educators to critically examine the comparative efficacy of these two modalities. The present review synthesizes available evidence to assess how each environment shapes student engagement, motivation, and academic achievement, while identifying the conditions under which each modality produces optimal outcomes.

Data extraction and analysis
Data extraction and analysis were conducted through a systematic and structured protocol designed to ensure consistency and comparability across all selected studies. A standardized data extraction spreadsheet was developed to organize key information from each source. Extracted variables included the study title, publication year, research objectives, sample size, target population, type of learning environment under examination (online, traditional, or blended), research methodology employed (e.g., surveys, longitudinal designs, statistical analyses), and primary findings pertaining to student satisfaction, engagement, and academic performance (Higgins et al., 2019). This analytical process yielded a nuanced and evidence-grounded understanding of how learning environments shape academic achievement, enabling

a balanced and rigorously supported interpretation of the relative effectiveness of each instructional form.

Quality assessment

All studies included in this review were subjected to a standardized quality appraisal checklist to ensure the reliability, rigor, and credibility of the evidence base (Protogenoi & Hager, 2020). Appraisal criteria focused on the clarity and transparency of research design, adequacy of sample size, relevance and validity of outcome measures, and the appropriateness and consistency of statistical methods employed.

Studies demonstrating high methodological rigor such as longitudinal designs, large-scale empirical analyses, and meta-analyses were accorded greater weight, given their capacity to yield more generalizable and valid findings. For example, the well-designed meta-analysis conducted by Means et al. (2014) provided comprehensive comparative evidence across a substantial number of online and traditional course settings. Similarly, Xu and Jaggars (2013) drew on extensive data from a statewide community and technical college system to examine patterns in online learning performance across diverse student populations. This quality evaluation process systematically excluded studies with significant methodological weaknesses, ensuring that the final synthesis rests on a foundation of reliable and empirically meaningful evidence.

Limitations

This review is subject to several limitations that must be acknowledged in interpreting its findings. First, the scope of the review is restricted to studies published between 2011 and 2021, which means that more recent developments in educational technology and post-pandemic pedagogical innovations are not captured. Second, only studies published in the English language were considered, potentially introducing a linguistic bias and excluding valuable research conducted in non-English-speaking contexts. Third, the selected studies predominantly emphasized measurable academic outcomes such as grades and completion rates, without adequately accounting for affective variables such as student well-being, sense of belonging, or long-term career preparedness. These limitations suggest that the conclusions drawn should be regarded as informative rather than exhaustive, and future reviews should seek to address these gaps through broader inclusion criteria.

Results and discussion

Learner Engagement and Motivation

Student engagement is widely recognized as one of the most significant determinants of academic success, particularly in online learning environments where the absence of physical co-presence can constrain spontaneous interaction and diminish the social dimensions of learning. Engagement operates as both an outcome and a mediator: it shapes motivation, retention, and learner satisfaction while simultaneously being influenced by course design and instructional quality.

Dixson (2015) employed the Online Student Engagement (OSE) Scale to evaluate engagement levels among students in both online and face-to-face formats. The study found that while students in both modalities reported meaningful levels of engagement, the overall frequency and quality of interaction were higher in traditional classroom settings. The most pronounced disparity was observed in online courses that lacked interactive design features and consistent instructor communication. However, when online courses incorporated structured discussion boards, collaborative assignments, prompt and substantive instructor feedback, and purposeful learning activities, the engagement gap was substantially reduced.

These findings challenge the assumption that online learning is inherently less engaging than its traditional counterpart. Rather, they suggest that engagement is a function of deliberate course design and instructional commitment, not of delivery mode per se.

Assessment Practices and Feedback

Assessment practices occupy a central role in shaping student learning trajectories, and the dominant approaches to evaluation differ markedly between online and traditional learning environments. Traditional classrooms tend to rely heavily on high-stakes summative assessments midterm examinations and final tests which concentrate evaluation at a limited number of points throughout the course. While these assessments can measure cumulative learning effectively, they offer limited opportunities for students to receive actionable feedback during the learning process.

Online learning environments, by contrast, are generally better suited to formative, continuous assessment strategies that foster active engagement and promote ongoing self-monitoring. Low-stakes quizzes, reflective discussion-based tasks, and regular feedback mechanisms are commonly embedded into online course designs to keep students informed of their progress and sustain their investment in learning. Research has demonstrated that such practices facilitate consistent practice and equip instructors with real-time data on student understanding, enabling timely adjustments to instructional strategy and fostering a more responsive, adaptive learning environment (2021).

Conclusion

The evidence synthesized in this literature review confirms that both traditional and online learning environments are capable of producing excellent academic outcomes—provided they are thoughtfully designed and effectively executed. The critical determinant of student success is not the modality of instruction but rather the quality of learning practices embedded within it. A learner-centered course design, pedagogically sound instructional strategies, and close alignment with student needs consistently emerge as the most robust predictors of achievement across both environments.

Blended learning has emerged as a compelling hybrid model that draws on the complementary strengths of both approaches, offering structure and social interaction alongside flexibility and digital enrichment. For this model and for online education more broadly to reach its full potential, institutions must invest substantively in faculty training, technological infrastructure, and comprehensive student support services.

Future research should broaden its lens to include underserved and non-Western populations, ensuring that findings are globally inclusive and that educational interventions are responsive to a wider range of socioeconomic and cultural contexts. Ultimately, advancing student success requires a balanced, equitable, and holistic approach that prioritizes flexibility, accessibility, and instructional quality across all educational platforms and modalities.

References

1) Dixson, M. D. (2015). Measuring student engagement in the online course: The Online Student Engagement scale (OSE). Online Learning, 19(4), 143–157.
2) Higgins, J. P. T., Thomas, J., Chandler, J., Cumpston, M., Li, T., Page, M. J., & Welch, V. A. (Eds.). (2019). Cochrane handbook for systematic reviews of interventions (2nd ed.). John Wiley & Sons.
3) Means, B., Toyama, Y., Murphy, R., & Bakia, M. (2014). Learning online: What research tells us about whether, when and how. Routledge.
4) Protogenoi, A., & Hager, P. (2020). Quality appraisal in systematic reviews of education research. Review of Educational Research, 90(3), 342–378.
5) Xu, D., & Jaggars, S. S. (2013). Adaptability to online learning: Differences across types of students and academic subject areas (CCRC Working Paper No. 54). Columbia University, Teachers College, Community College Research Center.

आप भी शिक्षक बन सकते हैं।

केशव राज
रौल – 40 डी.एल.एड.
सत्र–2024–26

आप शिक्षक क्यों बनना चाहते हैं।

आपने षिक्षक बनने का निर्णय लिया है, यह एक अच्छी बात हैं, क्योंकी देष के लगभग लाखों युवा प्रतिवर्ष शिक्षक कोर्स की ओर आकर्षित होते हैं। जब इतनी बड़ी संख्या में लोग षिक्षक बनने का निर्णय लेते है तो आपका निर्णय गलत नहीं हो सकता। लेकिन अहम ये हैं कि आप षिक्षक ही क्यों बनना चाहते हैं। क्या आपके निर्णय के पिछे निम्नलिखित कारण हैं–

- **शिक्षक** एक सम्मानित **पेशा** हैं।
- इस **पेश** का भविष्य बहुत अच्छा हैं।
- यह एक सुरक्षित नोकरी हैं।
- यदि एक बार **शिक्षक** बन गये तो पुरी जिन्दगी सुधर जाएगी और जिन्दगी में सभी इच्छाए पूर्ण हो जाएगी।
- क्या आपके दोस्त **शिक्षक** का कोर्स कर रहें हैं, इसलिए आपने भी **शिक्षक** बनने का निर्णय लिए हैं।
- क्या आपके परिवार के लोग **शिक्षक** बनने के लिए आप पर दबाब डाल रहे हैं।
- इस **पेशे** का समाज में बहुत उँचा स्टेटस हैं।

आपके अपने अलग कारण हो सकते हैं। जैंसे– मैं बहुत मेहनती हुँ। पढ़ाई के प्रति मेरी गहरी रूची हैं। अब तक की परीक्षाओं में मैं प्रथम श्रेणी में उर्तीण होता रहा हूँ। मैंने हाई स्कूल की परिक्षा उर्तीण करने के बाद ही निर्णय ले लिया था कि मैं षिक्षक बनुंगा और सबसे बड़ी बात यह हैं कि मैंने संकल्प लिया हैं कि मैं **शिक्षक** बनुंगा क्योंकी मुझे अपने आप पर भरोसा हैं कि मैं जो चाहूँ वह बन सकता हूँ। आपके जबाब बहुत अच्छे हैं। आपको षिक्षक के संबंध में अच्छी जानकारी भी हैं लेकिन आपका एक मात्र जबाब ही सभी जबावों पर भारी पर रहा हैं। वह हैं कि आपने संकल्प लिया हैं कि आप षिक्षक बन कर रहेंगे। लेकिन मेरी राय में आपको एक बार फिर से बिचार कर लेना चाहिए क्योंकि आप कुछ और भी बन सकते हैं।

शिक्षक बनने के कुछ गुण भी होने चाहिए

वैसे तो हर पेषे में कुछ स्किल एप्टीट्यूड और पर्सनालिटी की जरूरत होती हैं, लेकिन षिक्षक बनने के लिए कुछ विशेष गुणों की जरूरत होती हैं। जैसे यदि कोई कलाकार हैं या चित्रकार हैं तो उसमें नयी सोच की जरूरत होती हैं। यदि कोई डॉक्टर हैं तो उसमें उच्च स्तर की विषलेषन क्षमता और दवाईयों के कम्बीनेषन आदि की समक्ष होनी चाहिए। यदि आप में पेषें के अनुरूप गुण नहीं हैं तो हो सकता हैं आपका जीवन संघर्ष करते–करते बित जाय और आप असफल हो जाय।
यदि आप षिक्षक बनना चाहते हैं तो आपको अपना मुल्यांकण कर लेना चाहिए की षिक्षक बनने के लिए आप में आवष्यक गुण हैं या नहीं। यद्यपी हर आदमी कुछ आनुवंषीक गुण के साथ पैंदा होता हैं, लेकिन कुछ गुणों का विकास उसे स्वंय करना होता हैं। महान षिक्षाविद् का मानना हैं षिक्षक में निम्नलिखित गुण होना चाहिए– आप में इफेक्टीव कॉमनिकेषन का गुण हो तभी आप दुसरों को अपनी बात समझा पाएगें।

दूसरों को समक्षने की क्षमता हो ताकि आप समक्ष सके की दूसरा क्या करना चाहता हैं या वह क्या **इशारा** कर रहा हैं। आप में मोनिटरिंग की क्षमता होनी चाहिए , क्योंकि आकों बहुतों से काम लेना होगा। आपको एक सफल षिक्षक बनने के लिए संवेदनषील बनना पड़ेगा। यदि आप में यहा गुण हैं तो अच्छी बात हैं अन्यथा इन गुणों का विकाष किजिए। इन गुणों के द्वारा सफल षिक्षक बना जा सकता हैं।

मुशकिल नहीं हैं कुछ भी, अगर ठान लिजिए

यह पंक्ति केवल आपके लिए हैं, क्योंकि आपने संकल्प लिया हैं कि आप षिक्षक बन कर रहेंगे और आपको अपने आप पर भरोसा हैं। मैं भी मानता हूँ कि दूनिया में स्वंय से बड़ा मोटिवेटर कोई नहीं होता हैं और आत्मविष्वास सरिखा कोई दूसरा मित्र नहीं होता हैं। आप सब कुछ कर सकते हो, आगे बढ़ो यदि आप अपने संकल्प में दृढ रहें तो षिक्षक बन जाओगें। क्योंकि–

अब आप में मांनसिक दृढता आ जाएगी।
अब आप बहाना नही बनाऐगे।
आपकी समझ का स्तर बढ जाएगा।
शिक्षक की पढ़ाई आपकी दैनिक गतिविधियों में सबसे उपर होगी।
आपके दिमाग में एक हीं बात आएगी की करना हैं तो करना हैं और पूरी कायनात आपको सफल बनाने में जुट जाएगी।

अंत में अपने अंदर की जिद और हौसला को मजबुति देने के लिए खुद से कमिटमेन्ट कर ले कि– **मैं शिक्षक बनुँगा, तत्काल नहीं लेकिन निश्चित रूप से।**

डिजिटल युग में कक्षा की भूमिका

नवनीत कुमार

रोल न. – 94, बी.एड

सत्र - 2024-26

भूमिका

मानव सभ्यता के इतिहास में पहिये का आविष्कार यदि गति का प्रथम सोपान था, तो इंटरनेट का आविष्कार चेतना के विस्तार की अंतिम सीमा प्रतीत होता है। आज हम एक ऐसे संक्रांति काल में साँस ले रहे हैं, जिसे 'डिजिटल युग' की संज्ञा दी गई है। यह वह दौर है जहाँ भूगोल की सीमाएँ मिट चुकी हैं और ज्ञान का विपुल भंडार पुस्तकालयों की अलमारियों से निकलकर 'क्लाउड' और 'सर्वर' के अदृश्य जगत में तैर रहा है। एक क्लिक पर विश्व के श्रेष्ठतम विश्वविद्यालयों के व्याख्यान उपलब्ध हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता जटिलतम प्रश्नों के उत्तर क्षण भर में दे रही है। इस तकनीकी उत्कर्ष के बीच, एक सहज और बुनियादी प्रश्न बार-बार सिर उठाता है, क्या ईंट-गारे से बनी चारदीवारी, जिसे हम 'कक्षा' कहते हैं, अब अप्रासंगिक हो गई है? क्या शिक्षक का प्रत्यक्ष सानिध्य अब पुराने दौर की बात है?

इस प्रश्न का उत्तर खोजने के लिए हमें शिक्षा के मूल उद्देश्य को पुनः परिभाषित करना होगा। यदि शिक्षा का अर्थ मात्र 'डेटा ट्रांसफर' या सूचनाओं का संकलन होता, तो निश्चित रूप से गूगल ने शिक्षकों और विद्यालयों को कब का विस्थापित कर दिया होता। परंतु, भारतीय मनीषा शिक्षा को सूचना नहीं, 'संस्कार' मानती है। उपनिषदों का उद्घोष 'सा विद्या या विमुक्तये' हमें स्मरण दिलाता है कि विद्या वह है जो मुक्त करे। यह मुक्ति केवल अज्ञान से नहीं, बल्कि जड़ता, असंवेदनशीलता और एकाकीपन से भी है। दुर्भाग्य से, डिजिटल स्क्रीन सूचना तो दे सकती है, परंतु वह संवेदना शून्य है।

डिजिटल शिक्षा और पारंपरिक कक्षा के बीच सबसे बड़ा अंतर 'संवाद' और 'प्रसारण' का है। ऑनलाइन माध्यम में प्रायः एकतरफा प्रसारण होता है, जबकि कक्षा 'संवाद' का जीवंत मंच है। भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान का प्रवाह गुरु और शिष्य के मध्य प्रश्नोत्तर से हुआ है। नचिकेता यम से प्रश्न पूछता है, गार्गी याज्ञवल्क्य से तर्क करती है, यह निर्भीकता केवल प्रत्यक्ष संवाद से उपजती है।

विश्लेश

कक्षा में शिक्षक केवल पाठ्यक्रम नहीं पढ़ाता, वह 'मनोविज्ञान' भी पढ़ता है। एक कुशल शिक्षक विद्यार्थी की आँखों में तैरते संदेह, उसके मौन में छिपी झिझक और उसकी देह-भाषा को पढ़ सकता है। स्क्रीन पर दिखाई देने वाले पिक्सेल कभी भी मानवीय आँखों की उस चमक का विकल्प नहीं हो सकते, जो किसी कठिन सिद्धांत को समझने के बाद विद्यार्थी के चेहरे पर आती है। जिसे हम 'ह्यूमन टच' कहते हैं, वह शिक्षा का प्राणतत्त्व है। एक मशीन त्रुटि बता सकती है, परंतु उस त्रुटि को सुधारने का साहस और प्रेरणा केवल एक शिक्षक का स्नेहपूर्ण स्पर्श ही दे सकता है। अरस्तू ने मनुष्य को 'सामाजिक प्राणी' कहा था। विद्यालय वह पहली प्रयोगशाला है जहाँ बच्चा परिवार के सुरक्षित कोकून से निकलकर समाज की वास्तविकता से रूबरू होता है। कक्षा, समाज का एक लघु रूप है। यहाँ अलग-अलग धर्म, जाति, भाषा और आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चे एक साथ एक छत साझा करते हैं। जब एक विद्यार्थी अपने सहपाठी के साथ टिफिन साझा करता है, खेल के मैदान में हार-जीत को स्वीकारता है, या किसी समूह परियोजना में मतभेदों के बावजूद साथ काम करता है, तो उसमें सहिष्णुता, सहयोग, नेतृत्व और 'टीम वर्क' जैसे गुणों का बीजारोपण होता है। डिजिटल शिक्षा 'व्यक्तिवाद' को बढ़ावा देती है जहाँ छात्र अपने कमरे में अकेले स्क्रीन के सामने बैठा है। यह 'डिजिटल एकाकीपन' आज के किशोरों में अवसाद और सामाजिक कौशल की कमी का एक बड़ा कारण बन रहा है। सामाजिक चेतना का निर्माण जूम या मीट पर नहीं, बल्कि कक्षा के कोलाहल और खेल के मैदान की धूल में होता है।

शिक्षा एक 'साधना' है और साधना बिना अनुशासन के फलित नहीं होती। डिजिटल माध्यम असीमित स्वतंत्रता देता है, जो अक्सर स्वच्छंदता और भटकाव में बदल जाती है। 'डिजिटल डिवाइड' एक कड़वी सच्चाई है। सुदूर ग्रामीण अंचलों में जहाँ बिजली और इंटरनेट की स्थिरता आज भी एक चुनौती है, वहाँ ऑनलाइन शिक्षा की वकालत करना एक बड़े वर्ग को शिक्षा से बेदखल करने जैसा है। विद्यालय की वर्दी अमीरी और गरीबी के भेद को मिटा देती है, जबकि ऑनलाइन कक्षा में घर की पृष्ठभूमि और गैजेट्स की गुणवत्ता असमानता को रेखांकित करती है। अतः, लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा के लिए 'समान स्कूल प्रणाली' और भौतिक कक्षाओं का अस्तित्व अनिवार्य है। तो क्या हम तकनीक को नकार दें? कदापि नहीं। दार्शनिक दृष्टि से देखें तो 'अति' सर्वत्र वर्जित है। न तो हम गुरुकुल युग में लौट सकते हैं और न ही पूरी तरह रोबोटिक शिक्षक पर निर्भर हो सकते हैं। भविष्य 'संघर्ष' में नहीं, 'समन्वय' में निहित है।

निष्कर्ष

अंततः, यह स्वीकार करना होगा कि तकनीक परिवर्तन का प्रतीक है, तो कक्षा परंपरा और मानवता की संवाहक है। शिक्षा का उद्देश्य केवल मस्तिष्क को भरना नहीं, बल्कि चरित्र को गढ़ना है। स्वामी विवेकानंद के शब्दों में **"हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है जिससे चरित्र बने, मन का बल बढ़े, बुद्धि का विकास हो और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सके।"**

यह 'मन का बल' और 'चरित्र' वाई-फाई तरंगों से संचारित नहीं हो सकता, इसके लिए शिक्षक के तपोपूत आचरण और कक्षा के संस्कारित वातावरण की आवश्यकता सदैव रहेगी। डिजिटल युग में कक्षा अप्रासंगिक नहीं हुई है, बल्कि उसकी जिम्मेदारी और बढ़ गई है, मशीनों की भीड़ में इंसान को 'इंसान' बनाए रखने की जिम्मेदारी।

Time Management in Student Life

Sanjay Patel
Roll no. - 73, B.Ed.
Session - 2024 -26

Introduction

Student life is one of the most important phases of our life. It is the time when we learn new things, build our character, and prepare for our future. During this period, students have many responsibilities such as attending classes, completing homework, preparing for exams, participating in activities, and spending time with family and friends. In today's world, mobile phones and social media also take a lot of time. Because of all these responsibilities, many students feel that they do not have enough time. However, every person has the same 24 hours in a day. The difference between a successful student and an average student is how they use their time. Time management means using time wisely and planning our day in a proper way. It is a very important skill that helps students complete their work on time without stress. If students learn time management early in life, it becomes helpful for their entire future.

Main Body

What is Time Management?

Time management means organizing and planning how to divide your time between different activities. It helps us decide what to do first and what to do later. When we manage our time properly, we can complete our tasks without hurry or confusion. For students, time management is not only about studying for long hours. It is about studying in a smart way. It means giving proper time to each subject, finishing homework on time, and also keeping time for rest and hobbies.

Importance of Time Management in Student Life

Time management is very important in student life because students have many tasks to complete every day. Without proper planning, students may forget important work or feel stressed at the last moment. When students manage their time well: They complete assignments on time. They prepare for exams without fear. They get time for revision. They enjoy hobbies and games. They feel confident and relaxed. Good time management also improves concentration. When students follow a schedule, their mind becomes disciplined and focused.

Benefits of Time Management

1.Better Academic Performance

When students study regularly according to a timetable, they understand subjects better. They do not need to study everything at the last moment before exams. Regular study leads to better marks.

2. Less Stress

Last-minute preparation creates anxiety and pressure. But if students plan their studies daily, they remain calm and confident during exams.

3. Development of Discipline

Following a timetable teaches discipline. Discipline is a very important quality for success in life.

4. More Free Time

When work is complet on time, students get extra time for sp music, reading, or spending time with family.

5. Improved Health

Good time management allows students to sleep properly and eat meals on time. Proper rest keeps the mind fresh and active.

How to Manage Time Effectively

1. Make a Daily Timetable

Prepare a simple and realistic timetable.
Divide your time for study, rest, and other activities. Do not make a very strict schedule that is difficult to follow.
2. Set Priorities
Complete important and urgent tasks first. Less important tasks can be done later.
3. Avoid Distractions
Mobile phones, social media, and television can waste a lot of time. Keep your phone away while studying.
4. Take Short Breaks
Study for 45-50 minutes and then take a short break of 5-10 minutes. This helps your brain stay fresh.
5. Revise Regularly
Daily revision makes ning easier and reduces exam pressure.
6. Set Daily Goals Make small daily goals such as finishing one chapter or solving a set of questions. Achieving goals gives motivation.
7. Get Proper Sleep
Sleep for at least 7-8 hours daily. A tired mind cannot study properly. Common Problems in Time Management Many students make a timetable but fail to follow it. This happens because of: Laziness Procrastination (postponing work) Excessive use of mobile phones

Lack of motivation

To overcome these problems, students need self-control and determination. Small changes in daily habits can bring big improvements. Time Management and Future Success The habit of managing time during student life helps in future career and personal life. Successful people always respect time. They plan their work and complete it on time. Time once lost never comes back. Therefore, students should understand the value of time from an early age. When students use their time wisely, they move closer to their goals every day. Time management not only helps in studies but also builds a strong and responsible personality. Conclusion In conclusion, time management is a very important skill in student life. Every student has the same 24 hours, but success depends on how wisely those hours are used. By making a timetable, setting priorities, avoiding distractions, and staying disciplined, students can achieve their goals without stress. Student life is the foundation of the future. If students learn to manage their time properly now, they will become confident and successful individuals later in life.

College Life: Where Ordinary Students Discover Their Extraordinary Selves /I Entered for a Degree, I Found Myself

Rahul Shekhar
Roll no 59, B.Ed.
Session - 2024-26

When I first stepped into college, I did not realize that I was not just entering a campus I was entering a new version of myself. The building looked ordinary. The classrooms looked simple. The corridors felt quiet. But hidden within those walls were dreams waiting to wake up, fears waiting to be challenged, and personalities waiting to bloom. Coming from a small town, college was not just higher education for me. It was exposure. It was transformation. It was my first real test of independence. I still remember my first day. A new bag. Fresh notebooks. Carefully ironed clothes. Eyes searching for familiar faces in a crowd of strangers. My heart was beating faster than usual. So many silent questions were running in my mind:-

"Will I fit in?"
"Will people judge my English?"
"Am I good enough?"
"Will I be able to succeed?"

That nervous walk through the college gate may have looked small to others, but for me, it was the beginning of one of the most powerful chapters of my life.

The Boy Who Sat on the Last Bench-

In almost every classroom, one student prefers the last bench. I was that student. I did not disturb anyone. I did not volunteer answers. I avoided eye contact when teachers asked questions. I prayed that my name would not be called for presentations. I had studied in a Hindi-medium school. English felt like a mountain I could not climb. When others spoke fluently, I remained silent. During group discussions, I listened carefully but rarely spoke. I feared laughter more than failure.

When attendance was called, I answered softly. When presentations were assigned, I wished to become invisible. I believed I was "average." I believed I did not belong among confident students.

One day, a professor asked me to present a seminar topic. My hands trembled. My voice shook. I forgot lines midway. Some students smiled. A few whispered. That day felt uncomfortable even painful. But something changed inside me. Instead of hiding again, I decided to prepare harder. I practiced in front of a mirror. I recorded my voice. I worked on pronunciation. I asked friends for help. I did not transform overnight. But slowly, I changed. Today, I can stand on stage and speak with confidence. Not because I was always talented but because college gave me a safe space to fail, learn, and rise again. College did not just teach me subjects. It built my courage.

The Boy Who Almost Gave Up -

There was a time when I almost gave up. Not because I lacked intelligence. Not because I stopped dreaming. But because sometimes life outside the classroom felt heavier than the books I carried.

There were financial pressures at home. Responsibilities that silently followed me even into the classroom. Sometimes I felt guilty studying while my family struggled. There were days when I questioned everything.

"Is this worth it?"

"Should I stop and start earning?"

"Am I strong enough to complete this journey?"

I remember sitting in the library one evening. My books were open, but my mind was full of doubts. For a moment, quitting felt easier than continuing. But deep inside, I knew something if I stopped now, I would regret it forever. A teacher once told me, "Your background does not decide your future." That sentence stayed with me. Friends shared notes when I missed lectures. Some encouraged me before exams. Slowly, I started rebuilding my belief in myself. I began managing my time better. I studied late at night. I practiced speaking even when I felt embarrassed. I failed in small things, but I did not fail in effort. I did not just pass exams. I passed the test of not giving up. Today, I stand stronger not because my struggles disappeared, but because I learned how to face them. College taught me that strength is not about never falling. It is about standing up every time you fall.

More Than Marks and Degrees

Before college, I believed success meant marks and ranks. But college taught me something deeper. Yes, exams matter. Results matter. Degrees matter. But what matters even more is who we become during the process. College taught me: To manage time when assignments and responsibilities collide. To accept failure without losing confidence. To speak even when my voice shakes.To listen to others with respect.To value diversity of language, background, and thought. The late-night study sessions before exams. The nervousness before viva. The last minute revisions. The small tea breaks that turned into deep life discussions. The laughter in corridors. The stress before results. These were not just moments. They were lessons shaping my character. The Silent Transformations Transformation in college is rarely loud. It happens quietly. The shy student slowly raises his hand in class. The one who feared English begins speaking small sentences. The confused student discovers his purpose. The average student finds hidden talents in writing, teaching, leadership, or public speaking. When I look back now, I realize I am not the same person who first entered this campus. College changed the way I think. It taught me to question. It taught me to reflect. It taught me to analyze. As a B.Ed. learner, I began to understand that education is not just about completing the syllabus. It is about understanding learners. It is about empathy. It is about shaping future generations. Education is not just information. It is transformation.

The Real Lesson: -

Resilience Textbooks taught me theory. Life in college taught me resilience. Resilience means: Trying again after failure. Preparing again after poor performance. Believing again after disappointment. Dreaming again after rejection. Many of us come from different backgrounds. Some struggle with language. Some with confidence. Some with financial challenges.

We shared notes. We shared lunch. We shared stress. We shared dreams. Friends became emotional support during difficult times. They motivated me before exams. They celebrated my small achievements. They understood my silent struggles. Years later, I may forget formulas and definitions. But I will never forget the friends who stood beside me when I felt low. From "I Can't" to "I Can"

College has been a journey. A journey from: "I am not good enough" to "I will improve." From: "I am scared" to "I will try." From: "I can't do this" to "I can." This transformation did not

happen in one semester. It happened through small attempts. Small failures. Small improvements. Small victories. And one day, without realizing, I stood taller than before.

One Day…

One day, I will walk out of this campus with a degree in my hand. There will be photographs. There will be farewells. There will be tears and smiles. But what I will carry with me is more than a certificate. I will carry confidence. Resilience. Memories. Gratitude. Strength. And when life becomes difficult in the future, I will smile and think: "If I survived college, I can survive anything." Because college does not create perfect students. It creates brave human beings. It transforms ordinary learners like me into extraordinary individuals not by changing who we are, but by helping us discover who we truly can become.

College is not just a phase of life.

It is my foundation. It is my turning point. It is the place where my self-doubt met determination, where my fear met courage, and where my dreams met discipline. I entered college seeking a degree. But I am leaving college discovering my strength. There were days I felt small. There were days I felt lost. There were days I almost gave up. But today I understand something powerful: Struggles did not come to stop me. They came to shape me. Failure did not come to define me. It came to refine me. Every nervous presentation, every low mark, every sleepless night, every silent tear - they were not signs of weakness. They were proof that I was growing. College did not promise me an easy journey. It promised me growth. And growth is never comfortable but it is always worth it. Today I stand with confidence not because life became easy, but because I became stronger. And I believe this with all my heart: An ordinary student with courage becomes extraordinary. A struggling learner with persistence becomes unstoppable. A dream supported by hard work always finds its way to success. College does not create perfect students.It creates brave hearts. It creates resilient minds. It creates individuals who refuse to quit. One day, when life tests me again, I will remember these years and say:-

"I survived self-doubt.
I survived fear.
I survived failure.
And I rose above them."
Because college did not just prepare me for exams.
It prepared me for life.
And now I know
No matter where I go,
No matter how difficult the road becomes,
I am not the boy who once doubted himself.
I am the learner who discovered his power.

हमारे दैनिक जीवन में किताब का महत्व

ख़ुशी कुमारी
रौल – 73, डी.एल.एड.
सत्र- 2024-26

भूमिका

किताबों के बारे में कुछ भी सोचा जाता है तो हमारे सामने उनकी श्रृंखलाओं का समुद्र नजर आता है। विश्व के असंख्य लेखकों ने अपने–अपने चिंतन, प्रवृत्तियों और अभिरुचियों के अनुसार असंख्य पुस्तकें लिखी हैं। वहीं दूसरी ओर असंख्य पाठक अपने अनुसार पठन–पाठन में व्यस्त हैं। किताबों की सूची तैयार करना संभव नहीं है परन्तु मुख्य रूप से कुछ श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। जैसे वैज्ञानिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, साहित्यिक आदि और भी अनेक कहानियों की किताबें, नाटक, उपन्यास, हास्य विनोद व्यंग्य, यात्रा वृत्तांत पुस्तकालयों में प्रस्तुत हैं। धर्म ग्रंथों की भी संख्या कम नहीं है। वेद, पुराण, उपनिषद आदि हमारे जीवन शैली को सुसंस्कृत कर रहे हैं। किताबों में रस होते हैं और ये रस भी विभिन्न प्रकार के हैं और वे हैं वीर,वीभत्स, रौद्र, भयानक, श्रृंगार, शांत, वात्सल्य रस और अन्य और पाठक भी विभिन्न रसों के प्रेमी हैं। वे उन रसों को निचोड़ कर पान करते हैं और फिर संतृप्त होते हैं। विभिन्न छात्र विभिन्न विषयों में अभिरुचि रखते हैं और वे उन विषयों को अपना मित्र बना लेते हैं।

जीवन में किताब

किताबों की दुनिया बहुत पुरानी नहीं है। जब हमारे यहाँ छपाई का प्रबंध नहीं था तब ऋषियों और मुनियों द्वारा ताड़ पत्रों और भोज पत्रों पर अनेक हस्तलिखित पुस्तक प्रमाण स्वरूप उपलब्ध हैं। वैसे भी जब मनुष्य लिखना नहीं जानता था उस समय भी लोग धातु के पत्तर और चट्टानों पर खोद कर विभिन्न चित्रों को अंकित कर अपने मनोभाव को व्यक्त करने का प्रयत्न किया।

यदि आप पढ़ना जानते हैं तथा आपके पास समझने की क्षमता है तो निश्चित रूप से किताब आपका सबसे अच्छा मित्र है। ऐसा मित्र जो कल्पवृक्ष की तरह सारी मनोकामनाओं को पूर्ण करता है। किताब हमारे मार्ग को साफ सुंदर बनाती है और हम अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करते हैं। किताब हमें जीना सिखाती है। यह जीने की कला को बेहतर ढंग से व्याख्या करती है। हम सभी जानते हैं, हम अपने मित्रों का चयन अपने स्वभाव के अनुसार ही करते हैं। ठीक वैसे ही किताबों का चयन हम अपनी अभिरुचियों के अनुसार करते हैं। किताब हमें देश या दुनिया ही नहीं बल्कि अंतरिक्ष से बाहर तक का सैर कराती है यही किताब हमें कहीं हंसा हंसा कर लोटपोट कर देती है। वही दूसरी ओर ढेर सारी करुणा से शिक्त दृश्य उत्पन्न कर देती है कि अनायास हमारे नेत्रों से अश्रुधारा फूट पड़ती है। किताब रूपी यान पर सवार होकर हम नगर, महानगर, गाँव कस्बा, खेत, खलिहान, वन पर्वत आदि का वास्तविक दृश्य का दर्शन कर पाते हैं।

गणित के छात्र गणित की पुस्तक से गणितीय समस्या का समाधान कर संतुष्ट होते हैं। वहीं दूसरी ओर विज्ञान के छात्र वैज्ञानिक संसाधनों का संयोजन कर संसार को आसान सुविधा प्रदान कर उनके जीवन को सरल बनाते हैं। धर्म ग्रंथों का भी महत्व कम नहीं है जिनका अध्ययन कर मनुष्य अपने जीवन पथ को सरल एवं सुगम बनाते हैं।

किताब सफर का साथी है। जब कभी हम अकेले होते हैं किताब हमें अकेलापन का एहसास होने नहीं देती है। किताब माँ की लोरी की तरह थपकी देकर सुला देने का भी काम करती है। इस प्रकार किताब हमारे लिए भाई, बहन, माता, पिता तथा परम मित्र और एक उत्तम सलाहकार की भूमिका निभाने में सक्षम है। किताब की शक्ति का आकलन मस्तिष्क की तीक्ष्ण बुद्धि से भी परे है। यह तिल का ताड़ और राई को पर्वत के रूप में खड़ा कर सकती है। वहीं दूसरी ओर विशाल सागर को छोटे गागर में सिमट सकती है।

निष्कर्ष

साहित्य सागर के तरंगों में तरंगित होने का मजा की कुछ और है। पर हाँ, यदि आपको उस सागर के तल का दर्शन हो गया तो निश्चय ही वहाँ आपको अनमोल रत्नों का खजाना मिल जाएगा।

किताब महिमामयी है। यह अतुल शक्ति की स्वामिनी है। इसके रूप असंख्य हैं। यही किताब एक ओर कठिन से कठिन समस्या का समाधान कर मन को हल्का करती है वहीं दूसरी ओर बेबुझ पहेलियों को सुलझाकर चकित कर देती है। किताब लेखक का दर्पण और पाठक का चरित्र निर्माता है। किताब हमारे जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। परन्तु बाजार में ऐसी भी किताबें उपलब्ध हैं जो हमारे जीवन के लिए खतरा हैं। हमें ऐसी किताबों से परहेज करना चाहिए जो हमारे चरित्र को दुष्प्रभावित करें। फिलहाल डिजिटल किताबें भी उपलब्ध हैं जो मोबाइल या कम्प्यूटर के माध्यम से प्राप्त होती हैं। परन्तु इस माध्यम से प्राप्त किताबों के अध्ययन में कुछ हानि भी है। यद्यपि यह आसान माध्यम है, फिर भी इसमें कुछ कठिनाइयाँ भी हैं। पहली बात तो यह कि आसानी से प्राप्त होने वाली वस्तु का महत्व कम है और दूसरी बात लगातार मोबाइल या कम्प्यूटर से अध्ययन करने पर हमारे स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ सकता है। अतः छपी किताबों से ही अध्ययन करना उत्तम है। किताबें संजीवनी हैं। यह हमारे मन-मस्तिष्क को उत्तम खुराक देती हैं। यह हमारे मार्ग को सुगम बनाती हैं, जिसपर चल कर हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

शिक्षा एक अधिकार

रवि राज
क्रमांक- 81, बी एड
सत्र – 2025 – 27

शिक्षा को हिंदी में मुख्य रूप से 'विद्या', 'शिक्षण', 'अध्ययन" कहा जाता हैं। शिक्षा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा इसके व्यक्तित्व का विकसित करने वाली प्रक्रिया है, यही प्रक्रिया उसे समाज में एक वयस्क की भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती है तथा समाज के सदस्य एवं जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है।

शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की 'शिक्ष' धातु में अ प्रत्यय लगाने से बना है, 'शिक्ष' का अर्थ है सीखना और सिखाना, 'शिक्षा' शब्द का अर्थ हुआ सीखने- सिखाने की क्रिया।शिक्षा एक व्यापक माध्यम है जो छात्रों में कुछ सीख सकने के सभी अनुभवों का विकाश करता है।

शिक्षा रोजगार का एक साधन है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति विभिन्न क्षेत्रों में अपना योगदान देता है और राष्ट्रहित के लिए काम करता है। चिकित्सा क्षेत्र में, व्यक्ति चिकित्सा विज्ञान का अध्ययन करके डॉक्टर बनता है और लोगों का उपचार करता है, समाज में गरीब वर्ग के लोगों का उपचार मुफ़्त में करे ताकि हमारा समाज स्वस्थ रहे और आगे बढ़े, आज भी हम देख रहे है कि हमारा भारत देश में सभी बीमारी का इलाज संभव नहीं है अब मॉडर्न टेकनॉलॉजि विकसित हो रहा है जिसमें हमारे देश के युवा शोध कर गंभीर से गंभीर बीमारियों का उपचार खोज रहे है और लोगों का उपचार कर रहे है , राष्ट्रहित में काम कर रहे है और मेडिकल साइंस की दुनिया में भारत देश को आगे बढ़ा रहे हैं ताकी सभी नागरिक को स्वस्थ रहे।

मेडिकल साइंस की पढ़ाई इंग्लिश में होने के कारण बहुत सारे मेधावी छात्र मेडिकल कॉलेज में नामांकन नहीं ले पाते हैं

मध्य प्रदेश ऐसा पहला राज्य है जिसने मेडिकल की पढ़ाई हिंदी में शुरू की है ताकि हमारे देश के युवा अपनी मातृ भाषा हिंदी में पठन पाठन कर सके।

हम हमारी सरकार से आग्रह करना चाहेंगे कि मेडिकल साइंस की पढ़ाई राज्य के अनुसार उनकी आधिकारिक भाषा में हो ताकि हमारे देश के युवा पढ़ाई कर सके।इंजीनियरिंग के क्षेत्र में भी युवा इसकी पढ़ाई करके मोटर व्हीकल और आधुनिक मशीनों का आविष्कार करते है। ऊँची ऊँची इमारतें तथा ब्रिज का निर्माण करते है जिससे हमारा देश विकसित होता है।कृषि विज्ञान की पढ़ाई करके भी हमारे देश के मेधावी छात्र कृषि क्षेत्र में बहुत अच्छा कार्य कर रहे है ।हमारा भारत देश कृषि प्रधान देश है यहां की लगभग 65% आबादी कृषि पर निर्भर करती है कृषि करके ही वे अपना जीविकोपार्जन करते है और हमसब के लिए अनाज उपजाते है जिंदगी जीने के लिए भोजन जरूरी है हमारे देश के किसान काफी मेहनत करके अन्न उपजाते है जिससे पूरी देश के जनता तक अनाज पहुंचता है।कृषि विज्ञान की पढ़ाई करके हमारे मेधावी छात्र कृषि के लिए नए नए उपकरण और मशीन का आविष्कार कर रहे है जिससे कृषि करना आसान हो रहा है। पेस्टीसाइड बना रहे है जिससे फसल को कीट कीड़े से बचाया जा सके और फसल की पैदावार बढ़ सके जिससे किसानों की आमदनी अच्छी हो सके। हमारे देश में सरकारी विद्यालयों की स्थिति बहुत जगह काफी दयनीय है कई विद्यालयों की इमारते जर्जर स्थिति में है तो कई बहुत पुरानी हो चुकी है जो कभी भी गिर सकती है और बच्चे हादसे का शिकार हो सकते है।

सरकारी विद्यालयों की शिक्षा व्यवस्था अच्छी तरह से नहीं चल पा रही है क्योंकि विद्यालय में अच्छे शिक्षकों की कमी है जिसके कारण बच्चे की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा नहीं मिल पा रही है।युवा बच्चे देश के भविष्य है अगर उसको गुणवत्तापूर्ण शिक्षा नहीं दी जाए तो उसका भविष्य अंधकार में चला जाएगा।सरकार को इस पर विशेष ध्यान देकर समय-समय पर निरीक्षण करके सरकारी विद्यालयों के शिक्षा व्यवस्था को बेहतर ढंग से संचलित करें ताकि हमारे देश के युवाओं को अच्छी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल सके।

सभी सरकारी विद्यालयों में कंप्यूटर शिक्षा दी जानी चाहिए और स्मार्ट क्लास की भी व्यवस्था दी जानी चाहिए ताकि छात्र आधुनिक जानकारी से अवगत हो सके। हमारे देश में प्राइवेट स्कूल (गैर सरकारी विद्यालयों) की संख्या तेजी से बढ़ रही है जिसका मुख्य कारण है सरकारी विद्यालयों के खराब शिक्षा व्यवस्था। गैर सरकारी विद्यालयों की फीस भी काफी ज्यादा है जिसके कारण सभी लोग नामांकन नहीं ले पाते हैं सरकार को गैर सरकारी विद्यालयों की फीस में भी कमी करनी चाहिए ताकि सभी वर्ग के बच्चे नामांकन ले सके।

वर्तमान सरकार शिक्षा पर विशेष ध्यान नहीं दे पा रही है तभी आज हमारा भारत देश शिक्षा के क्षेत्र में बहुत पीछे है और 145 वीं स्थान पर है और इस बात से हमें बहुत खेद है कि वर्तमान सरकार शिक्षा के क्षेत्र में अपनी दायित्व और जिम्मेदारी को बेहतर ढंग से नहीं निभा पा रही है।

बात अरविंद केजरीवाल की किया जाए तो जब इनकी सरकार दिल्ली में थी तो शिक्षा के क्षेत्र में विशेष ध्यान दिया जिसका परिणाम हमें देखने को मिलता है उनकी सरकार में वहां की सरकारी विद्यालयों का समय समय पर निरीक्षण करके शिक्षा व्यवस्था को बेहतर किया जिसके कारण वहां के लोग अपने बच्चो का नामांकण प्राइवेट स्कूलो से कटवाकर सरकारी विद्यालयों में अपने बच्चों का नामांकन करवाया।लेकिन वर्तमान सरकार ने ऐसा कुछ भी नहीं किया, शिक्षा के क्षेत्र में जो काफी निंदनीय है विगत 12 वर्षों से वर्तमान सरकार की केंद्र में सरकार है उनके पास शक्ति भी ज्यादा है अगर वह चाहे तो शिक्षा व्यवस्था को बहुत बेहतर बना सकती है लेकिन उन्हें शिक्षा क्षेत्र में बहुत कम कार्य किया है जो सही नहीं है इसपर सरकार को समय समय पर सभी विद्यालयों का निरक्षण करके शिक्षा व्यवस्था को मजबूत करना चाहिए ताकि हमारा देश आगे बढ़े "एक शिक्षित देश ही विकसित देश बनता है"

शिक्षा के क्षेत्र में समय-समय पर बदलाव होना चाहिए अगर हम प्राचीन समय की शिक्षा व्यवस्था की तुलना वर्तमान से करें तो बहुत ज्यादा अंतर देखने को मिलेगा पुराने समय में स्मार्टबोर्ड और स्मार्ट क्लास नहीं हुआ करता था जिसके कारण हमारे शिक्षक और शिक्षार्थी बहुत सारी जानकारी से अवगत नहीं हो पाते थे।अभी के समय में शिक्षा जगत में A.I का उपयोग तेजी से हो रहा है कंप्यूटर शिक्षा की पढ़ाई सभी विद्यालयों में हो रही है स्मार्ट कक्षाएं और ऑनलाइन शिक्षा काफी तेजी से आगे बढ़ रही है जिसके कारण शिक्षक और शिक्षार्थी कम समय में सभी जानकारी ले पा रहे हैं।

जब कोई शिक्षक पढ़ा रहे हैं और किसी छात्र को समझ में नहीं आया, क्योंकि सभी छात्र अलग-अलग मानसिकता के होते हैं समझने में असमर्थ होने के कारण, सोचते हैं कि यदि शिक्षक ने हमें एक बार और पढ़ाया होता, तो हम उस विषय को अच्छी तरह से समझ पाते। डिजिटल शिक्षा के माध्यम से हम उस विषय के जानकारी को रिकॉर्ड कर के बार बार देख सकते है और आसानी से समझ सकते हैं।

शिक्षा पर सबका अधिकार होना चाहिए लेकिन प्राचीन समय में ऐसा नहीं था उस समय शिक्षा काफी भेदभाव देखने को मिलता था नहीं था, प्राचीन समय में शिक्षा केवल उच्च वर्ग के लोगों के लिए था जो कि गलत था। उच्च वर्ग के लोगों ने लगभग 3000 वर्षों तक शिक्षा पर अवैध जबरन कब्जा बनाए रखा था। शिक्षा पर महिला को बिल्कुल ही अधिकार नहीं था उसको सिर्फ़ घर का काम

चूल्हा चौका करना था।और घर के अंदर तक ही सीमित रहना था। उस समय के लोगों के द्वारा नारी को वस्तु के सामान समझा जाता था।

उस समय नारी को शिक्षा का अधिकार दिलवाले के लिए सामने आए ज्योतिराव गोंविदराव फुले उनका जन्म 11 अप्रैल 1827 को पुणे, महराष्ट्र एक माली परिवार में हुआ, उन्होंने देखा कि हमारे समाज में दलित और सभी वर्ग के महिलाओं के साथ काफी भेद-भाव हो रहा था, दलितो के साथ ज्यादा हीं अत्याचार हो रहा था, छुआ-छूत किया जाता था, दलितो को गन्दी नाली के किड़ा से भी बदत्तर समझा जाता था, उस समय के लोगो का कहना था कि दलित होना एक अभिशाप है। दलित को शिक्षा का अधिकार नहीं है शिक्षा पर केवल उच्च वर्ग के लोगो का अधिकार है, उच्च वर्गो के लोगो ने तो ये तक कह दिया कि एक 10 वर्ष का ब्राम्हण 100 वर्ष के क्षेत्रिय से अधिक ज्ञानी होता है। जो कि साफ उनके सोच के नीचता और बेवकूफी को दर्शाता है, दलित अगर मंत्र सुन ले तो उसके कानो में काँच का टुकड़ा डाल दिया जाता था, और मंत्र का उच्चारण कर ले तो उसका चीभ काट दिया जाता था, दलितो के साथ उस समय सभी क्षेत्र में बहुत ज्यादा अत्याचार और भेद-भाव हुआ, उच्च वर्ग के लोगो को पूरा शक था, अगर दलित शिक्षित हो जायेगा, तो वह अपने अधिकारी को जान लेगा, और हमलोग उस पर

जबरदस्ती शासन नही कर पायेंगे, इसलिए उनलोगो ने दलितो को शिक्षा से दूर रखा।

महिलाओं की स्थिती भी शिक्षा के क्षेत्र में सही नहीं था, उनको शिक्षा से वंचित रखा गया लेकिन ज्योतिराव फुले ने बिशेषकर सभी वर्ग के महिलाओ और दलितो पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाई और उनको शिक्षा का अधिकार दिलवाने के लिए आगे आए।

ज्योतिराव फुले ने अपनी पत्नी सावित्रीबाई फुले को शिक्षित किया और उसमें कहा कि तुम महिला को पढ़ाओ, तभी महिला अपना अधिकार जान पाएगी। क्योंकि बिना शिक्षा के कोई भी व्यक्ति चाहे वह पुरुष हो या महिला वह पशु के समान है। सावित्रीबाई फुले महिला को पढ़ाने के लिए आगे आई और महिलाओं को पढाती थी जब वो रास्ते में जाती थी तो उस समय के लोग उनपर कीचड़ और गोबर फेंकते थे ताकि वो महिला को पढ़ाना छोड़ दे। ज्योतिराव फुले ने सावित्री बाई फुले का आत्मविश्वास बढ़ाया और बोले लोग अगर कीचड़ फेंकते है तो फेकने दो तुम एक और कपड़ा (साड़ी) अपने पास लेके जाओ और विद्यालय पहुंचकर कपड़ा बदल लेना। लेकिन महिला को पढ़ना बंद मत करो। नहीं तो नारी जाती का जीवन इस दल दल से कभी बाहर नहीं निकल पाएगा। उनको अपना अधिकार जानने के लिए शिक्षित होना बहुत जरूरी है। उसमें महिला को पढ़ाया और भारत देश की पहली महिला शिक्षिका बनी। महिला को शिक्षा का अधिकार दिलवाया। जिस कारण आज महिला पढ़ लिखकर ऊंचे ऊंचे पद को ग्रहण कर के अपने परिवार और समाज का नाम रौशन कर रही है। और राष्ट्रहित में अपना योगदान दे रही है।

निष्कर्ष

शिक्षा जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है जो व्यक्ति समाज और राष्ट्र के विकास के लिए अनिवार्य है यह केवल ज्ञान का स्रोत ही नहीं बल्कि चरित्र निर्माण,आत्मनिर्भरता और विकसित कर जीवन को सही दिशा देती है। यह सशक्त शब्द और विकसित राष्ट्र के निर्माण के लिए हर नागरिक को शिक्षा से अधिकार से जोड़ना अनिवार्य है शिक्षा केवल डिग्री या प्रमाण पत्र प्राप्त नहीं करना है बल्कि सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया है जो मनुष्य को जिम्मेदार नागरिक बनाती है। यह समाज को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाली किरण है जो पीढ़ियों तक ज्ञान का हस्तांतरण करती है शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान अर्जन तथा कौशल विकास और एक बेहतर न्यायपूर्ण व शांतिपूर्ण समाज का निर्माण करना है जो हमें वैचारिक स्वतंत्रता प्रदान करते हैं शिक्षा वह आधारशिला है जिस पर उज्ज्वल भविष्य और राष्ट्र की उन्नति निर्भर करती है।

Empowering Multilingual Learners Through Culturally Responsive Teaching

Sanjeev Kumar
Roll-05, B.Ed.
Session -2025-27

In today's classrooms, students come from diverse backgrounds, speaking many different languages and bringing with them a variety of cultures and experiences. These students are called multilingual learners. Multilingual learners are students who know and use more than one language. They may be learning a new language at school while using another at home. Sometimes, they are new to the country, while other times, they have grown up in a community that speaks a language different from the school's main language. These students offer rich perspectives and skills to the classroom. Empowering them means giving them the tools, confidence, and opportunities to succeed in school and beyond. Every classroom is full of stories. Each student brings their own language, culture, and traditions. Helping them succeed is about more than just teaching lesson It's about making them feel seen, heard, and valued. One of the most effective ways to achieve this is by utilizing Culturally Responsive Teaching, or CRT.

Culturally responsive teaching empowers multilingual students by celebrating and including their languages and cultures in the classroom. Rather than viewing linguistic diversity as a barrier, it recognizes students' home languages as assets that enrich learning. This positive perspective boosts students' confidence, improves academic outcomes, and helps create welcoming, inclusive classrooms.

Multilingual learners often face challenges in schools where their home language and culture are not the majority. They may feel left out, misunderstood, or even invisible. When teachers use culturally responsive practices, they help students see the value in their own identities. This builds students' confidence and motivates them to participate more actively in class. For example, consider a student named Maria, who speaks Spanish at home and is learning English at school. If her teacher uses examples and stories from Spanish-speaking cultures, Maria will feel more connected to what she is learning. She will know that her background is important and respected.

Key ideas include respecting everyone's culture, checking your own biases, and keeping lessons challenging but fair. For example, instead of ignoring a student's home language, let them use it sometimes. This "translanguaging" helps them think better, like mixing Hindi words in an English story to explain feelings deeply.

This approach makes kids excited to learn. When lessons match their lives, they pay attention and try harder. Studies show multilingual students in these classrooms improve reading and math by 20% or more. They also feel proud, make friends more easily, and stick with school longer.

Key Principles of Culturally Responsive Teaching:

1.Build Relationships: Teachers take the time to truly know their students. They ask about their families, traditions, and interests. A teacher might invite students to share something special from home, like a favourite food or a traditional song. These conversations help teachers plan lessons that connect to real life.

2.Value Home Languages and Cultures: Teachers let students use their home languages in class when possible. For example, students might write a story in their first language and then share a summary in English. This shows students that their language is a strength, not something to hide.

3.Connect Lessons to Students' Lives: Teachers use stories, examples, and materials that reflect their students' backgrounds. If a class has students from different countries, the teacher might include maps, books, or songs from those places.

4.High Expectations for All: Every child can succeed, no matter which language they speak at home. Teachers show this by giving all students meaningful, challenging work and supporting them along the way.

5.Flexible Teaching Methods: Not everyone learns the same way. Teachers use different approaches, like group work, hands-on projects, pictures, or games, so everyone has a chance to understand and participate.

Practical Strategies for Empowering Multilingual Learners:

1.Use Students' Home Languages: Allowing students to use their first language in class can help them understand new ideas. For instance, if a student speaks Arabic, a teacher might let them explain a concept in Arabic before sharing in English. This builds confidence and helps them connect new learning to what they already know.

2.Include Multicultural Content: Teachers can bring in stories, songs, and images from many different cultures. For example, reading a folk tale from China or listening to music from Mexico allows students to see their cultures represented in school. This makes learning more interesting and meaningful.

3.Celebrate Cultural Holidays and Traditions: When teachers recognize holidays like Diwali, Eid, or Lunar New Year, students feel proud of their heritage. A teacher might ask a student to share how their family celebrates, or bring in a traditional treat. This helps everyone learn about each other and builds a caring classroom community.

4.Encourage Family Involvement: Families are a big part of a child's learning journey. Teachers can invite parents or grandparents to share stories, recipes, or traditions with the class. This not only supports the student but lets families know they are welcome and important.

5.Use Visuals and Hands-On Activities: Pictures, real objects, and hands-on projects help students understand lessons, especially if they are still learning English. For example, when teaching about fruits, a teacher can bring real fruits to class so students can see, touch, and taste them. This makes learning fun and memorable.

6.Foster a Safe and Respectful Environment: Every student should feel safe to share their thoughts and experiences. Teachers set clear rules about respect and kindness. If teasing or bullying happens, they address it right away. This helps everyone feel brave enough to speak up and be themselves.

7.Differentiate Instruction: Not all students learn the same way or at the same pace. Teachers can offer different options for showing what they know—drawing, speaking, or writing, for example. A new English learner might draw a picture about a story while another writes a summary. Both are learning, just in ways that suit them best. Example: Ahmed is a new student from Egypt. He speaks Arabic and is still learning English. At first, Ahmed feels nervous and quiet in his new classroom. But his teacher, Ms. Lee, uses culturally responsive teaching to help him feel at home. Ms. Lee greets Ahmed in Arabic every morning. She asks him to share his favorite Egyptian foods with the class. When the class learns about families, Ms. Lee encourages Ahmed to talk about his family's traditions. She pairs him with another student who speaks Arabic, so he has a buddy to talk to. Slowly, Ahmed starts to participate more. He feels proud of where he comes from and excited to learn new things. Ms. Lee's caring approach helps Ahmed succeed in class and feel like he belongs.

Conclusion:

Empowering multilingual learners is about more than teaching language. It means creating a classroom where every student's culture and language are valued. Culturally responsive teaching is a humane and effective way to do this. By learning about students, using diverse materials, encouraging home languages, involving families, and being open and curious, teachers can help every child succeed. In these classrooms, students are not just learning subjects they are learning to be confident, compassionate, and ready for the world.

शोध शिक्षा और डिजिटल शिक्षा

सन्नी कुमार
क्रमांक – 53, बी.एड.
सत्र -2025-2027

शिक्षा मनुष्य जीवन का आधार स्तंभ है, जो न केवल ज्ञान प्राप्ति का साधन है, बल्कि व्यक्तित्व के समग्र विकास का भी मार्गदर्शक है। शिक्षा का अर्थ केवल पुस्तकीय ज्ञान या डिग्री हासिल करना नहीं है, बल्कि यह इंसान के सोचने–समझने, विवेक से कार्य करने और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की क्षमता विकसित करना है। मनुष्य जन्म से ही जिज्ञासु प्रवृत्ति का होता है, और शिक्षा उसकी इस जिज्ञासा को दिशा देती है।

शिक्षा जीवन को उद्देश्यपूर्ण बनाती है और व्यक्ति को नैतिक, सामाजिक एवं भावनात्मक दृष्टि से सशक्त बनाती है। यह हमें अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक करती है, साथ ही दूसरों के विचारों और संवेदनाओं का सम्मान करना सिखाती है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति में सहानुभूति, करुणा, सहिष्णुता, और अनुशासन जैसे मानवीय गुणों का विकास होता है, जो एक बेहतर समाज के निर्माण के लिए आवश्यक हैं। आज के बदलते युग में शिक्षा केवल रोज़गार पाने का साधन नहीं रह गई है; यह जीवन जीने की कला बन चुकी है। शिक्षा के बिना व्यक्ति अंधकार में भटकता रहता है, जबकि शिक्षित व्यक्ति अपने विचारों और कार्यों से समाज में उजाला फैलाता है। शिक्षा के माध्यम से हम अपनी संस्कृति, परंपराओं और मानवीय मूल्यों को समझ सकते हैं और उन्हें आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचा सकते हैं। इस प्रकार, शिक्षा न केवल व्यक्तिगत उन्नति का रास्ता है, बल्कि यह समाज और राष्ट्र की प्रगति का भी आधार है। यह हमें एक अच्छा इंसान बनने की प्रेरणा देती है और जीवन को सार्थक दिशा प्रदान करती है।

आज के समय में शिक्षा के क्षेत्र में दो प्रमुख शब्द बहुत तेजी से उभरकर सामने आए हैं: शोध शिक्षा (Research Education) और डिजिटल शिक्षा (Digital Education)। दोनों का अपना-अपना महत्व है, परन्तु इनके बीच के अंतर को समझना और यह जानना कि इनमें से कौन-सी अधिक आवश्यक है, वर्तमान समाज के लिए बहुत जरूरी है।

शोध शिक्षा का तात्पर्य उस शिक्षा से है जिसमें विद्यार्थी सिर्फ पुस्तकों की सामग्री को याद करने या परीक्षा में अंक लाने तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह किसी विषय पर गहराई से अध्ययन करता है, प्रश्न करता है, और नए तथ्य या समाधान खोजता है। शोध शिक्षा में जिज्ञासा, तर्कशीलता, और रचनात्मकता को मुख्य स्थान दिया जाता है। उदाहरण के तौर पर, यदि कोई छात्र विज्ञान विषय में स्नातकोत्तर कर रहा है और वह किसी नए जीवाणु की खोज करता है या बीमारी के इलाज के लिए नया तरीका तलाशता है, तो यह शोध शिक्षा का हिस्सा है। शोध शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञात तथ्यों को दोहराना नहीं, बल्कि नए ज्ञान का सृजन करना होता है। इसके लिए प्रयोगशालाओं, फील्ड वर्क, प्रायोगिक अध्ययन, और लम्बे समय तक गहन अध्ययन की आवश्यकता होती है।

डिजिटल शिक्षा वह है जिसमें इंटरनेट, कम्प्यूटर, मोबाइल, टैबलेट, और अन्य तकनीकी उपकरणों के माध्यम से ज्ञान प्राप्त किया जाता है। इसमें ऑनलाइन कक्षाएं, ई-बुक्स, ऑनलाइन टेस्ट, वीडियो लेक्चर, और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स का उपयोग होता है। उदाहरण के लिए, कोविड-19 महामारी के दौरान जब स्कूल और कॉलेज बंद थे, तब विद्यार्थियों ने ऑनलाइन माध्यम से अपनी पढ़ाई जारी रखी। Coursera, Byju's, Khan Academy आदि प्लेटफॉर्म्स डिजिटल शिक्षा के बेहतरीन उदाहरण हैं।डिजिटल शिक्षा ने शिक्षा को सुलभ, लचीला और सस्ता बना दिया है। कोई भी छात्र दुनिया के किसी भी कोने से, किसी भी समय, अपनी इच्छानुसार पढ़ाई कर सकता है।

निष्कर्ष:

आज के बदलते युग में शोध शिक्षा और डिजिटल शिक्षा दोनों ही समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शोध शिक्षा विद्यार्थियों में जिज्ञासा, आलोचनात्मक सोच और समस्याओं के समाधान की क्षमता को बढ़ावा देती है, जिससे वे समाज में सार्थक योगदान दे सकते हैं। वहीं, डिजिटल शिक्षा दूरी और संसाधनों की सीमाओं को तोड़कर शिक्षा को अधिक लोगों तक पहुँचाती है। लेकिन शिक्षा वास्तव में तभी मानवीय बनती है जब इसमें संवेदना, नैतिकता और मूल्यों का समावेश हो। डिजिटल उपकरण केवल माध्यम हैं, वे मानवीय संवाद और रिश्तों का स्थान नहीं ले सकते। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि तकनीक और शोध, विद्यार्थियों में केवल जानकारी नहीं, बल्कि संवेदनशीलता और सहानुभूति भी विकसित करें। शोध शिक्षा और डिजिटल शिक्षा के संगम से हम एक समावेशी, संवेदनशील और प्रगतिशील शैक्षिक प्रणाली का निर्माण कर सकते हैं।

ज्ञान एक मार्गदर्शक

अमृता कुमारी,
रौल नं0–33,बी.एड
सत्र -2025-2027

ज्ञान सृष्टि के निर्माता या मानव जीवन की उत्पत्ति से ही, मनुष्य अपने वातावरण, समाज, परिस्थिति एवं समस्याओं से प्रकृति को समझने एवं जानने का प्रयास करता है। ज्ञान ही हमें सही–गलत समझने में हमारी मदद करता है। मनुष्य जब अपने बुद्धि, विवेक, अनुभव एवं अपनी अवधारणाओं के आधार पर अपने वास्तविक जीवन में उपयोग करते है तो इसे ज्ञान की संज्ञा दी जा सकती है। ज्ञान सूचना के स्त्रोत है, जिसके जरिए इंसान किसी भी समस्याओं का सामाधान धैर्यपूर्वक कर सकता है। ज्ञान अंधेरे में भी रौशनी का काम करती है। ज्ञान अभ्यास तथा अपनी इच्छाशक्ति से प्रापत की जा सकती है। जितनी ज्यादा किसी भी काम को सीखन` की उत्सुक्ता बढ़ेगी, उतना ही ज्यादा ज्ञान प्राप्त होगा।
ज्ञान से ही मनुष्य अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है। यह व्यवहारिकता तथा नैतिकता को दर्शाता है। ज्ञान में शक्ति निहित है जो सत्य तक पहुँचने का एक मात्र साधन है। यह एक ऐसा धन है जिसकी कभी भी चोरी नहीं की जा सकती है। ज्ञान जीवनप्रर्यत्न चलने वाली प्रक्रिया है। यह अन्नत है। ज्ञान के माध्यम से लोगो में आत्मविश्वास बढ़ता है और स्वयं निर्णय लेने में व्यक्ति सक्षम हो जाता है। ज्ञान सोचने की शक्ति को बढ़ाती है, जिससे मनुष्य नये–नये खोज तथा नव–निर्माण करता है।
ज्ञान को विभिन्न दार्शनिकों तथा शिक्षा विधो ने परिभाषित किया है इनमें से कुछ की परिभाषा इस प्रकार हैः–

- स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, ''ज्ञान ही शक्ति है, और आत्मज्ञान सबसे बड़ी शक्ति है।''
- सुकरात के अनुसार, ''ज्ञान सवोर्सच्च सदगुण है।''
- शंकराचार्य के शब्दानुसार, ''ब्रह्ममा को सत्य के रूप में जानना ही ज्ञान है।'' प्रो0 रसेल के अनुसार, ''ज्ञान वह है जो मनुष्य के मन को प्रकाशित करता है।''
- विलियम जेम्स के शब्दानुसार, ''ज्ञान व्यवहारिक और सफलता का दूसरा नाम है।''

आधुनिक युग में ज्ञान का महत्व:

आज का युग तकनीक एवं ज्ञान का युग है। विज्ञान, शिक्षा, चिकित्सा, संचार के क्षेत्र म` ज्ञान में अभूतपूर्व प्रगति की है। आज का ज्ञान बिना तकनीक के अधुरा माना गया है। क्योंकि, बिना तकनीक के आज के युग में विकास की कल्पना करना भी मुश्किल है। ज्ञानी व्यक्ति की एक अलग पहचान होती है। शिक्षा सर्वप्रथम् ज्ञान प्राप्त करने का मुख्य साधन है। ऐसा इसलिए कहा जाता है क्योंकि, शिक्षा से ही मनुष्य का सर्वागिण विकास होता है। जैसे–नैतिक विकास, चारित्रिक विकास, सामाजिक तथा संस्कृतिक विकास, वैज्ञानिक या खोज करन` का विकास, शोध करने का विकास, राजनैतिक विकास, आर्थिक विकास, तार्किक विकास एवं राष्ट्र का विकास आदि। ज्ञान से ही अंधविश्वास, रूढ़ीवादी परम्पराऐं तथा असमानता को समाज से दूर किया जा सकता है। ज्ञानी व्यक्ति आत्मविश्वासी होता है। ज्ञान से ही धैर्य की क्षमता बढ़ती है। ज्ञानी व्यक्ति विवेकपूर्ण भी हेता है।

निष्कर्ष:

अतः उपर्युक्त कथनों से यह निष्कर्ष निकलता है कि ज्ञान, मानव जीवन का आधार है। यह व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सच्चा ज्ञान वही है जो सत्य के मार्ग पर ल` जाये। सत्य के मार्ग में कठिनाईयॉ तो होती है लेकिन, बार–बार प्रयासों से आसान भी बन जाती है। ज्ञान का प्रयोग हमें अपने दैनिक जीवन में करना चाहिए। ज्ञान बहुत ही मूल्यवान तथा मार्गदर्शक है। जिसका अनुकरण हम अपन` ज्ञानेन्द्रियों का सही इस्तेमाल से कर सकत` है। सही ज्ञान स`ही हमारा देश भारत विकसित देश कहलायेगा।

आत्मसम्मान

वीणा कुमारी
रौल – 57, डी.एल.एड
सत्र-2024 -26

प्रस्तावना

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में आत्मसम्मान का बहुत महत्व होता है। आत्मसम्मान का अर्थ है स्वयं का सम्मान करना। यह गुण मनुष्य के जीवन को ऊँचा और श्रेष्ठ बनाता है। जिस व्यक्ति में आत्मसम्मान की भावना नहीं होती, वह जानवरों के समान जीवन व्यतीत करता है। जो व्यक्ति अपने आत्मसम्मान और अपने आचरण की रक्षा करता है, वही सच्चे अर्थों में सम्मान का पात्र बनता है। दुनिया उसी की कद्र करती है, जिसमें आत्मसम्मान होता है। आत्मसम्मान की भावना से व्यक्ति अपने जीवन में गलत रास्ते पर नहीं जाता है। गरीबी या कठिनाई होने पर भी वह किसी के सामने हाथ नहीं फैलाता और न ही अपने सिद्धांतों से समझौता करता है। आत्मसम्मान मनुष्य को अपने कर्मों की पहचान कराता है और उसे सही दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। हर आदमी चाहता है कि उसे समाज में मान-सम्मान मिले। लेकिन यह तभी संभव है, जब वह स्वयं अपना सम्मान करना सीखे। जो व्यक्ति स्वयं का सम्मान नहीं करता, उसका सम्मान अन्य लोग भी नहीं करते। इसलिए जीवन में आत्मसम्मान का होना अत्यंत आवश्यक है।

जिस व्यक्ति में आत्मसम्मान की भावना होती है, वही सच्चे अर्थों में सम्मान का अधिकारी होता है। जो व्यक्ति अपने आत्मसम्मान को अपनी प्राथमिकता देता है, उसे समाज में भी सम्मान मिलता है। आत्मसम्मान से भरपूर व्यक्ति सच्चाई और ईमानदारी का मार्ग अपनाता है। उसके अच्छे कर्म ही उसकी पहचान बनते हैं।

आत्मसम्मान क्या है?

आत्मसम्मान एक बहुमूल्य संपत्ति है, जिसे निरंतर सुरक्षित रखना चाहिए। सम्मानजनक व्यवहार ही मानवता की पहचान है। एक बेहतर व्यक्ति बनने के लिए आत्मसम्मान बहुत आवश्यक है, क्योंकि आत्मसम्मान व्यक्ति को नैतिकता की ओर प्रेरित करता है। आत्मसम्मान से युक्त व्यक्ति में करुणा, दया, परोपकार तथा अच्छे गुणों का विकास होता है। ऐसा व्यक्ति कभी भी दूसरों का अपमान नहीं करना चाहता। वह अपने आचरण से समाज में एक आदर्श प्रस्तुत करता है।

इस प्रकार आत्मसम्मान मनुष्य के जीवन का महत्वपूर्ण आधार है। यह व्यक्ति को सही मार्ग पर चलने और जीवन में सफलता प्राप्त करने की प्रेरणा देता है।

आत्मसम्मान का अर्थ है अपने आप का सम्मान करना। मनुष्य को सबसे पहले स्वयं को समझना और अपनी योग्यताओं को पहचानना चाहिए। यदि व्यक्ति स्वयं का सम्मान नहीं करता, तो दूसरे भी उसका सम्मान नहीं करते।

जिस व्यक्ति में आत्मविश्वास की कमी होती है, वह जीवन में कुछ बड़ा करने की हिम्मत नहीं जुटा पाता। दुनिया में वह सफल नहीं हो पाता। इसलिए हमें अपने आप पर विश्वास रखना चाहिए और अपनी कमजोरियों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। आत्मसम्मान रखने वाला व्यक्ति कभी भी अपने आपको दूसरों से कम नहीं समझता। वह अपनी तुलना किसी से नहीं करता और अपने लक्ष्य की ओर मेहनत करता है। आत्मसम्मान हर व्यक्ति के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे समाज में उसकी पहचान और इज्जत बनी रहती है। हमें अपनी इज्जत कमानी चाहिए। इज्जत कमाने में समय लगता है, लेकिन उसे खोने में पल भर भी नहीं लगता। इसलिए हमें ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए जिससे हमारा आत्मसम्मान कम हो। समय कभी किसी के लिए नहीं रुकता। इसलिए व्यक्ति को चाहिए कि वह आत्मसम्मान के साथ अपना जीवन व्यतीत करे। आत्मसम्मान ही व्यक्ति की सच्ची पहचान है।

सामान्य सम्मान से बड़ा आत्मसम्मान होता है। जो व्यक्ति दूसरों का सम्मान करता है, वही व्यक्ति सच्चे अर्थों में सम्मान पाने योग्य बनता है। ऐसे व्यक्ति का आचरण अच्छा होता है और उसका आत्मसम्मान भी बना रहता है। यदि कोई व्यक्ति गलत व्यवहार करता है तो उसे समाज में इज्जत नहीं मिलती। जो व्यक्ति सच्चाई और ईमानदारी के मार्ग पर चलता है, उसे जीवन में कभी मुश्किलों का सामना करना पड़े तो भी वह हार नहीं मानता।

जो व्यक्ति दूसरों का सम्मान करता है, उसे भी समाज से सम्मान मिलता है। सफल व्यक्ति समाज में बहुत सम्मान पाता है। इस प्रकार व्यक्ति के जीवन में आत्मसम्मान का बहुत बड़ा महत्व है।

आत्मसम्मान के लाभ

आत्मसम्मान का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। आत्मसम्मान समाज में हमें एक अलग स्थान दिलाता है। जो व्यक्ति स्वयं का सम्मान करता है, वह दूसरों के साथ भी अच्छा व्यवहार करता है और उनका भी सम्मान करता है। ऐसे व्यक्ति को समाज में अन्य लोगों द्वारा भी सम्मान प्राप्त होता है। इस प्रकार आत्मसम्मान हमें हर व्यक्ति द्वारा इज्जत दिलाता है। आत्मसम्मान व्यक्ति के आत्मविश्वास को बढ़ाता है। यह व्यक्ति में सकारात्मक भावनाएँ उत्पन्न करता है, जिससे वह जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित होता है और सतत मेहनत करता रहता है। आत्मविश्वास व्यक्ति को सफलता दिलाने में मदद करता है। आत्मसम्मान व्यक्ति को समय का महत्व सिखाता है।

लुईस हर्नेटीन ने अपने सिद्धांत में आत्मसम्मान और पहचान, अहंकार तथा सामाजिक मूल्यों के आधार पर आत्मसम्मान को चार भागों में बाँटा है। उनका मानना है कि व्यक्ति स्वयं का मूल्यांकन करता है कि वह कितना सक्षम या योग्य है। परिस्थितियों के अनुसार यह भावना बदल भी सकती है।

आत्मसम्मान के प्रकार

- ✓ उच्च और स्थिर आत्मसम्मान
- ✓ उच्च और अस्थिर आत्मसम्मान
- ✓ कम और स्थिर आत्मसम्मान
- ✓ कम और अस्थिर आत्मसम्मान

आत्मसम्मान पर लगी चोट से इंसान का वर्तमान और भविष्य दोनों प्रभावित हो सकते हैं।

आत्मसम्मान को प्रभावित करने वाले कारक

जो व्यक्ति आपकी बेइज्जती करता है या आपके विचारों का सम्मान नहीं करता, वह आपके आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाता है। जब कोई आपकी सच्ची प्रशंसा करता है और आप पर विश्वास व्यक्त करता है, तो वह आपके आत्मसम्मान को बढ़ाता है। जिस व्यक्ति के प्रति हम अच्छी भावना रखते हैं, उसके प्रति हमारा व्यवहार भी अच्छा होता है। यदि कोई व्यक्ति हमारे प्रति गलत सोच रखता है या हमारा अपमान करता है, तो इससे हमारे आत्मसम्मान पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इसलिए हमें हमेशा अपने आत्मसम्मान की रक्षा करनी चाहिए और ऐसे लोगों से दूर रहना चाहिए जो हमारे सम्मान को कम करने की कोशिश करते हैं।

कुछ लोग बिना किसी कारण दूसरों का अपमान कर देते हैं या सही होने पर भी उन्हें गलत साबित करने की कोशिश करते हैं। ऐसी परिस्थितियाँ हमारे आत्मसम्मान को प्रभावित करती हैं। इसलिए हमें धैर्य और समझदारी से काम लेना चाहिए और अपने सम्मान की रक्षा करनी चाहिए।

निष्कर्ष

आत्मसम्मान व्यक्ति को उचित और नए मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है। इससे वह जीवन में किसी भी कठिनाई का सामना करने से नहीं घबराता। आत्मसम्मानी व्यक्ति समाज में हमेशा सम्मान प्राप्त करता है। इसलिए एक अच्छा और सच्चा इंसान बनने के लिए प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में आत्मसम्मान का होना अत्यंत आवश्यक है।

वर्ग-कक्ष में शिक्षक की उपयोगिता

मुसर्रत प्रविन
रौरौल – 43, डी.एल.एड
सत्र-2024-26

प्रस्तावना

कक्षा-कक्ष में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक केवल विषय पढ़ाने वाला व्यक्ति ही नहीं होता, बल्कि वह बच्चों के मार्गदर्शक, प्रेरक और सच्चे पथ-प्रदर्शक भी होते हैं। विद्यालय में शिक्षक ही बच्चों के व्यक्तित्व के विकास की नींव रखते हैं।

शिक्षक की उपयोगिता

कक्षा में शिक्षक विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करते हैं और उनकी जिज्ञासाओं का समाधान करते हैं। वे कठिन विषयों को सरल भाषा में समझाते हैं, जिससे विद्यार्थी उन्हें आसानी से समझ सकें। शिक्षक बच्चों के दैनिक जीवन में भी मार्गदर्शन करते हैं, ताकि वे जीवन के पाठों को सरलता से सीख सकें। शिक्षक बच्चों में अनुशासन बनाए रखते हैं और समय का सही पालन करना सिखाते हैं। वे नैतिक मूल्यों का विकास करते हैं और विद्यार्थियों को अच्छे आचरण के लिए प्रेरित करते हैं। शिक्षक बच्चों को उनके लक्ष्य तय करने में सहायता करते हैं तथा उज्ज्वल भविष्य के लिए सही दिशा दिखाते हैं।

शिक्षक विद्यार्थियों को उनकी क्षमताओं के अनुसार पढ़ाते हैं और उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। वे समाज के आदर्श होते हैं, जो ज्ञान प्रदान करने के साथ-साथ विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और चरित्र को भी आकार देते हैं। शिक्षक केवल शैक्षिक मार्गदर्शन ही नहीं करते, बल्कि नैतिक शिक्षा देकर सही–गलत का बोध भी कराते हैं। शिक्षक बच्चों में आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, आलोचनात्मक सोच और रचनात्मकता का विकास करते हैं। वे विद्यार्थियों को अच्छे नागरिक और समाज के जिम्मेदार सदस्य बनने के लिए प्रेरित करते हैं।

शिक्षक की उपयोगिता और महत्व

ज्ञान के संप्रेषक (Communicator of Knowledge)

शिक्षक विभिन्न विषयों का ज्ञान देकर विद्यार्थियों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करते हैं। वे कठिन विषयों को सरल बनाकर समझाते हैं, जिससे विद्यार्थी आसानी से सीख सकें।

मार्गदर्शक और परामर्शदाता (Mentor and Counselor)

शिक्षक बच्चों के व्यक्तिगत, सामाजिक और शैक्षिक विकास में मार्गदर्शन करते हैं। वे उनके व्यवहार और नैतिक मूल्यों का विकास करते हैं तथा सही दिशा दिखाते हैं। इस प्रकार, कक्षा में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षक ही विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की नींव रखते हैं और उन्हें सफल जीवन की ओर अग्रसर करते हैं।

- प्रेरक (Motivator)

शिक्षक विद्यार्थियों को अपने सपनों को पूरा करने और बेहतर भविष्य बनाने के लिए प्रेरित करते हैं। वे उनमें आत्मविश्वास जगाते हैं और कठिन परिस्थितियों में भी आगे बढ़ने की हिम्मत देते हैं।

- कौशल विकास (Skill Development)

अकादमिक शिक्षा के अलावा शिक्षक संचार कौशल, सहयोग की भावना तथा अंतर्वैयक्तिक (Interpersonal) कौशल जैसे महत्वपूर्ण जीवन कौशल सिखाते हैं। ये कौशल विद्यार्थियों के समग्र विकास में सहायक होते हैं।

गतिविधियाँ और शिक्षण

शिक्षक शिक्षण में सहायक सामग्रियों और विभिन्न गतिविधियों का उपयोग करके पढ़ाई को सरल, रोचक और प्रभावी बनाते हैं। इससे विद्यार्थियों की रुचि बढ़ती है और वे सक्रिय रूप से सीखने में भाग लेते हैं। शिक्षक कक्षा में अनुशासन बनाए रखने में

भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे शांति, सहयोग और सद्भाव का वातावरण बनाकर सीखने की प्रक्रिया को सुगम और आनंदमय बनाते हैं। कहा जाता है कि कक्षा—कक्ष में शिक्षक की उपयोगिता अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक एक शिक्षाविद् होने के साथ-साथ मार्गदर्शक, मूल्य-निर्माता और विद्यार्थियों के भविष्य के निर्माता भी होते हैं। शिक्षक के बिना कक्षा केवल एक कमरा रह जाती है, परंतु शिक्षक के होने से वही कक्षा ज्ञान का केंद्र बन जाती है।

कक्षा—कक्ष में शिक्षक शिक्षण व्यवस्था की आधारशिला होते हैं। वे अपने ज्ञान और अनुभव के माध्यम से विद्यार्थियों को नई-नई जानकारियाँ प्रदान करते हैं तथा उनके व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। आधुनिक समय में शिक्षक तकनीक का उपयोग कर शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाते हैं।

स्मार्ट बोर्ड, ऑडियो-विजुअल सामग्री तथा अन्य शिक्षण संसाधनों के प्रयोग से वे विषय-वस्तु को स्पष्ट, सरल और रोचक बनाते हैं। इससे विद्यार्थियों की समझ बढ़ती है और वे विषय को आसानी से ग्रहण कर पाते हैं।

गतिविधि-आधारित शिक्षण को भी कक्षा में विशेष स्थान दिया जाता है। शिक्षक विभिन्न व्यावहारिक कार्यों, प्रयोगों और खेलों के माध्यम से सीखने पर जोर देते हैं। इससे विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी बढ़ती है और सीखने की प्रक्रिया अधिक प्रभावशाली बनती है।

इस प्रकार, शिक्षक कक्षा के केंद्र बिंदु होते हैं और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

गतिविधि—आधारित शिक्षण में शिक्षक की भूमिका

गतिविधि—आधारित शिक्षण में शिक्षक एक मार्गदर्शक, सुविधाप्रदाता (Facilitator) और प्रेरक की भूमिका निभाते हैं। वे पाठ—योजना के अनुसार विद्यार्थियों के लिए ऐसी गतिविधियाँ तैयार करते हैं, जिनसे सीखना रुचिकर, आनंदमय और अनुभवात्मक बन सके। शिक्षक केवल ज्ञान देने तक सीमित नहीं रहते, बल्कि सहयोग, रचनात्मकता, समस्या—समाधान कौशल और नैतिक मूल्यों के विकास पर भी विशेष ध्यान देते हैं।

गतिविधि और शिक्षण में शिक्षक की प्रमुख भूमिकाएँ

• सुविधाप्रदाता (Facilitator)

शिक्षक पाठ—योजना तैयार करते हैं और सीखने के लिए अनुकूल वातावरण बनाते हैं। वे ऐसी गतिविधियाँ आयोजित करते हैं, जिनसे विद्यार्थी स्वयं सक्रिय होकर सीख सकें और अपने अनुभवों से ज्ञान अर्जित करें।

• मार्गदर्शक और सलाहकार (Mentor & Advisor)

शिक्षक विद्यार्थियों को सही दिशा में प्रेरित करते हैं। वे उनकी क्षमताओं को पहचानकर उनका उचित विकास करने में सहायता करते हैं तथा आवश्यकता अनुसार सहयोग और परामर्श प्रदान करते हैं।

इस प्रकार, गतिविधि—आधारित शिक्षण में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। वे विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी और जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए तैयार करते हैं।

• आयोजक एवं संसाधन प्रदाता (Organizer & Resource Provider)

शिक्षक सीखने की गतिविधियों का योजनाबद्ध ढंग से आयोजन करते हैं। वे आवश्यक शिक्षण सामग्री और संसाधन उपलब्ध कराते हैं, ताकि शिक्षण प्रभावी और सुव्यवस्थित हो सके।

• मूल्यांकनकर्ता (Evaluator)

शिक्षक केवल विद्यार्थियों के शैक्षिक ज्ञान का ही मूल्यांकन नहीं करते, बल्कि उनकी गतिविधियों और प्रगति का भी आकलन करते हैं। इससे विद्यार्थियों की कमियों और विशेषताओं की पहचान होती है तथा सुधार का अवसर मिलता है।

• संवेदनशील साथी (Sensitive Partner)

शिक्षक विद्यार्थियों के सच्चे मित्र और हितैषी होते हैं। वे बच्चों की भावनाओं को समझते हैं और उनके व्यक्तित्व के निर्माण में सहयोग करते हैं। शिक्षक प्राथमिक स्तर पर ही शिक्षा और ज्ञान प्रदान कर विद्यार्थियों के जीवन को सही दिशा देते हैं। माता-

पिता के अतिरिक्त शिक्षक ही वह प्रमुख व्यक्ति हैं, जो बच्चों को नैतिक शिक्षा देते हैं और जीवन के प्रत्येक चरण में उनका मार्गदर्शन करते हैं। इस प्रकार, शिक्षक विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

शिक्षा में गतिविधि–आधारित शिक्षण का महत्व

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति में गतिविधि–आधारित शिक्षण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जब शिक्षण केवल व्याख्यान तक सीमित न रहकर विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से दिया जाता है, तब सीखना अधिक प्रभावी और रोचक बन जाता है।

(i) अनुभव के द्वारा सीखना

गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थी स्वयं अनुभव करके सीखते हैं। "करके सीखना" (Learning by Doing) की प्रक्रिया ज्ञान को स्पष्ट, स्थायी और व्यावहारिक बनाती है। इससे विद्यार्थी विषय को आसानी से समझ पाते हैं।

(ii) जिज्ञासा और रुचि का विकास

विभिन्न शैक्षिक गतिविधियाँ विद्यार्थियों में जिज्ञासा उत्पन्न करती हैं। वे प्रश्न पूछते हैं, खोजबीन करते हैं और नए विचारों को समझने का प्रयास करते हैं। इससे सीखने की रुचि बढ़ती है।

(iii) मानसिक एवं सामाजिक विकास

वाद-विवाद, परियोजना कार्य, समूह कार्य और अन्य गतिविधियों से विद्यार्थियों में सहयोग की भावना, अनुशासन और सामाजिक समायोजन की क्षमता विकसित होती है। इससे उनका मानसिक और सामाजिक विकास संतुलित रूप से होता है। इस प्रकार, गतिविधि–आधारित शिक्षण विद्यार्थियों को सक्रिय, आत्मविश्वासी और जिम्मेदार बनाता है तथा शिक्षा को अधिक प्रभावशाली और उपयोगी बनाता है। यहाँ आपके दिए गए अंश को साफ और सही रूप में दोबारा लिखकर प्रस्तुत किया गया है-

(iv) आत्मविकास में वृद्धि

जब विद्यार्थी गतिविधियों में भाग लेते हैं और अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं, तो उनका आत्मविकास होता है। मंच पर बोलना और अपने विचार व्यक्त करना उन्हें आत्मविश्वासी बनाता है तथा वे अपने व्यक्तित्व का विकास करने में सक्षम बनते हैं।

निष्कर्ष

इससे यह स्पष्ट होता है कि कक्षा में शिक्षक की भूमिका बहुआयामी होती है। शिक्षक ज्ञानात्मक, भावनात्मक और नैतिक सभी क्षेत्रों में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। शिक्षक के बिना शिक्षण प्रक्रिया अधूरी है।

समाज में लड़कियों की शिक्षा

रूपा कुमारी
रौल – 43, डी.एल.एड
सत्र-2024-26

शिक्षा किसी भी समाज की प्रगति की आधारशिला होती है। यदि समाज की आधी आबादी, यानी लड़कियाँ, शिक्षित नहीं होंगी तो देश का संतुलित विकास संभव नहीं हो पाएगा। लड़कियों की शिक्षा न केवल उनके व्यक्तिगत जीवन को बेहतर बनाती है, बल्कि पूरे परिवार और समाज के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हमारे समाज में लंबे समय तक लड़कियों की शिक्षा को उतना महत्व नहीं दिया गया। इसके पीछे कई कारण थे, जैसे- बाल विवाह, गरीबी, सामाजिक रूढ़ियाँ और लड़कियों को घर तक सीमित रखने की सोच। इन कारणों से बहुत-सी लड़कियाँ शिक्षा से वंचित रह जाती थीं। लेकिन समय के साथ अब स्थिति बदल रही है और लोग समझने लगे हैं कि शिक्षित लड़की पूरे समाज की दिशा बदल सकती है।

लड़कियों की शिक्षा से उनमें आत्मविश्वास बढ़ता है। वे अपने अधिकारों को पहचानती हैं और सही-गलत का अंतर समझती हैं। शिक्षा उन्हें आत्मनिर्भर बनाती है, जिससे वे अपने जीवन के निर्णय स्वयं ले सकती हैं। एक शिक्षित लड़की न केवल अपने जीवन को सुधारती है, बल्कि एक अच्छे समाज का निर्माण भी करती है। वह अपने परिवार को शिक्षित बनाती है और आने वाली पीढ़ियों को बेहतर दिशा देती है। इसलिए हमें लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए और समाज में इसके महत्व को समझना चाहिए।

आज के समय में लड़कियों की शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ रही है। सरकार और समाज मिलकर लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अनेक प्रयास कर रहे हैं। "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" जैसी योजनाएँ, मुफ्त शिक्षा, स्कूलों में सुविधाओं की व्यवस्था, छात्रवृत्ति आदि इसके महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। फिर भी केवल योजनाएँ ही पर्याप्त नहीं हैं। जब तक समाज की सोच नहीं बदलेगी, तब तक वास्तविक परिवर्तन संभव नहीं है। हमें यह समझना होगा कि लड़कियों की शिक्षा कोई विकल्प नहीं, बल्कि आवश्यकता है। जब तक हर लड़की शिक्षित नहीं होगी, तब तक समाज पूरी तरह विकसित नहीं हो सकता। इसलिए हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हर लड़की को शिक्षा का समान अधिकार मिलेगा। तभी वह अपने सपनों को साकार कर सकेगी और देश के विकास में अपना योगदान दे पाएगी।

"स्वाभिमान से जीने के लिए पढ़ाई करो पाठशाला ही इंसानों का सच्चा गहना है"

-स्वामी दयानंद सरस्वती

स्वामी दयानंद सरस्वती ने स्त्री शिक्षा और समानता पर विशेष बल दिया। उनका मानना था कि स्त्रियों को भी पुरुषों के समान शिक्षा का अधिकार मिलना चाहिए। उनके अनुसार, शिक्षित समाज ही सशक्त समाज बन सकता है और इसमें महिलाओं की शिक्षा अत्यंत आवश्यक है।

स्वामी दयानंद का विचार था कि परिवार और समाज दोनों के विकास के लिए नारी का शिक्षित होना जरूरी है। वे केवल स्त्रियों को शिक्षित करने तक ही सीमित नहीं थे, बल्कि उन्हें पुरुषों के समान अधिकार देने चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि बेटियों को पढ़ाना बहुत आवश्यक है, क्योंकि यदि लड़कियाँ शिक्षित होंगी तो वे अपने बच्चों को भी शिक्षित करेंगी। इस प्रकार पूरे समाज में ज्ञान का प्रसार होगा। वे मानते थे कि अज्ञानता ही समाज की अनेक समस्याओं का कारण है, इसलिए शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए। स्वामी दयानंद सरस्वती ने अपने विचारों को समाज के सामने स्पष्ट रूप से रखा और अपने प्रसिद्ध ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में भी इन बातों का उल्लेख किया।

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।" अर्थात जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ देवताओं का वास होता है।

लड़कियों की शिक्षा पर फातिमा शेख और सावित्री बाई फुले का योगदान

फातिमा शेख भारत की पहली मुस्लिम महिला शिक्षिका थीं। जिन्होंने 1848 में पुणे में उन्होंने ज्योतिराव फुले और सावित्रीबाई फुले के साथ मिलकर लड़कियों के पहले स्कूल की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

फातिमा शेख, सावित्रीबाई फुले और ज्योतिराव फुले के साथ मिलकर लड़कियों की शिक्षा के लिए कार्य करती थीं। उन्होंने अपने घर के एक हिस्से को स्कूल चलाने के लिए दे दिया था। वे हर वर्ग और समुदाय की लड़कियों को पढ़ाने का काम करती थीं। उस समय समाज में कई लोग उनके इस कार्य के विरोधी थे, फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी और अपने कार्य को जारी रखा। उन्हें सामाजिक बहिष्कार और कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ा।

शिक्षा के क्षेत्र में प्रमुख चुनौतियाँ

समाज ने उनका विरोध किया। लोगों ने पत्थर और गंदगी फेंककर अपमानित किया। फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी और अपना कार्य जारी रखा।

महिलाओं के लिए उनका दृष्टिकोण:

फातिमा शेख मानती थीं कि शिक्षा के माध्यम से महिलाओं को उनके अधिकार और सम्मान मिल सकते हैं। उन्होंने विधवा पुनर्विवाह, अनाथ बच्चों की देखभाल और महिलाओं के अधिकारों के लिए भी कार्य किया।

फातिमा शेख और सावित्रीबाई फुले ने न केवल शिक्षा के क्षेत्र में बल्कि समाज में समानता, स्वतंत्रता और अधिकारों के लिए भी संघर्ष किया और धर्म के भेद भाव को भी चुनौती दिए। उनका योगदान आज भी प्रेरणादायक है।

सरोजिनी नायडू के विचार

सरोजिनी नायडू लड़कियों की शिक्षा और उनके अधिकारों की प्रबल समर्थक थीं। उनका मानना था कि शिक्षित महिलाएँ ही एक मजबूत राष्ट्र का निर्माण कर सकती हैं। उन्होंने अपने विचारों और कार्यों के माध्यम से महिलाओं को जागरूक किया और उन्हें समाज में सम्मान अधिकार दिलाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने महिलाओं के लिए समान शिक्षा, मतदान का अधिकार और सामाजिक स्वतंत्रता की वकालत की। उनका उद्देश्य महिलाओं में आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास बढ़ाना था, ताकि वे अपने जीवन में स्वतंत्र रूप से निर्णय ले सकें।

निष्कर्ष

लड़कियों की शिक्षा न केवल उनके व्यक्तिगत जीवन को बेहतर बनाती है, बल्कि पूरे परिवार और समाज के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लड़कियों की शिक्षा से उनमें आत्मविश्वास बढ़ता है। वे अपने अधिकारों को पहचानती हैं और सही-गलत का अंतर समझती हैं। शिक्षा उन्हें आत्मनिर्भर बनाती है, जिससे वे अपने जीवन के निर्णय स्वयं ले सकती हैं।

शिक्षा का महत्व

विशाल कुमार
रोल नं-91, बी.एड.
सत्र - 2025-27

सारांश

शिक्षा मानव जीवन का आधार है, जो व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह केवल पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक और बौद्धिक विकास का साधन है। शिक्षा व्यक्ति को ज्ञान, कौशल, मूल्यों और सही दृष्टिकोण से सशक्त बनाती है, जिससे वह अपने जीवन में सही निर्णय ले सके और समाज में सकारात्मक योगदान दे सके। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास करना, उसे आत्मनिर्भर बनाना तथा एक जिम्मेदार नागरिक तैयार करना है। एक शिक्षित व्यक्ति अपने अधिकारों और कर्तव्यों को समझता है तथा समाज में शांति, समानता और सहयोग की भावना को बढ़ावा देता है। शिक्षा सामाजिक बुराइयों जैसे अशिक्षा, अंधविश्वास, भेदभाव और गरीबी को दूर करने में भी सहायक होती है। आर्थिक दृष्टि से भी शिक्षा का विशेष महत्व है, क्योंकि यह व्यक्ति को रोजगार के योग्य बनाती है और उसकी आय तथा जीवन स्तर को सुधारती है। एक शिक्षित और कुशल जनसंख्या किसी भी राष्ट्र के विकास की आधारशिला होती है। इसके अलावा शिक्षा व्यक्ति में नैतिक मूल्यों, अनुशासन और जिम्मेदारी की भावना विकसित करती है, जिससे वह एक अच्छा नागरिक बन सके। इस प्रकार शिक्षा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के विकास की कुंजी है। यह न केवल वर्तमान जीवन को बेहतर बनाती है, बल्कि एक उज्ज्वल और समृद्ध भविष्य का मार्ग भी प्रशस्त करती है।

परिचय (Introduction)

शिक्षा मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण आधार है, जो व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सहायक होती है। शिक्षा व्यक्ति के ज्ञान, कौशल, व्यक्तित्व और नैतिक मूल्यों का विकास करती है। यह व्यक्ति को सही और गलत में अंतर करना सिखाती है और उसे एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए तैयार करती है। आज के आधुनिक युग में शिक्षा का महत्व और अधिक बढ़ गया है, क्योंकि यह व्यक्ति को नई तकनीकों और बदलती परिस्थितियों के साथ तालमेल बिठाने में सहायता करती है। शिक्षा समाज में समानता, जागरूकता और प्रगति को बढ़ावा देती है। इसलिए शिक्षा को व्यक्ति और राष्ट्र के विकास की आधारशिला माना जाता है।

साहित्य समीक्षा (Literature Review)

महात्मा गांधी के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के शरीर, मन और आत्मा का संतुलित विकास करना है। स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा को व्यक्ति की आंतरिक शक्तियों के विकास का माध्यम बताया है। NCERT (2005) के अनुसार, शिक्षा व्यक्ति के ज्ञान और सामाजिक विकास का महत्वपूर्ण साधन है। UNESCO (2015) की रिपोर्ट के अनुसार, शिक्षा समाज में समानता, शांति और आर्थिक विकास को बढ़ावा देती है। Aggarwal (2010) के अनुसार, शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व और नैतिक मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इन सभी विचारों से स्पष्ट होता है कि शिक्षा व्यक्ति और समाज दोनों के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

शोध पद्धति (Research Methodology)

इस अध्ययन में द्वितीयक स्रोतों (Secondary Sources) का उपयोग किया गया है। इसके अंतर्गत विभिन्न पुस्तकों, शोध पत्रों, NCERT की पुस्तकों तथा UNESCO की रिपोर्ट का अध्ययन किया गया। यह अध्ययन वर्णनात्मक (Descriptive Method) पद्धति पर आधारित है, जिसमें शिक्षा के महत्व का विश्लेषण किया गया है।

चर्चा (Discussion)

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शिक्षा व्यक्ति और समाज दोनों के विकास के लिए आवश्यक है। शिक्षा व्यक्ति को ज्ञान, कौशल और नैतिक मूल्य प्रदान करती है। शिक्षा सामाजिक बुराइयों को दूर करने और समाज में जागरूकता फैलाने में सहायक होती है। इसके अलावा शिक्षा व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाती है और राष्ट्र के विकास में योगदान देने योग्य बनाती है। इस प्रकार शिक्षा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के विकास का महत्वपूर्ण साधन है।

निष्कर्ष (Conclusion)

अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षा मानव जीवन के विकास की आधारशिला है। यह व्यक्ति के व्यक्तित्व, सामाजिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा व्यक्ति को एक अच्छा नागरिक बनाती है और राष्ट्र की प्रगति में सहायक होती है।

संदर्भ (References)

1. NCERT (2005), National Curriculum Framework, New Delhi.
2. Aggarwal, J.C. (2010), Theory and Principles of Education, Vikas Publishing House.
3. UNESCO (2015), Education for All Global Monitoring Report.
4. Mohanty, J. (2002), Modern Trends in Education.
5. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय (Minist

बी.एड. प्रशिक्षण: एक शिक्षक नहीं, राष्ट्र-निर्माता बनने की यात्रा

Roshan Kumar Gope
Roll No.–23, B.Ed.
Session - 2025-2027

प्रस्तावना

कॉलेज जीवन का हर चरण हमें किसी न किसी बड़े लक्ष्य की ओर अग्रसर करता है, परंतु बी.एड. प्रशिक्षण एक ऐसा पड़ाव है जो केवल करियर नहीं, बल्कि एक जिम्मेदारी का एहसास कराता है। यह प्रशिक्षण हमें एक साधारण विद्यार्थी से एक जागरूक, संवेदनशील और उत्तरदायी शिक्षक में परिवर्तित करता है। वास्तव में, बी.एड. केवल एक डिग्री नहीं, बल्कि राष्ट्र-निर्माण की दिशा में उठाया गया सशक्त कदम है। कहा जाता है कि **"एक अच्छा शिक्षक मोमबत्ती की तरह होता है, जो स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देता है।"** भारत के पूर्व राष्ट्रपति और महान शिक्षाविद् डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने भी शिक्षक की भूमिका को राष्ट्र के विकास से जोड़ा था। उनके अनुसार, शिक्षक समाज का वास्तविक मार्गदर्शक होता है। बी.एड. प्रशिक्षण इसी मार्गदर्शन की कला और विज्ञान दोनों को सिखाता है।

शिक्षण की कला और विज्ञान

बी.एड. प्रशिक्षण में हमें यह सिखाया जाता है कि पढ़ाना केवल पाठ्यपुस्तक का ज्ञान देना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के मन को समझना और उनकी जिज्ञासा को शांत तथा नये ज्ञान को जागृत करना है। शैक्षिक मनोविज्ञान के माध्यम से हम यह जान पाते हैं कि प्रत्येक विद्यार्थी अलग है- उसकी सोच, उसकी क्षमता और उसकी सीखने की गति भी भिन्न होती है। जब हम पाठ योजना (Lesson Plan) तैयार करते हैं, तो हमें यह अनुभव होता है कि एक सफल कक्षा के पीछे कितनी सूक्ष्म तैयारी और रचनात्मक सोच होती है। ब्लैकबोर्ड पर लिखे गए शब्दों के पीछे शिक्षक की मेहनत, धैर्य और समर्पण छिपा होता है।

प्रायोगिक शिक्षण: आत्मविश्वास की पहली सीढ़ी

बी.एड. प्रशिक्षण का सबसे प्रेरणादायक भाग होता है- प्रायोगिक शिक्षण (Teaching Practice)। जब हम पहली बार वास्तविक कक्षा में खड़े होकर विद्यार्थियों को संबोधित करते हैं, तो वह क्षण जीवनभर याद रहता है। हल्की घबराहट, उत्साह और जिम्मेदारी का मिश्रण हमें यह एहसास कराता है कि अब हम केवल सीखने वाले नहीं, बल्कि सिखाने वाले भी हैं।

विद्यालय में बिताया गया समय हमें अनुशासन, समय-प्रबंधन और नेतृत्व की वास्तविक समझ देता है। मार्गदर्शक के साथ शिक्षक के सुझाव हमें अपनी कमियों को सुधारने और अपनी क्षमताओं को पहचानने का अवसर देते हैं।

आधुनिक शिक्षा और तकनीकी दक्षता

आज का युग डिजिटल युग है। स्मार्ट क्लास, प्रोजेक्टर, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और ई-लर्निंग ने शिक्षा को नई दिशा दी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी शिक्षक प्रशिक्षण में तकनीकी दक्षता पर विशेष बल दिया है। बी.एड. प्रशिक्षण के दौरान हमें सिखाया जाता है कि तकनीक का उपयोग केवल सुविधा के लिए नहीं, बल्कि शिक्षा को अधिक प्रभावी और रोचक बनाने के लिए कैसे किया जाय।

तकनीक के माध्यम से शिक्षक विद्यार्थियों की रुचि बढ़ा सकता है और उन्हें वैश्विक ज्ञान से जोड़ सकता है। इस प्रकार बी.एड. प्रशिक्षण हमें परंपरा और आधुनिकता के संतुलन की शिक्षा देता है।

नैतिक मूल्यों का संवाहक

एक शिक्षक केवल विषय विशेषज्ञ नहीं होता, वह मूल्यों का संवाहक भी होता है। उसका आचरण ही विद्यार्थियों के लिए आदर्श बनता है। बी.एड. प्रशिक्षण धैर्य, सहानुभूति, निष्पक्षता और नेतृत्व जैसे गुणों को आत्मसात करने की प्रेरणा देता है। कक्षा में बैठा हर विद्यार्थी अपने साथ एक अलग पृष्ठभूमि और सपने लेकर आता है। शिक्षक का कर्तव्य है कि वह उन सपनों को पंख दे। यही कारण है कि बी.एड. प्रशिक्षण में समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) पर विशेष जोड दिया जाता है, ताकि हर विद्यार्थी को समान अवसर मिल सके।

चुनौतियाँ और अवसर

बी.एड. प्रशिक्षण आसान नहीं है। पाठ योजना बनाना, माइक्रो-टीचिंग करना, सेमिनार प्रस्तुत करना और फाइल वर्क तैयार करना- ये सभी कार्य हमें अनुशासन और परिश्रम की सीख देता हैं। कभी-कभी यह यात्रा कठिन लग सकती है, परंतु यही कठिनाइयाँ हमें आत्मनिर्भर और सशक्त बनाती हैं। हर चुनौती के साथ एक अवसर छिपा होता है- खुद को बेहतर बनाने का अवसर। जब हम अपनी झिझक पर विजय प्राप्त करते हैं और आत्मविश्वास के साथ कक्षा में खड़े होते हैं, तब हमें अपने भीतर छिपे शिक्षक का वास्तविक स्वरूप दिखाई देता है।

निष्कर्ष

एक संकल्प, एक सपना

बी.एड. प्रशिक्षण हमें केवल रोजगार नहीं देता, बल्कि एक उद्देश्य देता है- समाज को बेहतर बनाने का उद्देश्य। एक प्रशिक्षित शिक्षक ही विद्यार्थियों में नैतिकता, अनुशासन और जागरूकता का संचार कर सकता है। आज जब हम बी.एड. प्रशिक्षण की इस यात्रा पर हैं, तो हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम केवल डिग्री प्राप्त करने के लिए नहीं, बल्कि एक आदर्श शिक्षक बनने के लिए प्रयास करेंगे। क्योंकि एक शिक्षक की सफलता केवल उसके विद्यार्थियों की उपलब्धियों में नहीं, बल्कि उनके चरित्र और व्यक्तित्व के विकास में भी झलकती है।

अंत में, बी.एड. प्रशिक्षण एक ऐसी साधना है, जो हमें ज्ञान के साथ संवेदनशीलता और समर्पण की भावना भी प्रदान करती है। हर शिक्षक अपने दायित्व को समझकर कार्य करे, तो एक सशक्त, शिक्षित और विकसित भारत का सपना अवश्य साकार होगा।

Reference (संदर्भ)

1. शिक्षा का दर्शन (John Dewey, Democracy and Education, 1916)
2. Dr. Sarvapalli Radhakrishnan 1968
3. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT 2005) तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूप रेखा (NCF-2005)
4. Teacher and Education in Developing Society (2005)
5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020)
6. Ministry of Education, Government of India (2020)

Depression in Youngsters: A Hidden Barrier to Career Growth

Raj Nandani
Roll- 82, B.Ed.
Session - 2024-2026

Introduction

Depression among youngsters has become one of the most pressing mental health challenges of our time. With increasing academic pressure, social expectations, and the uncertainties of modern life, many young people find themselves struggling with feelings of hopelessness, fatigue, and lack of motivation. While depression is often discussed in the context of health and well-being, its impact on career development is equally profound. A young person's career trajectory can be shaped—or hindered—by how they cope with depression during their formative years.

This article explores the causes, symptoms, and consequences of depression in youngsters, with a particular focus on how it affects career growth. It also highlights strategies for prevention, coping, and creating supportive environments that enable young people to thrive professionally despite mental health challenges.

Understanding Depression in Youngsters

- **Definition**: Depression is more than sadness; it is a clinical condition characterized by persistent low mood, loss of interest, and impaired functioning.
- **Prevalence**: Studies show that nearly 1 in 5 adolescents experience symptoms of depression before adulthood.
- **Unique Vulnerability**: Youngsters are at a critical stage of identity formation, academic pursuit, and career planning. Depression during this period can derail motivation and confidence.

Causes of Depression in Youngsters

1. **Academic Pressure**
   - Intense competition for grades and admissions.
   - Fear of failure and parental expectations.
2. **Social Media Influence**
   - Constant comparison with peers.
   - Cyberbullying and unrealistic standards of success.
3. **Family Environment**
   - Dysfunctional relationships, neglect, or overprotection.
   - Financial stress within the household.
4. **Biological Factors**
   - Genetic predisposition.
   - Hormonal changes during adolescence.
5. **Career Uncertainty**
   - Lack of clarity about future goals.
   - Pressure to choose "lucrative" fields over personal interests.

Symptoms of Depression in Youngsters

- Persistent sadness or irritability.
- Withdrawal from friends and activities.
- Decline in academic performance.
- Difficulty concentrating.
- Sleep disturbances (insomnia or oversleeping).
- Loss of appetite or overeating.
- Feelings of worthlessness or guilt.

Depression and Career Development

Depression can significantly influence how youngsters approach their careers:

1. Reduced Academic Performance

- Depression impairs concentration and memory.
- Poor grades limit opportunities for higher education and competitive careers.

2. Loss of Motivation

- Career planning requires sustained effort and optimism.
- Depression drains energy, making long-term planning difficult.

3. Impaired Decision-Making

- Youngsters may struggle to choose suitable career paths.
- Indecision or impulsive choices can lead to dissatisfaction later.

4. Workplace Challenges

- Difficulty meeting deadlines.
- Strained relationships with colleagues.
- Higher absenteeism rates.

5. Stigma and Self-Perception

- Fear of being judged prevents youngsters from seeking help.
- Low self-esteem hinders confidence in interviews and networking.

Case Studies

- **Student A**: A high-achieving student develops depression due to parental pressure. Despite strong academic abilities, declining motivation leads to missed opportunities in competitive exams.
- **Graduate B**: A young professional struggles with workplace depression, resulting in frequent job changes and difficulty establishing a stable career.

Long-Term Career Consequences

- **Delayed Entry into Workforce**: Depression can prolong education or training.
- **Underemployment**: Youngsters may settle for jobs below their potential.
- **Career Breaks**: Frequent interruptions due to mental health struggles.
- **Limited Growth**: Lack of confidence and networking reduces promotions.

Coping Strategies for Youngsters

1. **Early Intervention**
    - Schools and colleges should provide counseling services.
    - Awareness programs to destigmatize mental health.
2. **Healthy Lifestyle**
    - Regular exercise, balanced diet, and adequate sleep.
    - Mindfulness and meditation practices.
3. **Career Counseling**
    - Guidance to align interests with career choices.
    - Reduces anxiety about uncertain futures.
4. **Peer Support**
    - Encouraging open conversations among friends.
    - Building supportive communities.
5. **Professional Help**
    - Psychotherapy and counseling.
    - Medication when prescribed by professionals.

Role of Parents and Educators

- **Parents**: Provide emotional support, avoid excessive pressure, and encourage open dialogue.
- **Teachers**: Identify early signs of depression, offer mentorship, and create inclusive classrooms.

- **Institutions**: Develop career guidance programs that integrate mental health awareness.

Workplace Support for Young Professionals

- **Flexible Work Policies**: Allowing remote work or flexible hours.
- **Employee Assistance Programs**: Counseling and wellness initiatives.
- **Mentorship**: Senior professionals guiding youngsters through challenges.
- **Inclusive Culture**: Reducing stigma around mental health discussions.

Preventive Measures

- **Awareness Campaigns**: Educating youngsters about depression.
- **Skill Development**: Teaching resilience, stress management, and emotional intelligence.
- **Balanced Curriculum**: Reducing excessive academic load.
- **Career Workshops**: Helping youngsters explore diverse career options.

Conclusion

Depression in youngsters is not just a health issue—it is a career issue. The formative years of education and early professional life are crucial for building a foundation of success. When depression interferes, it can derail ambitions, delay progress, and limit potential. However, with awareness, support, and proactive strategies, youngsters can overcome these challenges and pursue fulfilling careers.

Society must recognize that investing in mental health is also an investment in the future workforce. Parents, educators, employers, and policymakers all play a role in creating environments where youngsters can thrive both emotionally and professionally. By addressing depression early and comprehensively, we can ensure that young people not only survive but succeed in their chosen careers.

प्रिय प्रशिक्षु, शिक्षकगण एवं पुस्तक–प्रेमियों,

सादर अभिवादन।

पुस्तकालय केवल पुस्तकों का संग्रहालय नहीं है, बल्कि यह ज्ञान, विचार, संस्कार और सृजनात्मकता का जीवंत केंद्र है। एक पुस्तकालय समाज की बौद्धिक चेतना का दर्पण होता है, जहाँ अतीत का अनुभव, वर्तमान का विवेक और भविष्य की संभावनाएँ एक साथ समाहित रहती हैं। पुस्तकालयाध्यक्ष के रूप में मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि पुस्तकालय किसी भी शैक्षणिक संस्था और समाज की आत्मा होता है।

पुस्तकालय व्यक्ति को सूचना से ज्ञान और ज्ञान से विवेक की ओर ले जाता है। यहाँ उपलब्ध पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ, संदर्भ ग्रंथ, शोध सामग्री और डिजिटल संसाधन न केवल परीक्षा-उन्मुख अध्ययन में सहायक होते हैं, बल्कि जिज्ञासा, आलोचनात्मक सोच और नवाचार की भावना को भी विकसित करते हैं। पुस्तकालय में बिताया गया समय आत्मचिंतन का समय होता है, जहाँ पाठक स्वयं से संवाद करता है और अपने विचारों को परिष्कृत करता है।

आज के तकनीकी युग में, जब सूचनाएँ बिखरी हुई और अक्सर अविश्वसनीय होती हैं, पुस्तकालय प्रामाणिक, विश्वसनीय और संतुलित ज्ञान का सुरक्षित स्रोत प्रदान करता है। यह विद्यार्थियों को शोध-संस्कृति से जोड़ता है, उन्हें संदर्भों का सही उपयोग सिखाता है और अकादमिक ईमानदारी का पाठ पढ़ाता है। पुस्तकालय का वातावरण अनुशासन, एकाग्रता और सतत अध्ययन की आदत विकसित करता है, जो जीवनभर काम आती है।

पुस्तकालय सामाजिक समरसता का भी माध्यम है। यहाँ आयु, वर्ग और पृष्ठभूमि का भेद समाप्त हो जाता है - सबके लिए ज्ञान समान रूप से उपलब्ध होता है। यह लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ करता है और "ज्ञान सभी के लिए" की भावना को साकार करता है। बच्चों में पढ़ने की आदत, युवाओं में लक्ष्यबोध और वरिष्ठों में अनुभव-साझेदारी-इन सबका केंद्र पुस्तकालय ही है।

अतः मेरा आप सभी से विनम्र आग्रह है कि पुस्तकालय को केवल आवश्यकता के समय नहीं, बल्कि नित्य साथी के रूप में अपनाएँ। पुस्तकों से मित्रता करें, प्रश्न पूछें, खोजें और सीखते रहें। पुस्तकालय का सम्मान करें, इसकी संपदा की रक्षा करें और इसे जीवंत बनाए रखने में सहभागी बनें।

विश्वास है कि आपका सतत सहयोग पुस्तकालय को ज्ञान–दीप के रूप में और अधिक प्रज्वलित करेगा।

सादर,
पुस्तकालयाध्यक्ष

ST. PAUL TEACHERS' TRAINING COLLEGE BIRSINGHPUR
(20.12.2024)
Organised by
Anti - Ragging Week
Nukkad Natak
World Population Day
Organised by
Cultural Committee
भारतीय सांस्कृतिक महोत्सव
छठ पूजा
GPS Map Camera

ST. Paul Teachers' Training College Birsinghpur

AT-Jhahuri, PO-Birsinghpur, Block-Kalyanpur,
Samastipur, Bihar, Pin-848102
Phone: +91 9709871006, 9905610604

Our Magazine

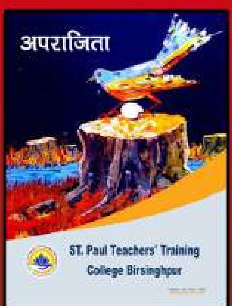

"APRAJITA" Volume-01, Year-2019

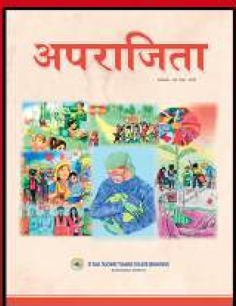

"APRAJITA" Volume-02, Year-2021

"APRAJITA" Volume-03, Year-2022

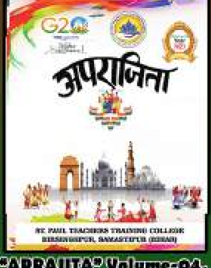

"APRAJITA" Volume-04, Year-2023

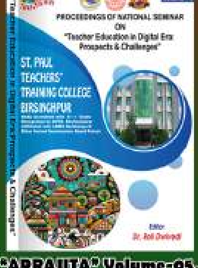

"APRAJITA" Volume-05, Year-2024

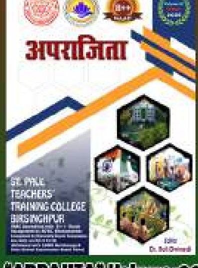

"APRAJITA" Volume-06, Year-2025

ISBN 978-819737648-1